



# इस्लाम का विष-वृक्ष

( 'तब, अब, क्यों और फिर ?'-नामक  
अमर ग्रन्थ का एक अध्याय )

—❖—  
सतह—

आचार्य श्री० चतुरसेन शास्त्री



प्रकाशक—

हिन्दी-साहित्य-प्रकाशक मण्डल,  
बाज़ार सीताराम,  
दिल्ली ।

मूल्य तीन रुपया

प्रकाशक—

हिन्दी-साहित्य-प्रकाशक-मण्डल,

बाजार सीताराम,

दिल्ली ।

प्रथम संस्करण

---

महाविद्यालय मुद्रित

---

१९३३

मुद्रक—

दत्तनाथदास गुप्त,

भारत प्रिण्टिंग प्रेस,

बाजार सीताराम, दिल्ली

# इस्लाम का विप-मृक्ष

७२



## परिचय

आधुनिक सगर के चार महान धर्म हैं—किरिस्चन, हिन्दू, बौद्ध और इस्लाम। इन प्रधान धर्मों में इस्लाम का स्थान ईसा की दृष्टि से दूसरे दर्जे पर और कहरता की दृष्टि से पहले दर्जे पर है। बीसवीं सदी के इस सर्वत्रुल युग में भी मुसलमानों के धर्म-प्रेम के ऐसे लाखबाब उदाहरण मिलते हैं, जिन्हें देख-सुनकर अक्सर दंग रह जाती है। गगनि आज इस्लाम की रीति-रीति, संस्कृति और इस्लाम के भयकर शौर्य का नाश होगया है, ईसाइयत की कमकीली सन्यता ने दुनिया से 'धर्म' का रूप बदल दिया है, सगर की प्रगति में महान् अन्तर आगया है—कुछ के अनुयायी अहिंसा-नन्व का निस्मरण कर, छिपकलियों का मांस खाने लगे हैं, ईश्वरवादी विदुषों में नास्तिकता और पकड़ने लगी है—परन्तु इस्लाम के अनुयायी आज भी पैगम्बर के नाम पर शूल की नदी बहा बेते हैं, दुनिया को सिर पर उठा सेते हैं, और इस्लाम के बच्चे की घूटी में आज भी 'मज़-हब पर कुरबान होजाने' का गुरु-मन्त्र घोला जाता है।

सगर में इस धर्म ने एक तूफान के रूप में जन्म लिया। इस तूफान का आरम्भ अरब के रेगिस्तान में हुमा और तल-वार के जोर पर विद्युत्-गति से यह धर्म काले बादलों की तरह समस्त संसार की छाती पर खबार होगया। इस धर्म का

प्रचार ऐसे स्थान में हुआ जहाँ मनुष्य के प्राणों का मूल्य पूँ  
 चीटी से मन्दा था। मनुष्यों का निरोगेन्द्रन पराधिकायियों का  
 धन था नर-रक्ष बाध-ग्रहों की होने का रज था उस समय  
 लाखों आश्रमियों की हत्या एक ठगारा था जिस दम-मुनकर  
 कोई स्वस्मिन् न होता था न सम्मान का ज्वाला फूटती थी  
 न विद्रोह का दफा बसता था। उस समय तुलवार ही मरार  
 का एक-मात्र साधन था—न हवाई जहाज मंदिरात से न तान-  
 बन्दूक-मशीनगनों की भरमार थी न जूदरीली गनों का प्रयोग  
 होता था। उस शासक कम ईश और निगहा सुटर। प्राणों  
 के मर से लोग भाटो-नरर काँपते थे। तब न अन्तराष्ट्रीय  
 सम्बन्धों थी, न औचित्य अनौचित्य का विचार था और न  
 शासक के चिर पर कोई नियन्त्रण-शक्ति।

ऐसे अवदूर समय में इस्लाम पनरा। किस प्रकार इस दृष्टि  
 में फन लग किस प्रकार जगत् के कोने-कोन में इस पल के बीज  
 छिपरा गये किम प्रकार तुलवार की नोक पर लाखों-करोड़ों आद-  
 मियों को पलक-भराकत इस्लाम का मुरीद बनाया गया और किम  
 प्रकार इस प्रचल धर्म की संस्कृति और उसके सिद्धान्तों का  
 विकास हुआ—इस अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय के सम्बन्ध में आज  
 ससार के अभिजात मौसल पाठक आचरे में है। भारतवर्ष में—  
 जहाँ धर्म के कारण धन से अधिक नाशकारी आपत्ति का सामना  
 करना पड़ा है—किसी भी प्रास्ताविक या राष्ट्रीय भाषा का साहित्य  
 वर्ग को छोड़कर ) इस विषय के प्रकाशन से रुन्ध है।

वास्तव में यह विषय इतना दुर्बुद्ध—और साथ ही इतना नापुक्क है कि इस पर कलम उठाना हँसी-खेल ' नहीं । अभाग भारत के प्रतिभा सम्पन्न कलाकार समुचित सहयोग न मिलने के कारण इस साहित्यिक समस्या से विमुक्त है । इस देश के आलसी पाठक कभी भी इस महत्वपूर्ण विषय पर किसी प्रकार की धोरदार माँग नहीं करते । इसीलिए हमारे देश का साहित्य इस प्रकार के अयशस्वी से शून्य प्राय है । राष्ट्र-भाषा हिन्दी में तो इस विषय पर चार अक्षर भी उपलब्ध न होना और भी अधिक लज्जा की बात है ।

' हिन्दी के प्रचण्ड खेसक आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री ने—  
जिनकी ज्ञान को आज अक्षरार्द्राव मान मिलना चाहिये, तथा जिनकी शैली में बर्नाड शॉ और जॉन रबिन की-सी तिलमिला देनेवाली तीव्रता वर्तमान है—अपने जीवन का एक दीर्घ और अभूतपूर्व समय इस विषय के अध्ययन में व्यय किया है । इस अतृप्त परिश्रम के पश्चात् उन्होंने "तब, अब, क्यों और फिर ?"—नामक एक ऐसे प्रबल ग्रन्थ की रचना की है, जिस ससार के किसी भी ऐतिहासिक साहित्य में प्रथम ध्येय का स्थान दिया जा सकता है और जिस हिन्दूधर्म की इनसाइक्लोपीडिया कहा जा सकता है । यह ग्रन्थ लगभग ५००० पृष्ठों में समाप्त हुआ है, और इसमें हिन्दु-जाति के भूत वर्तमान और भविष्य पर एक गहन गवेषणापूर्ण दृष्टि डाला गई है, तथा एक अनोखे दृष्टि-कोण से सत्तार की प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना का अध्ययन



किया गया है । यह ग्रन्थ विद्वत् बीस वर्षों में तैयारी में था और गठ दण्ड वर्षों से लगभग तैयार होकर छूटने के अनुकूल समय की प्रतीक्षा कर रहा है ।

इस ग्रन्थ का एक अध्याय इस्लाम का विप्लव' के नाम से प्रकाशित किया गया है । हमने इस ग्रन्थ की केवल १५०० प्रतियाँ छापी हैं । हमें विश्वास है प्रत्येक साहित्य प्रेमी दानगी पूरी सहायता फेरना और शास्त्रीजी की इस अमूल्य रचना का हार्पो-दाय प्रचार होगा ।

यिनीत—

हरनामदास गुप्त

---

# इस्लाम का विष-वृक्ष

( १ )

मुहम्मद रसूल अल्लाह



सन् ५७१ ईस्वी की गरीबों के दिनों में शहर बसरा में ऊँचों पर सघार एक क्राफ़िल्ला आया । वह मक्का से आया था और सुखी, अरब के दक्खिन प्रदेश की पैदा हुई वस्तुओं से लदा हुआ था । इस क्राफ़िल्ले का सरदार अबूतालिब और उसका १२ वर्ष का भतीजा था । बसरे के मेस्तर धमावशम्बी मठ की ओर से उनका आतिथ्य किया गया ।

मठ के सन्यासियों को जब मालूम हुआ कि उनका १२ वर्ष का बालक आतिथि अरब के प्रतिद्ध पवित्र मन्दिर काबा के रक्षक का भतीजा है, तो उन्होंने अपने धर्म की प्रशंसा और मूर्ति पूजा की निन्दा उस बालक के हृदय में प्रवेश कराई । उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि बालक असाधारण बुद्धिमान और मधीन शासक का उत्पन्न है । प्राप्त कर धर्म सम्बन्धी विवाद में उसका मन बहुत लगेला है ।

इस बालक का नाम मुहम्मद था । मक्का में उस समय एक काला पत्थर पूजा जाता था, जो उल्कोद्भव था । यह ज़ावा में रक्खा हुआ था और उसके साथ ३६० अन्य मूर्तियाँ थीं, जो वर्ष भर के दिनों की सूचक थीं । क्योंकि जन्म समय साज के दिन योही गिने जाते थे ।

यह वह समय था, जब कि इसाई धार्मिक समूह अपने पादरियों का दुष्टता और पेरवर्य-नृण्या के कारण अराजकता की दशा को पहुँच चुका था। परिधमी देशों के पोष लोप धन, विलास और शक्ति के ऐसे प्रबोधन देते थे कि विशप लोगों के चुनाव में भयङ्कर बध करने पड़ते थे। पूर्वोप देशों में क्रिस्तुन्तुनिया इन घमांथ कगड़ों का केन्द्र था, वहाँ अनेक पन्थ और दल बन गए थे।

ये लोग परस्पर अत्यन्त घृणा भाव रखते थे। शरय उन दिनों स्पतन्त्रता की अपरिचित भूमि थी, जो भारत सागर स लेकर शाम देश के मरुस्थल तक फैली हुई थी। यह इन भगोड़ों और कालू इसाहियों का आश्रय स्थल हो रहा था। अरब के मरुस्थल इसाई सन्ध्यामियों से भर गये थे और पहाँ के बहुतेरे लोगों ने उनके पन्थ की स्वीकार कर लिया था। दश देश के इसाई राजे, जो नेस्तर धर्म को मानते थे, अरब के दक्षिण प्रांत यमन पर अधिकार रखते थे।

अरब एशिया के दक्षिण परिधम कोण पर एक मरुस्थल है। इसकी लम्बाई १, ४०० मील और चौड़ाई ७०० मील है। जन-संख्या २० लाख के लगभग है। देश भर में पहाड़, पहाड़ी, उज्जड़-जङ्गल और रेत के टीले हैं। बरस का भारी अभाव है। खजूर ही इस देश की म्यामत है। अधिकांश अरबरासी, जिन्हें खानाबदाश कहते हैं, किमी पहाड़ी जाले के पास रहते हैं और जब खरापानी का सहारा नही रहता तो अन्धत्र चले वृते हैं। इस देश में गर्मी इतनी पड़ती है कि दोपहर के समय हिरा धागा हो जाता है। अधिपति ऐसी धाती हैं कि बालू के टीले के टीले छपर से छपर उड़ जाते हैं। यदि यात्रियों का कोई समूह इनके चपेट में आगया तो उसकी रौर नही। पहाड़ वहाँ सखी भी बड़ बड़ाचे वी पड़ती है। सदी में वर्षा भी होता है। वही वर्षा का खज जालों और गड्ढों में संचित करव लिया जाता है।

अरब के घोड़े ससार में प्रख्यात हैं। यह पशु पथरीले स्थान पर बड़ा काम आता है, पर रेतीले भागा के काम की शीज तो ऊँट है। यह न बचल

सवारी के काम आता है, प्रायुक्त इसका भाँस और वृष भी बहुतायत से काम में आया जाता है। लोग खजूर का गूदा स्वयं खाते और गुठली ऊँटों को खिलाते हैं। अब उनकी दशा में कुछ परिवर्तन हो गया है।

बसरा नगर के नेस्टर मठ के महत्त बहीरा ने मुहम्मद को नेस्टर मत के सिद्धान्त सिखाए। इस विद्वान् सन्यासी के सदुपदेश से मुहम्मद के मन में मूर्ति पूजा से घोर घृणा हो गई।

तब मुहम्मद सका लौटा, तो यह उर्दों इसाई सन्यासियों की भाँति सज्जल में बुढ़ी बनाकर रहने को हीरा नामक पहाड़ी की एक गुफा में, जो मक्का से कुछ मील के अन्तर पर थी, चला गया और ध्यान तथा प्रार्थना में लग गया। उस एकान्त विचार से उसने एक विद्वान्त निकाहा, यथात् ईश्वर की अद्वैतता। एक खजूर के वृष की पीठ से टिककर उसने इस विषय के विचार अपने सिरों और पदोसियों को सुनाए और यह भी कह दिया कि इसी सिद्धान्त के प्रचार में मैं अपना सात जीवन लगा दूँगा। उस समय से मृत्यु तक उसने अपनी उँगली में एक धाँगी पहनी, जिसपर खुदा था—‘मुहम्मद ईश्वर का दूत।’ बहुत दिनों तक उपवास और एकान्तवास करने तथा मानसिक चिन्ता से अवश्य मति भ्रम हो जाता है, यह वैद्य लोग भक्ता भोक्ति जानते हैं। इसी शक्ति में मुहम्मद को प्रायः अन्तरिष्ठ प्राणियों सुनाई पड़ती थी। किरिरते उनके सामने आते थे। एक दिन स्वप्न में बिराहल नाम का प्रियता उसे अपने साथ आकाश पर ले गया, वहाँ मुहम्मद निर्भय उस भयङ्कर घटा में खड़ा गया, जो सदैव तब-शक्तिमान ईश्वर को लिपाए रहती है। ईश्वर का दर्शन हाथ उसके कंधे पर रख जाने से उसका चित्त फौपा।

शुरु में उसके उपदेश का बहुत विरोध हुआ और उसे बुद्ध भी सक-  
क्षता न हुई। मूर्ति पूजकों ने उसे मक्का से निवाह दिया। तब उसने मदीने में, जहाँ बहुत से यहूदी और नस्तर पन्थ वाले रहते थे, शरण ली। नेस्टर पन्थी शुरन्त उसके मतानुबन्धी हो गये। ६ वर्षों में उसने केवल १,५०० चेखे बनाए। परन्तु तीन छोटी बड़ाइयों में उसने जान लिया कि उसका प्रारम्भ

## इस्लाम का विप-वृत्त

विश्वासमद चर्क उसकी तलवार है। ये तीनों छोटी खपाइयाँ पीछे से बीबर, ओहूद और नशरत के बड़े युद्ध प्रख्यात किए गए। उसके बाद मुहम्मद बहुत बहा करता था कि 'बहिरत तलवार के माए ये नीचे पाया जायगा।

कई एक उद्भूत आत्मियों द्वारा उसने अपने शत्रुओं को पूर्ण रूप से पराजित किया। शरव की मूर्ति पूजा बंद से नष्ट हो गई और वह भी मान लिया गया कि यह ईश्वर का दूत है।

जब वह शक्ति और क्यासि की पराकाष्ठा को पहुँचा, तब वह अन्तिम बार मदीने से मक्का की ओर गया। उसके साथ एक छात्र, चौदह हजार भक्त वृद्धा और ग़ज़रों से सजे हुए ऊँटों पर बहाराते झण्डे किए हुए चले। उसके साथ ७० ऊँट बलिदान के लिये थे। उस समय त्रावे के मन्दिर में ३६० मूर्तियाँ थीं जो १ वर्ष के दिनों का पिन्ध थीं। यह मन्दिर माथीन भारत के बग का और शायद देशीय देवालयों से मिलता-जुलता चौकीर भवन सुज़ी छत का है। मुहम्मद की आज्ञा थी कि मक्का पहुँचते ही सब मूर्तियाँ तोड़ डाली जायँ। उस समय अबू सुविदान मक्के का सर्दार था जिम्मे प्राणभय से कश्मा पड़ लिया। जब वह नगर के निकट पहुँचा तब उसने यह शब्द कहे— 'हे ईश्वर! मैं यहाँ तेरी सेवा के लिये दागिर हूँ। तेरे घरदार कोद दूसरा नहीं केवल तू ही पूजने योग्य है। केवल तू ही सबका राजा है, उसमें तेरा कोई साझी नहीं।'।

अपने हाथों से उसने ऊँटों का बलिदान किया, और मूर्तियों को ध्वस्त भिन्न कर दिया। काबा के व्याख्यान पीठ से उच्च स्वर से कहा— "श्रोतागण मैं केवल तुम्हारे समान एक मनुष्य हूँ। एक मनुष्य से, जो द्रते द्रते उसके पास आया, बहा— "तुम किम बात से द्रते हो, मैं कोई अलौकिक नहीं हूँ। मैं एक शरव-निवासी स्त्री का पुत्र हूँ, जो धूप में सुखाया हुआ मांस खाती थी।"

मक्का और काबे के मन्दिर को अधिकार में कर लेने पर शरव की बहुत सी बातियाँ मुहम्मद साहब के धर्म में मिल गईं। परन्तु कुछ ब्रवाले अभी

ऐसे थे जिन्होंने इस्लाम को अभी स्वीकार नहीं किया था। यह क़बीले घनी हवाजिन, सतीफ़, ज़सर और साद वंश के थे। कुछ पहाड़ी जातिवाँ भी इनके साथ मिल गई थी। एक बार इनसे मुहम्मद साहब ने युद्ध कर इन्हें परागत किया, यह हनीम का युद्ध प्रसिद्ध है, इसमें मुहम्मद साहब के साथ १९०० सवार थे। इस युद्ध में एक अद्भुत घटना घटी थी—तब लूट का भाव दण्डा हो रहा था तब एक डोली जाती हुई देखी गई। रबिया इन्ने रबी ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया। निश्चय जाकर देखा तो एक सुइका बैठा था। रबिया ने जाते ही सुइके पर धार किया। पर उसकी तलवार टूट गई। सुइके ने हँसकर कहा—‘येदे, अक़मोम है तेरे माँ-बाप ने तुझे अच्छी तलवार नहीं दी। का मेरी काठी में तलवार जटक रही है उसे लेना और अपना काम पर।’ रबिया ने तलवार निकाल ली और धार करने लगा। सुइके ने कहा—‘अपनी माँ से यह ज़म्मर माह देना कि मैं तुरंत इन्ने मुक़ा को मार जाया हूँ।’ रबिया ने कहा—‘अच्छा यह दूँगा।’ इसके बाद वह उसका सिर फाटकर घर गया और माँ से उक्त समाचा कहा—माँ ने कहा—‘घरे कुछ जिस लूने मारा है उसन तीन बार मेरी और तरी दादी की इमन पचाई थी।’ रबिया ने मुँह फेरकर कहा—‘इस्लाम काफ़िर के अहसान और गुन्य महा मानता’।

मुहम्मद साहब ने मक़ा में यह घोषणा कराई थी—‘जिन लोगों ने अरब देश में अबतक इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया है उन्हें चाहिए कि चार मास के भीतर १ प्रपमा पढ़ लें या अरब को छोड़कर चले जायें। पर महीने बाद यदि कोई जाफ़िर अरब में दिखाई देगा तो उसका सिर बाट लिया जायगा। इसमें मुसलमानों के मित्रों, रिश्तेदारों और भाइयों का भी खिदाज़ नहीं किया जायगा।’

यमनका हज़ारा अभी मुसलमान नहीं हुआ था, यहाँ मुहम्मद साहब ने अली इब्ने अमिताज़िय को कौज़ लेकर भेजा। उन्होंने अली से कुछ प्रश्न किए—

निकाल कर कहा—इस्लाम का अवाय यह तलवार,

## इस्लाम का विप-मृत

हे,—और कई विद्वानों के सिर काट लिये। इससे भयभीत होकर सारा यमन मुसलमान हो गया।

यह मदीन में मरा। मृत्युकष्ट के समय उसका मिर आग्रश की गोद में था। वह बार बार पानी के बर्तन में अपने हाथ धुयोता था और अपने चेहरे को धर छुता था। उसे सीमा उबर और सन्निपात था। अन्त में उसका दम टूटा। उसने आकाश की ओर दृष्टि की लगाए हुए ठंढे-ठंढे शब्दों में कहा—“हे ईश्वर, मेरा पाप क्षमा कर। एवमस्तु। मैं आठा हूँ।”

मृत्यु के समय उसके आयु ६३ वर्ष की थी। उसने अपने शक्तिम दस वर्षों में २४ युद्ध स्वयं अपने सेनापतिव में तथा ५-६ दूसरों की आधीनता में कराए। तथा कुल १ लाख १४ हजार स्त्री-पुरुषों को मुसलमान बनाया। मृत्यु के समय उसके सम्बन्धियों में ४ पुत्रियाँ, ४ पुत्र, ८ दादियाँ, १८ स्त्रियाँ, २ दाहियाँ, ५ भाई, २ बहिन, ६ भूकियाँ, १२ चचा, ४० लेखक, ५८ दास, १६ सेविकाएँ, २० सेवक, ८ द्वारपाल, ८ वकील, १५ बाँगी, ४ कविता करने वाली स्त्रियाँ और १६६ कवि थे।

सम्पत्ति में—१ सिंहासन, अनेक छाटियाँ, २ पताकाएँ, ६ घनुष ४ भाजे, ३ ढालें, ३ किरौट, ७ कवच, १० सलवारें, अनेक वस्त्र, ७० भेड़ें, २१ जँटनियाँ, ३ गधे ४ गध्या २० उन्दा घोड़े, ७ प्याजे, १ सिंगार का हत्था और १ तनिया थी।

( २ )

## खलीफा-अव्वकर

— ॐ —

मुहम्मद साहब ने मृत्यु के समय अपना कोई उत्तराधिकारी न चुना था । इस कारण उसकी मृत्यु होते ही सर्वत्र हलचल मच गई । इस पर अलसलम इब्ने अब्द ने इस्लाम का झंडा धारण के द्वाजे पर खड़ा कर दिया । और द्वाजेदार बन्द पहरेदार नियत कर दिये । अब यह विचार पड़ा कि किस उत्तराधिकारी चुना जाय ।

अव्वकर, उमर, उरमान, और खली ये चार सादमी गद्दी के अधिकारी समझे गये । प्रानदान और योग्यता को दृष्टि से खली का इक़्तदा पर कुछ लोग अव्वकर को कुछ उमर को और कुछ उरमान को चुनना चाहते थे । इसके नियम के लिये पंचायत बुलाई गई । उसने यह निर्णय लिया कि खलीफा मरता के कुरेशों में से बनाया जाय और मन्त्री धर्माधी बनाये जाय । इन नियमों के अनुसार अब्द धर्माधी और उमर में से कोई भी खलीफा हो सकता था । पर अब इसपर झगड़े होने लगे तो उमर ने आगे बढ़कर अव्वकर को सलाम किया और उनका हाथ घूम कर कहा थाप हम सबसे बड़े, योग्य व बुद्धिमान हैं इसलिये आपके रहते कोई आदमी खलीफा नहीं बनाया जा सकता । इस प्रकार अव्वकर प्रथम खलीफा चुना गया ।

मृत्यु के समय मुहम्मद साहब का विचार सीरिया और फारस के विजय का था और वे इसको तैयारी कर चुके थे । अव्वकर ने खलीफा होते ही ये आज्ञायें प्रचलित कीं —



“आपगत कृतानु ईरवर के नाम से प्रारम्भ करता है। प्रवृत्त शत्रु सख मुसलमानों को तन्मुदगी और दुरी की दुष्ठा देता है। ईरवर तुम पर दया करे और तुम्हें आनन्द में रखे। मैं ईरवर की प्रार्थना करता हूँ। इस राजाशा द्वारा तुमको सूचना दी जाती है कि, मैं सखे मुसलमानों को सीरिया देर भेजना चाहता हूँ कि वे बाहर उसे आज़िओं के हाथ से छीन लें, और मैं बनाना चाहता हूँ कि धर्म के वास्ते लड़ना मानो ईरवीय भाषा मानना है।”

इसके बाद ही सेनापति यकीन होने परिसक्रामन ने शत्रु देर को भेज दिया। शुद्ध दुष्ठा। बादशाह की राना दार गई उनके सेनापति तथा १२ हजार सैनिक काम आए। और लूट का बहुतसा माल मुसलमानों के हाथ लगा। जो प्रबीरा के पास भेज दिया गया।

सेनापति प्रबीर इन न सीरिया को प्रतह किया। मूर्ति पूजकों के प्रति आति उग्र मोघ उसक मन में था। वह कहा करता था “मैं उस ईरवर निम्दक मूर्ति पूजकों को खोपड़ी और डालूँगा। जो ऐसा कहते हैं कि अत्यन्त पवित्र समय-शक्तिमान् ईरवर न पुत्र उत्पन्न किया है।”

उसने १० हजार घोड़ाघों को साथ लेकर ‘होरा’ नगर पर आक्रमण किया और वहाँ के ईसाई बादशाह को मार गिराया। बादशाह के मरने पर नगर-वासियों ने ७० हजार मुहरे वार्षिक कर मुसलमानों को देना स्वीकार किया। इस नगर पर अधिकार कर, उसने शिरात नदी पर छावनी डाली और इरान के बादशाह को लिखा कि या तो मुहम्मदी करमा पड़ो या ‘जज़िया’ दो। परन्तु सेनापति यकीन ने उसे सख्ख धरने की सहाई में योग देने को बुझा भेजा। तथा कि शत्रु दश नौ बादशाह दरबयूसन से मुन्नाविले के लिए भारी सेना का संग्रह किया था। यह प्रौरन १,५००० खुने हुए सवार लेकर पहुँचा, उधर प्रबीरा ने कई हजार घोड़ा और भेज दिये असरे पर धावा बोल दिया गया।

बसरा उन दिनों रोम साम्राज्य का एक भाग हुआ था। इसी नगर के सामने मुसलमानी सेना ने छावनी डाली। लिखा बहुत ही मज़बूत था

और रक्षक सेना भी बलवान थी। पर उसका अध्वरु रोमेनस विरवासघात करके मुसलमानों से मिल गया और ज़िले का फाटक खोल दिया। एक व्यापार में अपने भाइयों से कहा —

“मैं तुम्हारा साथ छोड़ता हूँ। इस लोक के लिये और परलोक के लिए भी। मैं उसको नहीं मानता, जो सूली पर चढ़ाया गया था और उनकी भी नहीं मानता जो उसको पूजते हैं। मैं ईश्वर को अपना मालिक बनाता हूँ और इस्लाम को अपना धर्म मक्का को अपना धर्म मन्दिर, मुसलमानों को अपना भाई और मुहम्मद को पैगम्बर मानता हूँ।”

यह रोमेनस उन हजारों विरवासघातियों में से एक था, जिन्होंने फ़ारिस की विजयों में अपना धर्म खो दिया था।

बसरा से सीरिया की राजधानी दमिरक ७० मील थी। यह शहर बड़ा धनाढ्य, बड़ा गुलज़ार और व्यापार का केन्द्र था। वहाँ का रश्म और गुलाब का दूध दुनिया भर में प्रसिद्ध था। खलीद अपने १,२००० सवारों को लेकर दमिरक की तरफ़ चला। उसने शरजील तथा अबू यबीदा को, जिन्हें वह फ़रात नदी के निकट छोड़ दिया था, चुपचाप लिखा कि वे तत्काल अपनी पूरी फौज लेकर दमिरक को घेर लें। उन्होंने १,७०० फ़ौज लेकर कूच किया और नगर को घेर लिया। उन्होंने नगरवासियों को सूचना दी कि तत्काल मुसलमान हो आओ या धन दण्ड दो; अन्यथा युद्ध करो। बादशाह हरकयूलस वहाँ से १२० मील दूर पण्टीमॉक के महल में था। उसने खलीद के १,२०० सवारों का आक्रमण समझ कर २ हजार सेना भेज दी। उसका सरदार जनरल बेल्सुस था। उसका नगर के शासक अज़रार्हल से मतभेद था। जब उसने ४० हजार सेना के प्रचण्ड बल को देखा, तो वह भयभीत हो गया और विरवासघात करके खलीद से कहला भेजा कि अज़रार्हल को मारते ही नगर पर क़ब्ज़ा हो जायगा। अज़रार्हल यद्यपि बुद्ध था, पर मैदान में डट गया और वीरता से लड़ा। पर खलीद ने दोनों को पकड़ कर कैद कर लिया और मुसलमान होने को कहा। अन्त में हथकड़ि करने पर उन्हें फ़तल कर दिया।

चले । इधर एक ईसाई देशद्रोही मेनुअल को एक घेसे स्थान पर छो गया, वहाँ कई मुसलमान चाक लगाए द्विपे बैठे थे । वहाँ पहुँचते ही उन्होंने मेनुअल को मार डाला । सेनापति के मरते ही सना के पैर उखड़ गये और वह भाग खड़ी हुई । बहुत सी सना नदी में दूब गई और कुछ जज़ब म भटक गई । रोमन सेना पूर्ण रीति से पराजित हुई । ४० हजार मनुष्य कैद किए गए और बहुत से मार डाले गए । इसके बाद सारा देश विजयिनी मुसलमान सना के आधीन हो गया । ईसाइयों को इन शर्तों पर रहने दिया गया —

१—ईसाई नये गिरजे न बनवायें ।

२—गिरजों के दरवाजे रात दिव मुसलमानों के लिए खुले रहा करें ।

३—गिरजा पर घण्टे न बजाए जाएँ ।

४—सलीम न गिरजा पर लगाई जाए, न बाजार में दिखाई जाए ।

५—अपने बच्चों को कुशा न पढ़ावें ।

६—अपने घर का प्रचार न करें ।

७—अपने किसी भाई को मुसलमान होने न न रोके ।

८—मुसलमानों के समान कपड़े, जूते और पगड़ी न पहनें ।

९—कमर में शस्त्र बाँधा करें ।

१०—अरबी भाषा न बोलें ।

११—मुसलमानों के आने पर खड़े हो जायें और जब तक बैंगने की आज्ञा न मिले, खड़े रहें ।

१२—तीन दिन तक मुसलमान मुलाक़िद को अपने घर में रखें ।

१३—शराब न पियें ।

१४—घोड़े पर क़ाठा न कमें ।

१५—शस्त्र न धारण करें ।

१६—किसी आदमी को, जो मुसलमान के यहाँ ग़ैर रह चुका हो, नौकर न रखें ।

इसके बाद अबूअबीदा ने हलब पर धावा बोल दिया। रास्ते में अरस्तो का जिला पड़ता था, उसके सरदार ने मुसलमान बनने या पर देने से साफ़ इन्कार कर दिया, इसलिये उस से जुलूस करके २० सन्दूक चतौर अमानत के बहा रस दिये गये। उन में सशस्त्र योद्धा थे। उन्होंने समय पाकर जिले का फाटक खोल दिया और उस पर अधिकार जमा लिया।

हलब का जिला सीरिया भर में सब से गज़बूत था। यहाँ धन और व्यापार की भी प्रचुरता थी। ५ मास तक जिले पर घेरा रहा। अंत में एक इसाई के विरवासघात से मुसलमान जिले में घुस गए, और बहुत से श्रादमियों को मार डाला। बाबरी लोग ने दर दर कत्ला पद किया। जिले के अधिपति का लड़का सुकला भी बदमा पद कर अब्दुर्रजा हो गया। उसने अपने चचा के बेटे ब्योडस को भी अपना साथी बनाना चाहा, जो पूजा के जिले का स्वामी था। अब्दुर्रजा सी मुसलमानों को लेकर वहाँ पहुँचा। पर ब्योडस मावधान होगया था। उसने इन सब को कैद कर लिया। परन्तु ब्योडस का बेटा सुकला भी लड़की पर मोहित था। उसने कहा कि यदि आप अपनी लड़की की शादी मेरे साथ कर दें तो मैं आपको साथियों सहित छुड़ा दूँ और स्वयं भी मुसलमान हो जाऊँ। सुकला ने यह बात स्वीकार कर ली। अंत उस पितृ प्रोही ने उन्हें छुड़ा कर दियार भी दे दिये। जिला अन्त में मुसलमानों के हाथ आगया और ब्योडस के पुत्र ने अपने पिता को भी हल कर दिया।

अब सीरिया की राजधानी अन्ताकिया पर धावा बोलने का निश्चय हुआ और इस व लिये जाल यह रचा गया कि सुकला अपने १०० साथियों समेत इसाइयों के भेष में अन्ताकिया जा पहुँचा और बादशाह हरबयूलस से कहा कि मुसलमानों ने मुझे लूट लिया है। मैं जान बचा कर आपकी शरण आया हूँ। बादशाह ने कहा—“तुम तो मुसलमान हो गए थे?”। उसने कहा—‘यह सब जान बचाने के लिये मूठ-मूठ किया था’। बादशाह ने उस पर विश्वास कर १०० साथियों समेत उसे अपने पास रख लिया और चपमा मन्त्री बना लिया। इस के बाद

मुसलमान कैद करके क्रिस्ते में छाप गये। इस प्रकार सब काफ़ी मुसलमान क्रिस्ते में होगये, सब धनू चपीदा ने हमला बोल दिया। बादशाह युद्धा की सम्मति से काम करता रहा। अगले में, अबसर पाकर उस के साथियों ने पाठक लोका दिया। मुसलमान 'अबलाही अकबर' का नारा लगाने भीतर घुस आये। बादशाह तिर धुनता जहाज पर मशर हो, हुरदुनुनिया भाग गया।

यव योहला ईसाई देश में साथियों समेत त्रिपुरी जा पहुँचा। वहाँ के लोग उसने मुसलमान बनने और धन-वपन की बात नहीं जानते थे। उन्होंने इसे बादशाह का सम्मति समझ कर बड़ी सारा किया। अबसर पाकर उसने पाठक लोका कर तथा मुसलमानों को मुजा कर तिला कर तिला करा लिया। हमी प्रकार धोमे ने उसने धाहर को भी तिला कराया।

इसी बीच में देश में भयानक महामारी पैनी और उसमें देश भर लवाह होगया। सेनापति यव चपीदा, इससे बड़े २ योद्धा तथा २५ हजार सैनिक मर गये।

एलाइ ने एक गवि को अपने प्रशसा करने के उपलक्ष में १० हजार रुप हुनाम दे डाले थे। इस हुनूर में उमे यलोजा ने उसी की पगड़ी से बांध कर अपने सामने तुलवाया और उसे पद अष्ट करके अपने घर चले जाने का हुक्म दिया। मरते वक्त उसके घर में सिर्फ एक घोड़ा और कुछ शस्त्र निकले थे।

इस प्रकार मुसलमानों ने निभय होकर सारे एशिया-माइनर को रौंद डाला। वह सीरिया देश, जिसे सीजर के समुदाय महान् पाम्पी ने ७०० वर्ष पहले रोमन राज्य में मिलाया था वह सीरिया, वो ईसाइयों का परम पवित्र स्थान था और जहाँ से सम्राट् हरक्यूलस ने एक बार कारिस के आक्रमणकारी को परास्त किया था, मुसलमानों के हाथ आ गया। सम्राट् हरक्यूलस यव हस्त-तुनिया को भाग रहा था तब जहाज पर बैठ उसने बड़े बड़े से शर होते हुए पहाड़ों पर उदास दृष्टि डाली और कहा—  
 'मेरा प्रणाम है, और यह प्रणाम सदैव के लिए है।'

इसके बाद टिपोली शहर और कैसरिया से लिए गए। घोड़ेसत पहाड़ की खण्डी और पुनेशिया के मरुभूमि से एक जयदस्त बेड़ा तैयार किया गया, जिसने रोम के प्रतापी बेड़े को हेलेसपाष्ट में भगा दिया। साइप्रस, रोडस और साइबलुसिया तयार कर डाले गए। और वह पीतल की बड़ी मूर्ति, जो संसार के सा। शहरों में गिनी जाती थी एक यहुदी को बेच दी गई, जिसने उसका पीतल ६०० कटों पर लादा था। अब सुलीका की सेनाएं कृष्ण समुद्र तक बढ़ गई और कुगुनुमिया के मुत्राबले में जा डटी।

इस विजयों ने मुसलमानों के राज्य को मियन्वर और रोम के साम्राज्य से भी बड़ा बना दिया। देवीमोन के घेरे जाने पर इज्जताना मिलाइजाना और बहुत सा लूट का माल मुसलमानों के हाथ लगा और वहां पारण है कि निहायन्द की विजय को वे लोग सब विजय की विजय कहते हैं। एक और तो वे कैसरियन शहर तक बढ़े और दूसरी ओर हिक्कारिय बड़ा के किनारे ३ परसी पोखान तक दक्षिण की ओर फैले। केडीमिया की लड़ाई में फारिस के भाग्य का भी निश्चय हो गया। फारिस नरेश उम शहर के स्तूप और मूर्तियों को तोड़ कर लो लिकन्दर के बड़े भोज की शक्ति में सब तक लूट पड़ा था, शवन प्राण यवानों को बतारे के रेगिस्तानों में भाग गया। अन्त में अजमम नदी के किनारे वह एकद कर मार डाला गया। उस नदी के पार का देश भी अर्धीन कर लिया गया और उस देश से परस्पर धार्मिक दो छात्र शक्तियां बहुत दिनों तक मिलाती रहीं। चीन के मर्याद ने मुसलमानों की मित्रता की और पक्ष स्वरूप सिध नदी के किनारे तक इस्लामी कण्ठ पहनने लगा।

जिन लोग पतियों ने सीरिया विजय में धाम पाया था, उनमें अमर, इब्ने शार नाम का एक जनरल था, जिसके भाग्य में मित्र का विजय होना लिखा था। वह पूरा की विजयों से सन्तुष्ट न होकर परिचम को मुका। उसके साथ ५ हजार सवारों का साथ था। उसकी हरि अफ्रीका महाद्वीप पर था। मित्र उसका द्वार था। उसने मित्र में पहुँचते ही वहाँ के ईसाइयों ने कहा था कि हम यूनानियों के साथ हम : लोक तथा परलोक का कोई

सम्बन्ध रखना नहीं चाहते और सदैव के लिए रोम के अध्यापारी और उसकी कैलमीडोन की सभा को सौगन्ध खाकर खागते हैं। उन्होंने प्रलीक्रा को सबक और पुल बनवाने के लिए तथा मेवा की रसद और ज्वारे पहुँचाने लिए शोध हा कर देना स्वीकार कर लिया।

मेग्रिम नगर को प्राचीन क्रिरउन के समय में राजनगरों में था, विश्राम घातियों की सहायता से शीघ्र जीत लिया गया, और सिकन्दरिया भी घेर लिया गया। बहुत से आक्रमण और धावे हुए। अन्त में २२ हजार सैनिकों के गट जाने पर १४ सहीने के घेरे के बाद उम नगर का पतन हुआ। अमरु ने प्रलीक्रा को इस बड़े नगर के विषय में लिखा था—  
“इसमें ४ हजार महल, २ हजार स्नानागार, ४ सौ नाट्यशालाएँ, १२ हजार दुफाने बयल सरकारियों भाजियों का और ४० हजार यहूदी साहूकार राज्य कर देने वाले हैं।”

हरक्यूलस ने अपने कुस्तुमुनिया के राजमहल में यह दुःखदायक खबर सुनी। तो इतना मर्माहत हुआ कि सिकन्दरिया के पतन के एक मास बाद ही मर गया।

इसी सिकन्दरिया में वह जगत्विख्यात पुस्तकालय था जिसमें पृथ्वी भर के विद्वानों की इस्तिलिखित १० लाख पुस्तकें थीं। जब उमर ने प्रलीक्रा से पूछा कि इन पुस्तकों को क्या किया जाय, तो सब प्रलीक्रा ने लिखा कि यदि इनका विषय इरान के अनुकूल न हो तो उन्हें रखने का कोई आवश्यकता नहीं। अतएव उन्हें गट कर दिया जाय। अमरु ने उन्हें ईंधन के तौर पर जलाने के लिये हम्मामों में बाँट दिया और—उनसे १ लाख तक २ हजार हम्माम गर्म होते रहे।

मिश्र देश रोम-राज्य का अन्न भंडार था इसी कारण इसे ज़ौरा खेने भी बड़ी-बड़ा कोशिशों की गई। अमरु को दो बार फिर चेनाद कानो पड़ी। उसने जान लिया कि समुद्र की ओर से खुला रहने से उसपर बड़ी सुगमता से आक्रमण किये जा सकते हैं। उसने कहा—‘प्रलीक्रा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यदि सीपरी बार आक्रमण किया जाय तो मैं सिक-

न्दरिया को ऐसा बना दूँगा कि यह प्रायेक मनुष्य के लिये बेरिया के घर के समान हो जाएगी।" उसने अपने कंधन से एक कण्टकारी निकाल कर दिखाया और शहरपनाह बहावा दी। इससे यह नगर विशुद्ध उजाड़ हो गया।

यह बीच बप बाद अकबानीज नदी से बूटजायिटक समुद्र तक बढ़ आया और अपने घोड़े को सागर छल में हिजाफर जोर ने कहा कि—“हे सर्वोपरि ईश्वर, यदि यह समुद्र मेरा रास्ता न रोकता तो मैं पश्चिम के अज्ञात राज्यों में चला जाता और तेरे पवित्र नाम तथा धर्मता का उपदेश देता, और उन विद्रोही शासियों को, जो तेरे सिवा अन्य देवताओं को पूजती हैं, तलवार के हवाले करता।”

थप साद के पास ३० हजार सवार थे। यह उन्हें लेकर मदाइन राजधानी का घोर बंद। बादशाह मज्दगुर्द घबरा गया। सरदारों में पूछ पड़ गई। वह अपने रान और परिवार सहित वहाँ से भागकर हनदान पहुँचा। राजधानी में मुसलमान घुस पड़े और उसे लूट खनोट कर सहस्र सहस्र कर डाला।

जलूना नगर में फिर बादशाह की सेना से मुठभेड़ हुई। यह खबाद ६ मास चली। अन्त में जलूना और हनदान मुसलमानों के हाथ में आ गए और बादशाह र नगर को भाग गया।

इसी बीच में साद से माराज होकर खलीफा ने उसे पदस्थित कर दिया और उसका घर फूँक दिया। इस बीच में अथकाश पाकर हनान के बादशाह ने डेढ़ लाख सना फिर एकत्रित की। उधर नेमान की अधीनता में एक विशाल मुसलमानी सेना ने आकर नेहाबन्द को घेरा। पारसी सेना पति बूढ़ा और कमजोर था, फिर भी उसने नेमान को मार डाला। पर उसके मरने पर हकीज सनापति बना और उसने सेनापति फीरोज का मार डाला पारसी सेना भाग गई। इस युद्ध में १ लाख पारसी मारे गए। और लूट में बादशाह मज्दगुर्द का एक बवाइरात से भरा हुआ डिब्बा मिला, जो खलीफा के पास भेज दिया गया। उसे उलने यह कहकर जौटा दिया कि ये कलक परवर हमारे काम के नहीं, हैं बँचकर मुसलमानों को पाँट दो।



हकीम ने उन्हें तीन आर १० करोड़ रुपये में बेचा। उसके पास उस समय ४० हजार सिपाही थे अतः प्रत्येक को ८० ८० हजार रुपये मिले। इसके बाद हमदान और है को ब्रजल काफे लूट लिया गया और खून की पदी बहा दी। फिर वे आशुरबाद जा पहुँचे और यहाँ का प्रसिद्ध मन्दिर वा दिया। बादशाह की तीन बेदियाँ गिरफ्तार करके ब्रजल काफे के पास भेज दी गई। जब वे ब्रजल काफे के सामने पहुँची तो उसने एक मुसलमान को हुक्म दिया कि इनके जेवर उतार लो। इसपर उन्होंने हाँटकर कहा—'जवरदार! हाथ न लगावना, जेवर हम उतारे देती हैं।' यह सुनकर ब्रजल काफे का आँखों में खून उतर आया और उसने उन्हें नंगी करके कोड़े मारने का हुक्म दिया। पीछे अली न ब्रजल काफे को समझाकर टपटा किया और उन आशुरबाद की जान बचाई। इनमें से एक लड़की से अली ने अपने बेटे हमन के साथ विवाह किया, दूसरी बेटी अब्दुल रहमान इन्हें अब्दुल को और तीसरी अब्दुल इन्हें उमर को दी गई।

इरान समोह के समय से कोह ४०० वर्ष पूर्व बड़ा शक्तिशाली राज्य था। इसकी सीमा पश्चिम में यूनान और पूर में हिन्दुस्तान तक फैली हुई थी। विश्व विजयी निकन्दर ने इस देश को मसीह से ३२८ वर्ष पूर्व विजित भिन्न कर डाला था। रामन्स ने भी इसकी शक्ति को क्षीण कर दिया था।

मुहम्मद साहब ने अपने जीवन-काल में ईरान के बादशाह खुशरू से कहलाया था कि हमारा धर्म ग्रहण कर लो। इसपर उसने हुसुजा के अपने हाकिम को कहला भजा था कि या तो मुहम्मद को ब्रजल कर दो या लौट कर लो, वह पागल है। मुहम्मद की मृत्यु के बाद ब्रजल काफे अब्दुल ने ब्रजल इन्नेवली को इरान पर चढ़ाई करने को तैयार किया, पर फिर उसे सीरिया भेज दिया। अब उमर ने अब्दुल अली को एक हजार सवार देकर ईरान भेजा। उस वक्त यहाँ की गद्दी पर खुशरू की दूसरी बेटी चारकम दुष्ट थी। मुसलमानों सेना ने पहुँचते ही लूट मार मचा दी। गनी ने ३० हजार सवार हस्तम इन्हें कर ब्रजल के साथ भेज दिए। पीछे से वह मन सहदेव के साथ तीन हजार सवार और ३० लक्ष हाथी हस्तम की मदद को

भेजे । जय बाबू अबीदा अपनी सेना सहित फरात नदी पर पुल बांधकर पार हो रहा था, रुस्तम के धनुषधारियों ने बाण-थरों आरम्भ कर दी । इससे बहुत से मुसलमान मारे गये । अबू अबीदा घोड़े से गिर गया और हाथी से कुचला जाकर मर गया । इसके बाद सेना भाग निकली ।

खलीफा उमर ने यह सुनकर फिर एक बड़ी सेना मरना की धंधी गता में भेजी । मरना ने ईरानी सेनापति को इन्ध युद्ध में परास्त करके मार दाका और ईरानी सेना विन भिन्न हो गई । इसके बाद साद इब्ने अबि विकाम १ हजार सवारों सहित मदीने से खजा । और मार्ग में ही लूट और स्त्रियों के लालच ने उसके पाम ३० हजार सवार मरना तक पहुँचने-पहुँचते हो गये । इसी बीच में मरना मर गया और उसकी पत्नी को साद ने जो ६० वर्ष का था, अपनी स्त्री बना लिया । इसके बाद रुस्तम से युद्ध हुआ, मुसलमानों को और भी सहायता मिल गई । भारी घमासान हुआ और रुस्तम का तिर काट लिया गया । ईरानियों की पराजय हुई । उनकी ३० हजार सेना फट गई । इस युद्ध में मुसलमान भी ७ हजार मारे गए । यह युद्ध वामदिपा में हुआ था । इस विजय के उपलक्ष में फरात और यजला नदी के संगम पर बसरा नगर खलीफा उमर की आज्ञा से बसाया गया जो एक मुसलमान को गुलाम के तौर पर दिया गया था । एक दिन मशदगुर्द की लक्ष्मी ने लिबकी से उसे देखकर कहा—“तुम पर जानत है कि अपने मुकर, बादशाह और धर्म के लिए कुछ नहीं कर सकते ।” फिरोज़ को शाहजादी की बात चुन गई । वह मौका पाकर मस जिद में घुस गया । खलीफा गदन मुक़ाए नमान पढ़ रहा था । उसने उसकी गर्दन में चुनी घुमेद दी । बहुत से मुसलमान दौड़ पड़े । वह ५० को मार कर स्वयं भी मर गया । खलीफा उहाधावों से ७ वर्ष दिन मर गया । मृत्यु के समय उसकी आयु ६३ वर्ष की थी । उसके समय में सीरिया मिश्र, पैलेस्टाइन और ईरान मुसलमानों के हाथ में आए । ३१ हजार नगर और जिले जीते गए, ४० हजार मन्दिर और गिरजे ढाए गए और कई लाख शीर-मुसलमिम क़त्ल किए गए ।

( ४ )

## रखीफा उस्मान और अली

— नि —

उमर की मृत्यु के बाद ६ च. हिमिया की कमेटी छापीरा बुधने को  
 दी। यही से पूछा गया कि क्या तुम कुरान व इदीय को जानून मान कर  
 अबूबकर और उमर के मार्ग पर चडोगे ? उसने कहा—मैं कुरान व इदीय  
 को तो स्वीकार करूँगा, पर अबूबकर और उमर की पाबन्दा नहीं। मैं अपनी  
 बुद्धि से काम लूँगा। इस पर कमेटी ने उन्मान से पूछा। उन्मान ने स्वी  
 कार किया।

इस क्रिये उस्मान हुने-अक्राम छोड़ा हुए। इनकी उम्र ७० वर्ष  
 की थी। गरी पर बैठने ही इन्हों ने पारगुद को प्रज करने को प्रीम ह्दरान  
 भेजी। क्योंकि उमर मरतो बार कह गए थे कि उसका नामानिस्तान बुनिया  
 से मिटा देना। बेघारा बादशाह इधर उधर मोरा मारा और दिपटा किरता  
 रहा। उसके साथियों ने उसे एकजवा देने की सलाह की, पर उसे मालूम  
 होगया और वह अपनी पाकी के सहारे सब के त्रिसे भ उतर कर अंधेरी  
 रात में भागा। रास्ते में थक जरी थी उसे पार उतारने के क्रिये सलाह  
 ने ३) मागे पर उसके पास राये न थे। उसने खान्नों शरये मूल्य की  
 कीमती धगुदी देनी चाही पर सलाह ने न ली। इतने में मुसलमान  
 पहुँच गए और उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला। इस प्रकार ४,००० वर्ष से  
 अमकता हुआ पारसियों का सितारा अस्त होगया।

उस्मान ने अमर इब्ने-यास को मित्र से युद्ध कर उसकी सगढ़ अम्बुलजा इब्ने-साद को दे दी। अम्बुलजा सैनिक था प्रयत्नक नहीं। इससे लोग नाराज होगए और मित्र में शहर मच गया। बादशाह फास्टेन्टाइन ने सिकन्दरिया को घेर लिया। मुसलमान वहाँ से मार भगाए गए। तब फिर उस्मान भेजा गया। इमने सिकन्दरिया को फिर छोड़ा। पर खलीफा ने फिर अम्बुलजा को भेज दिया। इस बार उसने उत्तर धक्रोका पर धावा बोलने का निश्चय किया और ४० हजार सेना लेकर त्रिपली पर छावनी बालदी। उधर ने जतरख ग्रेगरस एक छात्र, बीस हजार रोमन सेना लेकर मुत्रायले में आ दटा। कई दिनों तक घमासान युद्ध होता रहा। अन्त में एक दिन घोड़े से ग्रेगरस मार डाला गया और उसकी सुबती कन्या कैद कर ली गई। सेना भाग गई और नगर पर अधिकार कर लिया गया।

मुहम्मद साहब पढ़े लिखे न थे। वे अपनी खाँदी की सुहर वाली भगूडी को दस्तखत की भाँति काम में लाते थे, जिस पर 'मुहम्मद रसूल एकाद सुदा था। यही भगूडी पूब के दोनों खलीफा काम में लाते रहे परन्तु इस खलीफा ने उसे खो दी।

इस खलीफा ने कुरान की प्रतियों का मुहम्मद साहब की स्त्री हक्रमा की प्रति से मुत्रायला कराया। जिनमें पाठ भेद था उन्हें धलवा दिया और हक्रमा बाला प्रति की कई नकलें कराकर सीरिया, मित्र और फारस आदि देशों में भेजा। बतमान कुरान यही है।

फिर वह उमी गेम्बर की सीढ़ी पर खड़े होकर बाज़ करते थे जिसपर मुहम्मद साहब। इस खलीफा ने लाख रुपए अपने सम्बन्धियों को और सुन्नी मखान को बाँट दिये थे, इससे मुसलमान इससे बहुत नाराज होगए। उनके छल कपट के भी कुछ भेद सुखे। इस पर बहुत से मुसलमान मदीने में भागए उस सोचा काने को कहा—पर उसने ऐसा नहीं किया। मित्र के कुछ नागरिकों ने शिकायत की कि अम्बुलजा को वहाँ का हाकिम न रख कर मुहम्मद बिन अब्दुकर को बना दें। इस पर उस ने ऐसा ही किया पर

( ४ )

## रखीका उस्मान और अली

— ❦ —

उमर की मृत्यु के बाद ६ चरमियों की कमरी प्रचीका बुनने को बंदी। अली से पूछा गया कि क्या तुम कुतुब व इदीस को जानूँ मान कर अश्वकर और उमर के मार्ग पर चलेगें ? उसने कहा—मैं कुतुब व इदीस को तो स्वीकार करूँगा, पर अश्वकर और उमर की पाबन्दी नहीं। मैं अपनी बुद्धि व काम लूँगा। इस पर कमरी ने उस्मान से पूछा। उस्मान ने स्वीकार किया।

इस विये उस्मान इरने-राकान प्रचीका हुए। इनकी उम्र ७० वर्ष की थी। गद्दी पर बैठते ही इन्होंने ने यशगुर्र को ज़ुल्ल करने को प्रीम ईरान भेजी। क्योंकि उमर मरते बार यह गप थे कि उसका नामोनिशान दुनिया से मिटा देना। बेघात बादशाह दूधर उधर मोरा मारा और दिपठा फिरता रहा। उसके साथियों ने उने पकड़वा देने की सलाह का पर उसे मालूम होगया और यह अपनी पगड़ी के सहारे भव के त्रिलो से उतर कर अंघ्रेती रात में भागा। रास्ते में एक नदी थी, उसे पार उतारने के विये मरझाह ने ७) मांगे पर उसके नाम रखे न थे। उसने लाखों रुपये मूल्य की कीमती भगुडी देनी चाही, पर मरझाह ने न ली। इतने में सुसज्जमान पहुँच गए और उसे डुकड़े डुकड़े कर डाला। इस प्रकार ४,००० वर्ष से चमकता हुआ पारसियों का सिंघारा अस्त होगया।

उस्मान ने अमर इब्ने-यास को मित्र से बुला कर उसकी भगइ अम्बुल्ला इब्ने-साद को दे दी। अम्बुल्ला सैनिक था प्रपन्थक नहीं। इससे लोग नाराज होगए और मित्र में शहर भय गया। बादशाह कास्टेन्टाइन ने सिकन्दरिया को घीन लिया। मुसलमान वहाँ से मार भगाए गए। तब फिर उस्मान भेजा गया। इसने सिकन्दरिया को फिर छोड़ा। पर खलीफा ने फिर अम्बुल्ला को भेज दिया। इस बार उसने उत्तर अफ़रीका पर धावा बोलने का निश्चय किया और ४० हजार सेना लेकर त्रिपली पर छावनी बालदी। उधर से जनरल ग्रेगरस एक लाख, बीस हजार रोमन सेना लेकर मुकाबले में आ रहा। कई दिनों तक घमासान युद्ध होता रहा। अन्त में एक दिन घोड़े से ग्रेगरस मार डाला गया और उसकी पुत्री बर्खा ज़ैद कर ली गई। सेना भाग गई और नगर पर अधिकार कर लिया गया।

मुहम्मद साहब पढ़े लिखे न थे। वे अपनी चाँदी की मुहर वाली भगूड़ी की दस्तखत की भाँति काम में लाते थे, जिस पर 'मुहम्मद रसूल-वसाह सुदा था। यही भगूड़ी पूव के दोनों खलीफा काम में लाते रहे परन्तु इस खलीफा ने उसे छो दी।

इस खलीफा ने कुरान की प्रतियों का मुहम्मद साहब की स्त्री हफ़सा की प्रति से मुकाबला कराया। गिनमें पाठ भेद था उर्द खलश दिया और हफ़सा वाली प्रति की कई नज़्में कराकर सीरिया, सिथ और फ़ारस आदि देशों में भेजा। वतमान कुरान यही है।

फिर यह उम्मी मैग़र की सीरी पर खड़े होकर बाज़ करते थे जिसपर मुहम्मद साहब। इस खलीफा ने लाखों रुपए अपने सम्बन्धियों को और मुन्शी मखान को बांट दिये थे, इससे मुसलमान इससे बहुत नाराज होगए। उनके छल कपट के भी कुछ भेद सुखे। इस पर बहुत से मुसलमान मदीने में आगए उसे सोबा करने को कहा—पर उसने ऐसा नहीं किया। मित्र के कुछ नागरिकों ने शिकायत की कि अम्बुल्ला को वहाँ का दायिम न रख कर मुहम्मद दिन ख़ूबकर को बना दें। इस पर उस ने ऐसा ही किया—पर

एक दूत चुपचाप अम्बुएली के पास भेज कर कहता दिया कि मुहम्मद को मार बाओ। इससे क्रुद्ध होकर मिश्र वाले मदीने पहुँचे और वैक्रियत तलब की तथा गद्दी छोड़ने को कहा—उमने इन्कार किया। इस पर लोगों ने उसके घर में घुस कर उसे कात्त कर दिया। मृत्यु के समय वह ८२ वर्ष का था। उसकी लाश तीन दिन तक वैधे ही पड़ी रही और जब सक्ने लगी तब बिना नहलाए और नए कपड़े पहिनाए वैधे ही गाफ दी गई।

इसके बाद अली इमने अयूतलिय खलीफा हुआ। यह व्यक्ति दयालू, श्याय प्रिय और शांत था। परन्तु खलीफा पद के लिए कठोर स्वभाव पुरुष की आवश्यकता थी इस लिए अली के खलीफा होते ही भीतरी विद्रोह पट पड़ा। मुहम्मद साहब की प्यारी बिधवा आयशा इसकी शत्रु थी। ऊपर सज्जा, ज़बीर और मुआविया भी खिलफत के उम्मीदवार थे। इन लोगों ने प्रमिद कर दिया कि उस्मान के बंध में अली का पकयान था। इमने लोग भड़क गए। मुआविया ने दमिरक की मन्जिल में उस्मान का खून में रंगा हुआ कुरता रॉम पर खटका कर खड़ा कर दिया, जिस देखते ही सीरिया के लोग भावे से बाहर होगए। मुआविया ने ६ हजार सेना देखने देखते एकत्र करला। ऊपर अली का दल भी काफ़ी था। आयशा ने डिंडोरा पिटवा दिया कि मैं खुदा और रसूल के नाम पर सज्जा और ज़बीर के साथ पसरा जाती हूँ। जो मुसलमान मेरा साथ देना चाह और उस्मान के खून का बदला लेना चाहें वे मेरे पास आके धारें। मैं खाना, कपड़ा, घोड़ा और हथियार दूंगी। उनके साथ हजारों आदमा होगए। पर जब वह बन्दे पहुँची तो वहाँ के हाकिम उस्मान ने फाटक न खोला और उल्टे मुआविये को तैयार होगवा, खूब गाजी-नासोज हुई। अतः मं कीगल ने यह लोग शहर में घुस गए और उस्मान को कैद कर लिया। यमरा पर आयशा का अधिकार होगया। अली ने ३०० आदमी साथ लेकर बाग़े पर चढ़ाई करदी। माग में ३० हजार सेना उस और मिल गई। युद्ध हुआ, आयशा के साथी मारे गए और वह कैद हुई। पर अली ने उसे आदर-सूरक ३० दासियों सहित मदीने भिजवा दिया।

अब अली का एक मात्र शत्रु—मुआविया बच गया था। उसने उस्मान के खून में रंगा हुआ क़ुर्ता बाँस में छटका कर दमिरक की मस्जिद में खड़ा किया, और ८० हज़ार लगा लिये साम की सीमा पर आ डटा। अली ने १० हज़ार सेना लेकर उस पर धावा बोल दिया। युद्ध हुआ और ४५ हज़ार आदमी मुआविया के तथा १० हज़ार आदमी खलीफा के मारे गए। अन्त में सन्धि चर्चा चली। कलव परस्पर दोनों दल गाली गलोज़ करने लगे। गाली गलोज़ का यह रिवाज तुमने भी नमाज़ के पीछे अब तक खला आता है।

अब एक सीसरा और सम्प्रदाय खड़ा हुआ, जिस का नाम खार्जी था। अब्दुल्ला इब्ने अब्दुल्लह का खलीफा बना। इस दल में २५ हज़ार आदमी थे। इस पर अली ने एक क़य़द खड़ा करके घोषणा की कि जो अमुक समय तक इसके पीछे अज्ञात आयेगा, उमा किया जायेगा। इस पर २१ हज़ार आदमी खले आए। बात्रा चार हज़ार अब्दुल्ला के पास बच रहे। जो बीरता से लड़ कर काम आये। सिर्फ़ ६ आदमी ग़िन्दा बचे।

उधर मुआविया ने मिश्र में विद्रोह फैला दिया। अली १० हज़ार सेना लेकर मिश्र पर खला। वे जो १ खार्जा बचे थे, उन्होंने निश्चय किया कि अमर, अली और मुआविया ये ही मुस्लिम विद्रोह की जड़ हैं, इस लिए इन तीनों को एक साथ ही नष्ट कर देना चाहिए। तीन आदमियों ने यह काम अपने ऊपर लिया। अमर और मुआविया तो किसी भीति बच गए, पर अली पर कोका में अब्दुल्लहमान ने तमाज़ पड़ते वक्त चार किया, जिससे उसकी खोपड़ी फट गई और ३ दिन के बाद, ६३ वर्ष की आयु में वह मर गया। उसके १२ पुत्र और १६ पुत्रियाँ थीं। अली के पक्ष वाले 'शिया' कहलाते हैं और वे इसके पूर्व के तीनों खलीफ़ाओं को मानने से इन्कार करते हैं। और मुहम्मदसादिक के बाद अली ही को खलीफ़ा मानते हैं। कहा जाता है कि अली का जन्म कावे में हुआ था।



एक दूत चुपचाप अय्युबजी के पास भेज कर कहला दिया कि मुहम्मद को मार खाओ। इससे क्रुद्ध होकर मिश्र वाले मदीने पहुँचे और कैफ़ियत सत्तब की तथा गद्दी छोड़ने को कहा—उसने इम्कार किया। हम पर लोगों ने उसके घर में घुम कर उसे छल्ल कर दिया। अय्यु के समय यह ८२ वर्ष का था। उसकी लाश तीन दिन तक वैसे ही पड़ी रही और जब सड़ने लगी तब बिना नहखाए और नए कपड़े पहिनाए वैसे ही गाब दा गई।

इसके बाद अली इन्ने अय्युबजी के खलीफा हुआ। यह व्यक्ति दयालू, न्याय प्रिय और शांत था। परन्तु खलीफा पद के लिए कठोर स्वभाव पुरुष की आवश्यकता थी, इस लिए अली के खलीफा होते ही भीतरी विद्रोह वृद्ध पड़ा। मुहम्मद साहब की प्यारी विधवा आयशा इसकी शत्रु थी। ऊपर तलहा ज़बीर और मुआविया भी ख़िलाफ़त के उम्मीदवार थे। इन लोगों ने प्रसिद्ध कर दिया कि उस्मान के बंध में अली का पक्षधर था। हमने लोग भड़क गए। मुआविया ने दमिरक की मस्जिद में उस्मान का खून में रंगा हुआ कुरता घाँव पर लटका कर खड़ा कर दिया, जिसे देखते ही सीरिया के लोग धापे से बाहर होगए। मुआविया ने ६ हजार सेना देखने देखते एकत्र करली। ऊपर अली का दल भी काफी था। आयशा ने त्रिशूरा पिटवा दिया कि मैं सुदा और रसूल के नाम पर तलहा और ज़बीर के साथ पसरा जाती हूँ। जो मुसलमान मेरा साथ देना चाहें और उस्मान के खून का बदला लेना चाहें वे मेरे पाप खले धावें। मैं खाना कपड़ा, घोवा और हथियार दूंगी। उमक रात हजारों आदमी होगए। पर जब यह बगरे पहुँची तो वहाँ क हाकिम उस्मान ने फाटक न खात और उन्हे मुआविये की तयार होगया खूब गाँधी गंजन हुई। अत में कौशल से यह लोग शहर में घुस गए और उस्मान को कैद कर लिया। पसरा पर आयशा का अधिकार होगया। अली ने ३०० आदमी साथ लेकर बगरे पर चढ़ाई करदी। माग में ३० हजार सेना उस और मिल गई। युद्ध हुआ, आयशा के साथी मारे गए और वह कैद हुई। पर अली ने उसे आदर-पूर्वक ४० दासियों सहित मदीने भिजना दिया।

अब अली का एक मात्र शत्रु—मुघाबिया बच गया था। उसने उस्मान के खून में रंगा हुआ फुर्ता बाँस में लटका कर शमिरक की मस्जिद में लटका दिया, और ८० हजार लगा जिये साम की भीमा पर आ बैठा। अली ने १० हजार सेना लेकर डम पर घावा बोझ दिया। युद्ध हुआ और ३२ हजार आदमी मुघाबिया के तथा १० हजार आदमी अलीका के मार गए। अन्त में सन्धि बचा बली। फलतः परस्पर दोनों दल गाली गलौज करने लगे। गाली गलौज का यह रिवाज तुर्मे की नमाज़ के पीछे अब तक चलता आता है।

अब एक तीसरा और समुदाय बड़ा हुआ, जिल का गाम आर्घी था। अन्दुरला इन्हें यहूद द्वारा अलीका बना। इस दल में २५ हजार आदमी थे। इस पर अली ने एक कपड़ा लटका करके घोषणा की कि जो अनुब्र समय तक इसके पीछे चला आयेगा, चमा दिया जायेगा। इस पर २१ हजार आदमी चले आए। बाज़ा चार हजार अन्दुरला व पास बच रहे। जो बीरता से लड़ कर काम आये। निकले ६ आदमी जिन्दा बचे।

ऊपर मुघाबिया ने मिश्र म विद्रोह पैदा दिया। अली ६० हजार सेना लेकर मिश्र पर चला। वे जो ३ स्वार्थी बचे थे, उन्होंने ने निरचय किया कि अमर, अली और मुघाबिया ये दो मुस्लिम विद्रोह की लड़ हैं, इस लिए इन दोनों का एक साथ ही बाल काटना चाहिए। तीन आदमियों ने यह काम अपने ऊपर लिया। अमर और मुघाबिया तो किसी भीति बच गए, पर अली पर कोठा में अन्दुरलहमान ने नमाज़ पढ़ते वक्त धार किया, जिससे उसकी खोपड़ी फट गई और ३ दिन के बाद, ६३ वर्ष की आयु में यह मर गया। उसके १२ पुत्र और १६ पुत्रियाँ थीं। अली के पक्ष वाले 'शीया' कहलाते हैं और वे हमके पूर्व के तीनों अलीकाओं को मानने से इन्कार करते हैं। और मुहम्मदसादिक के बाद अली ही को अलीका मानते हैं। कहा जाता है कि अली का जन्म पांच मं हुआ था।

( ५ )

तदनन्तर

— — —

इसके बाद हमने हमने अपनी खज्जीरा हुआ, इसकी आयु ३० वर्ष की थी और यह शान्त गुरोरा और साधु स्वभाव का था पर इसका घोडा भाई हुसेन और था उसने ६० हजार पौंड खेदर गुमाविया पर बदार्ह की, पर भीतरी वजह के कारण हार गया । लिखाफन छोड़ दो, समय में इसन की एक स्त्री ने उसे बिगड़ कर मार डाला । निज यज्ञोद् ने यह प्रकाशक दिया था कि मैं तेरे साथ विशाद कर लूंगा पर पीछे डबे इसी अपराध पर कल्ल करवा दिया ।

हमके बाद गुमाविया खज्जीरा हुआ और उसने पुम्पुम्पुनिया पर पौंड मेखी पर डमकी हार हुई उसने पुम्पुम्पुनिया के ईमाई बादशाह को ३० हजार धरफी ५० दाम दामियाँ और २० धरवी घोडे प्रति वर्ष कर देना स्वीकार किया, और ३० वर्ष के लिये मन्थि कर ली । इसके बाद हमने १० हजार सवार कफोका पर भेजे और पहाँ जगज कटवाकर किरदान नामक एक शहर बनाया । यह २० वर्ष तक खज्जीरा रहकर मरा । इसके बाद इसका बेटा यजीद ३४ वर्ष की आयु में खज्जीरा हुआ । गुमाविया ने अपने गुरुकाख में अपने बेटे यजीद से कहा था कि तुम्हें ४ आदमियों से भय है ।

१—हुसेन हमने अपनी से । पाम्पु यह न्यायी और तुम्हारे बच्चा का बेटा है उसके साथ अच्छा बर्ताव करना ।

२—अब्दुल्ला इन्ने उमर । यह सीधे मिजाज का है तुम्हें खलीफा स्वीकार कर लेगा ।

३—अब्दुल रहमान । मूल और कानों का कच्चा है, जुबानी भी है । यह तरा कुछ न बिगाड़ सकेगा ।

४—अब्दुल्ला इन्ने ज़हीर । पूत और धीर है । मुकाबिले धावे तो खोता पूर्वक बढ़ता । मेरा चाहे तो सन्धि कर लेना और अधिकार में लाकर ज़ब्त करवा देना ।

गादी पर बैठने ही उसने मदीने के हाकिम बलीद को लिख भेजा कि तुसेन इन्ने भस्मी और अब्दुल्ला इन्ने ज़हीर से हथकनामा लेकर भेजो । बलीद ने उन दोनों को बुलाकर बरत करने की सलाह की पर वे दोनों सचेत हो गये और मदीने से भाग गये और पलीद के विरुद्ध विद्रोह छड़ा कर दिया । कोफे के लोगों ने उन्हें सहायता देने का पक्षन दिया और १॥ लाख के लगभग अनुषंग हुसैन के साथ हो गये ।

यह समाचार सुन यज़ीद ने बसरे के हाकिम को लिखा कि कोफा पहुँचकर वहाँ के हाकिम नेमान को निवाज दो और कोफा पर अधिकार कर लो । बसरे का हाकिम अब्दुल्ला बढ़ा जाता था वह केवल २० भादमी लेकर कोफे पहुँचा । कोफे वाले उसे हुसेन समझे और ज़िले में ले गये जहाँ पहुँचते ही उसने वहाँ के हाकिम का सिर काट लिया । यह देख कोसेना हुसेन के पक्ष में इकट्ठी हुई थी भाग खड़ी हुई । हुसेन को यह भेद मालूम न था वह कोफे में तैयारियों की तैयारी पाकर अपने राज बख़्तों सहित कोफे को चला दिया था । सीमा प्रान्त पर सरदार हुए कुछ सवारों के साथ सागने आया, हुसेन समझा स्वागत को आया है । पर उसने कहा कि मुझे कोफे के हाकिम अब्दुल्ला ने भेजा है कि मैं आपका साथ कोफा से चला । हुसेन ने उसे मित्राने की बहुत कोशिश की पर यह नहीं माना ।

इसके बाद इसका बेटा अब्दुल मलिक खलीफा हुआ । इसकी आयु ४० साल की थी । अब्दुल्ला अब भी भस्मी और मदीने में माना जाता था । इसलिये इसने बहुत मुकद्दस पक्षेसदाह्न को ह

बग़ाह नियत किया। उधर शिषा लोगों ने अम्मी के ब्राज का बदला लेने की तैयारी की। मुन्तकिम उनका खलीफ़ा बना और उसने १० हजार आदिमियों को क़त्ल किया। अब्दुल मलिक ने उसके सामने बड़ी भारी सेना भेजी। और वह युद्ध में १२ वर्ष की आयु में मारा गया। इसके बाद मसअब हाकिम बना और वह भी मारा गया। अब उसका सिर खलीफ़ा के सामने लाया गया, तो उसके क़ातिल को एक हजार अशक़ी इनाम देने का हुक्म दिया, परन्तु क़ातिल ने इनकार करते हुए कहा मेरी उम्र ७० साल की है, मैंने समय का ख़ूब रंग देखा है इसी कोफ़े के बिले में हुसेन का सिर अब्दुल्ला इब्ने जयाद के सामने लाया गया इब्ने जयाद का मुन्तकिम के नामने और मुन्तकिम का मसअब के नामने और अब मसअब का बिर आपके नामने लाया गया है। युद्ध को बात सुनकर खलीफ़ा बहुत शर्माया और क़िल को मिस्रसार करने का हुक्म दिया।

अब्दुल्ला अब भी मरका और मदीने का खलीफ़ा बना बैठा था उस पर बग़ाह करने को खलीफ़ा न हयाज को समझा देकर भेजा, अब्दुल्ला बीरता से ज़बर माता गया इससे मरका और मदीना भी अब्दुल मलिक के हाथ आ गया। अब सिर्फ़ सुरामान रह गया था बले भी इज़ाज ने फतह कर लिया अब यह कामदिया की तरफ़ रवाना हो गया। रास्ते में उमर अपने ४ हजार सवार खिब मिखा और कहा—कोफ़े के आदमी आपसे फिर गये हैं। आप मरका की तरफ़ वापस चले जायें। साथ ही उसने अब्दुल्ला को भी लिख भेजा कि हुसैन को मरके की तरफ़ चले जाने दें। पर उसने रणो कार न किया। और उमर को लिखा कि हुसैन को पांगी मिलना बन्द कर दो। और यज़ी की प्रभुता स्वीकार करायो।

पानी बन्द होने से हुसैन और उसके परिवार के आदमी लड़पने लगे। फिर भी हुसेन ने यज़ीद को खलीफ़ा नहीं माना। भक्त में अब्दुल्ला न लिखा कि यदि ये नहीं मानते तो उनका सिर पाट लो और शरीर को घोड़ों से रौंदा दो। यह हुक्म पाकर उमर ने फिर हुसेन को समझाया पा उठने न माना। और अपने साथियों से बड़ा मुक्के मरे भाव्य पर छोड़

कर थाप लोग अच्छे बाँधे । पर उन लोगों हुसैन के साथ मरणा स्वीकार किया । हुसैन के साथ ३२ सवार और ४-५ प्यादे थे । रक्षा ने स्नान करके कपड़े पहने, हथ खगाया और मग्ने दो तैयार हो गये । हुसैन में ३० सवार शत्रु सेना से निकलकर हुसैन से आ गिजे ।

जहाँ शुरू हो गई । धुमरशक अकबर था उसने हुसैन के दोनों में भाग खगाने का हुक्म दिया । इसपर हुसैन परी स्त्री और पचपे पिछाने लगे । अन्त में उसका दिन भर आया और यह खता गया । एक एक आत्मी आता और मरता था । यहाँ में हुसैन बहुत स पाव खाकर गिरा और एक सैनिक ने उसका सिर बाट लिया । यह शकाई पचका म हुई जिसमें हुसैन के ७७ और शत्रु के ८९ पायदा मारे गये । हुसैन के मारे जाने पर उसका सारा भाज अमभाव खूब लिया गया और स्त्री बचा वो कैद कर लिया गया । उमर हुसैन का सिर लिये शत वो गोका अपने घर पहुँचा तो उसकी स्त्री ने कहा - पाणी पूछे मुझे मुँह न दिया यह कहकर घर से निकल गई और सारी उमर उमरा मुँह न दता । दूसरे दिन रात अश्रुपला के मामने हुसैन का सिर रखा गया तो उतने उमपर धूका और दोहरा मारकर एक तरफ़ को पेंक दिया ।

हुसैन बाद उसने सब की तकियों के कलज का हुक्म दे दिया । पर सर्दारों के मना करने पर उम्ह हुसैन के सिर के साथ यज़ीद के पास भेज दिया । यज़ीद ने उन्हें खातिर से रखा और कुछ दिन बाद मदीने पहुँचा दिया । इसी घटना का शोक मुसलमान १० दिन तक मुहर्रमों में मनाते हैं ।

अब हथ शत्रु को मेट कर यह अश्रुपला हुसैन ज़बीर की तरफ़ मुका । क्योंकि उसे सफ़ा और मदीने वालों ने अपना ज़ख़ीफ़ा बना लिया था । यज़ीद के सन्तान में हुसैन अपना कौन गपू थे कि साग़ अरब उसका विरोधी होगया था । यह सब सुन कर यज़ीद ने मदीने पर सना भेजने की तैयारी की पर कोई सेवापति राज़ी न हुआ । अन्त में मुसलिम हुसैन अक़बा ने मग़ूर किया और १२ हजार सवार और २ हजार पैदल लेकर मदीने की । पहले तो उसने सब को समझाया । अन्त में कुछ

प्रकार विशाल सेना लेकर वह दृढ़ गया पर वह विश्वासपातियों की मदद से उसे मुसलमानों ने परास्त कर दिया। जिसमें भयानक युद्ध हुआ, स्पेन का बादशाह रोडरिग्वे हार कर भाग गया और अन्त में गादस्त्रकिबर नदी में डूबकर मर गया।

बलीद हम समय मर गया। और उसका बेटा सुखेमान जलजीका हुआ। इसने मयप्रथम यूगा के परिवार को कुल करवा दिया और मूसा की जगह दुर को स्पेन का सुवेदार बनाया। उसने निरस्य किया कि सेना में जितने सैनिक हैं या तो इन्हें मुसलमान बना लिया जाय या कुल कर दिया जाय। उसने जुलियन समापति को बुलाय जिसके विश्वाघात की सहायता से स्पेन को कतह किया गया था पर यह दुर का अभिप्राय समझ गया और भाग गया। उसकी स्त्री और पच्चे घा में घेर लिये गये। उसने बचने को कदम में दिपा दिया पर वह हूँदतर निकाल दिया गया। स्त्री ने दुर के पैरों पर गिरकर दया की प्रार्थना की पर उसने कहा कि काफिर के लिये रहम नहा है। उसने काजी को हुक्म दिया कि पच्चे को बिले के बुर्ज पर ले चढ़िये, यही भिया गया, बधा टरकर बाजी ने चिमट गया, उसने बहुत रोना पुकारना किया, पर उसे बुज स आवे फेंक दिया गया। इसके बाद सब स्त्री पुरुषों को गुलाब पत्र त्वा में खड़ा किया गया। उनके बीच में जुलियन की स्त्री भी थी। नयसे कलमा पड़ने को कहा गया, लेकिन इन्कार करने पर प्याह में मिट्टी डालकर सबको जिन्दा जमीदोज करा दिया। ऊपर एक बड़े सेनापति थप्पुख रहमान की अध्यक्षता में फौस पर दृढ़ पड़ा और उसे कुचल डाला, वह जाकर बड़ी तक पहुँच गया। तमाम गिरनों और शहरों को लूट लिया गया। अन्तर्वासी पादरिया को कुछ भाग चली।

अन्त में सन् ७३२ में आर्से मारहेल ने हम आक्रमण से टकरा कर सात दिन की बड़ी लड़ाई के बाद अब्दुल रहमान भागा गया और मुसलमान पीछे पीछे लौट गए। हम लड़ाई के विषय में इतिहासकार मि० गिवन कहते हैं कि जिवराहटर पहारी से जाकर नदी के किनारे तक अर्थात् १०० मील से अधिक दूर तक मुसलमानों की विजयी सना बदली चली गई थी।

और यदि इतनी ही दूर वे और आगे बढ़ जाते तो योलैण्ड और स्काटलैण्ड के पहाड़ी भागों तक पहुँच जाते ।

अब इटली की घाटी आई । मन् ८४९ में रोम का जो अपमान धर्मांध मुसलमानों ने किया था वह बड़ा ही नीच भाव से किया था । एक छोटीसी मुसलमानी सेना दार्दुर नदी पार करके नगर के कोट के सामने आ बठी । यह फाटक तोड़ कर नगर में जाने योग्य शक्ति शक्ती न थी । मरुट पीटर और सेरट पोल के समाधिस्थलों को इसने विध्वंस करके लूट लिया । सेरट पीटर के गिरजा की घाँटी की पेंदिका तोड़कर उसकी खाँदी छत्रोका भेज दी गई यह पीटर की पेंदी रोमन ईसाइयों के धर्म का मुख्य चिन्ह था ।

इस प्रकार रोम नगर का सर्वाधिक अपमान हुआ । एशिया माइनर के गिरने मिट चुके थे । बिना आशा लिये कोई ईसाई जेरुसलम नगर में पैर नहीं रख सकता था और सुषोमान के मस्जिद के सम्मुख खड़ीका उमर का मस्जिद खड़ी थी । विज्जन्दरमा नगर के भग्नावशेष भागों में से दया की मस्जिद उस स्थान का चिह्न बसा रही थी जहाँ अमानक मारकाट के बाद कुछ अनुपप दया करके छोड़ दिये गये थे कारपेज नगर में बिधा फाँले खण्ड इतों के कुछ न बचा था, सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न मुसलमानी राज्य का विस्तार अटलांटिक समुद्र से लेकर चीन की दीवार तक और कैस्पियन समुद्र के किनारों से लेकर हिन्द महासागर के किनारों तक फैला हुआ था अब भी उस की यह हविस बाक़ी थी कि यह सीजर के उत्तराधिकारिया को उनकी राजधानी से निकाल दे ।

परन्तु धरम के आन्तरिक झगडा ने यूरोप की रक्षा कर ली । तीन समूहों ने जो अपने मिल २ रंग के झण्डे रखते थे खलीफा के राज्य के तीन टुकड़े कर डाले । उमैयाधर वालों का झण्डा सफ़ेद रंग का था फातिमा बरख वालों का हरा था और ख़लीफ़ों का काळा था यह अन्तिम झण्डा मोहम्मद के बचा के समूह का था । इस झगड़े का यह फल हुआ कि दशवीं शताब्दि में मुसलमानी राज्य तीन भागों में विभक्त होकर अमादाद काहिरा और कारकोया के राज्य बन गये । मुसलमानों की राजनैतिक एकता का अन्त



होगया और ईसाई सगार को देवी सदायता से रचा मिली। अन्त में अरबी धर्म घोमा पड़ा और तुर्क और बर्बर शक्तियाँ उठीं।

मुसलमान बड़े भारी मारकर होगये थे और ये पूरा रीति में घर २ कपड़ा में पैस हुए थे। चाकले न खिला है कि मुसलमानों का कोई ऐसा मामूली अक्रमर न था जो तमाम यूरोपी सन्मिलित सेनाओं में हारन पर भी अपनी भारी सेहतती न समझता रहा हो इसको पूणा क विषय में यह उदाहरण काफ़ी है कि रोमन गणराज्य सेनीफरम में गल्लीफा हार्लिन रशीद के पास एक पत्र भेजा था, जिसका उत्तर यह दिया गया था कि— शरयन्त दयालु हरवर के नाम पर मुसलमानों का गल्लीफा हार्लिनरशीद रोमिय कुत्त सेनीफरम के नाम पत्र लिखता है “हे जाकिर माता के पुत्र” भिने तेरा पत्र पढ़ा, उस पत्र का उत्तर तू सुनेगा नहीं, देखेगा”। और इस पत्र का उत्तर रक्त और अग्नि के अक्षरा में जोजिया के मैदानों में लिखा गया।

यह सम्भव है कि हारी हुई जाति अपने दूर को फिर से जीतले, परन्तु जो हरण का प्रतिधार नहीं है। यह अन्त पराजय है। जब अमुजबैदा ने शरीर आफ नगर खेने की छवर गल्लीफा उमर के पास भेजी थी, तब उमर ने उस कोमल शब्दा में मलामत न था कि तू ने यहाँ का औरता के साथ निषादियों को व्याह क्यों नहीं करन दिया। ये शब्द आश्चर्य पर हय डंग के थे कि यदि ये लोग सारिदाम व्याह करना चाहते हैं तो उन्हें कर नेदेशी और जितना लौंगियों की उन्हें आवश्यकता हो उसनी लौंगियाँ रख सकते हैं।

अब यही बहुत विवाह का कानून था कि पराजित देशों में स्थिराँ अप हरण का ग्रयें। फिर यही बात सदैव के क्रिये मुसलमानों रीति में समा गई। ऐसे दम्पतियों की संतान अपने विजेता पितामा की गन्तान होने पर गव करती थी। इस नीति के प्रचार का इसने अचूक प्रमाण नहीं दिया जा सकता जो उन्मराय अफ़ाशा में मिलता है। नवीन प्रपणों को करने में इस बहुत विवाह प्रथा का ये गोक प्रभाव बहुत ही विविध हुआ। एक बीड़ी से कुछ हा अधिक समझ में ज़लीक़र के अक्रमरों ने उस सूचना दी कि राज्य पर अन्त करदिया जाय क्योंकि इस देश में पैदा हुए वालक सब मुसलमान हैं और सभी अरबी भाषा बोलत हैं।

## खिलाफत का अन्त

मि० नोवदेथी के शब्दों में प्रलीफा खोग—उनके इमाम, धर्मगुरु, अमीर, फाही कुमार और मजिस्ट्रेट थे। इस प्रकार मुस्लिम सत्ता में शूय ही से प्रादेशिक और धार्मिक अधिकार संयुक्त हो गये थे। और इस लिये इस्लाम 'धर्म' होने के साथ २ एक राष्ट्र भी हो गया था।

८ जून सन् १२२२ में इतरत मुहम्मद की मृत्यु हुई। तब से सन् १६१ तक ४ प्रलीफा हुए। अक्षर, उमर, उस्मान और प्रली। पाठक ने देखा होगा कि खिलाफत का यह अवकाश मुस्लिम इतिहास में कितना महत्वपूर्ण हुआ। इन दिनों धर्म की महत्ता थी, और प्रलीफा शरीफी से निर्लभ भाव से विरक्त पुत्र की भाँति रहते थे। अब सन् १६१ से १२२८ तक खिलाफत के इतिहास का दूसरा काज आता है। इसी समय सुसलमानों में शिया सुन्नी का भेद हुआ। इन दिनों तक अरबियों का दौरादौरा था और उन्होंने खिलाफत को वैश्वगत प्रादेशिक राज्य का रूप दे दिया था। प्रलीफा चुनने की प्रथा बन्द होगई थी और पिछले प्रलीफा के पुत्रादि उत्तराधिकारी माने जाते थे। समय मथम मोम्राविया ने अपने सामने ही अपने पुत्र को नामजद किया था। इसके बाद प्रलीफाघों का जीवन ही बदल गया। अब तो उनमें न उमर का सी सादगी ही रह गई थी और न अली की सी साधुता। सुसलमानों में भेद हो गये थे। विदेशों में जो सुसलमान बनाए जाते थे उन्हें वे विजेताजिद

नहीं प्राप्त होते थे जो घरों को प्राप्त थे। मित्र और मुसलमानों में सम्बन्ध परस्पर गंभीर थे। सागर दर बयान हुसैन की कृत्य का बदला क्रान्तिपूर्वक किया गया। शिवाजी का कहना था कि राजाजी का सुभाष हो। पर मुसलमान कहते थे—नदा दखाना अपना उत्तराधिकारी नामाद कर सकता है। यह मत भी अन्तर्गत चला जाता है।

जब सिखापन की बागडोर इनके हाथ में आती रही तब घरों का अधिपत्य भी नष्ट होगया। कुछ दिन फारिगवाले राजाजी रद पीने मुक्त थे यह स्थान लिया।

सन् १२९१ से १२९३ तक सिखापन का तीव्रता प्राप्त जाता है। इस काल में सिखापन का आधिकार बहुत बड़ा जाता रहा। इस्लाम धर्म की राज्य रणनीति इन दिनों मित्र के मुसलमान मामलूक और कुछ अन्य मुसलमान बादशाहों के हाथ में रही। राजाजीका का एक उत्तराधिकारी अहमद सादिर सीरिया में रहता था। मित्रक पीछे बरा के बादशाह ने उसे अपने यहां बुलाया। और उगमे एक युतया पदवाया। राजाजीका ने उसे मद्रास की पदवी दी। और इस्लाम के प्रचारार्थ निरन्तर खदते रहने की सगाति दी। यह राजाजीका सन् १२९२ में मौजूदा से लड़ते हुए काम आया। इसके बाद पीछे में उमी के एक प्रशास को राजाजीका बना लिया।

सन् १२९३ में तुर्कों के प्रथम सखीम ने मित्र पर धावा किया। और मामलूक मुसलमान को पराजित करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। उमी समय उसने राजाजीकाओं के अन्तिम पंथपर से राजाजीका की पदवा प्राप्त की तब से लेकर अब तक उमी बरा के बादशाह राजाजीका होते आए हैं। यह समय की बखिहारी है—एक समय या जब तुर्क ने इस्लामा सन्धता को प्रथम दख से द्विज मित्र कर दिया था। सन् १२९८ में एक तुर्क बादशाह ने बादशाह पर चढ़ाई करके उसे इस अमानक रीति से लड़ा कि फिर आज तक इस्लाम का राजनीतिक या धार्मिक क्षेत्र बढ़ नहीं बन सका। इस तुर्क आक्रमणकारी का नाम इल्क था। उसके विषयमें लिखा है—'यह आया,

भाकर उसने नाश किया। धाग खगाई, डाल किया और सब कुछ लूट कर चलाता बना।' परन्तु अब से हज़रत के वंशजों ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया तब से वहाँ ने इस्लामधर्म की रक्षा और प्रसार करने में कुछ उठा नहीं रखा।

सुल्तान सलीम अनेक कारणों से मुस्लिमधर्म का संरक्षक कहाया। अली के भाया मुहम्मद ने अन्तिम रूप से पूर्वीय रुम के साम्राज्य को नष्ट करके उसके स्थान पर इस्लाम का साम्राज्य स्थापित किया था। अपने समय में वह सर्वाधिक शक्तिशाली मुसलमान बादशाह था और स्वयं खलीफा के पद ने उसे खलीफा की पदवी दी थी। जिस समय सलीम १ खलीफा की पदवी को ग्रहण किया उस समय उस्माघों और मौलवियों में भारी विवाद उठ खड़ा हुआ था। अन्त में जब मक़ा में उसे खलीफा स्वीकार लिया गया तो वह विवाद मिट गया। अलबत्ता शिया लोगों ने उसे खलीफा न माना। क्योंकि वे किसी भी नामज़द व्यक्ति को खलीफा नहीं स्वीकार करते।

तुर्क का जब कोई नया बादशाह गद्दी पर बैठता तो कैरों में मित्र के और अरब्युव की मस्जिद में तुर्कों के उल्मा सभा करके उसे खलीफा करार देते। और खिलाफत की सनद देने की रस्म पूर्ण की जाती। सुल्तान को अरब्युव की मस्जिद में उल्माघों की स्वीकृति और शेखुलइस्लाम के हाथ से खलीफा की तस्वीर ग्रहण करनी पड़ती थी। तब से यह मक्का, मदीना, करबला जेरूसलम आदि मुस्लिम तीर्थों का संरक्षक माना जाता था। वह पवित्र चिह्न पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद का खयादा, अली की तस्वीर और उनका कबरा, तथा अन्य वस्तुओं को पाम रखता था। इस प्रकार तुर्क सुल्तान अब तब खलीफा होते आये थे।

जब योरोप में महायुद्ध हुआ। और तुर्क के सुल्तान ने अर्मेनी का साथ दिया। तब सत्तार भर के मुसलमानों में हलचल मच गई। परन्तु यतुर खायद जाय ने इस अशान्ति को दूर करने के लिये घोषणा कर दी कि हम मुसलमानों के धार्मिक चिह्नों और कानूनों को नहीं

नहीं पहुँचाये। हम तुर्क के उन सन्धियों से छद्म रहे हैं जो हमारे राष्ट्र से मित्र गये हैं। एलीज़ा ने हमारा कोई भगवान नहीं है। परन्तु युद्ध के बाद विजया मित्र राष्ट्रों ने तुर्क साम्राज्य को द्विध मित्र कर डाला। महायुद्ध से प्रथम तुर्क साम्राज्य का क्षेत्रफल ३० लाख १० हजार २२४ वर्ग मील था। और आबादी २ करोड़ १२ लाख ७३ हजार ६००। पर सीडर की रानि के आधार पर तुर्की के अलीज़ा के प्रदेश एतान्तिये गये और चारम, मका मदीना आदि सीया पर एलीज़ा का कोई अधिकार न रहा। मेम्पोटा मिया और पेलेस्टाइन को मायटण्ट के सहाने से ब्रिटेन ने कब्जे में कर लिया। जर्मन-फरवजा पर भी एलीज़ा का अधिकार न रहा। इस प्रकार अर्मेन महायुद्ध ने विजया मित्र का धातु कर दिया। एलीज़ा अपने महल में लगभग नज़रबन्द कर दिये गये और १८ लाख वर्ग मील में फैला दुश्मन तुर्क साम्राज्य का लगभग १ हजार वर्ग मील ही रह गया !!

१९२० में यह सन्धि हुई। उसी समय एक तुर्क युवक ने तुर्क राष्ट्र की रक्षा के लिये एशिया माइनर में सत्तार उठाई। उसने पूर्वी एशिया माइनर पर कब्जा कर लिया। और योशेविना से सन्धि करके टर्की के बहुत से प्रदेश वापस कर दिये। इसका बाद यूनानियों ने बहुत से प्रदेश छीन लिये। २ वर्ष में उसने गामो ल्यासि पैदा करली। प्रारम्भ में उसे अंग्रेज़ों ने एक विद्रोही डाकू समझा। पर अन्त में उससे सन्धि करनी पड़ी और उससे तुर्क और कमास पारा की प्रतिष्ठा बहुत ही बढ़ गई।

( ७ )

## इस्लाम के धर्म सिद्धान्त

— ❁ —

हज़रत मुहम्मद साहब के कथनानुसार—१२४००० नयी ससार में हो चुके हैं। १०४ पुस्तके ईरवरीय हैं। १८००० दोनिए सृष्टि में हैं। इस्लामी साहिब में मुहम्मद साहब की ६ लाख उक्तिएँ हैं। हज़रत मुहम्मद साहब के कथनानुसार मुसलमानों के लिए नीचे लिखे २९ आदेश हैं —

- १—पाँच वक्त निमाज़ पढ़ना।
- २—मक्का की हज़ करना।
- ३ ४०वाँ हिस्सा ख़ैरात करना।
- ४—१ मान्य रोज़ा रखना।
- ५—अल्लाह और रसूल को मानना।
- ६—बहिरत में दूरो ग़ैरमाछों को मानना।
- ७—ईद मनाना।
- ८—पक्ति बोध कर नमाज़ पढ़ना।
- ९—मक्का की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ना।
- १०—चार स्त्रियों तक बियाह करना।
- ११—आवागमन न मानना।
- १२—शराब न पीना।
- १३—दरान की आज्ञा मानना।

१४—आक्रि को ब्रज करना ।

१५—आक्रि को धन छीन लेना ।

१६—कपट-सुद करना ।

१७—मूर्ति खण्डन करना ।

१८—सूअर को इरास समझना ।

१९—शुक्रवार को इरास ममाज पढ़ना ।

२०—अज्ञान देना ।

२१—अयामत के समय सुदा का न्याय होना ।

२२—भग बुरा करने याका सुदा इ ।

यद्यपि साधारणतया यह समझा जाता है कि मुयजमानों का धर्म ग्रन्थ 'क़ानशरीफ़' परदा भाषा में लिखा गया है । परन्तु अहमद अल्लुदीन सूयूती अपनी पुस्तक 'तफ़सीरे इत्तेक़ान फी उल्मिल कुर्धान' में लिखते हैं कि—कुर्धान में ७४ भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं । अपने पद के समर्थन में वे अक्षरक्रिन् अलसारी इब्ने अबीबक़ अलवारी, सद्दि दिब्ने मनसूर, अयूबक़ यास्ति, मुहम्मद अल्लुदीन, मयाक़बी, इब्ने जीजी वर फ़गी अयूनुद्दम, अयू हासिम फिरमांनो, हाज़ी तातुदीन इत्यादि की साक्षिपे उपस्थित करते हैं । उन के विचार से नीचे लिखी ७५ भाषाएँ कुर्धान में हैं ।

(१) क़ुरेशी (२) फ़िनानी (३) हुजैली (४) ग़रअमी (५) ग़ज़रजी (६) अरअरा (७) नमीरी (८) ब्रैले ग़ालावा (९) ज़द्दमी (१०) यमनी (११) अज़विग़ानोई (१२) क़दी (१३) तमोमी (१४) हमीरी (१५) मयना (१६) ज़हमी (१७) सादुल अलीरी (१८) हज़रमूती (१९) सुद्मी (२०) अमातकी (२१) अलमारा (२२) ग़स्तानी (२३) मज़हजी (२४) लुजाई (२५) ग़स्तक़ाना (२६) सवाई (२७) अग्माना (२८) बन् हनीक्रिया (२९) साजवी (३०) तई (३१) धामरिन् (३२) सायसी (३३) आसा (३४) मानी (३५) सफ़ाक़ा (३६) जुजामो (३७) यलाई (३८) अज़रही (३९) हवज़ानी (४०) अलमरी (४१) यमानी (४२)

सलीमी (४६) अम्मारी (४७) अय्यूनी (४८) नसरिन्गे सुधायीय्यी  
 ४९) अफो (४७) हजाजी (४८) नवई (४९) ईसी (५०) कुआई (५१)  
 काविन्ने वली (५२) काविन्ने खली (५३) तहारीय्यी (५४) रफीय्यी  
 (५५) शम्सली (५६) सैमी (५७) रवायी (५८) आदिन्ने खुजैयो (५९)  
 सादिन्ने यफ्री (६०) हिम्यी (६१) इमानी (६२) अज्जली (६३) जल  
 मिन्ने यफ्री (६४) संस्कृत (६५) हट्टी (६६) फार्सी (६७) रूमी ( ८)  
 अगी (६८) अजमी (७०) तुर्की (७१) निव्वी (७२) सुयानी (७३)  
 बरबरी (७४) क्रिस्ती (७५) यूनानी ।

कुर्बानों में समय २ पर परिवर्तन होने के भी प्रमाण पाए गते हैं ।

नं०	किस के मत में	कुरान की अक्षर-संख्या
१	सुयूती इन्ने अ-पास	३२३१७१
२	" अत्रिन्नेखसाय	१०२७०००
३	सिराजुलकारी अब्दुल्लाहिन्नेमसूजद	३२४६७१
४	" मुजाहिद	३२११२१
५	अब्दुलखान अ-दुआहिन्ने मसूजद	२२२६७०
६	सिराजुलकारी अन्यथा	३००२६७०
७	अब्दुलखान	३४१४८२
८	कमीदतुल किराघत "	३२०२६७
९	दुआय मुतबरक "	४४६४८३
१०	रमूजुल कुर्बान सुहम्मद हसन यफ्री	४०२६६

इसी प्रकार का मत मेद शब्द संख्या में भी है ।

नं०	पुस्तक का नाम	किसके मत में	कुरान की शब्द संख्या
१	अब्दुलखान	हमीद आरज	७६२२०
२	" "	अब्दुलखानजीजिन्न अब्दुल्लाह	७०४३६



न०	पुस्तक का नाम	किसके मत में	कुरान की शब्द संख्या
३	तिरातुलकारी	इमाद शारम	७१४३०
४	"	मुहम्मद	७१२४०
५	"	अब्दुल्लाह	७०४३६
६	कफीदुलबिराद्यत	अब्दुल्लाह	८६४३०
७	मिनातुलकारी	"	७६४३०
८	मुयूती का अदुल	मुहम्मद इलीम अनवारी	७०६३३
९	मुहम्मद इलीम व मोट	अनेका के मत में	७०४३७
१०	" " "	" "	७०४३७
११	रमुतुल कथान	मुहम्मद हमन अली	७६४३

इस प्रकार कुरान की सूता की संख्या में भी मतभेद हैं। तिरातुलकारी अब्दुल्लाह का तर्जुमीरित कुरान, तर्जुमीरित इलीम, कफीदुलबिराद्यत रमुतुल कथान और दुआपमुतयरिक में इमाद अब्दुल्लाह, इलीम साहब अतारा और मुहम्मद इलीम अली के मत में कुरान में ११४ सूतें थीं।

परन्तु मुहम्मद तर्जुमीरित मुयूती अपनी तर्जुमीरित इलीम की उल्लेख मिनातुलकारी में लिखते हैं कि— दुआपमुतयरिक में ११३ सूतें थीं।

तथा अब्दुल्लाह ने कुरान के कुरान में ११६ सूतें थीं। अब्दुल्लाह के इलीम से सिद्ध होता है कि इलीम उस्मान के कुरान में ११६ सूतें थीं। उमिरुतिने अब्दुल्लाह ने मुनामान में एक कुरान पाया था जिस में ११६ सूतें थीं। इसी प्रकार और भी बहुत से मतभेद हैं। परन्तु वतमाद कथान में ११४ सूतें हैं। जो साधारणतया सभी मुसलमान स्वीकार करते हैं।

सूतों की भांति आयतों में भी मतभेद है। दुआपमुतयरिक, कफीदुलबिराद्यत अब्दुल्लाह का तर्जुमीरित कुरान तिरातुलकारी तथा रमुतुल कथान में कुरान की ६६६६ आयतें मापी हैं।

तफसिरे इत्तेकान की उलमिह कुरान के मत में आयतों की मख्या इस प्रकार है ।

मदीनियों के मत में	६२१४
मक्कियों " " "	६२१२
शाम वालों " " "	६२५०
यर्मियों " " "	६२१६
ईरानियों " " "	६२१४
कूफियों " " "	६२३६
अ० इनेमतउद के मत में	६२१८
इब्ने अरराम के मत में	६६१६
अदानी के मत में	६०००
भिन्न भिन्न मत से	६२१४ आदि

कुर्बान की आयतों में परस्पर मतभेद भी देखने को मिलता है । और इस प्रकार जब कोई आयत किसी के विरुद्ध आती है तो पूर्व आयतें मन्सूख मानो जाती हैं । इस भाँति कुर्बान का आयतों के 'गलित्व' और 'मनसूख' दो भेद हैं । 'नसख' धातु से नासिख और मनसूख शब्द बना है, जिसका अर्थ मिटाना, बदलना रगाना नाशित करना, आदि है ।

कुरान शरीफ ६ बाब २३ हजार ७२ करिश्तों द्वारा उतरा माना जाता है और उस में ७० हजार विद्याओं का समावेश बताया जाता है ।

कुरान शरीफ में कुछ ऐसी भी बातें हैं जो अन्य धर्म ग्रन्थों की दृष्टि से अनोखी भी प्रतीत होती हैं । सुनिष्—

१—खुदा आदमी को बहका देता है ।

२—खुदा सब से बड़ा कपटी है ।

३—खुदा ने क्राफिरो के दिखों पर मोहर लगा रक्खी है ।

४—अगर खुदा चाहता तो सबको सीधा रास्ता दिखा देता ।

५—खुदा ने प्रत्येक शहर में पापियों के सरदार छोड़ रखे हैं ता क ये लोगों को बहकाने और धोखा देते रहें ।

- ६—शैतान खुदा म कहता है कि जिस तरह तुने मुझे बहकाया उसी तरह मैं भी जयामत तक क्राफियों को बहकाऊँगा ।
- ७—खुदा ने जयामत तक क क्रिये क्राफियों के दिलों में दुरमनी और दोड़ भर दिया है ।
- ८—खुदा घात में लगा रहता है ।
- ९—बदिरत म गराय देने को और मास खाने को तथा ५० हूँ और छांटे बीज करने को मिलेंगे ।
- १०—बदिरत वाले भाजन तो करेंगे परन्तु पेशाब और पाखाना महीं होगा ।
- ११—बदिरत वास्त को सौ गौ चादमा को काम शक्ति भोग विद्या के लिये दा दायगा ।

इस्लाम के सम्बन्ध में सर्वोपरि यह बात तो हमें स्वीकार ही करनी होगी कि इस धर्म ने पूरे ईश्वर की मत्ता को सर्वापरि मागा—और मूर्तिपूजा तथा भाँति २ को उपासनाओं को बलपूर्वक रोका । इस्लाम धर्म का दूसरा खूबी यह थी कि उसके नियम सरल, सुमाध्य और प्राकृतिक थे । फिर भी जैसा जातिधर्मों की जागृति के समय हुआ करता है मुहम्मद साहब की मृत्यु के थोड़े ही दिन बाद से इस्लाम का गढ़ २ शाकायें पूजने लगी थीं । जिन प्रकार अरब के विजेताओं ने पूरे और परिधम में अपने साम्राज्य को विस्तार किया उसी प्रकार अरब के विद्वानों और माधुयों ने समस्त भरक दशन, विज्ञान और विद्या २ को खोज २ कर अपने भयद्वार को बढ़ाना प्रारम्भ किया । दशनों ईसाई धर्म ग्रन्थ अरबी में अनुवाद किए गये । सुन्नत, अल्लतापून, अरस्तू के सम्भार दशन शास्त्रों, भारत के विज्ञान, वैद्यक, ज्योतिष आदि के विषयों की सहस्रों पुस्तकों का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ । भारत के साथ अरबों का सम्बन्ध नया न था—करोड़ों का व्यापार होता था—उसी व्यापार के साथ भारतीय सभ्यता का भारी छाप अरबों समाज पर छगगर्न था । प्रारम्भिक खलीफाओं के काल में पसरा में उच्च पदों पर हिन्दू मौवर थे । शान कामार में हिन्दू व्यापारिका का कोठिया थी । सुलतान अफगानिस्तान सीत

तान, और यलूचिस्तान इस्लाम मत स्वीकार करने में पहले धीरे थे।  
 बखरा में एक बहुत बड़ा बौद्ध विहार था, जिसके मगधीय अध्यायी  
 खलीफाओं के द्वारा नष्ट करवाये गये। यनेहों बौद्धमत की विचारों के शत्रु  
 बाद भरही मात्रा में हुए। किमानुसुद, थीर विषयदा या मुर्गिय  
 सुभुत घरक, निवान, पंचमन्त्र-द्वितीयदेश, जाम्बय धार्मिक धर्मों में  
 मध्य भरही में अनुवाद किए गए। फलतः इस का विचारों की विचारों  
 का धारक के मुनज्जमानों पर भारी प्रभाव पड़ा। थीर ३ धार्मिक विषयों में  
 विचार, नये २ दार्शनिक और धार्मिक भावनाओं का उद्भव हुआ।

उही दिनों मुसलमानों को 'गिया' सम्प्रदाय का जन्म हुआ। इस  
 'शिक्षा' के प्रतीकात्मक प्रचलित किया और ईश्वर के रूपमान की  
 से इस में यह विरोधता थी अवतार वाद [ ईश्वरवादी ] का प्रमाण  
 ( तामुख ) को सिद्धांतों में स्थान दिया गया। थीर यह सिद्ध किया कि  
 ब्रह्म २ मनुष्य गुदा के रतवे पर पहुँच सकता है।

'अली इब्नाई' सम्प्रदाय में पहले धार्मिक विचारों का विकास हुआ।  
 तत्काल का प्रभाव को नागाहता करार दिया। सम्प्रदायों को जान लाना ईश्वर  
 शरीर पवित्रता को भी उन्होंने अनावश्यक बतलाया। ईश्वर को ईश्वर  
 भा ईश्वर हुए जिन्होंने कुर्बान के अल्लकारिक धर्म रखे। ईश्वर को ईश्वर  
 मध्य और सगुण ईश्वर में भेद किया जाने लगा। इस धर्म में ईश्वर  
 में लोगों का ध्यान 'दोष' लेकर भरती किया जाता था। ईश्वर को  
 को कही २ ईश्वर का स्तुति दिया जाने लगा।

इसके बाद एक मौलाना सम्प्रदाय का जन्म हुआ जिसका धर्म  
 था कि कुर्बान सदा के लिये निरान्त ईश्वर का स्तुति करने  
 जाति और धार्मिक की उन्नति के साथ ३ सम्प्रदायों का ईश्वर को  
 रहता है। अल्लिमाबी सम्प्रदाय ने कुर्बान के ईश्वर को ईश्वर  
 जिस धर्मकार्य में अव्यवस्थित होकर प्रभाव ईश्वर को ईश्वर  
 धर्म ( शिक्षा ) और ध्यान ( शिक्षा ) का ईश्वर को ईश्वर  
 के योगाभ्यास का अनुकरण किया। इस सम्प्रदाय का

हुआ। धीरे २ सूफियों के अकमठ (खानकाह) स्थापित हुए जिनमें अद्वैत (बहद सुल बज्द) का उपदेश दिया जाता था; संयम (मरत कुशी) भक्ति (इश्क) योग (शगल) को मुक्ति (निजात) का मार्ग बताया जाता था। धीरे २ ऐसे कवि और वैज्ञानिक भी अरब के अन्दर पैदा होने लगे जो तथा, कुरआन, बहिरत, रोजे नमाज सबका मज़ाक उड़ाने लगे। साधार ईरान का अस्वाकार करने लगे। तुर्की का यज़ीद को ज़िपकी मृत्यु सन् ७५४ में हुई ऐस ही विचार वालों में गिना जाता था।

अबुल अला अलम आका जो ११ वीं शताब्दी में अरब के एक महान् विद्वान् और महारत्ना थे। आवागमन में विरवान रखते थे, अत्यन्त निरामिषाहारा थे। दूध शर्बत और चमड़े का भी व्यवहार नहीं करते थे। प्राणिमात्र पर दया का उपदेश करते और ब्रह्मचर्य को आत्मा के लिये अन्तरा यत्नाने थे। मसजिद नमाज, रोजे, और दिखावट के कड़े विरोधी थे। वे उदात्तिया का भाति सरार को माया मानते थे।

इनमें कोई सन्देह नहीं कि इस्लाम में इस सम्भार परिवर्तन का कारण अरब का विचार स्वतन्त्रता तथा ईसाईमत, ज़रदुस्त मत, और भारतीय हिन्दू तथा बौद्ध मता को एका साक दिखाई देता है। विरक्ति (अजज़िहारोमिनदुनिया) का सिद्धांत भी इसजाम में भारत से गया— क्योंकि मुहम्मद साहब तो इससे विरुद्ध थे।

प्राचीन मुस्लिम मौज्जा और मूकिया में परस्पर विरोध बराबर चला आता रहा है। फिर भी लाखों मनुष्य इन सूफियों के प्रान्तज्ञाहों में जमा होते थे। और उनके विचारों का उनपर भारी प्रभाव पड़ता था।

मसूर पठ प्रसिद्ध सूफी फकीर था। और वह भारत में कुछ दिन रहा था। उसका मुख्य सिद्धांत 'अनज हज़' अर्थात् 'सोइह' था। यह आदमी अपने विचारों को के वाग्य सन् ३२२ में अनेक यातनाओं के बाद सूती पर चढ़ा दिया गया। यह सबको खुदा मानता था और दुर्ग को घोखा समझता था। इसजाम में इन भाँति के प्रचारकों ने इसजाम की भाषना में अपने मतवालों के ज़िप पक़ता, उदारता और प्रेम के धीज बो

दिष्ट थे। यही कारण था कि इन साधुओं का भारत की जनता पर बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा था। ये लोग खूब साक्षर करते, भक्ति रस के गीत गाते, नाचते और मस्त हो जाते थे। शेरश बंदरूहीन १३ वीं शताब्दी में भारत में था—यह इतना दुर्द्धा हो गया था कि हलचल भी न सकता था। पर जब भगवत भजन होता तो यह अपने विस्तर से उठकर नाचने लगता था—जब, उसने कोह पृथ्वी कि शेरश इस कयलूरी का अवस्था न कैसे नाचता है तो यह जवाब देता —शेरश कहा प्रेम नाच रहा है।

अब हम इस्लाम और मोहम्मद साहब के सम्बन्ध में कुछ निम्न विज्ञान ग्रन्थकारों के वचन उद्धृत करते हैं—

मिस्टर जेनकिन्सटन साहब 'हिस्ट्री ऑफ इन्डिया' (History of India) नामक पुस्तक में लिखते हैं —

'जिस समय धरम धारों की पेशी व्यवस्था थी। उसमें कूटे नहीं (मोहम्मद) का जन्म हुआ। मोहम्मद के सिद्धान्तों को मनुष्य जाति की एक भारी संख्या बहुत दिनों से धारण किए हुए हैं। मोहम्मद के उद्योग और सिद्धान्तों का धार्मिक रूप कुछ ही वर्षों में ही। इसमें सन्देह नहीं कि जिस कठोरता पड़पात और रक्तपात ने मोहम्मद के सिद्धान्तों का प्रचार हुआ उससे तो यही साबित होता है कि इन सिद्धान्तों का कर्ता मनुष्य जाति का भक्ति भगवान् शत्रु था।'

वाशिगटन एरविज साहब 'मोहम्मद की जीवनी' (Life of Moham mad) में लिखते हैं —

"मोहम्मद ने जो घोषणा-पत्र मदीने पहुँच कर सुनलमानों के लिये जारी किया था उसमें उलने लिखा था कि—'जो सुनलमान मेरे धर्म का प्रचार करना चाहे उसको शास्त्रार्थ के आगे सनहापदमा चाहिये क्योंकि उसका रक्तव्य है कि जो धारमी इसलाम धर्म को बढ़ावा न करे उसको यमपुर भेजदे क्योंकि जो सुनलमान इस्लाम के निमित्त लड़ता है चाहे वह मारे चाहे मर इसमें सन्देह नहीं कि उसके लिये बहुत मूल्य इनाम तैयार है। सजदार हो रंग

जो सुनलमान धर्म के निमित्त, सजदार चलाता "

इस्लाम पाने का अधिकारी हो जाता है। खड़े घालेके रक्त का एक बिन्दु भी व्यर्थ नहीं जाता। जो दुःख और बुरा घम युद्ध में मुसलमानों को उठाना पड़ता है वह हरथर के यहाँ ज्यूँ का र्यूँ जिन जिया जाता है इस्लाम के लिये मरता और कष्ट उठाना समाज और रोजे में भी बढ़कर है जो मुसलमान इस्लाम के निमित्त युद्ध में मारा जाता है उसका मारा पाप समा कर दिया जाता है। वह सदा के लिये शुगमयनी अपमराधों के साथ धानन्द भोगता है। काकिरा को इस्लाम में जाने के लिये सड़वार से बढ़कर दूसरा उपदेश नहीं है मुसलमानों को चाहिये कि काफिर भूत-पूतकों को नहीं कहाँ देखें मार डालें।' जिस समय मोहम्मद ने सड़वार की धार पर इस्लाम को फैलाने की घोषणा की और जिस समय उसने अरब के लुटेरों को विदेशियों के लूटने का चयन दे दिया उन्ही समय से उसके जीवन चरित्र में लूट मार का होना आरम्भ हो गया।

सम्पद मोहम्मद खतोष 'हिन्दी भाषा की पंजाब' (History of the Punjab) नामक पुस्तक में लिखते हैं —

“अरब की लुटेरी जातियों को मोहम्मद का छोटा और परलोक के सुख और घन शौकत का आलस्य दिखाना उनका जोश को भड़काने के लिये काफी था इस आलस्य में उनकी युद्धशक्ति और विषय कामना भभक उठी मोहम्मद ने अरबियों की मुक्ता हई फामना में विमर्जी भर दी। कुरान और सड़वार को हाथ में लेकर और अपने अनुयायी मुसलमानों की शक्ति से उन्माहित होकर मोहम्मद ने संसार के शिष्टाचार और धार्मिक शीलता के साथ युद्ध छेड़ दिया। उन्हें भीति और जीवन विचारों का प्रचलित करके समाज और राजनीति की सम्बन्ध में मोहम्मद ने स्थिति उत्पन्न कर दी।”

डा० मिरमिख का कहना है —

‘कुरान की अधिकांश बातें दसव ज्ञान, और बुद्धि से बाहर की है उसकी शिक्षा बिल्कुल अवैज्ञानिक ही नहीं है अपितु गुराईभी उत्पन्न करती है।’

डा० फोरमन लिखते हैं—“जो आदमी कुरान को पढ़कर उसपर चलेगा वह अवश्य निर्दयी और कामी बन जावेगा।”

( ८ )

## भारत की छोर

— ❀ —

हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि मुगलमानी धर्म उत्पन्न होने के पूर्व स ही अरब का सम्बन्ध भारतवर्ष से रहा है। मुहम्मद साहब के जन्म से लगभग १०० वर्ष पूर्व मसीह की प्रथम शताब्दि से ही अरब और ईरान के द्वारा ही भारतीय व्यापार का योरोप से सार सम्बन्ध रहा है। और भारत के पूर्वी एवं पश्चिमी तट के बन्दरगाहों वीरूपाक्ष, कल्याण, सुपारा और मलाबार के आस पास अरब सौदागरों की बड़ी २ बस्तियाँ बसी हुई थीं। दक्षिण भारत और लका में तो अरबों और ईरानियों की अनेक बस्तियाँ थीं। यहाँ तक कहा जा सकता है कि रोम और यूनान के जो लड़ाऊ भारत आते थे उनके माविक अरब होते थे। भारत और चीन के व्यापार भी ईरान के हाथ में थे इसलिये पूर्वीय तटों पर भी अरबों की बड़ी २ बस्तियाँ थीं।

उस समय के अरब सीधे लादे, वीर, साहसी, विरवासी और अटल प्रकृति होते थे। वे अपने २ खान्दानों और ज़बीनों के कुछ देवताओं की मूर्तियों को पूजते थे। भारतवासियों से उनका खूब मेल जोड़ा था और भारत में उनकी बस्तियाँ सुशोभित थीं।

भारत का अरब, फिलिस्तीन, मिश्र, काबुल, असीरिया आदि देशों से सदैव ही व्यापार विनिमय होता रहा है। यहूदियों के प्रख्यात बादशाह सुलेमान ने अपने ' ' ' के निर्माण कराने के समय भारत से बहुत



चीजों-जैसे मयल, राम, मोरपंख और हाथी दाँत आदि मँगाने थे। मिथ के प्राचीन वादगाहों ने भारत से व्यापार करने के लिए दो लाख स्तार के किले बंदरों की स्थापना की थी। ईरान के बादशाहों ने भारत की खाड़ी में कई बन्दरगाह इमी हादे में बनाये थे। रोम और यूनान के विद्वानों का भारत के भूगोल का अग्रोभानि परिचय था। प्लूटिनीस ने देवुम नामक पुस्तक में बताया कि मसीह की तीसरी शताब्दि में परेगानोर में रोमन जागी की एक बस्ती थी और मिथ के बन्दरगाह सिकन्दरिया में हिन्दुओं की आबादी थी। बिन्दु शमन सम्राट् कागफहा ने तीसरी शताब्दि में इज्जत करा दिया था।

ईरानियों ने दक्षिण और उत्तर के दराने पर, पारस के निष्ठ, ओरोन्डा का बन्दरगाह बनाया था।

अरब और भारत का व्यापार बहुत घनिष्ठ था। उनके देश में पश्चिम तट पर बहुत से बन्दरगाह थे। दक्षिण में उदुम और पूर्व में सेतुर प्रधान थे। अरबी मन्दाह बहुतों भारतीय नौकाओं पर नौकरी करते थे और इस समुद्र के दोनों तटों पर इनकी बस्तियाँ थीं। रेशों के मत से १४ वीं शताब्दि तक अरबों का अस्त्रावर तट पर बैसा ही आधिपत्य था जैसा कि बाद में पुर्तगालियों का होगा।

इस्लाम धर्म के प्रचार होने पर अथात् मुहम्मद साहब के आगमने पर भी अरबों का आतापात बराबर भारत में बसा रहा। परन्तु भय उन में नहीं सम्भला, विचारधारा और नये आदर्शों का समावेश था।

यह बात हम सातवीं शताब्दि के मध्य भाग की कह रहे हैं क्योंकि सन् ६२६ में मक्का नगर में मुहम्मद साहब की आधीनता स्वीकार की गयी और सन् ६३२ में २ वर्ष बाद समस्त अरब ने। इसी सन् में इज्जत मुहम्मद मर गये। परन्तु सन् ६३२ में हराक (मेसोपोटामिया) शान (सीरिया) की अरबों ने विजय किया। और ६३७ में यैजुज मुहम्मद (जेरुसलेम) पर कब्जा किया था। अन्ततः सातवीं शताब्दि के अन्त तक लगभग सारा और तुर्किस्तान तथा चीन की पूर्वी सरहद तक इस्लाम में मिश्र गया था।

इसी बीच में पच्छिम में मिथ्र, फार्सिया तथा समस्त उत्तरीय अफ्रीका पर इस्लाम की क़त्तह हो चुकी थी, और प्रबल रोमन साम्राज्य को घोर फाड़ बाँटा था। और स्पेनों पर अपना अधिकार कर लिया था।

अरबों ने यही तेज़ा से चारों ओर फैलना प्रारम्भ कर दिया तब उनकी सेनाएँ जगहों, मैदानों, पहाड़ों और नदियों को पार करती हुई भारत की सीमा तक पहुँच गई। उन्होंने ईरान के बेड़ों को सदैव के लिये समुद्र में समाधि दे दी थी और भारत महासागर पर अपना प्रकाधिपरव जमा लिया था साथ ही हिन्द महासागर के व्यापार को भी सबथा हथिया लिया था।

मुसलमानों का पहला बेड़ा सन् ६३० में उमर की खिलाफ़त में हिन्दुस्तान में आया। उस समय उस्मान सम्रीकी वहरेन का सूबेदार था। और उसने एक सेना समुद्री रास्ते से थाने के बन्दर भेजी। खलीफ़ा ने इस बात को पसन्द नही किया। और भविष्य में ऐसा न करने की साक्षीद करा दी। पर उस्मान की खिलाफ़त में भारत की ओर फिर कई कौज़ी दस्ते आये। पर विफ़ल मनोरथ लौट गये।

सातवीं शताब्दी के मध्य में जबकि मध्य एशिया और योरोप में मुसलिम सत्ता अपना प्रताप दिखा रही थी भारत में सम्राट् हर्षवर्धन की सत्ता का अन्त हो रहा था। उत्तरीय भारत का साम्राज्य टुकड़े २ हो रहा था। कुछ पुरानी कुड़ नई जातियों ने नवीन राजपूत शक्ति बनाकर पच्छिम से खल बर उत्तर पूर्वीय तथा मध्यभारत में अनेक छोटी २ ग़ियासतें क़ायम कर ली थीं। और मुसलमानों के प्रथम आक्रमण के प्रथम हीवे पलायन से दक्षिण तक और बंगाल से अरब सागर तक प्रदेश को अधि कृत कर चुके थे। परन्तु कोई प्रधान शक्ति इनको वशमें करने वाली न थी और आये दिन इन के परस्पर संग्राम होते थे। पुराने साम्राज्यों की राजधानियाँ ख़राब हो गई थीं।

ऐसी दशा में धर्म क्षेत्र में भारत का पतन होना स्वाभाविक था यौद्धों ने ब्राह्मण धर्म और उच्चजाति के विशेषाधिकारों को धुँचल डाला था, उस के प्रतिकूल स्वरूप ब्राह्मणों ने इन नवीन शासकों की

## इस्लाम का विप-मृत्त

फिर पुराने ब्राह्मण धर्म को नये रूप में खड़ा किया था। वेद के कुछ देवता शिव की मूर्ति बन गये थे। और अब हिन्दू और बौद्ध प्रतिमा पूजन और कम काण्ड के प्रपंच में फिर कम गये थे। कनिष्क के प्रयत्न से उत्तरीय भारत में महायान सम्प्रदाय की नींव बस गई थी, जिस में बोधि सत्तों की पूजा होती तथा बौद्ध मन्दिरों का समस्त कम काण्ड हिन्दू मन्दिरों के ढग पर ढल गया था, प्रारम्भ में जो बौद्ध मत न ससृष्ट का स्थान छीन कर प्राकृत या पाली भाषा को दिया था—अब वह फिर संस्कृत को मिल गया था और ब्राह्मणों की अब बन आई थी।

धीरे २ वैष्णव मत, शैव मत और सात्त्विक समुदाय ने मिल कर बौद्ध धर्म को भारत से निकाल बाहर कर दिया। कुछ उच्चश्रेणी के लोग उपनिषद् और दर्शन शास्त्र को मनन करते थे। पर मर्म साधारण का धर्म पथ अन्धकारमय भरहित और कजब था। जिस जाति भेद का बौद्ध धर्म ने कष्ट कर स्त्रियों और शूद्रों को मनुष्यत्व के अधिकार प्रदान करना चाहा था वह फिर और भी अन्ध भित्ति पर जायम हो गया था। ब्राह्मणों के अब अनाथ अधिकार बढ़ गये थे। वनता को जाति पाति और ऋष भीष की दलदल ने फाँस लिया था और असंख्य भयानक देवी देवता, शक्ति, जप, तप, यज्ञ, इयन, पूजा पाठ, दान, मन्त्र, स्मृति, और जटिल कमकाण्ड के सिवाय कोई धर्म न रह गया था—इस बात का पता उस समय के साहित्य, चीनी तथा अरब के यात्रियों के वृत्तान्तों, मिहो, तथा शिला लेखा से लगता है।

५ वीं शताब्दि में फाहियान ने उत्तर पश्चिम में पुरातन काबुल से मथुरा तक हीनयान सम्प्रदाय देखा था पर उसके दो सौ वर्ष बाद ही जप हीनसांग ध्याया तो उसने महायान को उसका स्थान पर देखा। उसने शिव की पूजा को बड़ी तेज़ी से फैलते देखा, और अयोध्या के निबट दुर्गा के सामने मनुष्य बलि चढ़ती देखा थी। और बुद्ध की मूर्तियों के स्थापन शिवमूर्तियाँ स्थापित होते, तथा बौद्धों को सम्प्रदाय देकर निकालते देखा था। उसने नरमुण्डों की माला पहिन कापालिकों को भी देखा था। उस

ने ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, और मध्य एशिया तक योद्धों और शैवों को बराबर पाया था। परन्तु इसके बाद के चरम के पात्रियों ने योद्धों के धर्म को सुप्त हुआ पाया। भक्तवत्सनी ने ११ वीं शताब्दि में शैव, वैष्णव, शक्ति, सूर्य, चन्द्र, महा, इन्द्र, अग्नि, स्कन्द, गणेश, यम, कुबेर आदि असंख्य मूर्तियों की पूजा देखी। योद्धों और शैवों, शक्तों और क्वाथिकों का मध्यांश सघर्ष देखा—जो धर्म का घग घन गया था। इस प्रकार उस समय भारत सैकड़ों उत्तरदायित्व शून्य छोटी २ सिरासतो, सैकड़ों मत मतान्तों और अनगणित मताधारहीन कुरीनियाँ और अधविश्वासों का घर था।

पाठकों को स्मरण होगा कि खलीफ़ा अब्दुल मलिक के शासन काल तक मुस्लिम शक्तियों में गृहयुद्ध छूट और पर था। और वह खलीफ़ा बलोद के काल तक भी जारी था। उस समय हज़ाज़ इन्हें यूसुफ़ कोफ़े का हुकूम था। उसके आधीन प्रदेशों के अज़ाफ़ी जाति के कुछ विद्रोही मुस्लिमान हिंदुस्तान में भाग लिये थे और सिन्ध के राजा दाहिर के शरण में रहन लगे थे। इनका सरदार मुहम्मद पारिस अज़ाफ़ी था। राजा ने उन्हें बागीर देकर अपनी सेना में रण लिया था। हज़ाज़ ने इन्हें मागा पर दाहिर ने देने से इन्कार कर दिया। हमी बीच में चरम का एक जहाज़ कक्षा से छाहता था उसे कच्छ के लुटेरों ने लूट लिया। हज़ाज़ ने दाहिर से इसका हरजाना मांगा। दाहिर ने कहा—वह स्थान वहाँ जहाज़ लुटा है हमारे राज्य की सीमा से बाहर है अतः हम हरजाना नहीं देंगे।

इसपर हज़ाज़ ने मन् ७१२ ई० में मुहम्मद बिन-क़ामिम को सिन्ध पर भेजा। यह हज़ाज़ का भतीजा था। यह १० वर्षों का साहसी मुसलमान राजक केवल ६ हज़ार सैनिक लेकर बलोचिस्तान की विस्तृत मर भूमि को पार करता हुआ बिना किसी रोक टोक के सिन्ध पर चढ़ आया। दाहिर के सेना पतियों और नारायण कोट के किलेदार (जो अब हैदराबाद कहाता है) को बालबाल देकर शरणागत मुसलमानों के सरदार मुहम्मद पारिस अज़ाफ़ी ने प्रथम हाँ बरा में कर लिया था। समय पर वे स्वयं भी युद्ध में विपरीत होगये। राजा १० हज़ार सवार और १० हज़ार पैदल से

कर सम्मुख गया। एक दिन तक घोर युद्ध हुआ। इस्लाम भागने ही को था कि एक ब्राह्मण ने उससे कहा कि यदि मन्दिर का भग्न भाग दिया जाय तो हिन्दू सेना भाग जायगी—यहोंकि हिन्दुओं का यही विश्वास है। कासिम ने मरहटे पर निशाना दाग कर गिरा दिया। उसके गिरते ही हिन्दू सेना भाग न सकी। राजा दाहिर एक तीर से घायल होकर गिर गया और उसका गिर जाट लिया गया। जिसे भाँखे पर खगाकर दिखाया गया। उस वेश सेना भाग खड़ा हुई और मन्दिर ध्वंस कर दिया गया। उसी ब्राह्मण ने युद्ध वृत्ति पाने के लालच में एक गुप्त स्वर्णाने का पता इस्लाम को दिया जिसमें से ४० सेगें चाँदी की सिक्कियाँ जिनमें १७२०० मन सोना भाग था जिसका मूल्य १ अरब ७२ करोड़ २० होता था। इसके अतिरिक्त १००० मूर्तियाँ दोस मोने की थीं। जिनमें सबसे बड़ी का वजन ३० मन था। हीरा पद्म मोती लाल और मामिक इत्यादि का जो कई ऊँचे पर काटा गया।

जब यह खजाना इस्लाम को मिला गया तब उसने ब्राह्मण को उसी दम इरत करा दिया। साथ ही जिन सेनापतियों ने राजा से विश्वासघात किया था उन्हें भी काट कर दिया गया। इसके बाद उसने धर्मस्थ मन्दिरों और मूर्तियों की विध्वंस किया, हजारों हिन्दू स्त्री पुरुषों को काट दिया और अनेक गाँव लूट लिये। वह प्रत्येक गाँव के द्वार पर जाता और वहाँ के निवासियों को सुवर्णमान होने तथा बहुत सामान देने का आदेश करता था। राजा पालन में तनिक भी देर होने पर वह काट और लूट करा देता था।

यह धन जमाया कहाता था। अरब की शरह के मुताबिक काफ़िरो में धनधान को १) साल मध्यम श्रेणी वाले को २) साल और नज़्दूरों को ३) साल देना पड़ता था। बादमें यह नियम होगया कि जीवन निर्वाह होने पर जो धन काफ़िर के पास बच वह सब छीन लिया जाय।

फरिश्ता लिखता है कि मृत्युमुख्य दण्ड देना ही जज़िया का उद्देश्य था। काफ़िर लोग इस दण्ड को देकर मृत्यु से बच सकते थे। इस्लाम ने अत्यन्त बड़ाई से यह कर वसूल करना शुरु किया। और आपस

की घृष्ट के कारण वित्तने ही हिन्दू राजाओं ने इस नवागत व्यापारी का स्वागत किया।

वित्त समय सिन्ध पर यह गुज़र रही थी। उस समय भी अरब के व्यापारी मालाबार तट पर अपनी बस्तियाँ बना रहे थे। वे शांत थे और हिन्दुस्तानी स्त्रियों से विवाह करते थे—तथा उनका रहने और घर बनाने में कोई भी बाधा न थी। 'दिशाम' का कबीला भागकर भारत में कोंकण और कन्याकुमारी के पूर्वी तट पर चम गया था। खूबे और नवायत जातियाँ वहाँ के बस की हैं। हिन्दू राजाओं ने इन विदेशी व्यापारियों की कोफ़ी भावमगत की। उन्हें मस्जिदें बनाने और ज़मीन ख़रीदने का आज़ा दे दी। इससे मालाबार में बड़ी ख़ूबशी फैली। शताब्दि में मुसलमान फैल गये। और उन्होंने अपने धर्म का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। यह कटपट फैला भी। इसके कारण थे। एक तो मुसलमानों में पादरी का पुरोहित न थे—प्रत्येक व्यक्ति धर्म प्रचारक था। दूसरे उनके वैभव, धन और वीरता से मालाबार तट की दरिद्र जातियाँ प्रभावित हो गई थीं। फिर उनके विचारों, स्वभावों रीतियों और आलचलन में एक नवीन कीलक था—और उनका धर्म सीधा सादा और सुबोध था। उनकी उपासना हृदयग्राही थी। वे दिनभर में अनेक बार ईश्वर का ध्यान करते थे। रेनान जैसे कट्टर नास्तिक और विद्वान् फ्रेंच लेखक ने एक बार लिखा था कि 'जब मैं मस्जिद जाता हूँ तब मेरा हृदय एक अकथनीय शक्तिशाली भाव से उद्बिम्बित हो जाता है और मेरे मन में खेद उत्पन्न होता है कि मैं मुसलमान न हुआ।'

रेनान जैतों के हृदय पर जब यह प्रभाव पड़े तो औरों का तो कहना ही क्या है। उनमें नमाज़ की सज़ादी, रोज़ा की सख्ती, ख़ैरात और उध के नियम, परस्पर समता का व्यवहार देवी बात थीं कि देखने वालों पर उनका असर पड़ता था।

यह वह समय था जबकि हिन्दू धर्म में एक विप्लव मच रहा था। बौद्ध जैनी, जैन, शैव, शक्त, परस्पर भयानक सघर्षों, दुर्रीतियों अन्धाधिरवासी में फँसे थे। प्राकणों ने बौद्ध और जैनियों

कर दिया था और शैव और वैष्णवों की प्रबलता हो रही थी। राजनैतिक व्यवस्था क्षिप्त मिश्र थी—प्राचीन राजघराने लज्जित हो गये थे और नये वंश उठ रहे थे। हार्दिक दुर्बलता और अ-व्यवस्थाओं का हाव राजघरानों तक में गिर गया था। जिसका एक उदाहरण मुनिपू—मालाबार कोर्दंगलूर के राजा चेरामा पैम्पळ ने स्वप्न देखा कि चांद के दो टुकड़े हो गये हैं। मुनिपू उसने अपने दरबारी विद्वानों से उमका अर्थ पूछा—पर किसी का भी उत्तर उसे न भाया। स्वप्न से एक मुसलमानों का काफ़िला छाछा से छोट रहा था—उसके सदर सहीबद्दीन ने जो स्वप्न की व्याख्या की वह राजा को प्रसन्न गई। वस यह मुसलमान हो गया। उसको नाम अम्बुर रहमान सामीनी रक्खा गया। और घरब को खड़ा गया। और वहाँ से उसने मलिक हुनने दीनार शर्क हुनने मलिक, मलिक हुनने इबीय यो मलापार भेजा। इन्होंने ११ स्थाना पर मस्जिदें बनाई और इस्लाम का प्रचार किया।

राजा वहाँ से नहीं छाटा। ४ साल बाद मर गया। पर आज भी सब ज़मो रिन तिहासन पर बैठाया जाता है उमका तिर मूँहा जाता है और उसे मुसलमानी ज़िगम पहनाया जाता है। एक मोपळा उसके तिर पर गुड़द रखता है। राज्याभिषेक के बाद वह चाति पहिण्डत हो जाता है। वह न तो अपने परिवार के साथ सा सकता है, न नायर लोग उमका छुद्रा खाते हैं। वह समझा जाता है कि ज़मोरिन अन्तिम चेरमन—पेरुमल का प्रति निधि है और उमके छोटने की प्रतीक्षा कर रहा है। अब भी जब कालीकट और द्राविनकौर महाराज अभिषेक के समय सख्तवार कमर में धाघते हैं तब वह घोपणा करते हैं कि मैं इस तन्ववार को उम समय तक रखूँगा जब तक कि मेरा धाघा जो मक्के गया है छोट न आवेगा।

दक्षिण के मोपळे वहाँ मुसलमानों के बंशधर हैं। उस समय उनका बड़ा महत्त्व था। मोपळा महा पिरल्ला का अपन्न रा है। मोपळा का अर्थ है “जेष्ठ पुत्र या वृद्ध”। उन्हें बड़े अधिकार प्राप्त थे। मोपळा नाम्बुनरी ब्राह्मणा के बराबर बैठ सकता था यद्यपि नायर पेसा नहीं कर सकता था। मोपळा का गुरु थंगळ राजा के साथ पाळको पर सवारी कर सकता था।

झमोरिन की कृपा से धरम के व्यापारी बहुत से उसके राज्य में बस गये राज्य को उनके व्यापार से अर्थलाम भी था, साथ ही वे अपने पराक्रम से घास पास के राजाओं को परास्त करके उनकी ज़मीनों पर राजा का अधिकार करा देते थे, बड़ा २ राजा का अधिकार होता, मुसलमान व्यापारियों की मदियाँ भी व्यापिता हो जाती। कालीपट के बदरगाह की नींव इसी प्रकार पड़ी थी। राजा ने घाज़ा प्रचारित की थी कि मक़वान जाति के प्रत्येक मल्लाह परिवार में से एक या अधिक आदमी इस्लाम धर्म ग्रहण करे। इसका फल यह हुआ कि अब मसूनी ने १० वीं शताब्दि में भारत की यात्रा की तब १० हजार मुसलमानों की बस्ती उसने चौल में पाई थी। इन्हें बतूता ने सभारत से मलाबार तक सर्वत्र मुसलमानों की अच्छी थावादी देखी थी और वे अच्छी दालत में थे। उसने गोघ्रा को मुसलमानों के अधिकार में देखा था। हिनोर में भी मुसलमानों का राज्य था। मगलौर में ४ हजार मुसलमान बसते थे। मद्रास की मुस्लिम जातियों का जीवन आरम्भ यहाँ से होता है।

मगद बली ने तेरहवीं शताब्दि में मदुरा और त्रिचनपुरली में बहुत से मनुष्या को मुसलमान किया। यह जफ़र तुक शाहजादा था। सत्यद इब्नाहीम ने तेरहवां शताब्दि के आरम्भ में पाण्यो पर चढ़ाई की और १२ वर्ष उसने पाण्य पर राज्य किया। पर अन्त में यह हारा और मारा गया।

बाबा फ़ाज़लुद्दीन एक साधु था जो पैनुकोका में रहता था। उसने वहाँ के राजा को मुसलमान बनाया और मस्जिद बनाई। यह ११६८ ई० में मरा।

मदुरा प्रांत में मुसलमानों ने १०२० ई० में प्रवेश किया। उनका नेता मालिकुल्ल—मल्लूक था। इसके साथ एक बड़ा साधु अलियारशाह भी था जो मदुरा की कचहरी में दफ़न है। पाञ्चवक गांव में एक मस्जिद है जिसके खिये ११ वा और १२ वीं शताब्दियों में ६ गांव घमाते खाते कुछ पाण्य ने खगा दिये थे। यह वान १६ वीं शताब्दि में बीरप्पा नायक ने भी जारी रखा था।



## इस्लाम का विप-वृत्त

घोख मयडल के किनारे बहुसंख्यी मस्जिदों बन गई थी और वहाँ के राजाओं ने जो सुगीते इन मुसलमान व्यापारियों को दे रखे थे—उसमें उन्हें बहुत लाभ था। 'बस्माक' लिखता है कि—“मावर समुद्र के उस किनारे जो कहते हैं जो कोजम से जहोर तक फैला है। इसकी लम्बाई ३०० फरसङ्ग है। यहाँ के राजा को देर कहते हैं। जब यहाँ से यहाँ २ जहाज़, चीन, हिन्द और सिन्ध के मूल्यवान् मालों से लदे गुजरते हैं तो पेना जान पड़ता है कि ऊँचे २ पहाड़ यादशान लगाये पानी पर तैर रहे हैं। फारिस की खाड़ी व द्वीपों से इराक और सुगमान, रूस और योरोप की सुन्दर चीजें यहाँ आती हैं और यहाँ से चारों ओर जाती हैं—क्योंकि यह व्यापार का केन्द्र है।’ आगे चलकर वह लिखता है कि—

“कायल पहनम् में, किर क हाकिम मस्जिदुल इस्लाम जमालुद्दीन ने घोड़ों की प्राइस लगाई थी, प्रति वर्ष १० हजार घोड़े फारससे मावर आते थे जिनकी कीमत २२ लाख दीनार था।

रशीदुद्दीन के मतानुसार जमालुद्दीन १२३३ ई० में कायल का अधिकारी हुआ था और उसका भाई खत्रीबखान उसका भायक था—यही व्यक्ति सुन्दर पाण्डव का मन्त्री रह चुका था। पाण्डव राजा ने जमालुद्दीन के पुत्र ब्रह्मदीन अहमद को दूत बना कर चान के महाराज युयुत्सेला के साथ १०८९ में भेजा था।

इस्मत्तुल्ला का कहना है कि तामिळ प्रान्त में जब कि मदुरा का हाकिम गयासुद्दीन अहमदनामी था—राजा पीरबख्तान की सभा में २० ०० मुसलमानों का पत्र दस्ता था। राजा के सूचेदार हरि अफ्फा थोडियार की आधी सभा में होनाबर में मुसलमान हाकिम थे।

पाठक देखेंगे कि ७ वीं शताब्दि में दक्षिण में मुसलमान व्यापारी किस हद पर आकर धीरे धीरे सैनिक, सेनानायक मन्त्री, मेदों के अधिपति, दूत, अभ्यर्थ और हाकिम तक बन गये।

पान्थु दक्षिण में जिन प्रकार गुप्त थाप इस्लाम भारत में जब जमा रहा था—उत्तर में इसका रूप कुछ और ही था। मुसलमान और सिन्ध को विज

कर जब क्रासिम खीट गया, तब लगभग ३०० वर्ष तक और कोई शासक मर्या नहीं हुआ। इस समय पश्चिम प्रांत पर कुछ मुसलमान शासक थे—परन्तु बाठियाबाद गुजरात कोकण—दायवख मोमनाथ भडोच, रथायत, मिहान, चोल में इनका बस्तियाँ बस रही थी। कहुल म पुरुषाक्षय राजा राज्य करता था। परस्पर के कगड़े खूब थे। परन्तु मुसलमानों से सभी की दिलचस्पी थी—यह अज्ञुत बात है। सुलेमान सौदागर ने लिखा है—'बलदार (बलभिराय) के बराबर अरबा से हिन्दुस्तान में कोई राजा प्रेम नहीं करता।

१०वीं शताब्दि के अन्त में अफगानिस्तान भी मुसलमानी तख्तार के आधीन हो गया था। और अफगानों ने अब गैर घाटी से छोटे २ धावे भारत पर आरम्भ कर दिये थे।

१०वीं शताब्दि में एक तुर्की तुलान सुबुक्तगीन को सुरासान को और गङ्गनी को दफ़्तार कर बैठा था। भारत में घुस आया। उस समय पनाब के राजा जयपाल थे। इन्होंने खैबर घाटी को सुरक्षित रखने का और डफर से किमी भी शत्रु को भारत में न घुसने देने की शर्त पर खोज हमीद नामक एक मुसलमान को पेशावर और खैबर का इलाका देकर भवाब पादिया था।

सुबुक्तगीन को आगे बढ़ता देख महाराज जयपाल ने आगे बढ़ कर जला जाशद पर छावनी डाल दी। यह स्थान खैबर घाटी के पश्चिमी मुहाने पर अफगानिस्तान की सीमा में है। सुबुक्तगीन युद्ध का समय डालता रहा। महाराज जयपाल इस भेद को नहीं समझे। जब शीत पड़ने लगा और धफ गिरने लगी तब सुबुक्तगीन ने भाग बोल दिया। जयपाल की सेना तबों ने निकम्मी हो गई थी उससे युद्ध करते न बना। निदान वे छोटे। परन्तु खोज हमीद ने डफर से घाटी का मुहाना रोक दिया। महाराज जयपाल घाटी में सेना नहित थिर गये। निरुपाय होकर उन्होंने बहुत सा धन हाथी घोड़े आदि देने का वचन देकर सधि कर ली। और सुबुक्तगीन के आदमियों को साथ लेकर साहौर खीट आये। परन्तु वे छेने पर सुबुक्तगीन के आदमियों से महाराज का जगहा हो गया। सुबुक्तगीन भारत में घुस आया।

## इस्लाम का विप-वृत्त

में युद्ध हुआ और राजा की पराजय हुई। उनकी समस्त सम्पदा लूट ली गई। राजा ने अग्नि कुण्ड में प्रवेश कर आत्मघात किया। यह शेष हमीद की नमक हुरामी थी। पंजाब पर मुसलमानों का अधिकार हो गया।

क़ासिम के आक्रमण के बाद बहुत से मुसलमान कहीं उत्तर भारत में फिरे लगे थे। उनकी तरफ हिन्दू शासकों का कुछ ध्यान भी न था। इनकी ज़ियारत करने तुर्किस्तान, फारस अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान से बहुत से मुसलमान आते जिनका कोई रोक टोक और देख भाल नहीं होती थी। बहुत से मुसलमान माधु हिन्दू साधुओं का वेश धारण करके मन्दिरों और मठों में रह जाते थे। प्रसिद्ध कवि शेरशादी मोमनाथ के मन्दिर में कुछ दिन हिन्दू साधु बनकर रह गया था—इस बात का जिक्र वह शुद्ध अपना 'बोन्ता' नामक किताब में करता है। ये सब लोग बहुधा आसुमी करते थे और भारत की ज़बर्दस्त मुसलमान शक्तियों तक पहुँचाते थे। तथा हिन्दू राजाओं की परिस्थिति का अध्ययन किया करते थे।

यज़ा बिन उस्मान अज़हज़बीसी बिस्ने कश्कुल महज़ूब की रचना की। यह गज़नी का रहने वाला था। लाहौर में आकर बसा और १०७२ ई० में वहाँ उसकी मृत्यु हुई। शेर इस्माइल सुज़ारी ग़्यारहवीं शताब्दी में आया। फ़रादुद्दीन अज़गर जो ग़ज़क़िस्तुल ख़ौज़िया और मन्त कुतैर का रचयिता है, बारहवीं शताब्दी में आया। शेर सुईनुद्दीन चिश्ती ११२७ में अजमेर में आया। उस समय धृष्टीरान धीरित थे। अजमेर के मन्दिर के महत्त गणदेव और योगीराज अजपाख ने हमके हाथों इस्लाम धर्म स्वीकार किया था। चिश्तिया मठ के बड़े बड़े सूफियों में कुतुबुद्दीन बख्तियार काब, फ़रादुद्दीन ग़ज़शकर निज़ामुद्दीन औज़िया आदि थे। सुहरवर्दी सम्प्रदाय वालों में जलालुद्दीन समीज़ी ब्रादरियों में जलालुद्दीन सुवारी, बाबा फ़रीद पाकपरनी थे। अब्दुल ज़दीम अज़बीला जिन्होंने सूफी महय के विज्ञान इज़्जल थरवी की पुस्तकों की टीका लिखी है और इस्ताने कामिल की रचना की है, ११८८ में वहाँ आया। इन्हीं शताब्दी में सैयद मुहम्मद नेसदराज़ ने महाराष्ट्र में बहुत कुछ इस्लाम का प्रचार किया। पिर सद्दुद्दीन

ने खोजा जाति को धर्म दिया और सैयद मुसलमान ने मोमना को । इन सूफियों के अतिरिक्त बहुत से फकीर भिनका सम्बन्ध किसी भी मज़हब से न था । देश भर में घूमते थे इनमें शाह मदार, सज़ी सरधर और मतगुरु गिर प्रसिद्ध थे ।

इन साधुओं ने दिष्ट भिन्न हिन्दुओं में इस्लाम के प्रचार में कितनी सहायता दी है—इसपर विचार करना चाहिये । इन लोग न बिना हो गोर कुत्त के और बिना ही तखवार की सत्ता के मुसलमान धर्म का प्रचार किया । और यह उम्र समय अति सरल था क्योंकि जैसा चलचरुती लिखता : हिन्दू धर्म इस योग्य ब रह गया था कि उसमें कोई भी प्राज्ञयोत्तर व्यक्ति गलतसम्मान से रह सके । प्राज्ञ और पत्रिय मार्गों उम्र बाल में हिन्दू समाज के सर्वैतर्वा थे । इसक सिया ये सभी समाचार-विनिमय करते थे ।

बारहवीं शताब्दी में एक फकीर सैयद इमाहीम सहोद भारत में आये और दक्षिण में बहुत से लोगों को इस्लाम की दीक्षा दी । इसके बाद बाबा सरहीन ने भी बड़ा भारी इस्लाम का प्रचार किया और पेन्नुकोयडा हिन्दू राजा ने इस्लाम स्वीकार कर लिया । उधर यह प्रचार तब ही भीतर बढ़ रहा था और इधर इनके द्वारा दक्षिण भारत का तार जूय उन्नत हो रहा था । मुसलमानों का इतना मान था कि उन दिनों हिन्दू राजाओं की ओरसे मुसलमान पक्षधर और राजदूत दूर देश चीन तक के द्वार म भेजे जाते थे । मन्त्री और महामन्त्री के पद पर तो बहुत से मुसलमान थे । हिन्दू राजाओं की ओर से प्राण्त्तों के शासक मुसलमान नियत किये जाते थे और हिन्दू राजाओं के आधीन बड़ी बड़ी मुसलमान सेनाएँ थीं ।

गुजरात के बख्तभी राजा बख्तार ने अपने राज्य के अन्दर मुसलमानों का बडे उत्साह से स्वागत किया था । काठियावाड़, कोकण और मध्य भारत के सम्य हिन्दू राजाओं ने भी मुसलमान साधुओं का स्वागत सरकार किया था और उर्ध्व अपने राज्य में इस्लाम प्रचार में काफी सहायता दी थी । हिन्दू राजा इन मुसलमानों का इतना लिहाज करते थे कि एक बार

सम्भ्रात में जब हिन्दुओं ने मुसलमानों की मसजिद गिरा दी थी। तब रापाने हिन्दुओं को भारी दण्ड दिया और अपने स्वर्चसे मसजिद फिर बनवा दी।

११ वीं शताब्दी में घोहरों के गुरु यमन से आकर गुजरात में बसे। ये शिया मन्त्रदाय के थे। इससे प्रथम से वहाँ मूल्हीन ने गुजरात के बहुत से कुनरिया, खेरवाणों और कादियोंको इस्लाम में शामिल कर लिया था। अभिप्राय यह है कि ८ वीं शताब्दी से लेकर १२ वीं शताब्दी तक धरावर ममसा भारत में मुसलमान माधु संत अपने धर्म का प्रचार करते रहे और लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। इस समय तक भारतीयों पर इस्लाम का कोई राजनैतिक प्रभाव नहीं पड़ा था।

भारत पर आक्रमण के लगभग ३०० वर्ष बाद महमूद ने लूट का खाज्ख़ा लेकर अमृतसर दरबारों को इकट्ठा कर धाया सोल दिया। इसने निरन्तर तीन बार तक भारत पर आक्रमण किये और सप्तगढ़ वार परिमोत्तर भारत को तलवार और अग्नि से विज्वल किया। इसने नगरकोट का मन्दिर तोड़कर इसमें से ७०० मन सोना चादी के वर्तन ७५० मा सोना २००० मन चादी और २ मन होरा मोती लबाहरात लूटे थे। यानेरवर के आक्रमण में यह २ लाख हिन्दुओं को ब्रैदी बनाकर ले गया। फरिस्ता लिखता है कि उस समय गङ्गनी शहर हिन्दुओं की सी नगरी मालूम देता था। मटुरा की लूट में उसने १ मूर्ति टोस मोने की पाई। जिनके शरीर पर ११ रत्न थे। मटुरासे वह इसने गुलाम बनाकर ले गया कि मुहम्मद अल-उदवी ने लिखा है कि महमूद ने १११ गुलाम २॥॥ दरये को बेचना चाहा था पर शरीराग न मिले। मटुरा को देखकर महमूद ने खुद कहा था कि यहाँ हजारों महल विरासती के विरासत की भाँति इक़भाव से खड़े हैं जो मंगममर के घने हैं। यहाँ अनगणित हिन्दू मन्दिर हैं। अनन्त धन खर्च किये बिना नगरी इतनी सुन्दर नहीं बन सकती। दो सौ वर्ष के पत्त और परिश्रम बिना ऐसी नगरी का निर्माण भी नहीं हो सकता।

इसके बाद इसने गुजरात का प्रसिद्ध सोमनाथ का मन्दिर लूट। यह विशाल मन्दिर २ ६ खम्भोंपर आधारित था जिनमें अनगणित बहुमूल्य

रत्न जगो थे । ४० मन भारी सोने की जड़ीर से एक भारी घन्टा लटक रहा था । उसमें २ गज ऊँची शिवमूर्ति अधर थी । उसे अपने हाथों से तोड़कर घर्षण्य रत्नों का ढेर महमूद ने लूट लिया । और उस मूर्ति को गजनी ले गया । उसके टुकड़े टुकड़े करव एक टुकड़ा मस्जिद की सीढ़ियों और एक अपने मइद की सीढ़ियों में लगा दिया । और उस मन्दिरके स्थान पर एक मस्जिद बनवा दी जो अब तक बनी है ।

सुदूर गजनी से सिन्धु नदी को पार करके उजाड़ रेगिस्तानोंमें होकर गुजरना और इस तरह गुजरात के दक्षिण तक भारी २ धावे मारना कम आश्चर्य की बात नहीं । परन्तु इसमें भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि सिवाय दो चार राजाओं के और किसी ने उस रोकने की चेष्टा तक नहीं की । इसका कारण तत्कालिक सामाजिक परिस्थिति को हीनता थी । जिसका बखाना अजबखानी—सो महमूद के आक्रमण में उसके साथ था इस प्रकार करता है—

“भारत बहुत छोटे २ राज्यों में विभक्त है । सब राज्य स्वतन्त्र हैं और परस्पर युद्ध में प्रवृत्त रहते हैं । माझग्य अपने अधिवासों की रक्षा के लिए इतन व्याकुल हैं, और जाति भेद का ऐसा दूरे भाव फैल रहा है कि धैर्यों और शूनों को बंद पाठ करते देखकर माझग्य उनपर तजवार लेकर दूट पड़ते हैं । और उन्हें राज कचहरी में उपस्थित करते हैं जहाँ उनको जिद्दा काट की जाती है । माझग्य सब प्रकार के राज कर से मुक्त हैं । हिन्दू बालाप सधा हो जाती हैं । हिन्दू किसी बंधन में नहीं आते, किसी जाति की प्रवृत्ति नहीं करते—वे अपने को और अपनी जाति को सर्व-श्रेष्ठ समझते हैं ।”

हाय ! मेगरमनीज और हुपनसोंग के काख का भारत यहाँ तक पतित हो गया था !”

हम बीच में गजनी और शीरियों में तखवार चलावकी — शीरिया ने महमूद का बंरा नष्ट कर दिया । महमूद के कोई १२० वर्ष बाद मुहम्मद-तोरी ने फिर आक्रमण दिया । तुर्कीराज ने पुरुष सेन के ३ और हम पराजय लड़े बन्नी किया, फिर

छेकर छोड़ दिया । १ बार उसने भाजमल किया और द्वार खाकर बन्दी हुआ तथा घन देकर सुदकारा पाया । यह तेराहवीं शताब्दी की बात है । इस समय भारत में चार प्रधान साम्राज्य बंश राज कर रहे थे । १-दिल्ली और अजमेर में चौहान । २-कन्नौज में गहरवार । ३-गुजरात में सोलंकी और चित्तौड़ में सोलोदिया । ये चारों साम्राज्य यद्यपि परस्पर सम्बन्धी थे पर ये बहुराज्य ।

गुजरात के कुछ सोलंकी सरदार चौहानों की शरण में अजमेर चले आये थे । उनमें से एक न राज सभा में अपनी शूरा पर ताव दिया—यह देख कर पृथ्वीराज के चचा काहूँ कहा—चौहानों के सामने कोई मूर्खों पर ताव नहीं दे सकता—और उन सरदारों का फिर बाट जिया । पृथ्वीराज ने चचा की इस बात पर क्रोध होकर आजा दाहि काहूँ की आत्मा पर चमड़े की पट्टी बाँध दी जाय जो मिया मुद काज के कर्मों न चोखा जाय । मोलहरी सरदारा के मारे जाने के समाचार लघ गुजरात के राजा मुहम्मद खानकी के पास पहुँचे तो वह सना कर अजमेर पर चढ़ आया और सोमवती के युद्ध क्षेत्र में पृथ्वीराज के पिता सोमेरवर का सिर काट लिया । हमजिये सोलंकी और चौहान लज्जित हुए ।

अनन्ताल सोमर दिवली का राजा था । दिल्ली उस समय छोटी सी राजधानी थी । पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द गहरवार दोनों ही उससे भेदने थे । उसने निश्चिन्ता होने के कारण पृथ्वीराज को दिवली का राज्य दे दिया था । इससे जयचन्द मन ही मन में क्रुद्ध था । दूसरी बात यह थी कि देगढ़ की यादवों की राजकुमारी की सगाई जयचन्द से हो गई थी । अभी विवाह न हो पाया था कि पृथ्वीराज यज्ञपूर्वक राजकुमारी को प्याह खाया । जयचन्द इससे क्रोध में लज्जित हुआ । उसने चिढ़कर राजसूय यज्ञ किया और उसी में अपनी पुत्रा का स्वयंवर रचा । सभी आधीन राजाओं को बुलाकर सना कर्म में निरुक्त किया । पृथ्वीराज जहाँ बुलाये गये थे पर उनकी मूर्ति द्वारपाल के ह्यान पर बनाकर खड़ी कर दी गई । पृथ्वीराज ने यह सुना, उसे यह भी मालूम था कि संयोगिनी उसे चाहती हैं, वह भेष

बदल कर अपने मित्र कविचन्द बरदाई के साथ वहाँ पहुँच गया। संयोगिनी ने उपस्थित राजाओं को अतिशय करके पृथ्वीराज की मूर्ति के गले में छप मात्र डाल दी। यह देख जयचन्द क्रुद्ध होकर उसे मारने को भपटा, पर पृथ्वीराज ने सिंह की भाँति भपटकर उसे उठा लिया और घोड़े पर चढ़ा कर तलवार खींचकर गहरयारों को हाथकार कर कहा कि पृथ्वीराज चौहान जयचन्द की कन्या का हरण करता है, जो एत्रिय हो रोक ले।

तलवारें खटकीं। भयानक मारकाट मची। पृथ्वीराज की सेना में १०८ सेनापति थे, और वे दिल्ली से कन्नौज तक १११ कोस के अंतर पर अपनी २ सेना लिये सशस्त्र सदे थे। जयचन्द की सेना में १८ लाख सवार थे। जयचन्द के पुत्र ने खलकार कर कहा—एत्रिय होकर भागते क्यों हो, बोला रख दो और तलवारों से नियट लो, धो विजयी हो डोला ले जाय। संयोगिनी पालकी में बैठा दी गई, और घनघोर युद्ध हुआ। प्रतिदिन दिन भर युद्ध होता और सन्ध्या समय डोला आगे बढ़ता था। १४ दिन युद्ध हुआ, १४ सेनापति मारे गये। पृथ्वीराज के ६ लाख घोड़ा इम युद्ध में काम आये। जयचन्द की भी आधी सेना कट गई।

सोरो में घटकर युद्ध हुआ। गंगा का खज लाख हो गया। अन्त में दिल्ली की सीमा आ गई और जयचन्द को हारकर लौटना पड़ा इससे उसकी कोथारि कुचले हुये सर्प की भाँति गभक उठो।

सोलहियों और गहरयारों ने गुरमदारी को लिखा कि यदि इस समय पृथ्वीराज पर आक्रमण किया जाय तो हम सहायता कर सकते हैं। गुरमदारी १ लाख २० हजार सवार लेकर जाइ चौहा। जयचन्द और सोलहियों की सेना भी सहायता के लिये पहुँच गई। पृथ्वीराज उस समय संयोगिनी के प्रेम में मतवाला हो रहा था। उसने भपट सेना तैयार की, शत्रु उसके बाँके बोर प्रथमही काम आ चुके थे। चरु शत्रुओं और विरवास शत्रियों की कमी न थी, केवल चितौर के चभिगति समरसिंह को उसके पासोई थे, अपनी सेना सहित उसके साथ थे। तलाव के मैदान में दोनों सेनाएँ घावनी डालकर पड़ गईं गुरमदारी ने धुल करके कुछ घबकारा



साँगा और भयभीत होने का बहोता किया, कि एक दिन रात को कथा बक थापा मारा, चौहान ऊपर छेपार होकर खड़े लगे। मुसलमानों के पैर उगड़ गये, वे भागने को ही थे कि मोरक्कियों और गहरवारों ने पीछे से भापा खोज दिया, मुसलमान फिर छोट पड़े। समरसिंह मारे गये। पृथ्वीराज पकड़े गये और मुहम्मदगौरी ने उन्हें ज़ख्म करवा दिया। इस प्रकार दिल्ली के पतन के साथ भारत के हिन्दू साम्राज्य का सखीर का पैयसा हो गया। और सदा के लिये हिन्दुओं का हीर निषास हो गया।

इसके दूर ही यह उसन कन्नीज पर भापा खोज दिया। हम समय जयचन्द को, सेना में २० हजार सवार मुसलमान थे। वे ठाक मुद के मसप डकट पड़े और राजा की सना को काटने लगे। राठौरों की सना विचारित हो गई। और जयचन्द कुतुबुद्दीन पुष का चीर लाकर घाढ़ ममेस गगा में गिर गया और दूब गया। कन्नीज पर उमका अखिहार हो गया। हमने कन्नात्र में १००० मन्दिर तुड़वाये। लूट का सोना और चाँदी ४००० खटों पर, खादकर अक्रान्तिगत्य हो गया। वह सब लूट का माल और लाखों सत्री पुषों को गुलाम बनाकर भाव ख गया तथा अपने सेनापति कुतुबुद्दीन को दिल्ली का राज्य दे गया। वह कुतुबुद्दीन खहलुद्दीन का गुलाम था। वही गुलाम प्राचीन भारत की क्रिस्त का बिधाका बना और भारत में मुसलमानी राज्य की जड़ लमी।

( ६ )

## पठान

— ❀ —

इस प्रकार बारहवीं शताब्दि में दिल्ली के सिंहासन पर पठानों का साम्राज्य स्थापित हुआ जो ३२३ वर्ष तक स्थिर रहा ।

पठानों के लोमहर्ष्य अत्याचार प्रसिद्ध हैं । पर उनमें भी आत्म कब्रह का अन्त न था । ये छद्म, बख्श, कौराज से हिन्दू राज्यों को हड़पने लगे ।

बलाकमैन साहब न लिखा है कि—

‘ हिन्दुओं का धन वेरवर्य ही उनके मारा का कारण हुआ है । हमीने पठान लोग उसे लूटने को आग्रसर हुये । हिन्दू धर्म उनके राजकीय कामों में विघ्न डालता था । अनगिनत तीर्थ पठानों से विध्वंस कर डाले । तीर्थलाने की शाही आज्ञा बिना प्राप्त किये कोई तीर्थ यात्रा नहीं कर सकता था । १४ वीं शताब्दि के मध्यम भाग में प्रत्येक हिन्दू परिवार के बयस्क मनुष्यों की गणना करके आज्ञा निकाली गई थी कि धनवान पुरुष से ४०) मध्यम से २०) और दरिद्र से १०) सज्जिया जिया जाय ।

कुतुबुद्दीन एबक ने हर्षी, दिल्ली, मेरठ, कोयल, रणथम्भोर, अजमेर, स्वास्त्रियर, कोल्लिजर और गुजरात की ईंट से ईंट बसा डाली । हजारों मन्दिर विध्वंस कर दिये । लाखों भगवती फाट डाले ।

कुतुबुद्दीन के गुलाम मोहम्मद इन्ने वरतयार ने एक सेना सेक्टर बिहार और बंगाल की ओर बृच किया । माग म उसने पारी के हजारों मन्दिरों को विध्वंस कर दिया । बिहार और बंगाल में पाल और समवती

राजा राज्य करते थे उन्हें छल से मार डाला। बिहार में उस समय १२००० बौद्ध भिक्षु रहते थे। वहाँ उनका एक बड़ा भारी पुस्तकालय और रिचापीठ थी। उन सब भिक्षुओं को क्रूरता से मार दिया गया और पुस्तकालय और रिचा पीठ को जलाकर खाक कर दिया। इसके बाद ही अलतमश ने उज्जैन पर आक्रमण किया और महाकाश के मन्दिर को विध्वंस कर वहाँ की करोड़ों रुपये की सम्पदा लूट ली।

इस गुलाम वंश के कुल ८ बादशाह हुये और इन्होंने लगभग १०० वर्ष दिल्ली में राज्य किया।

इसके बाद खिलजा वंश का राज्य हुआ जो ३० वर्ष तक रहा। इस वंश के १ बादशाह हुये। फिरोजशाह इस वंश का प्रथम बादशाह था। उसने जैसलमेर पर आक्रमण किया। उस समय अपने सत्ता की रक्षा के लिये निर्यात हो वहाँ की २४०० स्त्रियाँ भाग में मृदु कर जज मरीं। इसका भतीजा अलाउद्दीन दखिय गया और देवगढ़ के राजा रामदत्त से कहा कि मैं चचा से खटकर आया हूँ मुझे शरण दे। राजा ने शरण दे दी। पर अलाउद्दीन ने अवसर पाकर रात के समय—जब कि राजा की सेना अल्पप्रसूत थी, छूट मार मचा दी। करोड़ों का धन लूटकर सहज भस्म कर दिया, राजवंश को काल कर दिया। धिक्कार को पश्चिमी के लिये बंध गया और युद्ध के बाद वहाँ ११ हजार राजपूत स्त्रियाँ प्रतिष्ठा पचाने को आग में पश्चिमी के साथ जज मरीं। गुजरात के राजा करण को भार उसकी रानी और बेटी को लीन लिया। रानी से स्वयं विवाह किया और बेटी से अपने पुत्र का।

इसके शासन में हिन्दुओं की अति दयनीय दशा हो गई थी। एक बार बाज़ी ने उससे कहा था—“आपके राज्य में जात्रियों की ऐसी दुःखता हो गई है कि उनके स्त्री घरों में मुसलमानों के द्वार पर रोते और भीख मांगते फिरते हैं। इस दुःख काम के लिये यदि खुदा आपको जन्मत न भेजे तो मैं जिम्मेदार हूँ।

फिरोजशाह के शासन में यह विधान था कि ज्यों ही कोई शाही मौकर हिन्दुओं से कोई कर चाहे त्योंही वह अति विनीत भाव से सिर झुका कर दे

हे। यदि कोई मुसलमान किसी दिन्नु के मुँह में धूकना चाहे तो उसको चाहिये कि सीधा लड़ा रहकर मुँह को खोले रहे जिससे उस मुसलमान को अपना मतलब हासिल करने का पूरा सुभीता रहे। मुँहमें धूकना किसी सुरी भावना से नहीं सिर्फ हिन्दुओं की राजमफि की परीक्षा के लिये है। केवल इस्लाम की महिमा प्रकट करना और हिन्दू धर्म से अनुजनीय घृणा प्रदर्शन करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। जो किसी प्रकार भी अनुचित नहीं। क्योंकि खुदा ने कहा है कि काफ़िरो को लूटो, उन्हें गुलाम बनाओ और उन्हें क़त्ल कर दो। जो इस्लाम न क़बूल करें उनसे ज़हरन कराओ। हिन्दुओं से निरुद्ध व्यवहार करना हमारा धर्म है यह मुहम्मद साहब की आज्ञा है। सज़िया लेकर काफ़िरो को छोड़ देना चाहियत है यह सिर्फ़ अबूहनाफ़ की राय है और सबने क़त्ल का ही हुक्म दिया है।"८

पाठक सोच सकते हैं कि यह मनोवृत्ति कितना ज़बरदस्त थी, और इसने किस प्रकार हिन्दुओं को विचित्रित कर दिया होगा।

इसके बाद तुग़लक़ धरम के ६ बादशाहों ने लगभग १०० वर्ष राज्य किया। मुहम्मद तुग़लक़ एक भयानक ख़ूनी धादमी था। वह हज़ारों स्त्री पुरुष ब्राह्मणों को एक जगह घिरवाकर उनमें शिफार के शीक से भीतर धुलता था और विविध प्रकार के खेलों से उन्हें क़ाश करता था। नाक काट लेना, थाँसों निकलवा लेना, गिर में छोड़ की फील ठोकना, आग में छलवाना, ख़ाज खिचवाना, आरे से चिरवाना, हाथी से कुचलवाना, गिर से फड़वाना, भाँप से डसवाना और सूज़ा पर चढ़वाना उस के दरवा के प्रकार थे।

फ़िरोज़शाह तुग़लक़ ने जब नगरकोट को विजय किया तब गोमाम के टुकड़े सोयदों में भरकर हिन्दुओं के गले में ज़टकवा दिये। और बाज़ारों में फ़िराक़ खाने की आज्ञा दी। जिसने हन्कार किया उसको तिर काट लिया। उसने सुना कि एक ब्राह्मण मूर्तिपूजा करता है और हिन्दुओं को दर्शन के लिये बुलाता है। उसने ब्राह्मण और दशक सभा को ज़िन्दा फूँक देने का हुक्म दे दिया। इसने सैकड़ों मन्दिर विध्वंस कर दिये। जब वह धम्पू गया और

वहाँ का राजा भेंट लेकर मित्रने आया तो कितोत्रशाह ने उनके मुँह में गोमास भरवा दिया ।

एक पठान बादशाह ने एक हमले में मेवात के एक लाख मनुष्यों को मार डाला था । दूसरे पठान बादशाह ने एक हिन्दू राजा की जीती खाज खींचवा ली थी । एक पठान बादशाह ने अपनी राजधानी दिल्ली में उठवा कर देवगिरी छे जाने का हुक्म करके दिल्ली के सब मित्रासियों को वहाँ चले जाने का हुक्म दिया था । जिससे हजारों नरमारी मार्ग ही में मर गये थे । एक पठान बादशाह ने कश्मीर के वास्तव, बुदे, यस्वों सभी को जाल करवा दिया था । सैकड़ों मनुष्य उसमें अपने नगर की प्राचीर पर कटवाकर जगा दिये थे । एक बादशाह ने दक्षिण में सत्रह वर्ष में ५ लाख हिन्दू मरवा दिये थे । दक्षिण के एक मुसलमान राजा का यह स्वभाव था कि यदि सबक पर किसी की बारात जाती देखता तो बुद्धिमान को पकड़वा मँगाता और उसका सतीत्व नष्ट करके वापस कर देता था । इन क्रूरदर्पण अपाचारों से विभिन्न भिन्न होकर सारे देश का रस सूख गया और समस्त देश में विषाद और शोक की हाव भर गई । नातीपला अठल पाताल में आ दूबो ।

( १० )

## मुगल और तैमूर लगडा

— ❀ —

ईसा की तेरहवीं शताब्दि के प्रारम्भ से 'चंगेज़ खां' ने पूर्वीय एशिया से निकल कर उत्तरीय चीन तथा सातार और अधिकांश एशिया का विजय कर लिया था । सन् १२२० में चंगेज़ खां की मृत्यु हुई । दूसरे ३० वर्ष के अन्दर चंगेज़ खां के उत्तराधिकारियों ने भारत को छोड़ कर लगभग शेष समस्त एशिया और योरोप के पूरे बहुत बड़े भाग को मुगल साम्राज्य में मिला लिया । योरोप पर यह हमला सन् १२३८ में हुआ । योरोपियन इतिहास लेखकों का कहना है कि इससे पूर्व ईसा की ८ वीं शताब्दि में जब अरबों ने यूरोप पर आक्रमण किया था उस समय से इस आक्रमण तक और कोई भयङ्कर आपत्ति यूरोप पर नहीं आई थी । कुछ ही वर्षों में समस्त रूस पोलेण्ड बाल्कन हंगेरी, यहां तक कि पार्लिक समुद्र और पश्चिम में जर्मन तक आधे से अधिक योरोप मुगलों के आधीन हो गया । रूस पर २०० वर्ष तक मुगलों का अधिकार रहा । ये मुगल बौद्ध धर्मानुयाई थे । स्वयं चंगेज़ खां बौद्ध था । और मंगोलिया के प्राचीन भूति पूजक धर्म को भी मानता था । इन्होंने मुस्लिम ईरान और मुस्लिम ईराक को प्रतुष्ट किया था । इसके बाद चंगेज़ खां के पौत्र हलाकू ने पराजित ईरानियों और अरबों से इस्लाम मत ग्रहण किया ।

## तैमूर लंगडा

इस नाम का शासक अपने स्वामित्व और सामग्री नस्ल का एक मुसलमान था जो कुछ गांवों पर अधिकार रखता था। और बहुत से रैवों, ऊटों और घोड़ों का स्वामी था। तथा अपने इलाके में दबदबे वाला आदमी था। इस को एक अति सुन्दरी पुत्री थी जिसे बड़े-बड़े बादशाह मांगते थे। जिनमें तुर्कस्तान का बादशाह भी था। पर वह वही भी शादी करने को राजी न था। इसे गुप्त गुप्त गम रह गया वह जान कर पिता को अत्यन्त क्रोध हुआ परन्तु कन्या ने कहा—पिता क्रोध न करो—यदि इस रहस्य को जानना है तो प्रातः काळ मेरे कमर में आइये। पिता ने प्रातः काळ बाहर देखा तो सूर्य की एक किरण कमरे में खेलती पाई गई और देखते-देखते २ गायब हो गई, तब से पिता को निश्चय हो गया कि कन्या सूर्य से गर्भवती है और उस गम से तैमूर का जन्म हुआ। वह अपने को सूर्य का पुत्र कहता था और इसी कारण मुगल बादशाह और शाहजादे अपने अपने दरबार पर सूर्य का चिह्न लगाने लगे। उनके जन्म पर ज्योतिषियों ने कहा कि यह अनेक राजों को विजय करेगा। यह शत्रुओं का शौकीन साहसी और धीर था। वह वर्षों के साथ खेल में बादशाह बनता और किसी को बर्बर और मुसाहब बनाता। एक बार ऐसा हुआ कि अब तैमूर बादशाह बना तब पर बैठा था थोड़े-थोड़े दरबार ठहराते थे सब एक एक के ने जो चौकदार बना था कहा—‘हुजूर एक ऊट वाला सांझ में गिर गया है’।

तैमूर—अगर सांझ में जहन्नाब था तो सारवान का दुश्मन दिया जाता है कि ऊट को जिन्दा निकाले। वरना जुर्माना दे।

दूसरा लड़का—हुजूर एक बकरी के बच्चे को भेदिया होगा।

तैमूर—इसका कारण गदरियों की खापरयाही है उसके चूतड़ों पर दो दस्तन घेत लगा दो।

तीसरा लड़का—हुजूर हमने एक चोर को पकड़ा है।

तैमूर—उसे फांसी लगा दो।

जबकों ने उसे फाँसी चढ़ा दिया और वह मर गया। यह देखकरके भय-भीत हो भाग गये। जब उस लड़के के पिता और गाँव वालों ने सुना तो इतना रोष तैमूर को मारने को बढ़ा दी—इधर तैमूर के दोस्त हिमायती और घर वाले भी लुट गये। रामा युद्ध ठन गया अन्त में मैदान तैमूर के हाथ ही रहा। इन घटना से तैमूर का ज़ाती प्रसिद्धि हो गई। उसके पास सदाह लोगो का गिरोह बढ़ने लगा। एक बार उसने एक पक्षीसो सरदार के एक गांव पर घावा मार कर गांव पर अधिकार पर लिया। यह गांव उनकी नियामत के बीच में था—अन्त में उसने तैमूर को मार पीट कर भगा दिया। तैमूर यथा भूला प्यासा खोटा तो एक स्त्री से कुछ खाने को माँगा। उसने एक तरतरी गमाँ गर्म पुत्राव दिया। तैमूर ने बहुत खाया—उसने जल्दी से हाथ धुयेक दिया। हाथ जल जाने पर वह हाथ दिखा कर कहने लगा थोड़ा बहुत गम है। स्त्री ने हाथ पर पड़ा—तुम भी तैमूर की तरह उतावले हो जिन मुक्त क्रतह फरमा ही नहीं आता-पर यहादुर बनता है। जो किसी दुरमन के मुक्त में बीच में एक गांव पर क्रब्जा पाकर समझ बैठता है अब मैं अब्दु पादशाह बन जाऊँगा। मूर्ख यह भी नहीं जानता कि जो आदमी अपने हाथ को बचाना और सारा खाना खाना चाहे उसे पहले इंदगिद को समेटना और फिर पीछे बीच में हाथ डालना चाहिये।

स्त्री की बात उसे लग गई। और उसने अपने गांव में आकर फिर से सेना भर्ती की और पास पासके इलाकोंपर क्रब्जा करना शुरू कर दिया। शीघ्र ही सुलतान मुहम्मद के सारे इलाके को पकड़े में कर लिया और अन्त में सुलतान को भी पकड़ कर मार डाला। कुछ दिन बाद काबुल के बादशाह को फ़तल कर उस पर भी क्रब्जा कर लिया।

अब उसने भारत की ओर मुँह पेश।

पहले उसने कुरआन शरीफ़ से शुरुआत किया। उसको खोल कर नियत स्थान पर पढ़ा गया तो लिखा था “ये पैगम्बर काफिर और मूर्ति पूजकोंके साथ युद्ध करके उन्हें क्रब्ज कर” इसके बाद उसने १००० सवार अपने सामने बुझाए और कहा—आप जानते हैं कि हिन्दुस्थान के आदमी मूर्ति



और सूय की पूजा करने वाले काफिर हैं। सुरा और रसूले खुदा का दुश्मन है कि ऐसे काफिरों को कत्ल करें। मेरा इरादा हिन्दुस्तान पर ब्रह्मादकी ध्दाई करने का है। हम पर सब लोग 'धामीन गच्छा' खिल्ला ठठे। तथ अवसर पा सैमूर ने सन् १३८४ ई० में भारत का घोर बाग मोदी।

चौदहवीं शताब्दि पठानों के 'बघ'द चालाचारों में भरपूर व्यतीत हुई थी तभी मध्य एशिया का यह प्रसिद्ध खंगड़ा सैमूर असम्य साठारी भेदियों को लेकर भारत पर बघ आया ठमके साथ ६२ हजार सवार थे। उस समय दिव्हा के तख्त पर मोहम्मद तुगलक था। सैमूर बिना रोक टोक सेना की स हापता से सिन्धु महानद को उतर आया। और तेजी से आगे बढ़ने लगा। जिन प्रदेश और नगरी में गुजरता उसी को लूटा हुआ घरों को जलाता निरपराध स्त्री पुरुषों को कैद करता यद्वा खला आया। मग्नेर में उसने १ बन्दे में १० हजार हिन्दूओं का मरत किया। दिव्ही पहुँचते २ एक आस्र कैदी उसके साथ होगये। उन्हें भोजन देना छप कठिन होगया तब हुक्म दिया कि १५ बप की अवस्था से अधिक व स्त्री पुरुष कैदी करत कर दिये जाय। छातों का ठर लग गया और खूनकी नदी बह गई। पठानों की कायर और प्राणमी सेना शीघ्र ही पिछ भिद्य होगई। दिव्ही में सैमूर ने प्रवेश किया बादशाह गुजरात भाग गया। दिव्हीो वालों ने काभय बचन लेकर द्वार खोज दिया। और धातम सम्पदा किया। भीतर घुसते ही ५ दिन तक सैमूर ने करले धाम कराया। धाय धाय नगर अस्त्र होने लगा। लूट हत्या मत्ती खनात और मरहत्या का असखद रात ५ दिन तक खला। सैमूरी सेना के एक एक आदमा न मौ मौ नागरिकों को खत किया और १ लाख आदमी मरत करके फिरोज़शाही मस्जिद म १६ की नभाज पदी। सैमूर ने अपने विजय उत्सव के मे दिन सुरा और सुन्दरी सबन में व्यतीत किये। दिव्हा से ठमने मेरठ पर आया बोख दिया और पहुँचते ही हिन्दुओं का सिर काटना शुरू कर दिया। ५० हजार स्त्री पुरुष मरत कर दिये, और हजारों जवान स्त्री और बच्चे कैद कर बिये। प्रत्येक सिपाही के हिस्से में २० से लेकर १०० दी तक आवे थे। यहाँ से वह हरद्वार गया—बड़ी गंगा का पर्व था—बहुत

भीष थी—उसने मेले में फाँखेभ्राम खोज दिया—गङ्गा का जल खा से बाल होगया। फरिस्ता लिखता है—

“मुराल सेना लूटने की खाइता से महा भगरी दिह्ली के भिन्न २ स्थानों पर पाताल की भाँति छूटी थी। लूटे हुए द्रव्य को उठाना कठिन हो गया था। वे लोग खाति, धायु, धर्म किसी का भी इयाज न करके सब को बल करते थे। गुर्दों से सबकें रक गई थीं। यह भयकर दृश्य बखन करना अशक्य है। अनुमान १ लाख नर नारी इन पाँच दिनों में दिह्ली में मारे गये थे। तैमूर अन्त में महामारी, दुर्भिक्ष और असह्यता भाग्य में जोड़कर अपरिमित धन और असह्य कौदी लेकर स्वदेश को छोड़ गया। उसके साथ ही पठानों की शक्ति भी धूल में मिल गयी और शासन सैन्यदो के हाथ आया—परन्तु इनका शासन दिह्ली के आस पास था। चारों ओर छोटे २ मुस्लिम राज्य बन गये थे। इन्होंने ३७ वर्ष राज्य किया। अब कौदी बर आया। परन्तु पठानों के जुलम तो उसी भाँति चल रहे थे। सिक्खर छोदी मन्दिरों और मूर्तियाँ तोड़ने और हिन्दू तीर्था और गङ्गा यात्रा को रोकने में लगा हुआ था। एक मातापुत्र को हिन्दू धर्म की भेष्टता का उपदेश देने के कारण पकड़वा मँगवाया गया और अपना उपदेश छोड़ने को मज्बूर किया, पर अपने सब स्वीकार न किया तो उसका सिर कटवा लिया गया।”

तुलक तैमूरी में लिखा है कि प्रत्येक सिपाही के हिरने में १४ हिन्दू आये थे। जो कलज कर दिये गये। इस प्रकार दिह्ली में १२ लाख ८० हजार हिन्दू कलज किये गये।

इस कार्य को करके उसने जमीन में गिरफर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि जिन काम के लिये वह हिन्दुस्तान आया था वह काम पूरा हुआ।

इस विजय के बाद वह क्राबुज छोड़ गया, अब वह बेशुमार धन का स्वामी और महान् वैभव का अधिकारी था। इतिहासकार कहते हैं कि कोई आदमी इसकी वीरता और सम्पत्ति का अनुमान नहीं कर सकता था। यह ८ लाख तक खेदार्थों को पैगम्बी लगाना देता रहा। और २४ लाख

## इस्लाम का विप्लव

२ मास २ दिन शासन करने के बाद खलीफ़ को प्रातः हुआ। और खलीफ़ में इफ़ता दिया गया।

तीसरे के बाद उसका पुत्र सुल्तान मीरानाह खलीफ़ की गद्दी पर बैठा। इसकी मारी शक्तिपरी सुल्तान काशगर ने सुख करने में लगे होती रहीं। इसने उन्नीस वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद इसका पुत्र सुल्तान अबू सरद गद्दी पर बैठा। यह निष्ठा और पेशवा था—इसका माराज खलीफ़ सरदारों ने इसे मार खाने का इरादा किया, पर यह भाग गया। तब उन्होंने इसके छोटे भाई को गद्दी पर बैठाया उसका गद्दी पर बैठते ही अपने तमाम सरदारों को आज्ञा करने का हुक्म दे दिया। इसपर सरदार बड़े घबराये और उस गद्दी से उतार कर छोड़े भाई को गद्दी पर बैठाया। इसके बाद इसका बड़ा पुत्र सुल्तान खोज़ाउमर गद्दी पर बैठा—यह खलीफ़ और म्यापी था, प्रजा इसे बहुत गमन्द करती थी। इसने खड़ाई भगाड़े न किये अपनी प्रजा पात्रन में ही मग्न रहता। इसे क़ूतर खाने का बड़ा शौक था—एक बार वह क़ूतर खाते हुए महल से पैर फ़िसल जाने से गिर गया और मर गया। इसने २ वर्ष २ मास ७ दिन राज्य किया।

इस खानदान का पंचवीं बादशाह सुल्तान मद्रसूद बख़्तर सुयलमान था—इसकी बारम्बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। यह सदा अपने राज्य के खदान की चुन में रहता और दिन भर में कई बार खान पकता। हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की और बहुत से मन्दिरों को जला और लूटा।

एक बार उसने एक पठान बादशाह पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त की। मारवाड़ की जय यह खलीफ़ ने हज़ारा कारों को रौंदना हुआ जब से फूला ला रहा था तब एक घाघण ने तीर मारकर उसका काम तमाम कर दिया। इस प्रकार इस प्रसिद्ध खोद्दा का अन्त हुआ।

इसके बाद खलीफ़ ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया। उस वक्त दिल्ली की गद्दी पर फ़ज्ज़ोर पठान बादशाह इम्राहीन खोदी राज्य करता था।

इन्हीं दिनों में मेवाड़ में महासना खानाबख़्श भी चमके थे। इन्होंने मुख्य मुद्र में १८ बार दिल्लीख़ान की और माक़का के सुयलमान बादशाह

के परास्त किया था। इस प्रकार १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही पठानों की लीजा समाप्त हुई थी और मुगलों की शक्ति सशक्त होने के लिये समय की प्रतीक्षा करने लगी थी।

परन्तु इसका होने पर भी हिन्दू संगठित नहीं हो रहे थे। तैमूर के बाद से अरब के समय तक १५८ वर्ष का दीर्घ काल एक प्रकार से अराजक-काल था। दिल्ली के सल्तनत में ब शक्ति थी, न दृढ़ता थी। परस्पर के युद्ध जारी थे। लोगों की मुसलमानी सत्ता निर्मूलक युद्ध की भाँति अधर काँप रही थी। हिन्दू फिर वने वन समय एक घट्टा देने योग्य भी होते तो यह यह जाती।

क्रान्ति ने अथ ७ वीं शताब्दी में आक्रमण किया था तब से और १०० वर्ष बीत जाने पर १६ वीं शताब्दी में बड़ा अन्तर था। क्रान्ति से मार्ले में मुहम्मद की गई थी। क्रिमी ने क्रान्ति को आत्म समर्पण नहीं किया था। आहौर का राजा जयपाल जय महमूद से पराजित हुआ तो उस ग्लानि के मारे स्वेच्छा से अपने को अग्निहुपड में बाँझकर पशु स्थिर था था, यह हम पीछे लिख चुके हैं।

क्रान्ति के आगमनकाल में प्रायः सबत्र ही हिन्दू राज्य था। महमूद आक्रमण तक भी इनमें कमी न हुई थी। महमूद ने चेष्टा करके पञ्जाब। कुछ अत्र अधिभूत किया, पाँचों मुहम्मदगौरी के अन्तिम आक्रमण के समय बारहवीं शताब्दी के अन्त में भी दिल्ली की हद को छोड़कर बँध हिन्दू राज्य था। इसके बाद धीरे २ एक एक करके हिन्दू राज्य नष्ट ने लगे और मुसलमानी राज्य स्थापित होते गये। प्रथम बिहार फिर ऐवमी यगाल उसके बाद पूर्वा यगाल भी मुसलमानों के आधीन हो गये। अन्त और उज्जैन में अभी तक हिन्दू राज्य थे—तेरहवीं शताब्दी के अन्त में गुजरात में हिन्दू राज्य रहे। कारमीर चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ मुसलमानों के हाथ पड़ा। अकबर के समय तक उड़ीसा हिन्दू राज्य के अधीन था। बदायूँनी ने लिखा है—उड़ीसा का राजा अन्य राजा की वेश सैन्य बल में प्रसिद्ध था। अकबर ने उससे मेख करने को दूत भेजे। तत् १५१० में यह मुसलमानों के हाथ में आया।

को कर देने का प्रण किया। परन्तु इसी बीच में कुछ विरवात घातियों के कारण सांगा को हार खा कर भागना पड़ा और बाहर विषयी होकर खौद भाया। इस विषय के उपरान्त मैं को उत्तम मनाया गया था उस समय लाखों हिन्दू मरज किये गये थे। और शाही लम्बू के गामने छून की नदी यह निकली थी।

परन्तु बादर को दिल्ली के लखत पर चैना नसीब न हुआ यह शीघ्र ही मर गया—उसका पुत्र हुमायू भी जीवन भर मुद्र करता और ऊपर उभर भागता किन्तु हम बीच में एक बार पठान राज औरशाह और उसके एक हिन्दू सरदार देयू न दिल्ली पर अधिकार कर लिया हुमायू काबुल को भाग गया पर यह चिरहाई न रहा। परस्पर की वृत्त और द्वेष ने सबका नारा किया। कप्रबन्ध ने सुरवस्था न होने दी और मैनिफ शासन ने सुप्रबन्ध न होने दिया। इस बादशाह ने बहुत मराए बनवाई। जिसमें एक विवाहित गुलाम रखा जाता था। जिस का यह काम था कि मुदाफियों के लिये भोजन बनाये, पीने को ठण्डा पानी और नदानी को घमें पानी का प्रयत्न भये। सराय में प्रत्येक भुयाष्टि के लिये एक एक चारपाई बादर सहित मिलती थी। इन सबका लखतकारी खजाने से मिलता था। बहुतसी सराये सेढा और मादुकारों ने बनवाई थी। जिनमें बाग खालाव और चाराम की बहुतसी थीं थीं।

इसी बादशाह के राज्य में सौज नियुक्त की गई। बाट बनाये गये। राज निरत किये गये और मित्रके दाखे गये, इससे पड़ोसे भाय कपडा वाजिरतों से तथा जिनस नज़र से शम्दाज करके विकती थी। यद्यपि यह प्रजाहित करने की चेष्टाए करता था पर एकबार इसने चितौर के राजा संभामसिंह पर धावा मोल दिया। और भारी हार खा अन्तिम दिनों यह बगाल में रहा और उधर ही मरा।

उसके मरने पर देश भर में क्रांति मच गई उस समय एक कबीर शाह-धोस्त रहते थे—उन्होंने अपने एक चेखे की हुमायू के पास एक जूना और एक चातुक लेकर भेजा। हुमायू ने कबीर का मतलब समझ लिया। और

इसने फिर से भारत पर चढ़ाई की तैयारियाँ कीं। शाह फारिस से इसने सहायता माँगी, हुमायूँ-दरान, काबुल घूम फिर कर १२ हजार सेना इकट्ठी करके फिर भारत में आया और दिल्ली आगरे पर कब्जा कर लिया। परन्तु इसके ५ मास बाद ही वह मर गया।

उस समय अकबर सिक्क १३ वर्ष का था, और राज्य की परिस्थिति अनिश्चित थी। दिल्ली और आगरे को छोड़ कर उसके पास और कुछ न था। फिर सिक्कन्दरसूर और हेमू उसके विरुद्ध तैयार हो रहे थे। बाबर ने अपने मित्र बैरम के हाथ में अकबर को सौंपा। बैरमल्ला एक धीरे सेनापति और उत्तम योद्धा का लुक था। अकबर ने उसे प्रधान मन्त्री और संरक्षक बनाया। बैरम ने पानीपत के मैदान में सिक्कन्दर और हेमू की संयुक्तसेना को पराजित किया। हेमू बख्त कर दिया गया और सिक्कन्दर को पंजाब में पराजय कर चमा दान दे बंगाल जाने दिया। २ वर्ष बाद अकबर ने स्वाधीन होकर राज्य सम्भाला और बैरम को मरवा भेज दिया पर वह मार्ग ही में मार डाला गया।

उस समय अकबर की शक्ति दौड़ाडोल थी। पंजाब, बालिखर, अजमेर दिल्ली और आगरा तो उसके आधीन हो गये थे। पर पंजाब में अफगानों की अमी शक्ति थी। उसकी फौज में भी जो सिपाही थे अधिकांश तुर्कों लुटेरे थे जो लूट मार के खालिख से ही सेना में भरती हुए थे। और जो सेनापति थे—वे अपने २ अधिकारों को बढ़ाने की चिन्ता में ही रहते थे। जो सरदार जिस प्रान्त में शासक बना कर भेजा गया वह वहाँ का साम्रज्य हाकिम बन बैठा। पर अकबर बड़ा मुत्तैद सिपाही था। वह रात दिन कूच करके इनके सावधान होने से प्रथम ही उन्हें धर दबाता। इस प्रकार ७ वर्ष इसे अपने अनुयाहियों के दबाने में लगे। अन्त में काबुल के शासक ने पंजाब पर आघात किया जो इसका माई पा, परन्तु वह हरा कर भगा दिया गया।

अब आन्तरिक विवादों की मिटा कर वह राजपूतों को दबाने के लिये निकटा। उसकी नीति पूर्ववर्ती मुसलमान शासकों से भिन्न थी। वह सिक्क यही चाहता था कि राजे अपने राज्य पर बने रहें केवल उसकी आधीनता स्वीकार कर लें।

आमेर का राजा उमरा मित्र बन गया और अपनी पुत्री अकबर को दिया थी । अकबर ने उसके पुत्र को प्रधान सेनापति बना दिया । ओरपुर और शम्भू राजपूत शक्तिशाली थे । विशेष करके उत्तर-पश्चिम ओर । ये सब लोग उमरा के सहायक और मित्र बन गये और अकबर ने इन हिन्दू राजपूतों से अपने घर में रितेदारियाँ करवाईं । केवल चित्तौर ही बाँधेला रह गया था जिसने अब तक विरोध किया । और आधीनता स्वीकार नहीं की ।

अकबर ने स्वयं चित्तौर को घेरा । राजा उदयसिंह पयलों में पड़े गये । और शहीद अकबर ने युद्ध दिया । अकबर युद्ध के बाद चित्तौर का पतन हुआ । सहस्रों सिपाय मर गईं और कच्चे हुए गोदा कतरिया बाना पहन कर मरे ।

प्रतापसिंह ने २२ वर्ष अकबर से युद्ध किया और चित्तौर के अतिरिक्त सब प्रदेश जीत लिया । अब राजधानी उदयपुर बना दी गई ।

बंगाल में बाबराना अकबर की अमलदारी अब भी थी । समय पाकर अकबर ने आगमदल के युद्ध में सहायक लिये उन्हें भी मारा कर दिया । राजा टोटरमल बंगाल के हाकिम बने । ये अकबर की सेनापति और प्रधान थे । मुगलमान बादशाह का यह पहला हिन्दू सरदार था । हमने बाद में बारमौर सिन्धु और अ-धर को पतन किया था इन प्रांतों को राजा बीरबल ने पतन किया । और ये यहीं काम भी आये ।

जिस समय दिल्ली में बैठ कर अकबर समस्त उत्तर भारत को अधिपति कर रहा था—उस समय दक्षिण में एक प्रबल हिन्दू राज्य था जो विजयनगर का था । यहाँ के राजा के पास ८ लाख सैन्य भी और यहाँ का वैभव अद्भुत था । उस प्रबल राज्य को पड़ोसी मुसलमान राज्यों ने मित्र कर लाहौर के मैदान में विजय कर लिया । और बड़ी कूटता से हिन्दुओं का विध्वंस किया । फिर वे स्वयं परस्पर लड़ने लगे । अकबर पाकर अकबर ने अपने पुत्र मुराद को सेना लेकर दक्षिण में भेजा और शीघ्र ही अहमद नगर—बाराह और ब्रामदेश अधिपति कर लिये ।

इसने अपनी चतुराई और विजय राज्योक्ति से शक्तिशाली राजपूतों को

मित्र बना लिया। उसने राजपूत सरदारों की भाषीनता में राजपूतों की सेनाएँ भेजी और उन्हें परास्त किया। उसने गुजरात को विजय किया। फिर यर हानपुर और दोखताबाद तक फतह करवा चला गया और दक्षिण में अपनी पूरा दण्डवा पैदा कर लिया। इसके बाद उसने कारमीर को फतह किया। जिसमें उसको कुछ भी कष्ट न उठाना पड़ा। उसके बाद उसी चितौर पर आक्रमण किया। और वही कठिन खड़ाई के बाद उसे विजय किया। इसके बाद उसने यझाज, उठा या सिन्ध का इलाका फतह किया। इसी बीच में बादशाह के पुत्र सलीम ने विद्रोह किया पर वह कैद कर लिया गया। इसके बाद उसने फतहपुर सीकरी और आगरा बसाया। क्योंकि मथुरा साम्राज्य के विद्रोह का एक मजबूत अड्डा था। कहा जाता है उसने आगरे के महल और किला ताम्बे का बनाने का इरादा किया था परन्तु कारीगरों के सहमत न होने से साज पथर के बनवाये। बादशाह मस्त हाथियों की खड़ाई का बहुत शौकीन था वह स्वयं घेपदक ऐसे हाथियों पर सवार होता जिसमें प्रायों का बड़ा भारी भय था। अकबर को छोटे २ विद्रोहों को दवाने में बारें बार बहुत परिश्रम उठाता पड़ा इन विद्रोहियों को पकड़ कर बहुधा इनके सर काट डाले जाते थे। 'मनुष्य' योरोपियन ग्रन्थकार लिखता है—

"वे सर २४ घण्टे शाही बाखान में खड़े रहकर मार्ग में दरवाजों या मीनारों में लटका देने को भेज दिये जाते थे। मीनारें प्लास और पर इसी काम के लिये बनाई गई थीं। हर एक मीनार में १०० सर आसक्त थे। शहर के बाहर मीने कई बार इनमें घोर देहातियों के सर देखे हैं जो अपनी बड़ी २ गूँछों, साज रह और मुड़े हुए सर ल पहचाने जाते हैं। आगरे से देखती जाती बार रास्ते में मक्कों पर बंध किये डालुधों के इतने सर लटके हुए थे कि मक्कों के मारे सर फटा जाता था और भाग चलने वालों को नाक पर कपड़ा देकर रास्ता ही बरना पड़ता था।"

अन्त में उसने पठानों पर खड़ाई की। ८० हजार सेना प्रथमवार भेजी गई। पठान बड़े खड़ाके और बौद्धा होते हैं। पठानों ने ऐसा मोर्चा लिया कि एक-भी सैनिक जीवा बचकर न आया। पथ-प्रदशक उन्हें खैबर की



घाटों में घुसाकर शकत मार्ग में छोड़े गये और बह कर दिया। इस बादशाह ने तोपखाने की उन्नति की और फिरही तोपची रखे। एक बार ऐसी घटना हुई कि उसने तोपों की चाद मारी की टानी। प्रधान तोपची को ५००) वेतन पाता था बुझाया गया। कमला पर चादर लानी गई पर तोपखाने ने आन बूम कर शकत गोला चलाया। बादशाह ने क्रुद्ध होकर उसे सम्मुख बुझाया और कहा—

बादशाह—“क्या तुम ऐसे ही निशानेबाज़ हो? तुम्हारी तो बहुत तारीफ़ मुनी थी।”

तोपची—“सुवासन्, वन्दा निशाने को देख नहीं सका, यदि शराब पी होती तो सम्भव न था निशाना पड़ाही जाता।”

बादशाह न शराब खाने का हुक्म दिया तोपची ने मारी बोटल चढ़ाई। और फिर मूर्खें प्युता हुआ बोला। हुज़ूर, चादर हटाई साथ और एक छकड़ी पर एक बतन रखदिया जाय। यही किया गया। तोपची ने ऐसा गोला मारा कि छकड़ी और बतन के चुरे उड़ गये। बादशाह ने तब से फ़िरांगियों को खाने पीने के लिये शराब खींचने की आज्ञा देदी। यह बहुधा कहा करता था—फिरांगी और शराब साथ ही साथ पैदा हुए हैं। और शराब के बिना उनकी यही दुरा होती है जो पानी के बिना मछली की। अकबर के दरबार में सुनार, तोपची, डाक्टर आदि बहुत से फिरांगी मौजूद थे। इन्होंने आज की कि हमें एक पादरी दिया जाय। तब अकबर ने गोभा से पादरी बुलायाया और आगरे में गिरजा बनाने की आज्ञा देदी।

इस बादशाह ने यह क़ानून अपने घर के लिये बनाया कि शाही खानदान की सबकियों की शादियाँ न की जायें। यह काम इस प्रकार हुआ कि बादशाह ने अपनी पुत्री की शादी एक अमीर के साथ कर दी थी—कुछ दिन बाद यह विद्रोही हो गया। और आग्य दण्ड दिया गया। उसी समय से यह क़ानून बनाया गया। जिसे औरङ्गज़ेब ने अपनी बेटी की शादी करके तोड़ा। शाहजादियों की शादी न होने से मुसलमान खानदान में बहुत से भीतरी गुल्लि किलते रहे यह बात सभी जानते हैं। बादशाह पठनों से सदा

सतर्क रहता था और उसका हुक्म था कि किसी पठान को ४ हजार रु० वार्षिक से अधिक का वेतन न दिया जाय। ज सूबे का अधिकारी बनाया जाय। बादशाह ने यह भी नियम बनाया था कि दरबार में सिवा शाहजादों और एजिप्शियों के सब सदर खड़े रहें। यह नियम मुगल दरबार में अन्त तक बना रहा। इसके बाद उसने 'दीने इल्हाही' नामक मज़हब खलाया।

बादशाह को शिकार का बहुत शौक था एक बार वह एक शेर के पीछे दौड़ते २ बीड़ जंगल में घुम गया अन्त में एक स्थान पर थक कर सुस्ताने लगा। उसने देखा कि एक अमरवानी रक्त का साप पेड़ से उसकी तरफ आ रहा है। बादशाह ने एक तीर से उसे बाँध दिया। तीर साप को मार कर बादशाह के पास आ गिरा इतने ही में एक हिरन चौकड़ी भरता उधर गुजरा। बादशाह ने वही तीर उठा कर हिरन पर छोड़ दिया मद्यपि घीर ने हिरन को छुआ ही था कि हिरन मर गया। बादशाह यह देखकर आश्चर्य चकित हो गया—इतने में शिकारी लोग आ पहुँचे। बादशाह ने इन्हें हुक्म दिया कि हिरन को यहाँ घसीट जाओ। उन्होंने हिरन को छुआ ही था कि उसका शरीर २ अलग हो गये। यह देख शिकारी बोले जहाँपनाह यहाँ से जल्दी भागिये परना इस जहरीले साँप की हवा से हम सब मर जावेंगे। हुजूर हवा के बल के विरुद्ध बैठे हैं यही खेरियत हुई है।

बादशाह ने उस साँप को एक बोतल में बन्द करके रखने का हुक्म दिया और एक अफसर नियत किया कि जब बादशाह चाहे ज़हर तैयार करे। तब से एक महकमा इसी ज़हर का बन गया जो कई भाँति के विष तैयार रखते थे। यह विष सब काम में लाए जाते थे जब बादशाह किसी सदर को गुप्त रीति से मारने के काम में लाते यह विष या तो वस्त्रों में लगाकर उसको दरबार में पहना दिया जाता था या यदि वह दूर पर हो तो भेज दिया जाता था जिसे सम्मान प्रदर्शन करने के लिये उसे पहनना पड़ता था और उसके प्राण जाते थे। मुगल ख़ावदान में इस रीति से प्राण नाश करने का रिवाज़ पीछे तक जारी रहा।

इस महान् बादशाह की मृत्यु ऐसी ही एक दुर्घटना से हुई। बादशाह

यदि अपने हाथ से बिर्या को पाक देने से तो वह जमकी भारी प्रतिष्ठा समझी जाती थी पर इस प्रतिष्ठा को पाकर कुछ ही मिनटों में बहुत से सदाँर धीबन कीछा समझ कर जुड़े थे। बादशाह ५ पामदान में तीन पाने थे। जिन में एक में पाक दूधारे में गुग्गुलु गोलियाँ रहती थी जिन्हें पाक शाद स्वयं खाता था तीसरे में पैसी हो गुग्गुलु गोलियाँ थीं परन्तु यह दवाइय जहर होता थी बादशाह प्रगल्भ होते पर उसे पाक देता—फिर एक सुरपुरर गोली देता—पर जिन मारवा होता जहर की गोली देता था। एक बार एक अमीर को जहर की गोली दते हुए भूख से वह स्वयं ही गोली खा गया और इस प्रकार थलमर में उसकी मृत्यु हुई। इसने ४४ वर्ष ७ मास ३ दिन राज्य किया और अनेक मुश्किल विप्लव किये। तथा मुगल सततत कायम की।

उसके अन्तिम दिन अस्वस्थि हो में पड़े। इसके सभी पुत्र शराबी और छगप थे। शराब हो के कारण मुगल दाम्पत्य की मृत्यु हुई।

आमेर का मानसिंह चाहता था कि उत्तराधिकार में उसके भोजे सुशरु को तदन पर बैठाया जाय। मगर अकबर मन्त्रीम को बादशाह बनाना चाहता था। उपर मानसिंह बड़ा प्रतापी था, जमकी शक्ति बहुत बढ़ गई थी, बादशाह ने उसे विष देना चाहा था, पर वह स्वयं खा गया।

इस बादशाह ने आमेर में ३ पक्षाई के कायले पर एक विशाल मन्त्र मरा बनाया और एक भारी बाग खगाया जिसका नाम मिहन्दग रक्ता। यह मऊवरा बहुत ऊँचा और भारी गुम्बद बाधा है। यह संगमरमर और बहुमुख्य जवाहरात से जड़ा हुआ था। तमाम छत पर गिलिद का काम बहुत कारीगरी का किया हुआ था। और भाँति ९ के रंग से दीवारें रंगी हुई थीं। बाग बहुत बड़ा और मन्त्रीजों से घिरा था, जगह ९ मैदान के स्थान बने थे। औरंगजेब ने सब चित्रकारी पर अफेदी करा दी थी, क्योंकि यह चित्रकारी को इस्लाम धर्म के विरुद्ध समझता था।

धीनत निवासी 'मन्त्री' इस सम्बन्ध में लिखते हैं—

“मेरी इच्छा थी कि औरंगजेब की आज्ञा कार्यरूप में परिणत होने

से प्रथम ही एक द्वार इन चित्रों को देख लें। अतएव हम विचार से कई द्वार हम मकबरे को देखने के लिये यात्रा में गया। यात्रा के अन्तिम द्वार पर सखीब कुवारी मरियम और स्नेह इगनेस के चित्र थे। मेरे नामों उपरोक्त गुम्बद के अन्दर जाकर देखने को बड़ी इच्छा थी। सुनांचे एक अफसर ने जो मुझसे राजवैद्य होने के कारण कुछ काम लेना चाहता था, मुझे इस शर्त पर वहाँ ले जाना स्वीकार किया कि मैं बड़े अदब और प्रतिष्ठा से इस प्रकार कबर को सलाम करूँ जिस तरह पर कि वह करे। सोचा कि बादशाह जिन्दा है और उसे ही अभिनन्दन कर रहे हैं। उसने द्वार खोला और मैंने सुपचार अदब से कबर को सलाम करके भीतर प्रवेश किया। जिसके परचाह नगे पाँच चारों तरफ घूम फिरकर हर वस्तु को देखा, जैसा कि मैंने खिला है, दीवार में पवित्र सखीब लकी थी, जिसके दाँयी ओर कुवारी मरियम और बाँई ओर इगनेस के चित्र थे। गुम्बद की छत पर करिस्तों के, बलियों के और दूसरे कई एक प्रकार के चित्र थे एवं कई एक ऊँटसोज (वह पात्र जिसमें ऊँट रखकर जलाया जाता है) थे—जिनमें प्रति दिवस ऊँट जलाया जाता था। इस कमरे में चारों तरफ भिन्न-भिन्न प्रकार के पत्थर लगे थे। मकबरे के बाहर यात्रा में बहुत से मुक्ता कुरान पढ़ रहे थे। कुछ गुम्बद के बाहर की तरफ सबसे ऊँची छाती पर एक गुम्बद था और हमपर गिज़ट का बना हुआ दीनर था। मुझे एक सबसे बढ़कर शारद्वय इस यात्रा पर था कि इन चित्रों के होने की तरह में क्या कारण था और बहुत सोचने के परचाह यहाँ फल निकाल सका कि इसका कारण मजहब नहीं था बल्कि चूँकि यह वस्तुएँ ३१ दिनों में अद्भुत गिरी छाती थीं इसलिये ऐसा किया गया था। जिन दिनों में औरगजेब शिवाजी से लड़ रहा था तो सन् १६६१ ई० में विद्रोह। देहातियों ने मकबरेमें घुसकर तमाम मूल्यवान परवर और सुाहरी काम चुरा लिया। और बादशाह की हथियों को मकबरे में से निकाल कर जला डाला।”

## जहांगीर

अकबर के पुत्र जहांगीर ने २२ वर्ष राज्य किया। यह शराबी देवाश और निष्ठुर था, पर राज्य शासन उसने बड़ी ही चतुराई और तत्परता से किया। उसके काल में राज्य में कला कौशल, व्यवस्था और शान्ति रही। मलिका नूरजहाँ का भी इस शासन में भारी हाथ रहा।

उसके गद्दी पर बैठनेके बाद ही उसके पुत्र खुशरू ने विद्रोह किया पर उसे हँस कर छिया गया और उसके साथी क़त्ल करा दिये गये। इसने उदयपुर के शाय्या से सन्धि की और उसका पद दरबार में जहांगीर से दूसरा नियत किया। इसी के शासनकाल में इङ्ग्लैंड का तूत डामस रो भारत में आया, और अपनी कम्पनी के लिये व्यापार का अधिकार प्राप्त किया, इस विदेशी वात्री ने अपने अनुभव से जो कुछ सिखा है उसका अर्थ यह है—

“राजसभा की विशालता और वैभव आश्चर्ययुक्त है, पर सरदार कर्जदार हैं। प्रबन्ध सशेष है किन्तुम दरिद्र हैं, कुशासन के सिन्धु देश में है, प्रजा का वैभव नष्ट हो रहा है। ठगों और डाकुओं के झुगमों से गाँव और पन्थिक अरक्षित है। बहुत सी भूमि जंगल है और दक्षिण के मगर स्वयंवर हो रहे हैं। जो प्रान्त राजधानी से दूर हैं उनकी हालत निरुद्ध है।”

यह एक अद्भुत देवाश और खुशमिज़ाज तबियत का आदमी था। यह न रोजे रखता न मुसलमानी धर्म की परवाह करता था, जब शराब और अफीमका सेवन करता था। एकबार हमन पादरियों को बुलाकर पूछा—

“सुघर का मोल स्वाद में कैसा होता है?”

इसपर पादरियों ने उसकी तारीफ की। बादशाह का भी फलचाया, और पादरियों के घर जाकर शराब पी और सुघर का मोल खाया। इसके बाद वह खुल्लमखुल्ला खाने लगा। ‘मनूषो कहता है कि मोलवियों को चिढ़ाने के लिये उसने सोने की सुघर की मूर्तियाँ बनवा कर महल में रख दी थी थी और प्रातः काज उठनी का मुँह देखकर ठठता था और कहता था— ‘मैं मुसलमान का मुँह देखने के बजाय सुघर का मुँह देखना अधिक अच्छा

समकता हूँ। ये सोने के सुघर शाही महल में शाहजहाँ के समय तक रहे। जिसने उन्हें आहौर के क़िल्ले में शाही दरबार के सामने ज़मीन में गड़वा दिया था। रमजान के दिनों में जहाँगीर प्रतिदिन दो बफ़ा दरबार करता और मयके सामने खाता पीता तथा मुहल्लाओं को तंग करता था, और अपने हाथ से खाना देता जिसे दरबारी कायदे के मुताबिक अदब से लेकर उन्हें खाना पड़ता था। बादशाह की इस प्रणाली की अवस्था करने से भय था कि ये आदमी शेरों से रुढ़वा दिये जाँय जो दरबार के नज़दीक बँधे रहते थे।

बादशाह भरतारों से भरे एक दर्शन को अपने पास रखता था। यदि कोई व्यक्ति उसके सामने धीरता की चीँग हाँपता तो भरतारसे उसकी नाक में छेद करा देता, इस पर यदि वह काट प्रकट करता तो उन्हे मुक़्त से पिटा कर बाहर निकलवा देता और यदि सह जाता तो दूनी तनज़ा फर देता। एक बार एक दरबारी ने शेर मारा और उसकी खाज का कोट पहनकर दरबार में आया। वह देखकर बादशाह ने अपना बन्दूक उठाई और अभीर को निशाना बनाया। वह येचारा चिल्लाकर गिरा। गोली दाँगों में लागी थी, बादशाह बोला—यदि मैं इस शेर को न मारता तो मेरा शेर जोश में आ जाता। यदि कोई मवयुशक स्त्रियों का अत्यन्त प्रेमी होता तो बादशाह उसे पकड़कर किसी नीच जाति की मैली और गन्धी स्त्री के साथ कई दिन तक बन्ध रखता था।

जहाँगीर अपने हकीम से बहुत चिढ़ता था। वह पक्का मुसलमान और धर्मात्मा शाहमी था। एकबार वह उस समय दरबार में पहुँच गया जब बादशाह शराब पी रहा था। इसे देखते ही बादशाह ने कहा—मेरा तीर कमान लाओ, मैं इस खूबट को ख़तम करूँगा। नज़दहाँ पहुँचें मैं बैठी थी उसने गुलाबों को इशारा किया कि उसजो तीर न दिये जाँय घेत के तीर दिये जाँय। अब बादशाह ने तीर बरसाने शुरू किये। यह सब कुछ होने पर भी हकीम साहब मुक़ २ कर सज़ाया किये जाते तथा आदाब बजाये जाते थे, यन्त में मसक़ा के इशारे पर गुलाबों ने उसे संकेत किया कि 'अभागो छेद

जा क्यों-ज्ञान का दुरमग बना है। हकीम बेबारा छोट गया। बादशाह ने समझा कि मर गया। तब बोला - अम्मा हुआ - हमने भी धटुतों की जानें ली हैं।

बादशाह का नूरजहाँ को हथियाना इतिहास की प्रसिद्ध घटना है। कदाचित् ही कोई ऐसा प्रेम दीवाना पुरुष हो जा कि किसी एक खा पर हम भाँति मुग्ध हो जाय। नूरजहाँ का जीने दम तक बादशाह पर अध्याप्य अधिकार रहा। मारा सख्तमत नूरजहाँ के अधिकार में थी, मर म्याह सफेद करने का उमे अधिकार था। नूरजहाँ ने एकबार उममे प्रतिज्ञा कराई कि यह शराब पागा कम कर देगा। और दिन भर में ६ प्यालों से ज्यादा न पीवेगा। कुछदिन तो प्रतिज्ञा चली। एकबार ऐसा हुआ कि एक लज्जता हुआ, बादशाह को सुद मज्जका प्याज भर ९ कर देती गई। जब जी प्याले बादशाह पी चुका तो और माँगा—पर मज्जका ने इन्कार कर दिया। बादशाह ने बहुत मिष्ठत चापलूसी की पर बेकार। अन्त में बादशाह को गुस्मा आगया और हाथपाई होने लगी। शीघ्र ही गुथम गुथा हो गई। अब इन्हें मज्जका कौन करे ?

बाहर भाइयों ने यह देख स्वयम् गुथम गुथा होना, धमा थोक्की मचाना, चिह्नाना शुरू कर दिया। बाहर का शोर सुनकर बादशाह लड़ाई रोक बाहर निकल—और पूछा यह क्या शोर गुल है। भाइयों ने दस्तवस्तां अर्जी की, हुजूर की लड़ाई रोकने की यही लकीब समझ में आई। हमपर मज्जका बादशाह दोनों खूब हँसे और खूब इनाम दिया। परन्तु नूरजहाँ इस घटना ने बहुत नाराज हुई। और उमने बादशाह ने बोवना भी छोड़ दिया। उसके तमाम सोकरे वापस भेज दिये, बादशाह ने बहुत सुशामद की पर उसने न माना। तब एक दिन बादशाह जब मज्जका धूप में टहल रही थी इस भाँति उसके सामने आ खड़ा हुआ कि उसके सिर की परछाईं मलका के पैरों पर पड़ी। तब बादशाह बोला—अब तो सुख हो जायो, अबतो तुम्हारे पैरों पर मेरा सिर हाज़िर है। इसपर नूरजहाँ प्रसन्न होगई और इस सुख की सुरी में मज्जका ने ८ दिन भारी खरसा किया। जिसमें उसने

बाग के सब साजायों और फव्वारों को चूर्ण गुलाब से भरवा दिया और हुक्म दिया कोई इन्हें गन्दा न करे। दैवयोग से एक साजाय के पास ही मलका सो गई। प्रातः काल उसने साजाय पर चिक्नाई तैरती पाई मलका ने समझा कि वी ने गन्दगी डाल दी है, उसने बाँदी को हुक्म दिया शाय से देख यह चिक्नाई कैसी है। जब उसने देखा तो अति उत्तम सुगन्ध पाई। और तब समझी कि यह गुलाब की चिक्नाई ओस की भीति जम गई है। उसने चिक्नाई अपने हाथों में लेकर कपड़ों में मल लिया, और दोबो हुई बादशाह के कमरे में गई और बादशाह को आलिङ्गन किया बादशाह सो रहे थे। उठे तो सुराबू से महक उठे। इस भीति गुलाब का द्रव इंजाद हुआ जो बाजार में १००) सोला दिक्के खगा। पीछे जब गुलाब की खेती बनी तो उसका भाव भी कम हो गया।

इस बादशाह ने मुलतान से इलाहाबाद तक राहों सबकों पर पैद खगाने का हुक्म दिया। यह फासला २१३ फरसंग का था। एक १ फरसंग पर पुर्ज बनाए गये। प्रत्येक पुर्ज के निकट एक गाँव होता था—वहाँ सब आवश्यक सामग्री मिल सके। इसके सिवा स्थान २ पर सराय, बाग और कुए भी बनवाए थे।

इस बादशाह को एक सेनापति महावत खान ने जो राजपूत से मुसलमान बना था। और बड़ा वीर था, बादशाह की ऐयाशी से क्रुद्ध होकर एक बार अवसर पाकर बादशाह को कैद कर लिया और १ साल तक रक्ता—और उसे समझाया कि इस भीति शराब और औरत के फेर में पड़ना बादशाहों के लिये उचित नहीं—कि सम्मान पूरक छोड़ दिया।

जहाँगीर बड़ा दास्ता था। यदि किसी को कुछ देता तो उसकी तादाद १ लाख से कम न होती थी। इस बादशाह से इनाम पाने के लिये कुछ चिक्नी पुष्पी बातें काफ़ी थीं इसी पर शुरु होकर यह जो चाहे दे सकता था।

यह बहुधा भेष बदल कर शहर में घूमा करता था। एकवार का जिक्र है कि वह भेष बदल कर घूमता फिरता एक शराबखाने में जा पड़ा। वहाँ



एक लुन्हाहा बैठा मजे से उर्राँ जमा रहा था। अहाँगीर उसके पास बैठ गये खजाने जगा। दोनों होस्त हो गये और प्याले पर प्याले खगे ठकाने। अक़्बरी बार बादशाह ने जमका नाम पता पूछा—उमने कहा—सिक्न्दर लुन्हाहे के नाम से मशहूर हूँ। तुम कुछ मेरे मकान पर आना ऐसा काम सिलाऊँ और शराब पिनाऊँ कि खुश हो जाओ। इस पर बादशाह ने अवसर आने का वादा किया, दोनों होस्त हँसते हुए हाथ मिलाकर बिदा हुए।

दूसरे दिन जब वह हथौड़ी न कीलें गाढ़ कर लाना सुनने की तैयारी कर रहा था कि बादशाह की मजदारी घाती दिखाई दी। बादशाह हाथी पर था—नवक गण दायें बायें चल रहे थे। अब ठाक घर के निकट सवारी पहुँची तब गुलाम ने आगे बढ़ कर पूछा सिक्न्दर लुन्हाहे का घर कौनसा है बादशाह उसके घर दावत खाने आ रहे हैं। इस पर लुन्हाहे की आँखें खुली और रात के होस्त का भेद पहचान गया। वह इतना अवसरवा कि जवाब ही न दे सका। इतने में सवारी आगई। लुन्हाहे ने बिना चाँस डठाये पुकार कर कहा “आ शराबी को मात पर एतबार करे इस हथौड़ी से पीटे खाने के खायक है।” बादशाह वह सुन कर ठहाका मार कर हँस दिया। और इतना जवाब उन दिया कि वह अमीर बन गया।

एकवार बादशाह हाथी पर सवार हवाज़ोरी को जा रहा था—एक शराबी रामने में मित्रा बोला—ओ हाथी वाले हाथी बेचोगे ?

बादशाह ने उसे पकड़ कर हवाज़ात में बन्द करने का हुक्म दिया, अगले रोज़ जब वह बादशाह के सामने बैठा किया गया तब बादशाह ने कहा—“कहाँ क्या हाथी खरीदोगे ?”

शराबी ने कहा—हुज़ूर, हाथी खरीदने वाला निकल गया, मैं तो एक मारीब दखाल हूँ। इस जवाब से खुश होकर बादशाह ने उसे बहुतसा इनाम दिया।

बहुधा बादशाह हाथी पर सवार हो सैर सपाटे को निकल जाता सब सरंजाम हाथियों ही पर होता था, किसी पर शराब की प्याली बोटल, किसी

ज रोटियों पकतीं, किसी पर गोरख पकता, किसी पर मेवों की दालियां होती। किसी पर गाने बजाने का सरंजाम। बादशाह खाता पीता मौज करता खाता था।

एक दिन बादशाह इसी प्रकार हाथी पर खाता पीता जा रहा था कि बांझनी चौक में बेकैद क़ाज़ीरों का एक गिरोह मिला। उन्होंने पुकार कर कहा—“भरे भकेले ही खाते हो—इमें न शरीक करोगे ?”

यह सुन बादशाह हाथी से उतर पड़ा और क़ाज़ीरों के बीच में बैठ गया। सबने मिला कर खूद खाया पीया।

जहाँगीर बहुधा रो देता था। और थोड़ी ही बात से यह सन्तुष्ट भी हो जाता था। उसके ब्याय की भी बड़ी धाक थी। एक बार एक राजपूत सिपाही को क़ाज़ी ने क़त्ल का हुक्म दिया था - उसका अपराध किसी गुस्सामान स्त्री पर बलात्कार करना था। बादशाह ने उस और स्त्री को बुला कर पूछा—

“इस आदमी को सँधी के नीचे बाज़ दें या नहीं।”

स्त्री गूठी थी—उसने समझा जैसे हिन्दू दानी मुझते हैं—वहाँ भी बाज़ नहीं रखते होंगे। उसने कहा—‘नहीं हुज़ूर’

फिर बादशाह ने हुक्म दिया राजपूत को बँगा करके देखा जाय। इस पर औरत गूठी साबित हुई। बादशाह ने राजपूत को छोड़ दिया और औरत को क़त्ल करा दिया। जहाँगीर की भाँति इसके पुत्र खुर्रम ने भी विद्रोह किया पर अन्त में हारा। जहाँगीर ने भी लाहौर में अपना मक़बरा स्थापित बनाया जो लाहौर में शहादरे के नाम से मशहूर है। इसमें बहुमुख्य पत्थर खगवाये थे जिन्हें औरंगजेब ने पीछे उलटवा लिया था।

बादशाह अपने जीवन के अन्तिम दिनों में अज़रेज़ों से क्रुद्ध होगये थे और उन्होंने सूरत बन्दर में मक्का के कुछ व्यापारियों के साथ अनुचित काम किया था। बादशाह ने प्रथम तो बहुत कुछ ज़र्मी से काम लिया, पर जब न बच्चा तो गिरफ्तारी का हुक्म दिया, जिसे उन्होंने मानने से इन्कार कर दिया। इस पर क्रुद्ध होकर बादशाह ने अज़रेज़ों को मारने का हुक्म दे दिया।

जूस की हैं लेकिन अन्दर से बहुत सजे हुए मन्दार और आराम हाथक हैं शहर के पूर्वो ओर मिथर जमना बहती है उस तरफ दिवार मड़ी है उत्तर की ओर एक कोने में पूर्व नामना बिज्जा है जिनके सामने और दरिया के इस ओर हाथियों की बकाई के छिये मैदान जुग हुआ है बादशाह यह दरव देखने के छिये एक मगोके में बैठ जाते हैं औरतें भी भगोको में होती हैं लेकिन पार्श्वों के पोछे। इसी जगह बैठ कर बादशाह राजाघों, अमीरों और नयावों की ग्रेह देखते हैं बादशाह के बैठने के स्थान के नीचे दिन रात एक मस्त हाथी जुमोयश के तीर पर संघा रहता है।

किले के चारों तरफ छाछ परपर की बड़ी २ दीवारें हैं जिनमें एक बादह महराब का पुख है मितर पर से गुजर कर मज्जीमगद के किले में जो दरिया के बीच एक टापू पर है जा सकते हैं उमे शाह मज्जीम पठाय में बन बाया था-और उसी के नाम से मराहूर है।

शाही किले के दो दरवाजे शहर को गये हैं बीच में बहुत सुजी जगह छोड़ी गई है शाहजहां ने किले में दो बड़े भारी बाग बगवाये थे एक तो उत्तर की तरफ खूबरा दरिया की तरफ और बूकि दरिया जमना का पानी इतना बहा चढ़ता कि इन बागों में पानी मिज सके हम छिये इसने बड़ा भारी कर्च करके सर हिन्द के पास एक गहरी महार खुदाई थी। जो देहली से सौ फरसंग की दूरी पर है। यह महार किले में बहतो और पानी की होमों को भरतो है जिनमें शाहजहां के हुकम से खूब सुगत मछलियां बांधी गई हैं। जिनके सिरों पर शुमहरी कपडे थे और हर कपडे में एक २ जाज और एक २ ओती जड़ा था। यह महार जमना की तरफ के हिस्स क सिवाय समाम किले में इधर उधर घूमी है। किले के सामने पश्चिम की ओर शाही मस्जिद है जिसमें बादशाह सप्ताह में एक बार नमाज पढ़ने जाते हैं।

देहली के बनियों का मनोरत्नक बख्त मनुषी ने बड़े बहुत रंग से किया है उसे हम यहां उदुत करते हैं—

बनिये हिन्दुओं की एक ज़ैम है। जो न मागस और न मयुषी खाते हैं। यह लोग प्रायः अनाम, सब्जी, धी और घूघ बहुत खाते हैं। यह गाय

को घर में रखते और उसकी पूजा के बहुत प्रेमी होते हैं। गठमों पर यह ऐमे मोहित होते हैं कि मृत्यु के समय भी गऊ की पूँछ को हाथ में लेकर मरते हैं। उनका विचार है कि इससे पाप जमा हो जाते हैं। और गाय उन्हें आसमान पर उन अमनीमय स्थानों से छुप और खे जाती है। जिनके कि यह अपने पापमय जीवन के कारण योग्य होते हैं। इनकी इस श्रद्धा की बेवकूफी आश्चर्यजनक है कि यदि इतिहास से गाय उस शास्त्र पर पेशाय कर दे जो मरते समय उसकी दुम को धोना होता है। तो बजाय इसके कि उसे पैर हटाये वह बहुत घण्टा समझते हैं। और ख्याल करते हैं कि उसका शरीर पवित्र हो गया और बहुत सुश्रियाँ मनाते हैं।

पाठक समझ लें कि गाय को ऐसा समझना सिर्फ बनिये ही नहीं करते बल्कि तमाम के तमाम हिन्दू उसे पूजनीय समझते हैं। लेकिन इस बारे में बहुत अन्ध विश्वास है। यहाँ तक कि अगर किसी से कोई पाप हो जाय जैसा कि मूर्तियों या अपमान या धर्म युक्त होना इत्यादि तो वह आश्रमों के पास जाते हैं, जो इनके मोहित हैं। मासिक पापों को कुछ गाय का गोबर गाय के पेशाय में घोसकर और कुछ मोठा घों और दूध मिलाकर पीने को देते हैं जिससे वह पवित्र हो जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ प्रायश्चित्त भी कराया जाता है। मैंने उनमें से एक मनुष्य को देखा है, जो कई दिन तक प्रायश्चित्त के तौर पर अपने होठों पर ताला जटकाये फिरता था।

प्राकृतिक यह बनिये लोग बहुत डरपोक होते हैं और इधियार उठाते से बचते हैं। यह अपने घरों में कोई शस्त्र तो एक सरफ चाकू या छुरी तक नहीं रखते जिससे किसी को कट पहुँचने की सम्भावना हो। प्रश्नों का उत्तर देने में यह बहुत कतराने हैं। जैस कि उस किसी से किसी पढ़ने वालों को पता लग गया होगा जिसका बयान मैं पीछे कर चुका हूँ। प्रायः लोग कहते हैं कि यदि उनमें केवल यह पूछा जाय कि आज कौन दिन है। तो हमपर भी यह बहुत झपटे हैं, और जवाब बड़ा भद्दा देते हैं। अगर कुछ पूछन वाला फिर जिद्द करे तो कह देते हैं कि हम बड़ा जानते अगर इसपर भी यह फिर पूछे तो कहेंगे क्या तुम्हें नहीं मालूम कि कल रविवार था। अगर

बहु फिर भी न माने तो जवाब देने लगे वहीं कल मसीपर है। और अगर इसपर भी पूछने वाला पूछता चला जाय तो बहुत ठहर के और सोच के जवाब देंगे कि आज शुक्र (जुम्मा) है।

और यदि व्यापार के विषय में कोई घरन किया जावे तो उसका पीरन उत्तर देते हैं। और ऐसा अफ़्दा हिसाब खाने वाले होते हैं कि थोड़े से थोड़े समय में बहुत से घड़े सवाल को हल कर देते हैं। और हिन्दू से भी मूल नहीं करते।

यह लोग किसी जीव को मारना बड़ा पाप समझते हैं। और इस कारण यदि इनके शरीर पर कहीं कोई मच्छर, सटमख, जूँ, धूँटी या कोई दूसरा जीव चढ़ता हुआ नज़र आ जाय तो मारने के बजाय उसे आहिस्ता से डँगलियों के सिरों में पकड़कर दूर रफा के स्थान में जा रखते हैं। उनके घरों में ग्लास के पाने बने होते हैं। जो इन जानवरों से भरे होते हैं। जिनकी ग्लास का प्रयत्न इस तरह से होता है कि यह लोग किसी ज़रूरतमन्द कमबख़्त को हँवकर और दरवा देकर सारी रात एक स्थानों में जो इन जानवरों के बिये होती है उसे जाकर चारपाई से बाँध देते हैं। और इस तरह से यह जानवर इनके खून पर गुज़ारा करते हैं। क्योंकि यह बनिये लोग अनुष्य से ज्यादा जानवरों पर दयालू होते हैं। इसी तरह हा यह शक्य अपने चरा की धीवारों पर सुराब रख छोड़ते हैं। जहाँ बड़े प्रकार के परन्द घोंसले बना लेते हैं। इन परन्दों को यह लोग नित्य भति खाने को देते हैं। गुज़रात में कच्चे मसी शहर में इन लोगों ने बीमार परन्दों के बिये एक हस्पताल खोल रखा है। जहाँ पर एक बराह को हावी चिकित्सा के बिये इनाम व इनाम मिल जाते हैं। यहाँ एक बार एक अरबी शाही आ गया। जिसे दूसरे परन्दों के दीख रखा गया। इस कमबख़्त ने यहाँ इन्हें मारना और खाना शुरू कर दिया। अतएव उन्होंने उसे यह कह कर निकाल दिया कि यह अवश्य छिरगी नमल का होगा।

यह बनिये दरिया नांग को बड़ा जानते हैं, और कहते हैं कि इसमें स्नान करने से पाप दूर हो जाते हैं। और यदि मुरदे की राख इसमें धासी

जावे तो भी उसके पारों का नारा हो जाता है। सुनोचे बड़े २ समोरों की राख बड़ी शांत और बाले गाजे के साथ बड़ी २ दूर से यहाँ लाकर दाखी जाती है। बहुत से हिन्दू राजा इस दरिया का खल पीना अपना धर्म समझते हैं। और इसी अभिप्राय के लिये हर शेर का कैंट भेजते हैं पाँचे दो सोन मास का रास्ता क्या न हो। यह लोग एक गुरूता भी करते हैं और यह यह कि सब कोई शक्य करने के करीब हो तो उसे इस दरिया के किनारे छोड़ते हैं और पानी पीजा २ कर ही मार डालते हैं।

माय ऐसा होता है कि भक्तिभाव से ही कुछ मनुष्य इस दरिया के किनारे पर आ मरते हैं। और मैंने स्वयं देखा है कि जाने जाने वाले हिन्दू इसकी खाशों को दरिया में डुबेल देते हैं—मेरे विचार में उन लोगों के विषय में जिन्हें मनुष्य कहना मनुष्य नाम का अपमान करना है। और जो मुसलिया मरतनल में बहुत बड़े ताप्राद में हैं।”

‘मनुषी’ दिल्ली के ऋवीरों का भी मजिदर मयन शिखता है यह भी सुनिये—

“उनके दो गिरोह हैं। एक तो बैकैद अथात् स्वतन्त्र और दूसरे ब्रेत रस अथात् नियत। बैकैद फकीर बहुत ज़ाफ़ होते हैं और बाख़ीत में बहुत आज़ादी मर्तते हैं। इच्छा हो तो गाछी भी सुना बैठते हैं कि तोया हो भली यह बड़ी निर्मावता से लोगों के घरों में घुस जाते हैं, और अगर दर्शन इन्हें रोकने की चेष्टा करे तो उसके स्वामी और यहाँ की ऐसी २ अनुचित गालिबिया सुनाते हैं कि कुछ न पूछिये तब पर भी कोई इनकी बातों पर नाराज़ नहीं होता और सुरामय व आपलूसी से इनके कोच को घूम करते, चमा मारते हैं और मिया देकर डालते हैं। यदि इन लोगों को दरवाज़े पर न रोका जाय तो यह सीधे भाद्रिक के पास जाकर बिना सलाम अन्दगी किये उन्हीं फटे पुराने कपड़ा और मिट्टी में भरे हुए हाथ पाँव के साथ उसके पास आ बैठते हैं और उसके मुँह से दूध पीकर खुद पीने लग जाते हैं। घर का स्वामी इसे बड़ी भारी मतिहा नमस्सता है और उसके लिये उन्हें अन्नपाद देते हुए उन्हें दरवा इत्यादि देकर सुख करने हैं किसी

दिन यह खोग ऐसी गिद्ध करते हैं कि जो गुँह से मीने, खेकर खोवने हैं। यह खोग कभी परमेश्वर के नाम पर भिन्ना नहीं मँगते क्योंकि कहते हैं कि उसके नाम पर कुछ माँगना उसका अपमान करना है। हर मनुष्य शक्ति अनुसार इन्हें कुछ न कुछ शरय देते हैं क्योंकि एक तो यह खोग ईश्वर के बड़े धरवासी हैं और दूसरे प्राकृतिक ही बड़े दयालु होते हैं।

वेतारत पक्षीर यह हैं जो अपने हाथों में तेज छूरी खिप हुए भोक मँगते हैं। उमने भिन्ना मँगने का कावदा यह है कि वह दूकान के सामने खड हो जाते हैं और मिल वालु की आवश्यकता होती है उसकी तरफ इशारा कर दते हैं, ये जो मँगते हैं यह अगर दूकान वाला दे दे सब तो खैर करना अपने हाथ की छूरी से हाथ पाँव सर हत्यादि में अगम करके खून दूकान के भीतर फेंक देते हैं यह खोग प्रायः यनियों की दूकान पर जाकर मँगते हैं क्योंकि वह दरपोक होने के कारण खून का रस्य नहीं देख सकते और खीझ ही उनकी इच्छा अनुसार पालु देकर छुटकारा पाते हैं।"

बादशाह अपने छोटे पुत्र औरंगजेब से बहुत सतर्क रहता और उससे घृणा करता था। चारों शाहजादों में अस्थावरथा ही से द्वेषानि भदकने खगी थी। अतः उसने चारों को अलग २ करने की सोची। गुजरा को बगाले का हाकिम नियत किया, औरंगजेब को मुहलत और मुराद को गुजरात का हाकिम बनाया। दारा को दरबार में रहने दिया। औरंगजेब पिता के मन की जानता था—पर ऊपर से मोठा बना रहता था—यह दारा को भी लखो चप्पो में हा रखता था। और दारा मोहता माला और सीधा सादा पुरुष था वह उसकी बातों में आज्ञाता था। उसे भरे पर रख कर औरंगजेब ने दक्षिण को अपनी बदली कराली। इस काम में उसका गूढ़ उद्देश्य गीखकुडा और बीजापुर की सैनिक शक्तियों का अध्ययन करना था। वहाँ पहुँचते ही उसने नया शहर औरंगाबाद बसाया। बादशाह बहुधा दारा से बहा करता था कि तुम साथ को पाल रहे हो जो तुम्हें अत में फट देगा।

यह बादशाह माने बजाने का शौकीन, काम का प्रेमी, और इमारतों के बनाने का बड़ा इच्छुक था। इसे स्त्रियों से भी विशेष रुचि थी, यह

अपने महल ही की स्त्रियों पर सम्पुष्ट न था करके कमरानों की स्त्रियों पर भी हाथ साफ करता था। अन्त में यही दोष उसके पतन का कारण बना। उसने ज़फर खां की स्त्री के प्रेम में अग्न्या होकर ज़फर खां को मारने का इरादा कर लिया—पर उसने प्रायना की कि कमकी जान बचा दी जाय और उसे पटने का इनाम बना कर भेज दिया जाय। यही किया भी गया। इसी प्रकार खालीखुद्दीन के साथ उसने किया। ज़िम्न औरंगजेब के युद्ध में दाग से बचता लिया। एक बार किमी ने बादशाह से कहा कि खलीखुद्दीन की स्त्री के पैर में जो जूना है वह २० लाख २० मूय्य का है। बादशाह यह सुन कर मुद्द हा गया और अगले दिन भरे दरबार में खलीखुद्दीन से पूछा—

“हम सुनते हैं कि तुम्हारी औरत हम कदर कीमतों जूने पहनती है, हमने मात्तुम होगा है तुम्हारे पास बहुत धन है जिसका अधिक भाग चोरी से अवरय एकत्र किया गया है इस लिये अपना हिसाब हमें समझा दो।”

खलीखुद्दीन सुर हारहा। हम पर इसका एक दोस्त बोला—‘नहारनाह, दुश्मन दो तो मरना हमके जवाब में कुछ धर्म करे।’

बादशाह—‘अच्छा कहो’

दोस्त—‘खुदावन्द, खलीखुद्दीन की सारी सम्पत्ति इन्हीं जूनों में सुरक्षित है। क्योंकि इसका स्त्री निरन्तर इसके मुँह पर वे जूने मारती है। और हम प्रकार सारी सम्पत्ति उसे देदेती है।’

बादशाह यह जवाब सुन मुस्कराये। और खलीखुद्दीन जजित हो दरबार में चले आये।

बादशाह ने अपने राजे नवाय शाहस्ताखा की स्त्री पर भी हाथ साफ करके छोड़ा। वह राजी न होता था—हम पर बादशाह ने चानाकी स काम लिया। इससे उसे इतना रंज हुआ कि उसने खाना कपड़ा त्याग दिया और हम भक्ति जान देवी, शाहस्ताखा ने उस समय तो शुभ साधनी पीछे बचता लिया। अरुण खां और खलीखुद्दीन की स्त्रियों का शाह से सम्बन्ध इतना प्रसिद्ध हो गया था कि रास्ते में जब वे गुजरती थीं कीर कहते—



दिन यह खोग ऐसी शिष्ट करते हैं कि जो मुँह से माँगे, खेकर छोड़ते हैं। यह खोग कभी परमेश्वर के नाम पर भिधा नहीं माँगते क्योंकि कहते हैं कि उसके नाम पर कुछ माँगना उसका अपमान करना है। हर मनुष्य शक्ति अनुसार हर्षे कुछ न कुछ शायद देते हैं क्योंकि एक तो यह खोग ईश्वर के बड़े विश्वासी हैं और दूसरे प्राकृतिक ही बड़े दयालू होते हैं।

येतारम फकीर यह हैं जो अपने हाथों में तेज छुरी धिपे हुए भीक माँगते हैं। उनका भिधा माँगने का कायदा यह है कि वह दूकान के सामने खड़े हो जाते हैं और जिस वस्तु की आवश्यकता होती है उसकी तरफ इशारा कर देते हैं, ये जो माँगते हैं वह अगर दूकान बाज़ा दे दे नव तो खैर वरना अपने हाथ की छुरी से हाथ पाँव सर इत्यादि में अक्षम करके खून दूकान के भीतर फेंक देते हैं यह खोग प्रायः धनियों की दूकान पर आकर माँगते हैं क्योंकि वह दरपोक होने के कारण खून का हप्प नहीं देख सकते और शीश ही उनकी इच्छा अनुसार वस्तु देकर छुटकारा पाते हैं।"

बादशाह अपने छोटे पुत्र औरंगजेब से बहुत सतर्क रहता और उससे घृणा करता था। चारों शाहबादों में व्यवस्था ही से द्वेषाग्नि भवकने जगी थी। अतः उसने चारों को अलग-अलग करने की सोची। गुजरात को बंगाले का हाकिम नियत किया, औरंगजेब को मुल्तान और मुराद को गुजरात का हाकिम बनाया। दारा को दरबार में रहने दिया। औरंगजेब पिता के मन की जानता था—पर ऊपर से मीठा बना रहता था—यह दारा को भी लहो चणो में ही रखता था। और दारा भोला भाला और सीधा सादा पुरुष था वह उसकी बातों में आजाता था। उसे भर्त्ता पर रख कर औरंगजेब ने दक्षिण को अपनी बदली करा ली। इस काम में उसका गुरु उद्देय गौकबुन्दा और बीजापुर की सैनिक शक्तियों का अध्ययन करना था। वहाँ पहुँचते ही उसने नया शहर औरंगबाद बसाया। बादशाह बहुधा दारा से बड़ा करता था कि तुम साथ को पाल रहे हो जो मुझे अन्त में कष्ट देगा।

यह बादशाह गाने बजाने का शौकीन, काम का प्रेमी, और इमारतों के बनाने का बड़ा इच्छुक था। इसे स्त्रियों से भी विशेष रुचि थी, वह

कपने महल ही की स्त्रियों पर मग्नपुत्र न था बल्कि उमरावों की स्त्रियों पर भी हाथ मारता था। अन्त में यही दोष उसके पतन का कारण था। उसने ज़फर खाँ की स्त्री के प्रेम में अग्न्या होकर ज़फर खाँ को मारने का इरादा कर लिया—पर उसने प्रायश्चात की कि उसकी जान बचवा दी जाय और उसे पटने का इशकिल बना कर भेज दिया जाय। यही किया भी गया। इसी प्रकार खलीलुद्दीन के साथ उसने किया। जिसने औरंगजेब के मुँह में दाग से बद्धा लिया। एक बार किमी ने बादशाह से कहा कि खलीलुद्दीन की स्त्री के पैर में जो जूना है यह २० लाख २० मूक्य का है। बादशाह यह सुन कर मुँह हो गया और अगले दिन भर द्वार में खलीलुद्दीन से पूछा—

“हम सुनते हैं कि तुम्हारी औरत हम ज़रूर क्रीमती जूने पहनती है, इससे मालूम होता है तुम्हारे पात बहुत धन हैं जिसका अधिक भाग चोरी से अवश्य एकत्र किया गया है इस लिये अपना हिस्सा हमें समझा दो।”

खलीलुद्दीन शर हो रहा। हम पर हमका एक दोस्त बोला— जहाँनाह, दुबल हो तो चन्दा इसके जवाब में कुछ भर्ज करे।

बादशाह—“अग्न्या कहो”

दोस्त—“सुदायन्द, खलीलुद्दीन की सारा सम्पत्ति इन्हीं जूनों में सुरक्षित है। क्योंकि इसकी स्त्री नित्य इसके मुँह पर ध जूना मारती है। और हम प्रकार मारा सम्पत्ति उसे देदती है।

बादशाह यह जवाब सुन मुस्कराये। और खलीलुद्दीन लजित हो द्वार में चले आये।

बादशाह ने अपने साले बहाव शाहस्ताखा की स्त्री पर भी हाथ मार करके छोड़ा। वह राज़ी न होता था—इस पर बादशाह ने खानाकी स काम लिया। इससे उसे इतना रंज हुआ कि उसने खाना कपड़ा त्याग दिया और हम भोति जान देदी, शाहस्ताखा ने उस समय ता शुप साधवा पीछे बद्धा लिया। अक्रर खाँ और खलीलुद्दीन की स्त्रियों का शाह से सम्बन्ध इतना प्रसिद्ध हो गया था कि रास्ते में जब वे गुजरती तो और कहने—

दे मारने लाहगाह ! हमें भी याद रखना, या लुगमे लाहगाह, हमें भी कुछ दिखना ।

बादशाह ने अपने पैरों के लिये २५ हाथ लम्बा और ८ हाथ चौड़ा एक कमाया बनवाया था । जिसमें चारों ओर बड़े २ शीशे लगे थे । इसकी सहायता में जो मोटा रज्ज हुआ था वह १॥ बरोह की छागन का था । कपाहगत की शीमय का कपड़ा ही था । इसकी दृष्ट में दो शीशों के बीच में माने की क्यारियाँ बनी थीं जिसमें कपाहगत बड़े थे । शीशों के मोशों में मोशियों के शुष्क फलने थे । इस कमरे की दीवारें मंगेपराब की थीं । इसी में वह धमीरों की स्त्रियों के साथ विहार करता था ।

यह बादशाह जिन्हे में मोना दावार भी कहा जाता था जो ८ दिन तक खगा रहता था । इन ८ दिनों में कोई मर्द जिन्हे में नहीं जा सकता था—कादक बन्द रहता था । जिन्हे के भीतर रज्ज गाधरंग लमाये होते थे । नय काम स्त्रियाँ करती थीं । वहाँ बीच ऊँच गम जाति की स्त्रियाँ जानों और बसुपे देखा करती थी । जाने यात्रियों का उद्देश्य बादशाह की इच्छा में एक जाना होता था—इसी कारण कोई प्रतिष्ठित स्त्री वहाँ नहीं जाती थी फिर भी इन जाने यात्रियों की संख्या ३० हजार तक पहुँच जाती थी ।

बादशाह नित्य बाजार में जाता । वह एक सुन्दर छोटे सक्त पर गवार होता । जिसे कुछ तातारी बर्दियाँ उठाये होती थीं चास पाम कई स्त्रियाँ हाथों में स्वर्ण के आता लिये और कई इलाका मरा रहते थे । जो चीजों की प्रीति प्रेमोक्त में बने निपुण होते थे । बादशाह इस रूप बाजार को घारी से निरपत्ता जाता था—जहाँही कोई मूर्त उसे पसन्द आती कि वह उधर रुक करता और उससे कुछ प्रीति लेता । मुँह माँगा दाम देता फिर वह एक इशारा करता और आगे चला देता था—बाध बाधों कुटियों का यह काम होगा कि वह उस स्त्री को नियत समय पर उम्र कमरे में पहुँचा दे । और बादशाह के सामने पेश करे । "हाँ से बहुत स्त्रियाँ तो मालामाल हो कर खीटतों पर बहुत सी हरम में ही दाखिल करली जाती थीं ।

गाधने बाधों स्त्रियाँ जिन्हे कचमी कहते थे उनको भी दरबार में भारी

शत्रु भी। ऐसी ५०० स्त्रियाँ दरबार से लपटा पाती थीं जिनमें से एक को तो एकवार हज़म में दाखिल कर दिया था। ज़हेतियों की बुद्धि परीक्षा भी होता था—और कभी २ अज़ब मसज़दे दम का काम करता था। एक बार ऐसा हुआ कि बादशाह की नींद हट गई। और वह एक ज़हेती के कमरे में जाकर सोता 'क्या सुबह होने वाली है?'

'जी नहीं, क्योंकि अभी मेर मुख न पाम का स्वाद घैता हो मीज़ूद है फिर वह दूसरी के कमरे में गया और उससे भी यही प्रश्न किया—

उसने कहा—जी नहीं, क्योंकि कमरे में दाफ की रोशनी धीमी नहीं हुई है।

तीसरी ने पूछने पर कहा, नहीं हुआ, जब सुबह होने को होती है तब मेरे गले के मोती ठण्डे मालूम होने लगते हैं।

चौथी ने कहा—हुज़ूर अभी सवेरा नहीं! क्योंकि जब सवेरा होने को होता है तब मुझे पाज़ाने का हाज़त बढ़े और का हो जाता है, बादशाह उस समय खुप खाप खड़ा गया। दूसरे दिन चारों को पुजा कर पहली को पानों का दूधरी को चिरागों का तीसरी को मोतियों का और चौथी को पात्रानों का खान दे दिया।

इतना होने पर भी बादशाह श्याप और राजकाज के मामलों में बड़ा चाफ थीय" था उसने एक अक्रमर रख छोड़ा था जो बहुत से साप पिढारों में बन्द रखता था—बादशाह ज्यों ही किसी अक्रमर से चाराज़ हुआ कि साप से डमका दिया। एक बार एक कोतवाल ने जिसका नाम मुहम्मद शहीद था रिशवत खेवर मुबदमों का शलत कैमला किया था—बादशाह ने उसे साप से बटवाने की अपने सम्मुख आज्ञा दी। जब साप ने डमका दिया तो बादशाह ने पूछा कि यह किसकी देर में मर जायगा? 'अक्रमर ने कहा—एक घन्टे में'

बादशाह तब तक बैठा रहा जब तक उसने दम न तोड़ दिया। इस के बाद १ दिन तक उसके शरीर को वहीं पड़े रहने का आज्ञा दी। वह मस्त ~ ~ ~ स भी अपराधियों को कुचलवा दिया करता था। पर कोई

ऐसे उस्ताद छोड़देदार थे कि बादशाह को पूरा खजाना दे देने थे। एक मुन्-  
श्मे में एक काज़ी साइब ने २० हजार मुहर से और १० हजार मुदायले  
से समूह कर लिया। मुदायला मुन् था—मत काज़ी ने बादशाह के मन्सुख  
१० हजार २० रक कर बहा—मुन्, यह बादमी मुन्ने १० हजार २०  
रिखत दकर इस्ताफ से इतना बादता है, बादशाह ने काज़ी की पाठ ठोकी  
और यह निहायत मजे से २० हजार २० पचा गया।

मुश्मात का हाकिम शायर भी बड़ा दुष्ट था। वहाँ की प्रजा ने तज़  
होकर कुछ मज़ागों को इस काम के लिये टीक किया कि वे बादशाह तक  
उनका काज़ी पहुँचा दें। इनमें कुछ प्रतिष्ठित व्यापारी भी मकाल बनकर  
मिलगए। बादशाह ने सब मुत्ता कि मशहूर मकाल आय है तो समारा  
करा का हुक्म दिया। उन्होंने उन सब छुमों की मकाल की जो उनपर  
हुए थे। यह देख बादशाह ने हुक्म दिया—बवा ऐसी भी छुम् विन्नी बाद  
शाह की प्रजा पर होना मुमकिन है। तब मौदागों ने काशिश कर के सब  
भेद खोल दिया। बादशाह ने खोच का और हाकिम को गिरफ्तार कर  
रोहतामगढ़ के त्रिखे में बंद कर दिया। वहाँ स वैदी का जीवन निकलना  
असम्भव था। उसका सब सम्पत्ति भी जप्त कर ली।

एक और म्वाय का समुदा सुनिये। एक बदमाश ने एक स्त्री को दूब  
तज़ किया कि मुम् स शादी करके। पर वह स्त्री नहीं हुई। उसने एक  
चुड़िया से मोठ गीठ की था उसे गिहजाता था और उसके शरीर के गुप्त  
चिह्न मालूम कर लिए। तब दांग कर दिया कि यह स्त्री मुम् से विवाह का  
बादा करके वादे से हटती है स्त्री ने इन्कार किया तो चुवक ने कहा कि  
मैं इनके गुप्त अङ्का क भेद जानता हूँ। अब परीचा स चुवक की बात सब  
हुई तो काज़ी ने हुक्म दिया कि यह अङ्की है इमे शादी करना पड़ेगा। स्त्री  
ने मोहलम मारी। और समझ गई कि चुड़िया ने पते दिये हैं। एकदिन  
वह दो मशयूत दासियों को संग खेकर उसके घर ला पहुँचा। और कहा—  
तू चोर है मेरा फज़ल उतार लाया है। ला उसक इन्कार करने पर वह  
उस ज़बर्दस्ती पकड़ कर हाकिम के पास ले आई और अपना आरोप कह

सुनाया—पुरुष ने कहा—मैं इसे जानता भी नहीं। सब उसने कहा—उस दिन तुमने कहा था कि तुम मेरे साथ मुझ तक रहे हो अब कहते हो कि जानता तक नहीं—यह क्या बात है ? फिर वह बादशाह के पास गई और सब कारगुजारी कह सुनाई। बादशाह ने सुनकर बुढ़िया और युवक को कमर तक ज़मीन में गड़वाकर तोरों से छिड़वा दिया।

बादशाह अपने भारी अमीरों को भाँ ऐसी ही भयानक सजायें दिया करता था। एक अमीर ने अपने नौकर की सनप्रा कई महोने तक नहीं दी, अचानक पाकर शिकार के समय उसने बादशाह से शिकायत कर दी। उसने उसी समय अमीर को बुलाकर पूछा। जब उसने अपराध स्वीकार कर लिया तो बादशाह ने हुक्म दिया कि वह घोड़े से उतर जाय और नौकर सवार हो अमीर उसके साथ २ पैदल चले। यही किया गया। अमीर जब दौड़ते २ बेदम होकर गिर गया तब बादशाह ने कहा—जब मैं तुम्हें ठीक समय पर सनप्रा देता हूँ तब तुम क्यों नहा देते ? एक अमीर मिसे दो हजारों मन्सब प्राप्त था और २० हजार रु० प्रति मास की आय थी और उसपर बादशाह अत्यन्त प्रमत्त था। यहाँ तक कि उसे एक पुतलीज औरत भी बाँट दी गई थी। उसकी शाही पान देने की गौकरी थी। शाही पान के छिये बादशाह का हुक्म था कि किसी को न दिया जाये। परन्तु वह गुप्त रूप से हमरा को पान दे दिया करता था। एक दिन बादशाह ने उसे पान देते देख लिया। उस समय तो वह चुप रहा। और जब वह शाम का बाता में पहुँचा तो बुलाकर हुक्म दिया—इसे इतना पीटो कि हमकी जान निकल जाय—क्याकि यह शाही हुक्म की परवाह नहीं करता। हमक मरने पर हमकी सब सम्पत्ति उसकी स्त्री को देरी गई। यद्यपि शाही क़ानून से उस का अधिकारी बादशाह होता था। एकवार एक हिन्दू मुन्श्री की दासी को एक मुसलमान निपाही ने ज़बदस्ती छीन लिया। मुन्शी ने बादशाह से अर्ज़ की। निपाही ने कहा दासी मेरी है। दासी ने भी यही कहा। बादशाह ने हुक्म दिया कि दासी को मइल में बुलाया जाय। रात को जब बादशाह बिछने बैठे तो दासी से दवात में पानी ढाकने को कहा। उसने

ठाक अन्दाज़ से पानी डाला। विष से बादशाह को निश्चय हो गया कि यह अवश्य मुरशी की दासी है। और उस मुरशी का दिला दिया। तथा विषाही को दण्ड दिया। बादशाह चोरा को कड़ा दण्ड देता था। वह पशुधा उन्हें सरहदा पठानों व पाय भिजवा देता और पठानों कुत्तों से बदलवा लेता था। यदि अक्रूर चोर को न पकड़ पाते तो चोरा का धन उन्हें गाँठ में देना पड़ता था।

हुज्ज लोग येने औरन बाखे भी बुनिया म होते हैं जो बद् २ बाद शाहा को हेच समझने हैं। ऐसे दो एक घूट मनापति का मजेदार किस्ता यहाँ हम लिखने हैं।

पाठकों को मालूम है कि बादशाह के सामने कोई बैठ नहीं सकता था। एक सनापति पर बादशाह बड़े क्रुद्ध हुए और उसे भीकरी से बर्खास्त कर दिया। वह ज्ञान की पर्याप्त न कर बादशाह के सामने पञ्जीयी मार कर बैठ गया और बोला—घयला मैं हुजूर का भीबर न सेवक, थव कम से कम इतना तो हुमा कि आताम से बैठ तो सकूँगा। बादशाह उसकी दृढ-गता पर दग हो गया। और फिर उसे बहाल कर दिया। वह हुक्म सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ और कोमिस बना लाया। एकबार शाह गोलकुण्डा का एक भग्नी दरार में हाज़िर था बादशाह ने उस से मजाक किया और अपने पीछे खड़े ज्ञान बठार की ओर हँसारा करके पूछा क्या तुम्हारे आश का ब्रह्म हय आदमी के बराबर है? उसने कहा—सदापनाह, मेरा आश कद में हुजूर से चार अंगुल ऊँचा है। बादशाह बहुत हारा हुआ, और दरार में उसकी भवानी भक्ति की वस्तुतः साराफ की तथा शाहे गोलकुण्डा के जुम्मे १ साल का कर जो १ लाख रु० के लगभग था छोड़ दिया। और उसे पान तथा एक घोड़ा इनाम दिया।

हम यह पाछे कह चुके हैं कि बादशाह अपने सदाँवा और सेवकों की सम्पत्ति के माज़िक होते थे। एक सिपाह साज़ार बड़ा धनवान् समझा जाता था। पर वह अपने पीछे बादशाह की कुछ सम्पत्ति छोड़ खाना नहीं चाहता था। जब वह मर गया तो राज-कर्मचारी उसकी सम्पत्ति पर कब्ज़ा करने

को गये। तो देखा नौ घटे २ भारी और मजबूत सन्दूकों में सोने की मेखों के ढाँचे लगे हैं। और सब ढाँचों पर सील मोहर लगी है। उस पर एक २ बिट भी चिपकी हुई है कि यह सब बादशाह की समर्पित है। जय के भरे द्वार में छोले गये तो किसी में सींग और किसी में पुगने लूने थे। बादशाह यह देख शय्यन्त घञ्चित हुआ, और बड़ा—मारुम होता है। इसका माप कसाई और माँ जमागिन भी इन्हें ले जाकर उसके साथ दफन कर दो।

इस प्रकार जो हथ मिलता था। उसे बादशाह खजाने में नहीं भेजता था। किन्तु इसके लिये दो प्रयत्न खजाने थे। एक सोने के लिये और दूसरा चाँदी के लिये। ये दो बड़े २ दौलत थे। जिनकी लम्बाई ७० फुट और गहराई ३० फुट थी। बीच में २ सुन्दर संगमरमर के स्तून थे। इनमें सोने के ढाँचे की खजाना और चाँदी के ढाँचे की भीता बहा जाता था। इनका चोर दवाई से बन्द किया जाता था। इन दौलतों पर बड़े २ कमरे थे जो खजाने के लिये खजाने के तौर पर काम में लाये जाते थे। यह जयदेस्त खजाना और नूर जहाँ का भारी राजमा औरंगजेब के जमाने में मानगुजारी की कमी से प्रचलित हो गये।

इन खजानों में से उच्च अधिकारी असाधारण खोरियाँ भी करते थे। एक बार बादशाह प्रातः काल पागीचे में घूमने और अपने हाथों से फल तोड़ने लगे। सिदाईखी अमीर साथ था। बादशाह उने फल देता जाता था। मइल में जाकर सब बादशाह ने फल मँगि तो उसने कहा—हुजूर। मेरे पास फल कहाँ है? वह ऊपर उधर तलाश कर के बहाने करने लगा। बादशाह ने माराज होकर कहा—‘यह तुम मेरे ही सामने झूठ बोल रहे हो’ इस पर सिदाईखी ने कहा—जहाँ पनाह। इन मशूला फलों की खोरी भी हुजूर ने मुझे नहीं करने दी परन्तु जहाँ पनाह खजाने की खोरियों से तब प्रकार भाँते बन्द किये हैं जो खजाना ३० हजार रुपये जेब में डाल लेता है। बादशाह ने धारे से कहा—हमको सब मालूम है। अगर मसलद... पोशी ३।



और हमके उपरान्त उसके लड़कों ने भी। हमकी सयमे बड़ी लड़की बेगम साहब जिम्मे यह सच से अधिक प्रेम करता था। बड़ी सुन्दर, चतुर, दाता और दयावादी थी। सबसो ग उसे प्रेम की निगाहों से देखते थे और वह बड़ी सज्ज भज में रहती थी। इस शाहजादी को बम्बरगाह मूरत की आँखें दोनों के मित्र जो हमके पिता ने हमें पाम के खर्च के लिये दे रखी थी। तास लाख रुपये की आगदनी थी। इसके अतिरिक्त इसके पाम रिमा के लिये एक बहुत बड़ा बवाहरात थे। यह दारा को चाहती थी। और उसे सदा हम ध्यान की चिन्ता रहती थी कि दरबार के समय हमारा उसके विपक्षियों से न मिले लयें।

हमारे डायन की बड़ी कोशिश की कि शाहजहाँ का मालिक दारा हो। बराबर वह विवाह की बड़ी इच्छा रखती थी। और दारा ने प्रतिज्ञा की थी कि दाया पर बैठते ही तुम्हारा इच्छा पूरी करूँगा। इस बात को मनस रखते हुए उसने अपनी सारी शत्रुताई बादशाह की प्रसन्न करने में लगा दी। वह बड़ा बड़े प्रेम और मन से शाहजहाँ की सेवा करती थी। और कहा भी था कि साधारण पुरुष कहते थे कि बादशाह का हमके साथ अनुचित व्यवहार है। दारा चाहता था और उसने बादशाह से विनोद का रिश्ता कि शाहजहाँ का विवाह विपक्ष मालिक मज्जायतनवा नामी से कर दि। लये का बल्लू के शाही आनदान से सम्बन्ध रखता है। यह पुरुष भी सुन्दर था। परन्तु शाहजहाँ के साजे शाहस्तवा ने इस सम्बन्ध में मनस शाहजहाँ को समझाया कि ऐसा न करेगा। क्योंकि यदि उसका शाहजहाँ से होगा तो उसे अवश्य ही शाहजहाँ की पदवी मिलेगी। इसके अतिरिक्त मज्जायतनवा शाहे बाल का सम्बन्धी है। जिससे शाहजहाँ न कभी आपको लड़ना पड़ेगा। और दूसरे अक्षर का यह भा प्रमाण है कि लड़कियों की शादी नहीं होनी चाहिये। यही कारण था कि मज्जा शाहजहाँ की इच्छा थी तो भी उसने अपनी लड़की की शादी नहीं की।

यह शाही गाने बजाने और गाने बजाने वाली चतुर थी। एक

दिन रात्र में बीन हो रही थी कि बाघने घांती की एक बारीक पोशाक में जो इतर में बसी हुई थी भाग जगमई। शाहजादी इसे बहुत प्रेम करती थी इस लिये इसे बचाने दौड़ी और भाग बुझाते २ छाती जला बैठी इस लिये दरबार में चरचा हुई। परन्तु शाहजादी को कदा दुःख हुआ जब उसे पता मिला कि यह स्त्री जियके लिये इमने इतना कष्ट उठाया था बच नहीं सकी इन खेल तमाशों के अतिरिक्त शाहजादा अगूरी शराब को बहुत चाहती थी जो फ़ारिस, फ़ारमीर और काबुल से मगाई जाती थी परन्तु इसके पीने की अच्छी शराब बंद थी जो उसके अपने घर में बनाई जाती थी। यह शराब बड़ी स्वाद होती थी और अगूर में गुलाब और बहुत से पदार्थ डाल कर बनाई जाती थी। मैंने इसके हुरम के कई मनुष्यों को स्वस्थ किया था। इस लिये बहुधा कृतिज्ञता प्रकट करने के लिये उस शराब का थोतलें मेरे पास भेज दिया करती थी। इससे मुझे बहुत लाभ होता था। बेगम साद्व रात को उस समय शराब पिया करती थी कम गाना बजाना इत्यादि होता था और कभी २ इस दशा को पहुँच जाती थी कि वह खड़ी भी नहीं रह सकती थी। इस लिये ठठा बर बिसतर पर ले जाना पड़ता था। जिस समय बेगम साद्व महल में दरबार को चमकती है जो बड़ी मन घन कर और बहुत से सवार और पियादे तथा खुशजा सरा जलूम में लिये चलती हैं। खुशजा सरा जो इसके चारों ओर घेरा दाबे होते हैं—जिम किसी को सामने देखे धकेल कर एक तरफ कर देते हैं। और किसी का कोई मान नहीं रखते बल्कि चलाते हुये डटो बघो के तारे झागये जाते हैं। इसी प्रकार सब शाहजादिया आती हैं और इसी लिये जो इन्ह आते देगता है शीघ्रता से रास्ता छोड़ कर एक ओर होजाता है।

इमकी गवारी बड़ी भार २ चलती है। आगे २ सबक सदकों पर पानी छिड़कते हैं जिससे कि गूल न उड़े शाहजादिया पाखलीम सवार होती हैं। जिसके ऊपर एक बहुमूल्य वस्त्र था सुनहरी जाली होती है जिसमें बहुधा कीमती पत्थर और लवाहरात जगे रहते हैं। पालकी के गिद खुशजा सरा मोर के परों के गुच्छों में सज्जिया डहाते आते हैं। जिनके दस्ते

अवाहितात स जटित और ऊपर मुनहरी काम होता है । सबक मुनहरी या रुनहरी भयद जिये हुए हटो बचो पुकारते हैं । पालकी के साथ नामा प्रकार भी सुगन्ध रहती है ।

यदि मार्ग में कोई अमीर अपने आश्रमियों सहित मिल जाय तो चूँकि वह ऐसे मुख्यी साहित करने का इच्छुक था । जिनके हाथों से राजधानी के सारे काम निकले । इसलिये वह आदर भाव से सबक से हट और घोड़े से उतर कर दोनों हाथ जोड़े हुए दो सौ कदम के फासल पर खड़ा हो जाता है । इस जगह वह उस समय तक खड़ा रहता जब तक कि शहनादी समीप न आ जाय और फिर बसे बड़ा गहरा मजाम करता ।

शाहजहा का सज्जे बड़ा खड़ा दारा था । वह शीयदार, सुन्दर, स्वस्थ दिव, धरपड़े आचार, पाल सुन्दर, भाषण, दयालू और निस्सहायों पर दया करने वाला था । परन्तु अपनी धुन का इतना पक्का था कि सदा यह समझता था कि मुझे किसी अन्य पुरुष की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं । वह सदा अनुमति देने वालों से घृणा करता था । और यही कारण था कि इसके प्रिय से प्रिय आश्रमकीय धनार्थों में भी हमको कुछ राय देने का साहम नहीं करते थे । यद्यपि हमके संस्कार से परिचित होना कठिन न था । वह सदा यह विचारा करता था कि उसका भाग्य बड़ा प्रबल है और प्रत्येक मनुष्य हम प्रेम की दृष्टि से देवता है । वह राग रग और नाच कूद को बहुत चाहता था । दारा पिगड़ी लोगों को बहुत चाहता था हमके अतिरिक्त नैसे कि हर मनुष्य जानता था । हमका कोई दीन नहीं था ।

यही कारण था कि धीरगजेव ने इसे काफिर के नाम से पुकारा । दारा पादरियों के साथ धार्मिक विषयों पर यातचीत करने और सुसज्जमान भोजनियों से उसका मुकाबला करने में बड़ा आनन्द लेता था । इस दशा में वह कमरे के चारों ओर एक एटका लपट लेता था । शाहजहा पादरियों का उन लोगों की दलीलों के सामने हारता हुआ देखकर रुश होता था ।

दारा को ज्योतिषियों पर पूरा विश्वास था । और बहुत से ज्योतिषी हमके दरबार में रहते थे । जिनमें सबसे बड़ा मेरा मित्र था । जिसका नाम

महानीक्षम था। क्योंकि वह मेरे पास कई बार सराबरी खाया करता था। इस शाहजादे के दो लड़के थे। बड़ा मुझेमान शिकोह और छोटा शिकोह। ये दोनों बड़ी बेगम के पेट से हुये थे जो शाही इरानदान से थी। जिस समय शाहजहाँ ने प्रत्येक शाहजादे को प्रथक २ देश बाँट दिये तो उसने दारा को कारमार खाहौर और काबुल का देश देकर अपने पास रख लिया। उसे इससे इतना प्रेम हो गया था कि इसे उसने बहुत से इन्कूब दे दिये जैसे हाथियों का छबाना, अपने सामने सोने की दीवारें के गुर्ज रखवाना। जो केवल बादशाह के सामने ही रखे जाने हैं। अपने प्रेम को प्रकट करने के लिये उसने आज्ञा दी कि उसके राजसिंहासन के पास एक और छोटा सा सिंहासन रखा जाय, जिसपर शाहजादा बैठा करे। यद्यपि दारा पिता का नाम करता हुआ उस पर कभी बैठना नहीं चाहता था।

इसके अतिरिक्त शाहजहाँ ने अपने सब उमरा को आज्ञा दी कि सबेरे का स्वागत दारा को देकर फिर शाही इन्कूब में आयें। कई छपसत्तों पर उसने कहा कि मैं दारा को अपना पुत्रराज बनाना चाहता हूँ। और जहाँ तक भी बनेगा इसको अपना पुत्रराज मानेंगा।

यह भी विजयदत्ती थी कि दारा ने महा प्रसिद्ध और चतुर अमीर सईदउद्दौला खाँ के प्राण ज़हर से लिये थे क्योंकि वह औरंगजेब का पक्षपाती था। बादशाह और सारा दरबार इससे प्रेम करता था। इसी प्रकार उसने एक हिन्दू राजा जयसिंह को भी अप्रसन्न कर लिया। यह पुरुष ४० हजार सवार और एक लाख पचास हजार सेना दल का अधिराज था। दारा ने एक बार कहा कि जयसिंह मिरासी प्रतीत होता है। राजा दिलावटी रूप में तो उस फटान को हज़म कर गया। परन्तु जिस समय दारा को उसकी आवश्यकता पड़ी तो उसने अपना बड़का छोकर ही छोड़ा।

— इसने उमरा को भी अपने प्रतिबुद्ध बना कर महा घोर मोरचुमझ से भी भोजोड़ किया। और जब बादशाह के दरबार में आया तो अपने अजते पुर्कों के द्वारा उसकी सन्निकट गुरा ली। और समय २ पर अपने मसजदों से उसकी चाल डाल पर चक्रवर्त्तित रहा।

शाहजहाँ का तीसरा बेटा औरंगजेब था। जो आजकल भारतवर्ष का बादशाह है। यह अरब गज भाइयों से दरबार में मिलाया, मंत्रीदा और अपने कम गुलाम रूप में मिहलान के ब्याही था। इसका बिल कुछ रोगी सा था और सदा कुछ न कुछ करता रहता था। इसका उद्देश्य यह रहता था कि बाघ का गह को पहुँचकर पूरा म्याप करे। उते वह पक्षी बाघ की कि दुनिया इसे बुद्धिमान, चतुर और म्याप रखक समझे। बान पुत्र बनने में भी यह अग्रणी था। और कदम बढ़ी पारितोषिक और धान देता था जहाँ पूरी आबरवकता हा।

परन्तु फिरकाज एक जगह यह अतिरिक्त कर घोषा कि उसने दुनिया को त्यागकर शास्त्रनिहायन के सब हथ घोषकर अपनी आयु सुशा की पूजा में व्यतीत करने का निश्चय कर लिया है।

किर भी दृष्टि में होते हुए वह अपनी बहन रोशन आरा के द्वारा सिहासन के बिये पूरा उद्योग करता रहा परन्तु जो कुछ होता था वह गुलाम से और ऐसी चतुराई से होता था कि किसी को भेद न छणे। इसके अतिरिक्त उसे मर या कि जने दृष्टि से सुखा न किया जाय। इसीजिये वह सदा इस उद्योग में था कि शाहजहाँ के दिवस पर पर करे।

शाहजहाँ का सबसे छोटा और चौथा बच्चा मुग़ल बच्चा था। यह पुत्र बहुत कम बुद्धि वाला था। बाने पीने और धानम्य भोगने के सिवाय कुछ नहीं जानता था। वह बड़ा बहादुर और पुण्यायी और सदा शस्त्र चकाने में लगा रहता था। और बाय विद्या में तो अपने कला का करताद ही था। और कई बार बड़े २ भेदियों और रीखों को अपने हाथ से भाजा मारने के छीक में अपने बाय सज्ज में बाज सुखा था। इसका कोई भाई शूर पीर और आनक नहीं था। अब कभी सदाई का बयान आया तो उस पक्षी प्रयवता होती और अपने हाथों और सज्जदार पर मरोता रखता हुआ वह सदा दरबार की बातों को श्रुता की दृष्टि से देखता था और किसी की अपने सामने कुछ इस्ती नहीं समझता था।

अपने अन्तिम दिनों में बादशाह अपने पुत्रों से भयभीत रहने लगा । वे सब याहिजा और बान बच्चेदार थे । पर परस्पर हथमें प्रेम न था । दरबार में भी प्रत्येक शाहजादे के घृणक २ पक्षपातियों के दल थे । यह बहुधा उन्हें ग्यालियर के जिल्ले में जैद करने की सोचा करता था पर उसे हिम्मत न होती थी । उसे ऐसा ज़ायाल हो गया था कि या तो राजधानी में ही मार मार मचावेंगे या घृणक २ राज्य छापम करेंगे । उसने तीनों को दूर २ मदेशों का सूबेदार बनाकर भेज दिया था । केवल द्वारा उसके पास था जो काबुल और मुलतान का सूबेदार था । तीनों शाहजादे घृणक २ अपने २ प्रायों में स्वतन्त्र बादशाह की भाँति रहते थे । वे सारी आमदनां स्वयं खर्च करते और सेना संग्रह करते थे ।

औरगजेब के विषय में लिखा जा चुका है कि यह बड़ा तरपर, दौंगी, और दूरदर्शी एवं मुस्लिम बादमी था । इसे एक ऐसा मित्र मिल गया जिसने इसके भाग्य का सितारा चमका दिया । इस बादमी का नाम मीर हुमदा था । यह मनुष्य ईरानी था, और अत्यन्त साधारण व्यक्ति था । यह एक सौदागर के साथ उसके कुछ घोड़ों पर मौक़र होकर गोलकुण्डे आया था । इसके बाद उसने जूते धेवने का काम किया । पर शीघ्र ही उसका भाग्य चमका और वह भारी व्यापारी प्रसिद्ध हो गया । इसने धन भी बहुत इकट्ठा कर लिया और समुद्र में उसके अपने कई जहाज़ चलने लगे । अपनी बुद्धिमत्ता से दरबार में भी प्रसिद्ध हो गया था । उसने शाह गोलकुण्डे को भी सस मँगाकर कुछ सौगातें दान और कुछ अन्य बहुमूल्य भेंट देकर उन्हें प्रसन्न कर लिया । और यह बघाटक का हाकिम बना दिया गया । जहाँ उसने जहाँ के मन्दिरों के चट्ट सज्जाने लुटकर बेतोल सम्पदा इकट्ठी की । इस प्रान्त में इसने 'लाल' की खान भी खूँ निकाली । और एक स्वतन्त्र फौज शक्त संगठित कर ली । जिसमें फिरङ्गी सोंपची थे । इन सब बातों से बादशाह इस बादमी से चौकचा हो गया, उसे ऐसा भी समझ हुआ कि शाही बेगमों से इस व्यक्ति का गुप्त सम्बन्ध है । एक बार उसने भरे दरबार में उसे खर्चन कहे । मीर हुमदा शाह का राज सम्भ्रम गया, उसने औरगजेब को

एक खत लिखा—जो उस समय दक्षिण का सूपेशर था और चौगुलाबाद में रहता था। उस खत का मज़मून यह था—

साहये धालम,

मैंने शाह गोलकुण्डा का यह वक्ता १ ज़िदमते को है कि जिन्हें तमाम ज़माना गानता है। और जिनके लिये वह मेरा बहुत मामूली होना चाहिये। मगर इतने पर भी यह मेरी और मेरे गानदान की बर्बादी की ज़िम्मे में है। इस लिये मैं आपकी पनाह लना और आपके हुज़ूर में हाज़िर होना चाहता हूँ। और इस दरख़ास्त की क़बूलियत के शुक्राने में जिसकी आपकी जानिब से पूरी दम्नोद है एक मनगूना अज़ा करता हूँ। जिसके ज़रिये आप आसानी से बादशाह को गिरफ़्तार करके मुझ पर क़ज़ा कर सकते हैं। आप मेरे बादे की सच्चाई पर पतवार और भरोसा क़र्माँ। इन्शा अल्ला यह मुक्ति न तो कुछ मुश्किल ही होगी और न कुछ ख़तरनाक ही। यानी आप ५ हजार रुपये हुये मयारों के साथ बहुत ख़र्च बिना तकरार क़बूल करते हुए गोलकुण्डा की तरफ़ चले आवें ज़िम में भिन्न सोलह दिन लगेंगे। और यह मशहूर करदे कि शाहेजहाँ का मफीर शाहे गोलकुण्डा से जरूरी बातें तय करने आया है। यह क़ौज़ उसकी धर्तली में है। वह शज़स्त जिसकी आक़त हमेशा हमूर की इत्तज़ा बादशाह को होती है मेरा ज़रीबी रितते दार है और उस पर मुझे कामिल भरोसा है। इस लिये मैं वादा करता हूँ कि एक ऐसा हुक्म जारी हो जायगा कि जिस की बदीलत आप बिना मन्देह के भाग नगर के दरवाज़े तक पहुँच पायेंगे। परन्तु जब बादशाह सामूख़ के मुआफ़िज़ क़र्मान के इस्तज़ाबाज़ के लिये जो सफ़ीर के पास हुधा करता है आवे तब उसे वाफ़ासानी गिरफ़्तार करके जो मुआमिय समकें उस के लिये तजवाज़ कर सकते हैं। इस मुहिम का कुल ख़र्चा मैं आप को दूँगा। और इस के इस्तहसाम तक २० हजार रुपये रोज़ देता रहूँगा।

लियाज़मन्द—

‘मीरज़ुमला’

औरङ्गजेब इस स्वर्ण युयोग को कब छोड़ता । यह तत्काल बल पड़ा पर ठीक वक्त पर बादशाह पर भेद सुझा गया और यह भाग गया । और गोलकुण्डा के किले में बसा गया । इस किले को औरङ्गजेब ने घेर लिया वो महीने भीत गये । औरङ्गजेब के पास तोपें न थीं खाया था । पर उधर किले में पानी और रसद भी शुरू गई थी । पर हमी बीच में शाह बहादुर ने उस तत्काल छोट आगे का हुक्म भेज दिया । जिससे यह पड़ता फर छोट गया । पर हतमी तन्त्रि करता गया—

१—घड़ाई का कुत्त गर्भ शाह से यमुल किया ।

२—भीर जुमला मय तुदुम्य और सम्पत्ति के राज्य से बाहर बजा जान दिया जाय ।

३—बही शाहजादी का अपने बड़े पुत्र महमूद स शादी करदी जाय । और उसका पुत्र ही गोलकुण्डा का उत्तराधिकारी समझा जाय । दहेज में रामगढ़ का किला मय मामान दिया जाय ।

४—सिखों पर शाहजहाँ क गजब की छापर रहे ।

औरङ्गजेब के हम काम में दारा और बेगम सादेव ( शाहजहाँ की बड़ी पुत्री ) ने जिग बाजा था । ये दोनों दोस्त जीटे । रास्ते में उन्होंने बीजापुर का बीदर का निजा फतह कर लिया । और दौलताबाद में रहने लगे । वहाँ औरङ्गजेब ने उसे चिकमी चुपची बातों से अपना सहायक बना लिया । और उसने भी प्रतिज्ञा की कि मैं आपके लिये तन मन धन प्यौदा घर घर दूँगा । औरङ्गजेब भी समझ गया कि यही पुरुष ताज्जे हिन्दुस्तान पर बैठाने की ताकत रखता है ।

शाहजहाँ तक भी उसकी धीरता और योग्यता की सूचनाएँ पहुँची और उसने उसे बुझाने के बारम्बार निमन्त्रण भेजने प्रारम्भ किये । अन्त में यह दिखा आया । शाही हुक्म से मार्ग में उसका सदाँरों ने भारी सरकार किया । जब वह भागरे पहुँचा तो बड़े २ सेनापति उसके स्वागत को आए और समाम बाजार सजाए गये । जिस प्रकार बादशाह क लिये सजाए जाने हैं । उसने बादशाह को भारी कौमल की भेंट दीं । जिनमें जगत्



प्रसिद्ध कोहनूर होरा भी था। और बादशाह को गोलकुण्डा के शाह के विरुद्ध खूब उभारा। वह राजी होगया और एक भारी सेना भीर जुमला की आधीनता में भेजी। विमे खेहर उमने बीजापुर का कल्याण का क्रिडा का चेरा। इस काम में दारा और शाहजहाँ ने दो खालाकी के काम किए— एक तो यह कि भीर जुमला के दो बच्चों का पत्नीर जमानत अपने पाम रख लिया, दूसरे उस में पादा करा लिया कि उस काम में औरजवेब का कोई सरोकार न होगा।

इस वक्त बादशाह ७० वर्ष से ऊपर आयु को पहुँच चुका था। और उसे एक भयङ्कर बीमारी लग गई थी। उमने इस अवस्था में अपनी शक्ति का विचार न कर बहुत सी फामोसोजक दवाइयाँ खाई थीं इसका परिणाम यह हुआ कि ३ दिन तक बादशाह का देहान्त चन्द रहा। इस खबर ने देश भर में हलचल मचादी बादशाह ने यह देख क्रिडे के सब दवाँजे चन्द करा कर केवल दो दवाँजे सुजे रखने की आज्ञा दी। एक पर जसवन्तसिंह राठौर को और दूसरे पर रामसिंह को ३०, ३० हजार सैनिकों सहित नियत कर दिये। और हुक्म दिया कि सिवा दारा के किसी को भीतर न जाने दें। उधे भी सिर्फ १० घादसी खेकर भीतर जाने की आज्ञा थी, अगर वह रात भर क्रिडे में नहीं रह सकता था। सिर्फ बादशाह की बड़ी बेटी बेगम साहेब ने क्रिड की और कुरान उठाकर फसम खाई कि दारा न करेगी।

यह सब अवसर देख दारा ने दिल्ली आगरा और लाहौर में सरकाख सेना संग्रह प्रारम्भ कर दिया। बरज्जर बन्द होगया। कहीं ९ बादशाह के मरने की भी खबर पहुँच गई। शाह शुजा को पञ्जाल में यह खबर आगते ही वह सेना खेकर कूच दर कूच करता दिहो की ओर चला। उसके साथ ७० हजार सवार और अनगिनत प्यादे थे। हमके सिवा उसने पुर्तगीजों की आधीनता में एक बेरा भी पञ्जा में तैयार करा लिया था। यह यह प्रचार चलाया था कि दारा ने बादशाह को फिर दिया है और मैं उसे दण्ड देन खाता हूँ। बादशाह ने उसे खौट जाने का हुक्म भेजा, पर उसने न माना। सब बादशाह ने हारकर उसी रोग की हाजत में दिल्ली से आगरे तक

की यात्रा की। और दारा के बड़े भुज्जेमोह सिक्कोह को राजा जयसिंह और सेनापति दिग्गेश्वरजी के साथ गुजा पर एक भारी सेना लेकर भेजा। सिक्कोह ने उसे बजास की ओर दारद दिया।

अब बादशाह ने देखा कुछ की तैयारी की। उसका हरादा देहजी राक्षसी से घाने का था। कई दिन तक उसके खरकों से भरी चततो रहीं पर अर्पोहो बादशाह चतने को हुआ कि उसे दारद मित्रो कि औरगजेव ने विद्रोह किया है। यह सुनकर बादशाह ने यात्रा रोक दी। और औरगजेव को छोड़ जाने का हुक्म भेजा। अगर उसने इसकी परवा न की। रास्ते में उसे पता लगा कि मुराद चतभ भी सेना सजा चुका है, अतः उसने उसे पत्र लिखा बतका आराय यह था—

महानुर माह ! मैंने सुना है कि दारा ने तहर देकर हमारे पिता मुगुर्ग बार को मरवा डाला है। मैं इस पत्र द्वारा आप पर मकद करमा चाहता हूँ कि आपके सिवा कोई भी साहसादा गरी का इरदार नहीं। दारा काकिर है गुजा, अर्जी का पेरोफार है, मेरी सतवतव कुरान है, और हरादा कर चुका हूँ कि औरगजेव के शेष दिन मछे में ब्यतीत करेगा। मैंने हरादा किया है कि वा खान से कोशिश करके आपको छतत पर बिठा दूँगा। मेरी सारी चतुर्ताई, अतः प्रीज आपकी है। मेरी यही आज है कि अब आप बादशाह हो जायें मेरे बाल बच्चों पर महारानी की मज्जर रखल। ये एक लाख रुपये मैं आपको बतौर मनराने के भेज रहा हूँ। आप औरगजेव के त्रिछे पर क्रमवा कर लीबिये जहाँ बहुत सी दीक्षत सुरक्षित है।

आप का प्यारा माह—औरगजेव।

पत्र पाकर मुराद फूनकर कुप्पा होपया। उसने औरगजेव को शीघ्र दरबार समेत आ मिछने को लिख भेजा। उसने महाजनों को भी यह पत्र दिखा कर बहुत सा रुपया कर्ज ले लिया।

औरगजेव ने अब अपने पुत्र मुस्तान मुहम्मद को मीर जुमला को लेने भेजा।

...के लिखे का साहसरा किसे बहा था और लिखत आपकी

सम्मति की बड़ी आवश्यकता है। क्योंकि कई कठिन काम आपसे हैं। आप मुझे सुरन्त औरंगाबाद में आकर मिलें। उसने जवाब में लिखा—

“कल्याण का मुझ-रा छोड़ और फ़ौज से अलहदा होकर मैं औरंगाबाद नहीं आ सकता। इसके अलावा आप विरवास करें कि मैंने ठीक ज़रूर पाई है कि बादशाह सखामस अभी ज़िन्दा है। फिर यह भी बात है कि जब तक मेरे थाल बच्चे दारा के ब्रजे में हैं मैं आपके शरीक नहो हो सकता।”

यह जवाब पाकर औरंगजेब ने अपने दूसरे पुत्र मुघज्जम को उसके निकट भेजा। जो समझा बुझाकर उसे जो आया वहा दोनों दोस्तों ने सलाह की और फ़ौजी तौर से मोर जुमला कैद होकर दौलताबाद के क़िले में रख दिया गया। उसने औरंगजेब को रपया भी बहुत दिया जिससे उसने फ़ौजें भर्ती कर डाली। उसने दक्खिन के सब क़िलेदारों और फ़ौजदारों को अपना साथ देने को तैयार कर लिया। नवदा पर एक विज्ञा या जहा होकर दक्खिन का रास्ता था। वहां के क़िलेदार मिर्जा अब्दुल्ला को उसने कहला दिया कि यदि कोई क़ासिद इधर स गुजरे और उसके पास ऐसी चिट्ठियां हों जिनमें बादशाह के ज़िन्दा होने की बात हो तो वे चिट्ठियां जला दी जायें और उस आदमी का गिर फाट लिया जाय। इपत्रकार अपने दक्खिन में अमली ज़रूर पहुँचने न दो और सब सदाय अपनी २ फ़ौज लेकर उसके साथ हो लिये।

मुराद को यह बराबर चिकनी सुरही चिट्ठियां मिल रही थी। मांडो के जंगलों में दोनों सेनाएं मिलीं। औरंगजेब हाथ जोड़े मुराद के सामने गया। उसे बादशाह कहा और बड़े २ सफ़ा बाग़ दिखाए। मुराद ने भी बड़े २ बाड़े किये। अब दोनों सरकर साथ २ चले।

यह भयानक समाचार आगरे पहुँचा तो दुर्गार में हलचल मच गई। शाहजहा ने दोनों शाहज़ादा को आपस जान को लिख भेजा। उत्तर में औरंगजेब ने लिखा—

“मुझे बदगाने वाला की सखामती की ज़रूर पर पत्रीन नहीं आता। और बिनाफ़ज अगर ये ज़िन्दा और सखामस हैं तो कदमबोली हानिकार करने और इराद पहचान से सरकराज होने की मुझे बड़ी तमन्ना है।”

लाधार बादशाह ने अपने सदाओं से सम्मति की और क़ासिमख़ां तथा ख़सबन्तसिंह को एक टुकड़ी बना देकर उन्हें रोकने को भेजा गया। उन्हें आशा थी जहाँ तक बने औरंगज़ेब को बाधना छोड़ा दें और उज्जैन में बिपरा नदी पार न करने दें।

गर्मी की शुरुआत थी और नदी का जल बहुत सूख गया था। राजा और क़ासिम नदी के इस पार थे कि टीले पर औरंगज़ेब की क़ौम दिखाई दी। यदि राजा साहेब उसी रात हमला बोल देत तो औरंगज़ेब की थकी हुई सेना के पाँच डल्ले जात, परन्तु उन्हें तो आशा ही यह थी कि नदी के इस पार रहें और औरंगज़ेब को इस पार आने से रोकें। औरंगज़ेब ३ दिन तक नदी के उस पार पड़ा रहा। तीसरे दिन उमने एक ऊँचे टीले पर तोपखाना लगाया और राजा साहेब की सेना पर गोले बरमाने की आशा की। साथ ही अपनी सेना को पार उतरने की भी। राजा साहेब ने धीरता से कुछ बिम्बा पर क़ासिम ख़ां प्रथम ही औरंगज़ेब से मिल गया था। उसने रातों रात गोला बारूद नदी में फ़िरका दिया था। शीघ्र ही उनका गोला बारूद चूक गया। औरंगज़ेब इस पार उतर आया। और क़ासिम ख़ां घोर सकट में ख़सबन्तसिंह को घोड़वर भाग रहा हुआ। राजा ख़सबन्तसिंह खूब ख़दे उनके १८ हजार रायदूतों में सिर्फ़ ३०० बचे। तब ख़सबन्तसिंह आगे न जाकर सीधे सोधपुर चले आए। वहाँ पहुँचते २ सिर्फ़ १२ बचे। उनके साथ बचे थे।

इस विजय से औरंगज़ेब का साहस बढ़ गया। और इन्होंने प्रसिद्ध किया कि शाही क़ौम में ऐसे ३ हजार सिपाही हैं जो हमारी सेना में आने को तैयार हैं।

औरंगज़ेब ने उस स्थान पर एक सराय बनवाई और बाता लगाया और उसके नाम क़ानदपुर रखवा। उसके साथ बहुत सा सामान गोला बारूद लगा। जो क़ासिमख़ां ने ज़मीन में गड़वा दिया था।

शाहजहाँ ने यह सुना तो कुछ और बेचैनी से बेहोश होगया। दादा का भी बुरा हाल था। उधर सुबेमान शिखोह राजा के पीछे लगा था, उसे बादशाह बारबार खीट आने के सम्येश भेज रहा था।

दारा ने १ लाख सवार, बीस हजार पैदल, ४० तोपें एकत्र की और युद्ध की तैयारी की। औरंगजेब के पास ७० हजार सवार थे। ये उनके हुद्द भी थे, पर दारा को रीत-न-या अब यह बादशाह का हुक्म नहीं मानता था। यदि हुक्म चलाता था। बादशाह दर दरह डारा काचार हो गया था। बिरगामी मरदार मुजेमान गिकोह के साथ थे, दारा में जो सवार थे, उन क ऊपर विराय नहों किया जा सका था। क्योंकि दारा ने बहुतों का अपमान किया था।

बादशाह स्वयं इस युद्ध में सेना पति बनना चाहता था। यदि ऐसा होता तो युद्ध तब जागा पर दारा को गर्व था कि बिगव का सेहरा में अपने सिर बांधूँगा। दारा को यह भी समझा कि मुजेमान गिकोह के आने तक कहरों को लड़ो से बड़ा था रहा है—पर उसने न माना। वह जब कुछ कारे विरा में मिलन गया तो बादशाह ने कहा 'तुमने अपनी मर्जी का काम किया, मुदा तुम्हें गुर्जर बसाये, दारा अब दिया और आगरे से ३० मील दूर पम्बस मदी का घाट रोक पड़ाव काय दिया।

औरंगजेब न भेदिये लगा रहने थे। और उसने दारा की गति बिबि माखुस था इतने पर भी उसने दारने केरे उस पार लगा दिये। और जान शुरू कर इतने पास लगाये कि जिन पर दारा की दृष्टि पड़ सके। इसके बाद उसने चम्पतराय से गन्धि कर बड़ी से १२ फर्जान की दूरा पर दुर्गम वन में होकर सेना इस पार उतार की। अब यह सुपचाप धममा किनारे तक पहुँच गया तब दारा को इस बात का पता चला और उसने उसका पीपा किया। अब आगरा निकट ही आगया था। औरंगजेब यहाँ सेना को विधाम की आज्ञा देकर सामग्री और मोर्चेबन्दी की तैयारी करने लगा।

उपर दारा न सभने आने तोपें लगा कर ऐसी जकड़ दी कि शत्रु के सवार पक्ति भग न कर सकें। उनके पीछे उसने ऊर्गे पर छाड़ी तोपें लगाई। इसके पीछे पैदल सेना पक्ति बीच बन्दूक चालने को सेनार हागत। शेष मना सवारों की भी जिन में राजपूतों पर लखवारे का बर्तिया थी और मुगलों पर लखवार, और और अनुष। इस सेना के दाहिनी और उजलीलुहाइलो

था जिस के आधीन ३० हजार सवार थे। बाँई और हस्तमग्रां दक्षिणी, राय छत्रपाख और सर्दार रामनिह थे। औरङ्गजेब की सेना की भी यही व्यवस्था थी। अन्तर यह था कि कुछ छोटी तोपें उसने दाये बाये भी दिया दी थीं। यह युक्ति और शुभजा ने बताई थी जो बहुत उपयुक्त निकला।

उधों ही युद्ध प्रारम्भ हुआ कि तोपों ने आग बरसानी शुरू करदी और तीरों की हलकी वर्षा हुई कि सादस छागया। पर इतने में और से वर्षा होने लगी। थोड़ी देर के लिये युद्ध रुक गया। पर पानी बन्द होते ही तोपें फिर चकने लगीं। इस समय दारा शिकोह एक सुन्दर सिंहलद्वीपी हाथी पर सवार होकर सेनाधियों का उत्साह बढ़ाता शत्रु की तोपें घीमने को आगे बढ़ा। ऊपर शत्रु ने इतने गोले बरसाये कि शूतकों के डेर छग गये। फिर भी दारा साहस पूर्वक बढ़ता ही गया। उसने बहुत चेष्टा की पर औरङ्गजेब के पास तक न पहुँच सका क्योंकि ऊपर के सौपराने ने इनके सिराहियों के लखे चुका दिये। परन्तु दारा ने साहस करके उनकी तोपों पर आक्रमण कर ही दिया। उनकी साँवलों खोल डालीं और प्रेमों में घुस तोपधियों और पैदलों को रोव डाला। हम काश्मर पर इतना घमासान युद्ध हुआ कि छाशों के डेर छग गये और सारो से आकाश छा गया। परन्तु ये तीर व्यर्थ जाते थे। १० मं ३ में मिशाने पड़ते थे। जब तरकश फाँकी होगये तो तलवार खटकी। अन्त में शत्रुधों के सवार भाग खड़े हुये।

औरङ्गजेब भी निकट ही था यह हाथी पर बैठा सेना को साहस दे रहा था। पर कोई सुनता न था। उसके १ हजार सवार बच रहे थे जो तेजी से काटे जा रहे थे। यह देख उसने सर्दारों से कहा—भाइयो! दक्खिन दूर है और अपने हाथी के पैरों में साँकल टाक दी यह देख सैनिक किये। दारा ने औरङ्गजेब पर छापा मारना चाहा पर उसके सवार यद्यपि पकि बंद नहीं थे, धरती भी ऊबड़-खाबड़ थी अतः वह मफल नहीं होता था। इस समय ३ पर संकट सिर पर आया था। इतने

उसने देखा कि सेना के बायें भाग में बड़ी हलचल मची है। कुछ वख्त बाद ही समाचार मिला कि खतमग्रां मारे गये। और रामसिंह शत्रु-सेना में पिर गये हैं।

अतएव यह औरङ्गजेब पर घापा मारने का विचार छोड़ धाई और को भागा। उसके पहुँचने पर यहाँ जहाँ का रंग बदल गया। शत्रु पीछे हटने लगे। यहाँ रामसिंह ने बड़ी धीरता प्रगट की थी उसने मुराद वष्य को घायल कर दिया था और उसकी अमारी का रस्ता बाट हींदे से गिराने की चेष्टा कर रहा था। पर वह भी धीरता से बचाव कर रहा था। वह कुर्मी से अवन २० वष के बच्चे को ढाल से बचा रहा था। अंत में एक तीर से उसने रामसिंह को मार गिराया। रामसिंह के मरते ही राजपूत घोरा में आकर मिट गये। उन्होंने मुराद को घेर लिया। अब दारा भी इस में पित्त डाल देना चाहते थे औरङ्गजेब बचा जाता था पर वह मुराद को भी धाँक न सकता था। इस समय सरदार खलीलुल्ला ने विरवासघात किया। यह दाहिने पंथ का सदाँर था, और उस के आधान ३० हजार सिपिह सवार थे। अकेला बड़ी औरङ्गजेब के गिये जाका था—पर उसने कुछ भी नहीं किया। उस न सैनिका से कहा—हमें एक तीर भी छोड़ने की आवश्यकता नहीं हम ग्याम मौजे पर काम आयेगे। इस सदाँर का एक बार दारा ने अपमान किया था जिसका उसने इस प्रकार बदला लिया।

परंतु दारा ने उसकी सहायता के बिना ही शिवा प्राप्त करली था। परन्तु ऐन मौजे पर इस ने दारा को पुकार कर कहा—मुबारिकवाद हज़रत सतामत, अलहम्दुलिल्लाह, हुज़ूर को बाज़ीर व सलामती यादशाही क़तह मुबारिक हो अब हुज़ूर हतने बडे हाथी पर क्यों सवार है जबकि कई गालियाँ व तीर अमारी के नायबान से पार हो चुके हैं। अगर खुदा-मा-अव्वारता कोई गोली या तीर जिस्मे मुबारिक से छू जाय तो हम गुलामों का कहां ठिकाना रहेगा। खुदा के वास्ते ज़रद उत्तरिये और घोड़े पर सवार हो लीजिये। अब क्या रह गया है सिक्र ज़न्द भगोवों को खुस्ती से बांध करके पकड़ना है।

अगर दारा यह समझ लेता कि इस बड़े हाथी को भी मदीनत उसे विजय प्राप्त हुई है, क्योंकि सैनिक उसे देखते रहे और हिम्मत बाँधे रहें हैं तो वह विशाख साम्राज्य का रक्षामी होता। पर छोड़े पर मवार होने पर उसे अपनी यह भूल मालूम हुई। वह बहुत बका भका और कहने लगा कि मैं उस जीता न छोड़ूँगा। पर अब कुछ नहीं हो सकता था—सिपाही हाथी को पानी देख कर समझ बैठे कि दारा मारा गया। और उन में खलबली मच गई। चण भर में माया उलट गई। दारा की फौज में भगदड़ मच गई। सिक्क पाव धपटे हाथी पर चढ़ कर औरङ्गजेब ने सजतनत पाई और चण भर को हाथी से उतर कर दारा ने पाई हुई विजय-जयन्ती को खो दिया।

एललीलुत्ताह यहाँ से हट कर औरङ्गजेब से जा मिला। जो इंदयरीय दल विजय को देख कर आश्चर्य कर रहा था। उसने एललीलुत्ताह को बहुत से सज्ज यात्रा दिखाये और मुराद के पास ले जाकर उसे पेश किया और मुराद ही बादशाह है यह भी प्रकट कर दिया।

अब औरङ्गजेब ने सब घमोरों को मीठे २ पत्र लिख कर अपने आधीन किया। उसका मामा शाहस्तखाँ इस काम में उसका मददगार था। दारा ने एक बार इसका अपमान किया था उसका बदला उसने अब इस भाँति लिया। औरङ्गजेब सब काम मुराद के नाम से करता और प्रकट करता कि यह विजुल बेक़ौम है।

दारा आगे कौट गया। अगर वह बादशाह को मुँह न दिख सका पर बादशाह ने ख़य सुन कर दारा को बहुत आश्वासन दिया भेजा और अपना प्रेम प्रकट किया। और यह भी कहा कि निराश न हो। सुलेमान शिकोह को सेना संगठित और ब्यूह पड़ है तुम सरकाज दिखा चले जाओ। यहाँ के हाकिम का लिख दिया गया है। वह तुम्हें १ हजार हाथी छोड़े देगा कुछ धन भी देगा। तुम आगे से दूर न जाना वल्के ऐसी जगह ठहरना जहाँ हमारे पत्र तुम्हें मिल सके।

पर दारा हताश होकरकुल था कि उसने कुछ उत्तर न दिया। उसने



अपनी बहिन के पास कुछ सूचनाएँ भेजी और आधी रात के समय अपनी स्त्री और बच्चों के साथ छोटे पुत्र सिकरसिन्धोह के साथ ३—४ मी आदमी लेकर देहला को चला गया ।

अब औरङ्गजेब ने सुलेमान शिकोह की सेना में फूट के भीत भेजे । उसने एक पत्र राजा बरगिह और बिजेरला को लिखा उसका आशय यह था—

दारा तो बिल्कुल सबाह होगया । वह बड़ा खराब मिस को ठसे भरोसा था शिकरत बादर हमारे कब्जे में आगया । अब वह ऐसी से भरो-भामानी स भागा नारहा है कि सवारों का एक रिमाजा भी साथ नहीं । हम ठने जरद गिरफ्तार कर लेंगे । इजरत बादशाह हम जरद थलाह है कि अब सिर्फ बाद रोज के मेइमान हैं । इसलिये इस हाकत में अगर तुम हमारा मुनासिब करोगे तो बतीजा बहुत खराबी और हलाकत के हुय न होगा । इस क निवा हम अबतर हाकत में दारा की वाकदारी करना नइज नावाना है । तुम्हारे इस में बड़ी बेहतरी है कि हमारे पास हाजिर हो जाओ और सुलेमान शिकोह को गिरफ्तार कर के अपने साथ लेते आओ ।"

बरगिह यह पत्र पाकर चिन्ता में पड़ गये । वे राज परिवार के व्यक्ति पर हाथ ठठाना ठोक न समझते थे । उन्होंने ने बिजेरला से सलाह की और औरङ्गजेब के पत्र को लेकर सुलेमान के खेमे में गये । और पत्र दिया कर कहा—

'मित्र अंतरनाक हाकत में आप पड़ गये हैं मैं उसे आप से दिवाना मुनासिब नहीं समझता । नियति बहुत गढ़ है । इस समय आपको न बिजेरला पर भरोसा करना चाहिये न हाकदारी पर और न फौज ही पर । आप यदि इस वक्त अपने पिता की मदद को आगे बढ़ेंगे तो आप भी दुर्दरा में पड़ेंगे । अब मुनासिब है कि दीनार के बहादों में चले जाये । वहा के राजा के वहा आपको आशय मिछेगा और वहा औरङ्गजेब भी न पहुँच सकेगा । वहा जाकर वहा के हाकदारी पर नजर रखे और अब मौजा देंगे चले आये ।'

यह सुनते ही शाहजादा गममन्न गया कि अब कोई मित्र नहीं रह गया था। वह क्रीड को वहाँ छोड़ कर कुछ हितैषियों को साथ लेकर चला दिया। सेना बयबिह और बिजेरात्रों के साथ रही। उस का बहुत सा कीमती सामान और मुहरों का ढेर था। सभी भी इन्हीं ने छेड़िया। रास्ते में भी उनके देहात के लोगों ने बहुत कुछ दिया। क्यों क्यों करके यह भीनगर पहुँचा। वहाँ के राजा ने उसका स्वागत किया और आश्रय दिया। और कहा—“अबतक आप यहाँ हैं मैं प्राण प्राण से आपका धिये हाजिर हूँ।

इस सब मगदों से निपट कर औरंगजेब ने आगे स तीन मील दूर एक गाँव में मुकाम किया और बादशाह को एक पत्र लिख कर एक अत्यन्त भुल और आलाप आदमी के हाथ भेजा। पत्र का विषय यह था—

“दारा शिकोह की बजराई और बेना इत्यादिक के बाइस स शो बक्रभात पेय आवे हैं। उन क क्रिये औरंगजेब को बहुत ही रस और अकसोस है हुजूर की तबियत अब अच्छी होती जाती है इसलिये हुजूर की छिदमत में सुचारिकताय अर्ज करने और महज इस शरत से कि जो कुछ इशार्द हो उसकी तामोस की जाय, वह आगे में जाया है।”

शाहजहाँ भी भारी राखनीतिज्ञ था। उसने सिर्फ यह जवाब जवाब दिया “उसकी सभादखमन्दो और फरमाँवरदारी से हम निहायत खुश हैं।” इसके बाद उसने पत्र में लिखा—

“दारा ने जो कुछ किया बेममकी और नाआपत्री से पुर था। तुम पर तो हम इस्तदा हो से शरफात रखते हैं, पर तुमको अहद हमारे पास आना चाहिये ताकि तुम्हारे मरिखरे से उन खमूर का इन्तखाम किया जाय जो इस गदयद की बाइस अराय और अवसर पड़े हैं।”

पर औरंगजेब एक ही काइशी था, उसने क्रिडे में धान का साहल न किया उसे मय था कि यह खबरद कौद कर दिया जायगा। अतः वह बार-बार आने के बादे करता रहा। उधर बड़े २ सरदारों से बातचीत करता रहा। एक दिन उसके बड़े पुत्र मुहम्मद सुखगान में सहसा क्रिडे पर अधिकार कर लिया। लोग इसके बचके होगये। यह काम वही आलाप की

किया गया। बादशाह इस प्रकार कैद हो कर मर्माहत हो गया और उसने मुहम्मद मुजतान का पत्र लिखा—

मैं तबत और कृपण मंत्री की कृपणता से कर रहा हूँ कि अगर तुम इस वक्त ईमानदाता से बतौंगे तो तुम्हीं को बादशाह बना दूँगा। इस मौक़ का इस्तेमाल जानो और दादा जान को ज़ेद से मुखा छो। बाद राज़ो कि इस सभासे आतिरत के अखावा मुनिगों में भी तुम्हें एक दायमी मेक लागी हासिल होगी।

यदि मुहम्मद मुजतान द्वारा साहस कम्के बादशाह की बात मान लेता तो यह कुछ हो जाता। क्योंकि अबकी बादशाह का खोर्गों की भूखा भी दादा के पतन के बाद यदि बादशाह स्वयं मुह को कमर बसना तो न तो औरंग जेब ही उसके मुशविजे का ग्राह्य भूता और न सदात उसकी बात टाकते। पर वह मुराहूँ के दाव पेच लेखना चाहता था और उसकी बड़ी बेटी का ज़माने भारो दाव था। अतः वह कुछ भा न कर सभा। मुहम्मद मुजतान के भाव में भी अब ज़िपर के त्रिज में दिना काटने बदे थे।

अब मुहम्मद मुजतान ने सभाय रिखा, 'मुझे हुज़ूर में हाजिर होने का इज्जत नहीं है। क्योंकि लाफ़ोदा हुज़ूम के दिगि यहाँ से अरब त्रिजे के कुछ धर्माजी की कुजिगी दाद अफ़ग़नी मुपुर्दगी में छपर जन्द थापम धाऊँ। क्योंकि ये हुज़ूर की ज़ुम बासी के जिहायत मुरताऊ हो रहे हैं।'

बादशाह को दिना लक़ आना पोदा कोचता रहा। और २ सप्त बीत उस छोड़ २ पर खड़े जा रहे थे। अब उसके त्रिज के सरतखों ने भी उसे छोड़ दिया तो उगने आनियाँ देखी और कहता भेजा—

"अब समझवारी इसी में है कि औरतलेर हम से आकर मिले। क्योंकि सफ़तनत के काम बहुत जरूरी हमसे हम उम समझना चाहते हैं।"

पर वह धूत अब भी न आया। और मुरगत पतवार प्राँ नामक एक विरधामी ब्यक्तिका त्रिजेदार नियुक्त करके भेजादया। जिसने यहाँ पहुँचकर सब बेगमा, यही राजकुमारी बेगम साहिबा और स्वयं बादशाह को भी कैद कर लिया। और त्रिजे के कई दरबानों एक दम बन्द करा दिये। साहिबा की

शुभचिन्तकों का भ्राता जाना और पत्र-व्यवहार कसई बन्द होगया। और वह बिना ज़िखेदार वो सूचना भेजे कमरे से भी बाहर नहीं निकल सकता था।

अब औरगज़ेब ने पर निकाला। उसने बादशाह को प्रत लिखा और सब को सुनाया। इस वह था—

“यह बेघददी मुकमे हमखिये सरज़द हुई है कि हुज़ूर जाहिरा मेरी निस्वत इजहारे-उवक़त य मिहरबानी करमाते थे, और यह इर्शाद होता था कि दारा के और व सरीज़ों से हम सज़त नाराज़ हैं। मगर मुझे पुछता प्रयर मिक्षी है कि हुज़ूर ने अशक्रियों से खदे हुए दो हाथी उमके पास भेजे हैं कि गिनसे वह नई फ़ौज़ भरती करके खूरेज़ ज़बाई को तज़ावत देगा। पस हुज़ूर ही तौर क़र्माए कि मुकसे इन हरकतों के—जो क़ज़-दों के मामूखी तरीक़े के खिलाफ़ और सज़त मालूम होते हैं—सरज़द होजाने का बाह्य क्या दारा शिखोह को खुदतरा नहीं है? इन बातों का सबब कि हुज़ूर क़ैद किये गये और मैं क़ज़-दाना ख़िदमत बज़ा खाने के लिये हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर नहीं होसका, क्या फ़ाक़ी नहीं है? मैं हुज़ूर से इतज़ा करता हूँ कि मेरी इन हरकत की जाहिरा सूरत पर फ़याख़ न क़र्माकर सिफ़ बन्द रोज़ बदीरत करें। ज्योंही दारा हुज़ूर को और मुझे तकज़ीर ११ के क़ाबिल न रहेगा, मैं खुद क़िले की तरफ़ दौड़ा भाज़ंगा, और हुज़ूर के क़ैदज़ाने का दर्वाज़ा अपने हाथों खोल, हाथ जोड़कर अज़ कर्हंगा कि अब कुछ रोक-टोक नहीं है।”

इस प्रकार कठोरतापूर्वक अब बादशाह क़ैद होगया तो सब अमीर औरगज़ेब को सज़ाम करने उसके दरबार में जा हाज़िर हुए। किसी ने बेघारे वृद्ध बादशाह की नमकहख़ाली का इत्फ़ाक़ नहीं किया। इनमें बहुत येमे थे, जो बादशाह के घन से प्रतिष्ठित और चमी हुए थे। कुछ को बादशाह ने गुलामी से मुक्त करके उच्च पद दिये थे।

इस प्रकार दोनड भाई पिता का बन्दोबस्त कर, और अपने मामा शाहस्तज़ाई को आगरे की सुपेदारी सौंप, इज़ज़ाने से ख़ास का इन्तज़ाम की खोज में आगरे से रवाना हुए।

इस यात्रा का अमर उद्देश्य कुछ और हो था। वह था मुराद का मुगलान करना। मुराद के विलैयी यह भेद पागये थे, और उन्होंने मुराद से कहा भी कि अपने सरकारसहित आगम दिल्ली से दूर न जाइये। औरंगजेब दावा करेगा, जब वह मृत्यु कहता है कि बादशाह गाय हैं, तो-फिर आपकी क्यों राजधानी से दूर ले जाता है? उसी को दावा के पोछे जाने दें। पर वह कुरान की कस्मों और प्रतिज्ञाओं के ठेले फेर में पड़ा था कि उसकी बुद्धि में यह बात नहीं लगी।

दोनों ने कूच किया। जब मथुरा के पास पहुँचे तो औरंगजेब ने उसे अपने वहाँ भोजन का प्योता दिया। मित्रों ने समझाया कि बीमारी का बहाना करके शाज जाय, पर उसने न माना। रात्रि को भोजन का भरणाम था। औरंगजेब ने मीरजाँ आदि को ठोक-ठाक कर रक्खा था।

जब मुराद पहुँचा तो औरंगजेब ने बड़ी आघ भगत की। अपने हाथ से उसके मुँह की गर्द पसीना पछा। जब तक भोजन होता रहा, हँसी मजाक की बातें होती रहीं। इसके बाद जब शराब के दौर चले, तो औरंगजेब ने उठते हुए मुस्कराकर कहा—

“हज़रत को मालूम है कि मैं अपने गज़बकी खयालात के बाइस इस पैरो निशात का सुइयत में मौजूद नहीं रह सकता ताइस ये लोग को इस पुर झुक्त अवस में शरीक हैं, मीर सादेब और दीगर मुमाहिब आपकी खिदमतगुज़ारी के जिये हाज़िर रहने।”

निदान, मुराद को हस्तनी शराब पिलाई गई कि वह बेकाश होगया। तब उसके नीकर लोग भी बिदा कर दिये गये और कह दिया गया कि अब इन्हें यहाँ आराम करने दें। जब वे चले गये, तब उसके हथियार खोजकर कज़े में कर दिये गये। इतने में औरंगजेब भी वहाँ आगया, और माग अदब क्रायदा साक में रख २० ठोकें खगाई और कहा—‘तुम्हें शर्म नहीं आती-बादशाह होकर इतनी शराब पीने हो? लोग मुझे भी क्या कहेंगे, जो तुम्हें बादशाह बनाने में मदद देता है।’ इस बाद उसने अपने आदमियों से कहा—

“इस बदबग्न के हाथ पाँव बाँधकर त्रिशतज्वाने में ले जाओ, ताकि वह नशा उतरने तक यहाँ देशमों का सोना सोए।”

सुरन्त घावमी दूट पड़े। उस समय मुसाद बहुत थीज़ा चिन्ताया, मगर वह पुख्ता हथकड़ी चेदियों से जकड़ दिया गया, और बन्द कर दिया। चौफ़ना बिहाना सुन, उनके सेवक दौड़े, पर उनके एक नमकहराम सरदार मीर आतिशब्दगी खाँ ने उन्हें रोक दिया, जिसे जानबूझकर औरगजेव ने प्रथम ही वश में कर लिया था।

वह घग्गा ताकाल करकर में कैद गई। औरगजेव ने सब बड़े २ सदाँरा को बड़े २ जानबूझकर राजी कर लिया और मुसाद को एक बन्द ज़मानो धम्कारी में दिवनी भेजकर सखीमगद में फेंक कर दिया, जो उस समय ज़माना के बीचोंबीच टापू में था।

वह कर, वह दाता के पीछे शौवा, जो बाहरीर का तेज़ी से ला रहा था और वहाँ ज़िलेयन्दी कर, सैन्य-समूह किया चाहता था। पर औरगजेव इतनी तेज़ी से पीछे दौड़ा कि दाता को वहाँ ज़िलेयन्दी का व्यवकारा न मिला, और वह मुल्तान की ओर भाग गया। यद्यपि मयामक गर्मी पड़ रही थी, पर औरगजेव की सेना रात दिन कूब कर रही थी। यह स्वयं ५।९ कोस जागे खजता, सूखे टुकड़े खाता और ज़मीन पर खेतता था।

दाता ने यहाँ भी भूज को। यदि वह कानुन चला जाता, तो उसे बहुत कुछ घाशा थी। यहाँ प्राचीन सरदार महाशक्तता था, जो औरगजेव का वीरता भी न था। उसके प्राचीन १० हजार ज़वरदस्त मेना थी। दाता के पास भय भी धन-दान की कमो न थी। वहाँ से ईरान और उज़्बेक देश भी निकट थे। खदौं से उसे बहुत सहायता मिल सकती थी। उसे इस ऐतिहासिक घात का खयाल करना उचित था कि जब शेरशाह ने हुमायूँ का हराया था, तब ईरान के शाह ने ही उनकी सहायता की थी, जिससे उसे राज्य प्राप्ति हुई थी।

पर भाग्यवश हमने वहाँ न जाकर उद्द के त्रिख में आश्रय लिया। औरगजेव ने जब देखा कि वह कानुन नहीं ला रहा है, तब उसका स्वयं

मिट गया, और वह मोर बाबा नामक घाय के बेटे के सुपुर्ब ८ हजार सेना छोड़कर हीयता से आगेरे छोड़ा। उमे भय था कि खयसिंह या खमयन्तसिंह या सुलेमान शिकोह हो मर्यं आकर बादशाह को सुदा छे, या शुजा दी न प्यदाई कर धेरे।

यसु, उद् व हुग में जा, दारा ने एक कगगासरा को यहीं का त्रिछे दार नियत किया और घरवा सब खजाना यहीं रखा जो बहुत था। फिर वह तीर हजार सेना को माय छोड़ सिन्ध नदी के किनारे २ कश्त्र होता हुआ गुजरात पहुँचा और अहमदाबाद के बाहर डेरा टाक दिया। यहाँ शाह नेवागर्वा, का शीरकजब का स्वमुर था, त्रिछेदार था—वह कोई मोदा न था। उमने त्रिछे के द्वार खोल दिये और और उम्मान से दारा का सगार किया। दारा ने उमकी तरकता पर मुग हो, अपने सत्र गुल भेद बल पर मकट कर दिये।

औरतजब ने यह सुना, तो उसे चिन्ता हुई; क्योंकि अभी उसके बहुत शत्रु थे, और अहमदाबाद जैसी मजबूत जगह में उसके बाँव खमने उमे शोकार न थ। उसे भय था कि खयसिंह और खमयन्तसिंह भी इससे मिल जावेंगे। उधर उसने यह भी सुना कि भारी सेना छिये सुलतान शुजा दौड़ा खजा आरहा है, और हुलाहाबाद तक आचुका है। उसे यह भा प्रथर मिली कि श्रीनगर के शशा की मदद से सुलेमान शिकोह भी तैयारी कर रहा है। सब विपत्तियों पर विचार कर, दारा का ध्यान छोड़, वह शुजा पर खपका, जो हुलाहाबाद में गंगा के हम पार तक आगया था। खनुश नामक गाँव में दोनों सेनाएँ मिलीं। यहाँ मीर जुमला भी उससे बहुत सी सेना-महिद था मिला। युद्ध हुआ। इस युद्ध में खमयन्तसिंह धी ने जो औरंगजेब से आ मित्रे थे, सहसा पीछे से आक्रमण कर, उसका सारा खजाना और माझ लूट लिया। इससे औरंगजेब की अठिनाई बढ़ गई। सेना विचलित होगई, पर वह विचलित नहीं हुआ। पर शुजा ने उधर से भारी आक्रमण किया। एक तीर महावत की भाँस में आ लगने से औरंगजेब का हाथी बेकाबू होगया। वह हाथी से उतरने ही को

था कि मीर जुमला ने कहा—“हज़रत, यह दफ़ा नहीं है, क्या गणव करते हैं।” मीर जुमला के रथ कौशल वा क्या ठिकाना था ! सम्झा हो चली थी, लपट धुरे थे, पर मीर जुमला ने औरंगज़ेब को हाथी से न उतरने दिया।

औरंगज़ेब प्रतिद्वन्द्व शत्रु के पगुज में फँसने की सोच रहा था। उधर शुजा शीघ्र उसे गिरस्तार करने को हाथी से उतरा। बस, उसकी वही दशा हुई, वो दारा की हुई थी। उसके हाथी को झांकी देख, सैनिकों ने उसके मरने का समुद्देश किया और वे भाग निकले।

औरंगज़ेब की विजय देख, असबन्तसिंह भागरे छोट भापु। वहाँ यह शहर उड़ी कि औरंगज़ेब और मीर जुमला बकड़े गये, तथा शुजा भागरे की ओर बक रहा है। शाह्रवाज़ा ज़ाँ इन बातों से इतना घबराया कि बिप पीने लगा। पर द्विषों ने प्याला उसके हाथ से छीन लिया। हथ पीच में असबन्तसिंह चेष्टा करते तो शाहजहाँ को क्रोध से छुड़ा सकते थे, पर वे स्थिति समझ और भागरे में डहरना ठीक न समझ, मारवाड़ को छोट भापु।

उधर औरंगज़ेब सोच रहा था कि न जाने भागरे में असबन्तसिंह ने क्या किया होगा। वह तेज़ी से छोट रहा था। पर उसने सुना—शुजा अब भी हलाहाबाद में पाँव जमा रहा है, उसके पास बहुत धन है, और वहाँ के राजा उसके सहायक हैं।

अब औरंगज़ेब को सिर्फ़ दो आइमियों पर भरोसा था। एक अपने पुत्र मुहम्मद सुलतान, दूसरा मीर जुमला पर। पर वह दोनों ही से भय जाता और समुद्देश करता था। उसने दोनों को दूर करने का उपाय कर लिया। मीर जुमला को बंदी सेना देकर शुजा पर भेजा और कहा—“बंगाल के जख्मेज़ सूखे की हुद्दमल आप और आपके ज्ञानदाग में रहेगी, और सब आप शुजा पर ज़तह पा लेंगे, सब कमीहल डमरा का सप से बड़ा खिलाब भी आपको दिया जायगा।”

इसके बाद उसने मुहम्मद सुलतान से कहा—“बेटे, तुम मेरे सब से बड़े पुत्र हो, और अपने ही काम पर आवे हो। तुमने बड़े १ काम।”



पर बाद रखो, हमारे भाती बैरी तुम्हारे पकड़कर जब तक न ले जाओ, सब काम अधूरे हैं ।'

इसके बाद उसने दोनों को बहुत-सी भेंट दी । फिर उसने खासाकी स मुहम्मद मुजतान की बेगमा और मीर जुमला के पुत्र मुहम्मद शमीन को रोव लिया ।

इन वह चुके हैं कि मीर जुमला एक ही अद्भुत प्रतिभा का आदमी था । शुजा उस रोकने की यत्नी २ मोरचे-दी कर रहा था । वह गंगा के घाट का सावधानी से रोके हुए बैठा था । सहसा उस गमापार मित्रा कि ओ सेवा आरही है वह को दिवावा है-मीर जुमला तो आन-गान के राजाओं न मन्त्रि कर, राजमहल पहुँच गया, और अब बगाल की ओर इसक कौटो का मार्ग बन्द है । यह सुनकर वह हत-बुद्धि ता रह गया । वह बड़ी फटिगाहियों से सुगेर और राजमहल के बीच पैसीछे बरत की गंगा को उगार राजमहल पहुँचा और मीर जुमला से छोड़ा दिया, तथा ५ दिन के कुछ के बाद भाग रहा हुआ । यहाँ का लगी थी । मीर जुमला गया आतु राजमहल न कारने का डर गया । मुहम्मद मुजतान भी उसके साथ था । शीघ्र ही दोनों में कगवा होगया । मुहम्मद मुजतान अपने को समस्त सेना का स्वामी और मीर जुमला को कुछ समझने लगा । यह एवर जब औरंगजेब को लगी तो बहुत भागा हुआ । इन पर वह भय भीत होकर चुपचाप वहाँ से चलकर शुजा न था मित्रा । पर उसने उस पर विश्वास ही न किया । तब वह बिगड़कर वहाँ से भी चला और इधर-उधर घूमकर मीर जुमला से आ मित्रा । मीर जुमला ने उसे जमा करके रख लिया । पर बादशाह न उसे दिखो आने का हुक्म दिया, और ज्यों ही वह गंगा के पार उतरा कि एक सैनिक टुकड़ी ने उसे गिरफ्तार कर लिया और पृथु चन्द चमारी में रखकर ग्वालिबर दुग में छेड़ कर दिया, जहाँ उसकी समस्त आयु खतील हुई ।

उधर नमकतमिद ने रूट के घाट स पूरा भारी सेना संग्रह कर, दारा को लिखा कि आप आगरे को बूच करदें, मैं राह में आपसे आ मिलूंगा ।

दारा ने भी भारी सेना समूह करखी थी, और कूच का दिया। पर राजा जयसिंह ने ममका मुक्ताकर जयवन्तसिंह को हथ फामेले में पड़ने से रोक दिया। उधर औरंगजेब ने दारा को घज़नेर ही में जा रोका। फिर युद्ध हुआ। परन्तु फिर विरवातघातियों और मूखताओं के कारण अन्त में उसे मय सामग्री छोड़, पत्र-बखो, सहित भागना पड़ा। इस युद्ध में दारा के साथ यहाँ तक दारा की गई कि सोपा में गोखों के स्थान पर बाम्बू की धैलियाँ भर कर छोड़ी गईं।

यह फिर अहमदाबाद को छोटा। अब खेमे तक उसके पाप न थे। मार्ग के सब गाथा उसके शिपरी थे। भयानक गर्मी थी। भीत लोग रात-दिन उसके पीछे लगे रहने और मीठा पाकर सूँ खेत थे। किसी तरह यह अहमदाबाद के निकट पहुँचा तो उसके निपुण किये क्रिश्चियन ने उसे लिख भेजा—‘क्रिश्चियन के निकट न आइये, काटक चन्द हैं और मेरा राष्ट्र-सहित सुरतैद खरी है।’

दारा की दुरवस्था का वर्णन प्रसिद्ध फ्रेंच डॉक्टर बरमियर इस भाँति करता है—

‘इस समय में तीन दिन से दारा शिकोह के साथ था। मैं उसे अन्धकार मार्ग में मिल गया था। उसके भाव कोई वैध नहीं था। हमलिये उसने मुझे जयवन्ती अपने साथ खेजिया था। अहमदाबाद के गवर्नर का पत्र पहुँचने से एक दिन पहले की बात है कि दारा ने मुझसे कहा कि “कदाचित् आपको कोली मार दालें।” यह कहकर वह आग्रहपूर्वक मुझे अपने साथ उस कारवाँ में खगया, जहाँ वह स्वयं ठहरा था। अब उसकी यह दशा थी कि एक लेमा तक उसके पास नहीं था। उसकी बेगम और छियाँ केवल एक कनात की आद में थीं। कनात की स्त्रियाँ मेरी सवारी की बहनी की पदियों से, निममें मैं सोया जाता था, बाँधी गई थीं। जो लोग इस बात की जानते हैं कि भारतवर्ष के अमीर लोग अपनी स्त्रियों के पर्दे के विषय में कितनी अन्याय करते हैं, वे मेरे इस कथन पर विश्वास न करेंगे। परन्तु मैंने इस घटना का हाल जब बुलन्द शेरशाह के

लिखा है, जिसमें दारा उम समय पड़ा हुआ था। अस्तु, इसी रात की पी फटने के समय जब अहमदाबाद के हाजिम का ठक सन्देश आया, तब औरतों के रोने बिछाने ने हम सब को रूखा दिया। उस समय एक विज्ञापन प्रकार की हैरानी और निराशा छा रही थी। सभी दर के मारे चुपचाप एक-दूसरे के मुँह देखते थे कोई उपाय नहीं सूझता था, कुछ नहीं मालूम था कि क्या घर में क्या हो जायगा। अब दारा शिकोह स्त्रियों से मिलकर जनात के बाहर आया, सब मैंने देखा कि उसके मुख पर मुर्दमी सी छा रही है। वह कभी इसमें कुछ कहता है, कभी इसमें कुछ बात करता है। एक माधारण सिपाही से भी पूछता है कि अब क्या करना चाहिए। जब उसने देखा कि प्रत्येक व्यक्ति दर और घबराया हुआ मालूम होता है, तब उसे विरवास होगया कि मरमस्त अब इनमें से एक भी मेरा साथ न देगा। वह कहा ही हैरान था कि अब क्या होगा, किपर जाना चाहिए, यहाँ ठहरने से तो खराबी ही खराबी दोस्तों है।

‘हम तीन दिन की अवधि में जब कि मैं दारा के साथ था, हम लोगों को रात दिन बिना कहीं ठहरे हुए जाना पड़ा। तभी ऐसी प्रचण्ड धा, और धूल इतनी उड़ती थी कि हम घुटा जाता था। मेरी यहखी के तीन बहुत सुन्दर और बड़े गुजराती पैरों में से एक मर चुका था, दूसरा मरने की दशा को पहुँच चुका था, और तीसरा इतना बक चुका था कि चल नहीं सकता था। यद्यपि दारा बहुत चाहता था कि मैं उसके साथ रहूँ, विशेषकर इस कारण से कि उसकी एक बेगम के पैर में बहुत घुरा घाव था, पर वह हम दुदशा को पहुँच गया था कि जमकान और अनुजय विनय करने पर भी किसी ने उसको मेरी सवारी के बिये काई धोड़ा या बैल या जैट नहीं दिया। अब काई सवारी नहीं मिली, तब आचार होकर मैं पीछे रह गया। दारा को चार पाँच-सी सवारों के साथ जाते देखकर (बर्बोकि घटते २ अब उसके साथ इतने ही सवार रह गये थे) मैं एकदम रो पड़ा। परन्तु अब तक भी वो हापी उसके साथ थे, जिन पर खीय कहते थे कि दरये और अशर्जिया करी हुई हैं। उस समय मैं समझा था कि दारा ठह की ओर जायगा।

वर्तमान अवस्थाओं को देखते हुए यह उपाय कदाचित् सुरा नहीं था पर वास्तविक बात तो ऐसी है कि इधर भी विपत्ति का सामना था और उधर भी। मुझे कदापि ऐसी आशा नहीं थी कि वह उस मरुस्थान से, जो भइमदा बाद और ठट्ट के बीच में है, कुशलपूर्वक बचकर निकल जायगा। हुआ भी ऐसा ही। उसके माथिया में मे बहुत सी छिपीं मर गईं, और पुरखों पर जो ऐसी आपत्ति आई कि कुछ तो भूख प्यास और थकावट से मर गये, और अधिकोश को निदय कोलियों ने मार डाला। यदि ऐसी आपदाओं से 'मरी यन्त्रा में स्वयं द्वारा शिकोह मर जाना तो मैं उसे बका ही भाग्यवान् समझता। पर सब प्रकार के कष्ट और विपत्ति सहता हुआ क्रम में वह करड़ प्रांत में पहुँच गया।

'यहाँ के राजा ने जैसा कि चाहिये, बड़ी उपाय रति से उसका स्वागत किया और अपने यहाँ उसे स्थान दिया। परचाट् डमने द्वारा से कहा कि यदि आप अपनी क या का बियाह मेरे पुत्र से करण तो मैं अपनी सब सेना आपकी सहायता के लिये उपस्थित करदूँ। परन्तु पीछे जिस प्रकार यशवन्तसिंह पर जयविह का लाटू चला गया था, उसी प्रकार यहाँ भी हुआ। शीघ्र ही उसके भाव बदले हुए दिखाई दिये। जब कह बातों से द्वारा शिकोह ने देल लिया कि यह कुछ तो मेरे प्राण ही जोग चाहता है, तब वह तुरन्त यहाँ से ठट्ट की ओर चल दिया।

'जिस समय द्वारा ठट्ट की आपदा-पूर्ण यात्रा में लगा हुआ था, उस समय बगाल में लड़ाई पहले की तरह हो रही थी। द्वारा शिकोह ठट्ट के निकट पहुँच चुका था, और केवल दो ही तीन दिन का मार्ग बाका था। मुझको उन क्रांतीसियों और कई दूसरे यूरोपियनों, से जो उस दुग की सेना में थे, मालूम हुआ कि यहाँ पहुँचकर द्वारा को यह समाचार मिला कि मीर जाया ने, जो बहुत दिनों से दुग को घेरे हुए था, भीतरवालों को यहाँ तक लग कर दिया है कि आप सेर मोस था चावल २॥) रुपये को मिलती है और दूसरी वस्तुओं को बहुत महँगी दें, तौभी बहानुर जिनेदार अब तक साहस किये हुए है, और वह प्रायः दुर्ग

मिहिरकर दायुर्ध्व पर आक्रमण करता है, और हर प्रकार की सभाई, धीरता और स्वाभि भक्ति व भीरु भाव का आक्रमणों का शक्ति है। उसके इस प्रशस्नाय कार्य के विषय में वे बोधोपियन था, जो उसकी सेवा में थे, कहत थे कि गव मच है। उन्होंने मुझ पर यह भी कहा कि जब उसको दारा क निष्ठा था। का मन्त्राद मित्रा, तब उसने और भी उपाद विषयभाषा और इस प्रकार विषयद्वियों को अपने गम में ला लिया कि दुर्गवाले भीरु भावा का घिराव तोड़कर दारा का दुर्ग में जाने के लिये वे अपने प्राण दे देने को तैयार हो गए।

इसके अतिरिक्त उस सादसी सरदार ने और भी कई अच्छे उपायों से युक्ति निपुण जादूनों का भीरु भावा का मन में भेजकर घेरा घरनेवालों के मन में इस बात का विश्वास डराने का दिया कि दारा एक बहुत बड़ी सेना के साथ घेरा तोड़ देने के लिये यहाँ आ रहा है और अब भीरु पहुँचता जा रहा है। उसने यहाँ तक यह कहा कि हम दारा और उसकी सेना को अपनी आँखों से देख आये हैं। यह युक्ति इनकी सफल हुई कि घेरेवालों के हृदय के छूट गये। इसमें मन्त्रेह कहा कि यदि दारा उस समय का पहुँचता तो भीरु भाव व लोग अचरित तिर बितर हो जाते। यह समझकर कि भोजन आदमियों के साथ घेरे का तोड़ना असम्भव है, पहले तो उसका यह विचार हुआ कि मि तु नदी पर जाके ईरान को चला जाय, परन्तु उसका वेगम ने एक निषण और बाढ़ियात सी बात कहकर उसका यह विचार भंग कर दिया। उसने कहा— यदि आप ईरान जाने का विचार करेंगे तो खूब समझ लीजिये कि मुझको और मेरी बेटी दाना को शाह ईरान की लौंडिया बनना पड़ेगा, या ऐसी बेहजती है कि हमारे खानदान में किसी को गजरा न होगी।" इस बात को दारा शिकोह और वेगम दोनों भूल गये कि हमायूँ जब ऐसी ही आपदाओं में पड़कर ईरान गया था और उसकी वेगम भी उसके साथ था, तब उन दोनों के साथ कोई अनुचित व्यवहार नहीं हुआ था, बल्कि बहुत ही सम्मान और मिष्टाचार से यहाँ उनका स्वागत हुआ था। अस्तु इसी प्रकार विचार करते २ दारा ने मोघा

कि जीवनखाँ पठान के यहाँ जाना उचित होगा। यह एक प्रसिद्ध और बलवान सरदार है, और उसका स्थान भी कुछ बहुत दूर नहीं है। दारा के मन में जीवनखाँ की सहायता का ध्यान आने का कारण यह था कि उसके विद्रोह मचाने और दुष्टता करने के कारण शाहजहाँ ने दो बार उस हाथी के पाँवों के बीच कुचलवा डालने की आज्ञा दी थी। पर दोबो ही बार दारा के कहने सुनने से यह छूट गया था। दारा का इस समय उसके पास जाने का मतलब यह था कि उससे कुछ सैनिक सहायता लेकर वह मीर बाघा को टट्ट के दुर्ग से हटा सके और यह ज्ञाने जो वहाँ के जिलेदार के पास हैं, लेकर जम्हार चला जाय और वहाँ से सहज ही में काबुल पहुँच जाय। उसे विश्वास था कि उसके वहाँ पहुँच जाने पर काबुल का सूबेदार महाबतखान, जो एक बड़ा भारी अमीर था, और जिसे काबुल वाले बहुत मानते थे, बिना कुछ धागा पोड़ा किये बड़े प्रेम से उसकी सहायता करने को तैयार होगा, क्योंकि काबुल की सूबेदारी उसे इसी का मदद में मिली थी। दारा का यह विचार किसी प्रकार भी ग़ुरा नहीं था परन्तु उसकी जियाँ उसका यह विचार सुनकर बहुत ही घबराह। उन्होंने कहा कि जीवनखाँ के यहाँ जाना उचित नहीं है। बेगम और उसकी पुत्री सिकंदर शिकोह उसके पैरों पड़ गई और प्रार्थना करने लगी कि आप ऊपर का विचार छोड़ दें। यह पठान एक प्रसिद्ध डाकू और लुटेरा हैं ऐसे आदमी पर भरोसा करना अपनी मृत्यु को आप बुलाना है। उन्होंने यह भी समझाया कि टट्ट का पिताब ठठा देने की कुछ ऐसी आवश्यकता भी नहीं है। इस सवाई मल्ले में हाथ दाखे बिना भी आप काबुल का मार्ग अवलम्बन कर सकते हैं। मीर बाघा भी टट्ट का घेरा छोड़कर आपका रास्ता नहीं रोकेगा। परन्तु दारा की उल्टी समझ मदा उसके सीधे मार्ग से भड़का देती थी। उसे उनकी बात पित्रवुख नहीं आँधी। उसने कहा कि काबुल की यात्रा बहुत ही कठिन और भयानक है, और जिस व्यक्ति के मने प्राण बचाए हैं, वह इस समय मेरी सहायता अवश्य करेगा। चाँकि बहुत समझाने और प्रार्थना किये जाने पर भी वह काबुल न जाकर जीवनखाँ पठान के यहाँ

चला गया। जीवतस्त्री यह समझता रहा कि दारा के साथ बहुत बड़ी सेना आती होगी। यही समझकर उसने उसके साथ बड़े सम्मान का यत्न किया, उसके साथी सिपाहियों को सादर स्वागत दिया, और उनके आराम के प्रबन्ध कर देने की अपने आदमियों को आज्ञा दी, परन्तु जब उसे मालूम होगया कि दारा के साथ दो तीन-सौ आदमियों से अधिक नहीं हैं, तब तुरन्त ही उसके भाव बदल गये। यह पता नहीं लगता कि औरङ्गजेब के फइने में अथवा स्वयं अपनी इच्छा से उसने ऐसा विरक्तमन्त्र किया पर जान पड़ता है कि अशक्तियों से लदे हुए उम कई प्रचुरों को देखकर उसे लालच आगया। उसने एक रात को बहुत से जवान-भिड़नेवाले आदमी इकट्ठा करके पहले तो दारा के सब रुपये ऐसे और स्त्रियों के धाम्भय छीनकर अपने अधिकार में कर लिये, पीछे दारा शिफोह और निरुद्ध शिफाह पर आक्रमण किया, और जिन लोगों ने उनको बचाया था, उन्हें मार डाला। इसके बाद दारा को बाँधकर उसने एक हाथी पर बैठाया, और एक अधिक को हथकिये पीछे बैठा दिया कि यदि वह अथवा उसका कोई और आदमी कुछ भा हाथ पाँव हिलावे, तो अधिक उसी क्षण उसकी समाप्ति कर दे। इस प्रकार अप्रतिष्ठा के साथ उसने दारा को खाकर ठूट में मीर बाबा के सुपुत्र कर दिया। मीर बाबा ने आज्ञा दी कि इसे लाहौर होने हुए देहली के जाओ।

जब आगवहोन दारा देहली के निकट पहुँचा, तब औरङ्गजेब ने अपने दरबारियों से इस बात की राय ली कि आलिपर के दुर्ग में बंद करने से पहले उसे देहली में घुमाना चाहिए या नहीं? इस पर कुछ लोगों ने तो यह उत्तर दिया कि ऐसा करना उचित नहीं, क्योंकि प्रथम तो यह बात राज कुटुम्ब की प्रतिष्ठा के विपरीत है, दूसरे इसमें बलवा होसोने का दर है, और कुछ आशय नहीं कि लोग उसे लुट्टा लें। पर प्राय लोगों का यह राय हुई कि उसे अवश्य एक बार जगर में घुमाया जाय,—ताकि लोगो को भय हो, उन पर बादशाह का रौब छा जाय, तथा जिन लोगों को अभी तक उसका पकड़े जाने में सन्देह था हुआ है, उनका सन्देह मिट जाय और

उसके द्विपे पक्षपातियों की आशाएँ भंग हो जायें। अन्त में औरङ्गजेब ने भी इसी राय को उचित समझा और दारा को नगर में घुमाने की आज्ञा दी। अभागा दारा और उसका पुत्र सिक्ररसिकोह दोनों एक ही हाथी पर बैठाये गये और अधिक की जगह बहादुरखाने को बैठाकर नगर पर्यटन कराया गया। परन्तु यह सिंहखदीव का पेरू का हाथी नहीं था जिस पर दारा बहुत बढ़िया सामग्रियों से सजकर बैठा करता था, और बहुमूल्य मूल तथा सैनिक आभूषणों से ढका रहता था; यह एक बहुत सवियल और गन्दा खानवर था। स्वयं उसके गले में भी वह बड़े २ मोतियों की माला, शरीर पर वह ज़रब्रत का क़ाया और सिर पर वह पगड़ी नहीं थी, जो भारतवर्ष के बादशाह और उनके कुमार पहना करते हैं। इन वस्तुओं के स्थान में पिता पुत्र दोनों बहुत ही मोटे वस्त्र पहने थे। इसी वृथा में दोनों शहर भर के बाजारों में फिराए गये। उनकी वृथा देखकर मुझे भय होता था कि कहीं खून-पराजी न हो जाय। आश्चर्य है कि एक ऐस राजकुमार के साथ जो लोगों को प्रिय था, ऐसा यत्न करने का दरबारियों को कैसा साहस हुआ? यह और भी आश्चर्य की बात है कि वचाय के लिये कुछ सेना भी साथ में नहीं भेजी गई थी; विशेषकर ऐसी अवस्था में जबकि औरङ्गजेब के अनुचित काम देखकर सब लोग कुछ दिनों से उससे रुठ हो रहे थे।

‘इन अविचार का समासा देखने को बड़ी भीड़ जमा थी। स्थान २ पर खड़े होकर लोग दारा के दुर्भाग्य पर हाथ मल रहे थे। मैं भी नगर के सब से बड़े बाजार में एक अच्छे स्थान पर अपने दो मित्रों तथा सेवका के साथ बनिया घोड़े पर खड़ा खड़ा था। सब ओर से रोने चिछाने के शब्द सुन पड़ते थे। स्त्री, पुरुष और बच्चे इस प्रकार चिछाते थे, मानों उन पर बहुत ही भयानक विपत्ति पड़ी हो। कुछ श्रीमन्तों घोड़े पर दारा के साथ था। वहाँ ओर से उस पर गालियों की बौछार पड़ रही थी; मलिक कई एक क़बीलों और तारीय आदमियों ने तो उन पाजी पठान पर पत्थर भी फेंके। परन्तु राजकुमार के छुड़ाने का साहस किसी को न हुआ।

‘अब सवारी देहली नगर में सर्वत्र घूम चुकी तथा अभागा कैदी



से झूटकर ऐसे स्थान में पहुँच गया था—वहाँ से उसका देश उसने दस-सातह कोस ही रह गया था, कि कुछ मनुष्यों ने, जो पहले से बात बगाये जागल में बैठे थे—उसे घेर कर मार टाका।

‘बारा का पुत्र सुजेमान शिकोह भीनगर के राजा के यहाँ विप गया था। राजा को जब बहुत सा धमकाया गया, तो वह भी भय-भीत होगया। परन्तु वह बलपूर्वक पकड़कर दिल्ली लाया गया। जब बादशाह के सामने सुनहरी इथकड़ी पहनाकर लाया गया तो उसके सुन्दर शरीर को घायल और बेबस देखकर दावारी रोने लगे। औरंगजेब ने तुल और महानुभूति प्रकट करते हुए कहा—

“सुना पर नज़र और हमीनाज़ रखो कि तुम्हें कुछ जरूर न पहुँचाया जायगा। बरिक्त तुम्हारे साथ महारबानी की जायगी। तुम्हारा बाप तो सिर्फ़ हमझिये ब्रह्म किया गया था कि वह काज़िर था।” इस पर सुजेमान ने हाथ ऊँचा कर, और मुक़दर बादशाह को सख़ाम किया, और कहा—“अगर हुज़ूर की मर्गा है कि मुझे पोस्त दिखाया जाय करे, तो यहतर है कि मैं अभी ब्रह्म कर दिया जाऊँ।” इस पर बादशाह न पोस्त न रिजाने की प्रतिज्ञा की और फिर उसे स्वाज़ियर के ज़िन्ने में ज़ैद कर दिया गया।’

सुराद धमी ज़ैद में था, पर उसके प्रशस्तक धमी बहुत थे। बादशाह उन कौटे को भी एक-दम काट छाखना चाहता था। एक दिन एक सैयद के पुत्रों ने धाकर नाखिरा की कि सुराद न उनके पिता को ब्रज कर दाख़ा है, मो उसका गिर मिलाना चाहिए। इसका किसी ने विरोध न किया, और सुराद के तिर काट देने की आज्ञा देदी गई।

जब शुजा रह गया। उसे और हमझा ने किसी योग्य न छोड़ा था। औरंगजेब बराबर उसकी मदद में सेना भेज रहा था। अतः में वह टाके की घोर भाग गया, जो समुद्र के किनारे बगाल का अन्तिम नगर है अब कहीं जाय ? तो उसने बराकान के राजा की शरण ली। राजा ने उसे आश्रय दिया, पर बहाज़ न दिया। अब भी उसके पास बहुत धन था। शुजा को अब हुआ कि कहीं मैं रूटा न जाऊँ। राजा ने उससे प्रस्ताव भी किया कि

यह अपनी लक्ष्मी उने ब्याह दे, पर शुजा ने न स्वीकार किया। ठहरे उसने एक पद्म्यन्त्र रचा, जिसमें बहुत से पुर्वगीत छुट्टे और राजा के रिश्नेदार भी सम्मिलित थे। इनका अभिप्राय यह था कि महल पर आक्रमण करके राजा और उसके परिवार को क्रान्त कर दिया जाय। पर भेद खुत गया और उसने पैगू को भाग-जाना चाहा, पर रास्ता ऐसा विकट था कि यह सम्भव न हो सका। अतः वह परिवार सहित पकड़ा गया और मार डाला गया। उसकी लक्ष्मी से राजा ने विवाह कर लिया। शेष परिवार के लोग कैद कर दिये गये। पर उसके पुत्र सुलतान पात्री ने फिर पद्म्यन्त्र रचा और फिर भगडा फोड़ हुआ। इस बार शुजा का परिवार भर ब्रह्म कर दिया गया, जिसमें वह लक्ष्मी भी थी, जिसे राजा ने विवाह था तथा गो गर्भरती थी। सब के सिर कूटहाडे से काटे गये।

इस प्रकार ६ वर्ष के अन्दर यह मुगल परिवार की शाग बुकी और भय भ्रकेला औरल्लोय बिना प्रतिहन्दी के सदान् साम्राज्य और रात्ता का स्वामी था।

बादशाह को सद्यतनशोमी का वर्णन यन्वियर इस भाँति करता है —  
उस दिन बादशाह दोबान खाल में सलत ताऊन पर बैठा था। उसके कपडे बहुत ही सुन्दर और फूँददार रेशम के बने हुए थे और उन पर बहुत अच्छा जरी का काम किया हुआ था। सिर पर जरी का एक मन्दोज था, जिस पर बड़े बड़े बहुमूल्य हीरे का तुराँ जगा हुआ था। उसमें एक पुत्रराज ऐसा था, जो बेजोश पहा जा सकता है। यह मुख के समान चमकता था। उसके गले में बड़े बड़े मोतियों का एक कण्ठा था जो हिन्दुओं की माजा की तरह पेट पर लटकता था। छुर सोने के पायों पर यह स्थित बना है। कहते हैं कि यह विशुद्ध ठोस है और इसमें याकूत और कई प्रकार के होरे बदे हुए हैं। मैं उनको गिनती और मुख्य निश्चित नहीं कर सकता, क्योंकि इसके निकट जाने की किमी को आशा नहीं है। हमसे कोई उनकी क्रोमस-भाषि का पता नहीं जगा सकता, पर विश्वास किया जाय कि हममें हीरे और जवाहरात बहुत हैं।

मुझे याद है कि हमका गृह ४ करोड़ ४४०१ आँका गया था। यह सफ़्त साहजहाँ ने इयज़िये बनाया था कि इज़ाने में पुराने राजाघों और पठानों से खूदे हुए और चमीर-उमरा से नज़र में आए हुए जो अवाहरात इकट्ठे होगये थे, उन्हें खगा देले। उसकी अवाहरात और कारीगरी भी उसके अवाहरातों के समान ही है। दो मोर तो मोतियों और अवाहरात से विपुल बड़े हुए हैं। हमको एक आम्बोली कारीगर ने आश्रयबनक रीति से बनाया था।

सफ़्त के नाचे की चौड़ी पर चौड़ी का बटहरा खगा था। ऊपर ज़री की आहार का एक बड़ा खंडुआ टंगा था। उमरा बहुमुख्य बरत पहने खड़े थे, और रेशमी खंडुए, जिनमें रेशम और ज़री के फुँदने छगे हुए थे, इतने थे कि गिनती नहीं। बहुत बड़िया रेशमी आज़ीन बिते हुए थे। बाहर एक बड़ा भारी झेमा था, जो बदन में आधी दूर तक फैला था और चौड़ी की पत्तियों से भँड़े हुए बटहरों से घिरा था।

इस झेमे के बाहर की ओर छाज रंग का कपड़ा खगा था और भीतर मलकी पद्म की सुन्दर छींट थी, जो अति उत्तम तथा प्राकृतिक मायूम देती थी। चमीरों को आशा थी कि ये आमज़ास के पारों और की महाराबें अपने अपने दाप से राजाघों। इसके फल-स्वरूप सादी दीवारें कमज़ाब और ज़री से ढक गई थीं और ज़मीन बहुमुख्य आज़ीनों से भर गई थी।

( १२ )

## औरङ्गजेब

सब तरफ से निष्कट होकर यह व्यक्ति सन् १६६२ में गद्दी पर बैठा । इस समय ८ दिन तक प्रत्येक असिद्ध नागरिक और सब अमीर-उमराओं ने मज़र गुज़ारी । यह यह जानता था कि उसके पारिवारिक अत्याचार के कारण सब लोग उससे बदज़न हैं, इसलिए उसने अमन अमाग्न त्रायस करने की चेष्टा की । जिन्होंने उसकी मदद की थी, उन्हें भारी इनाम दिये गये । राजा अर्पासिह को साँभर का इलाका दिया गया । अन्य उमराओं को भी इलाके दिये गये । ख़ाम-ख़ाम अन्तिर्या की सनप्रवाहें बढ़ाई गईं । अमीरों को जवाहरात की जड़ी तख़्तारें, एक-एक हाथी और एक-एक घोड़ा दिया गया । इससे बहुत लोग उसको बाह-बाही करने लगे ।

शरन के अन्त में उसने ५०० छैदियों का, जो जेल में थे, सिर करवा लिया, जिससे सब डरें । यह रस्म क़दम-नसूख नामक मस्जिद के सामने अदा की गई, जो छाहीरी दर्राज़े से थोड़ा १॥ मील दूर दक्षिण पश्चिम में थी ।

चितागरेहज़ी में इसका दरबार था । उसने पुराने हाकिमों को बदल कर नये ओहदेदार बनाये । बहुत-से हुकम मतलब के भी दिये गये । हम प्रचार आस पास उसने सब प्रबन्ध ठीक कर लिया ।

तख़्त पर बैठने ही इसने शराब के विरुद्ध द्रुब आ-बोज़न किया । यह जानता था कि देश में शराब की द्रुब बिक्री थी—जहाँगीर के ज़माने से ही इसका प्रचार बढ़ गया था । शाहजहाँ के ज़माने में भी दारा की छेला देखी लोग उसे द्रुब पीने लगे थे । शाहजहाँ ने प्रजा के आनन्द में विशेष ध्यान नहीं दिया । इसने एक बार जोश में आकर कहा—“तमाम हिन्दुरतान में सिर्फ़ दो व्यक्ति हैं, जो शराब नहीं पीते—एक मैं, दूसरे काज़ी अय्युब-

बहाय " परन्तु मन्त्र कहा जाय, तो दोनों ही सुपचाप शराब पीने थे। इसने हुक्म दिया कि तमाम इसाई डॉक्टर शहर को छोड़कर तोपखाने के धान के पाम चले जायें, जो शहर से एक कलांग के फासले पर था। वहाँ उह शराब खाँचने और पीने की आशा थी, परन्तु अम्बों को बेचने की मनाही थी। फिर हमने कोतवाल को हुक्म दिया कि शराब बेचनवालों का एक-एक हाथ और एक-एक कान काट लिया जाय। कोतवाल यद्यपि पूरा शराबी था, पर वह मुस्लिमों से इस हुक्म की तामीन में लग गया।

थोड़े ही दिन में शराब प्ररोधी बंद होगई। परन्तु धीरे धीरे वह फिर जारी होने लगी, और अमीर लोग सुपचाप शराब खाँचने लगे।

इसी तरह उसने भद्र और अफ्रीम के विरुद्ध भी खूब सफ़रती की। इसके लिये ज़ास अक्रसर नियुक्त किया। उसे हुक्म था कि वह इन सब भद्रों का रिवाज उड़ावे। पर वह सफ़रती भी धीरे धीरे बस होगई।

इसके बाद उसने हुक्म दिया कि कोई मुसलमान ४ अंगुल से ज़्यादा दाढ़ी न रखे। इसके लिए एक अक्रसर नियुक्त किया गया, जो अपने निपा-हिमों के साथ खोगा की दाढ़ी मापे, और जिसकी दाढ़ी बड़ी देखे, उसे काट दे, तथा मूर्खों को काटकर साफ़ कर दे। यह अक्रसर भी बड़ी मुस्लिमों से कैंची पैमाना लिये फिरा करते थे। इस अक्रसर को देखते ही मज़ा यह होता था कि बन्तु से खोग अपने अपने मुँह काँप लेते थे कि वह उनकी दाढ़ी न काटले।

उसने गाने बजाने के विरुद्ध भी हुक्म दिया कि 'जहाँ गाने-बजाने की आवाज़ आवे, घुसकर बाजों को तोड़ दाखो। इस पर कुछ गवैर्या ने मिर्ख-कर एक तरकीब की। जब बादशाह जुमे की जमाज़ को जा रहा था, तब कोई ५ हजार आदमी २०-२२ गनाने बजाकर खूब रोते पीन्ते चिन्हाते उधर से निकले। बादशाह ने देखकर पूछा—'यह क्या है?' सब बहोने हाज़िर हाकर कहा—'हज़ूर, शायरी मर गई है, उस्ती का यह जनाज़ा है।' बादशाह ने हुक्म दिया—'उसे इतना गहरा गाओ कि फिर न निकल सके।'।

घम उसने रदियों की शायी करने का हुक्म दिया। शाहजहाँ के जमाने में इनकी बड़ी मृद्धि होगई थी। जो रंटी शायी न करती थी, उसे देश निकाले की सजा थी। इससे शीघ्र दो रदियों के मुहल्ले बसाइँ होगये।

महावत लोग मुगल दरबार के नियम के अनुसार हाथिया को दरबार में सख्तामी के लिये लाते थे। तब ये यह शरारत किया करते थे कि बाज़ार में उन्हें भड़का देते थे जिससे ये दुकानों को तोड़ते फोड़ते तथा भादमियों को कुचलते चन्नते थे, घासकर उन लोगों से, जिनमें उन्हें इप हो, वे खूब मरझा लेते थे। बादशाह ने पूछा—“हाथी खुद दीवाना हो जाता है, या दीवाना कर दिया जाता भी मुमकिन है।”

महावतों ने उनका मतलब न समझा, और जशय दिया “जहाँ पनाह, हाथी का सब चाहें कुछ दवाइयाँ मिलाकर मरत बनाया जायकता है।” इस पर बादशाह ने हुक्म दिया कि महावतों से खिलवा लिया जाय कि यदि कोई हाथी किसी का मुक़्तान करेगा, तो उसका हरजाना महावत से लिया जायगा।

हम पहले यह चुके हैं कि मुग़ल-सल्तनत में पत्नीरों की दुष्टता का बड़ा जोर था। ये लोग दुष्ट, जिद्दी तथा गुरखाज होते थे। सब लोग इनसे डरते थे। ये लोगों को अन्ध विश्वासों में खूब फँसाते थे। सब लोग इनके पास जाते, कुछ न कुछ पत्रावा साथ में ले जाते थे। ये बड़े तारीज़ देते तथा औरतों को कुमलाने। पर औरतों को मौत्रा पाकर हाँ कुमलाते थे। इनके घर में सैकड़ों दासियाँ और बूटभियाँ होती थीं, जो बड़े घर की स्त्रियों को कुमलाया करती थीं, और इधर उधर की गवर्ने उन्हें देती थीं, जिन्हें यथाकर ये पाखंडी औलिया बन जाते थे। इस बादशाह ने यद्यपि इनका कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया, पर उन १२ औलियाओं को सज़ा दी, जिन्होंने दारा के बादशाह होने की मविष्य बायी की थी। उन्हें बुलाकर उसने कहा—  
 “कोई करामात दिखाओ। इसके लिए मैं तीन दिन की मुहल्लत देता हूँ।”  
 यह सुनकर वे घबराये। वे जानते थे कि यह मज़ीज़ नहीं है,—इनमें से दो ने तो औरन् कह दिया कि हम बख़्श के निवासी हैं, हम खुदा को छोड़-

कर और कुछ नहीं जानते। बाजी देदारों ने बहुत-से सिखात को खगाया, कुर्बानियाँ कीं, पर जब उन्हें बादशाह ने बुलाया और कहा कि या तो कोई करामात दिखाओ वरना कोई खगवाए जावेगे, तो वे चुर रहे। परियाम यह हुआ कि कुछ को भिन्न भिन्न क्रिद्धों में छेद कर दिया गया, और कुछ को देख से मियाज दिया। हमने ने एक मसिह भौषिधा की गढ़न भी बाड़ी गई। हमका नाम शाह-सैयद-सरमद् था। ये आलमगीर औरगजेब के समय में एक ईश्वर-वादी साधु थे। एक चौहरी के पुत्र अमीरचन्द से उन्हें प्रेम हो गया था। उसी भावेश से वे उसे सुदा कहा करते थे। वे बहुतो मंगे रहने थे। हम जमाने में हमी नाम का दिल्ली का राजा था। उसने औरगजेब से सिफायत की कि सरमद् नाम का एक शरत शहर में भगा पिरछा है, यह कसमा नहीं पड़ता और अमीरचन्द को सुदा कहता है। औरगजेब ने तुरन्त सिपाहियों द्वारा उस गिरफ्तार कराया और अपने दरबार में बुलाया। उसकी ओ बातें हुई, वह 'मुगल-पुत्र-नकाह' नामक ज़ारसी की किताब में हम तरह दर्ज हैं—

औरगजेब—सुदायत कीमत ७ सरमद् दरों दहर (तेरा सुदा कौन है वे सरमद् इस आलम में) ?

सरमद्—जमी दाजस अमीरचन्दरा का शीर (मैं जहाँ जानता कि अमीरचन्द क मिया कोई और हैं)।

औ०—सरमद् ! कामा सिा जमे पोरी (वे सरमद् ! कपड़े क्यों नहीं पहनता)।

सरमद्०—अरकम कि दुरा मुल्क जहाँशानी दाद।

मारा हमी अस्वाये परेशानी दाद ॥

पोशी बिबाम-हर किता-येवे दोद।

वे पृष्ठ री बिबास उरियावी दाद ॥

(जिस शब्द ने हमें मुल्क और बादशाहत की और मुल्क का तमाम सामान परेशानी के दिये, हमी शब्द ने उसको बिबाम पहिनाया, जिसमें कि पेय देखा और येदेवों को नयेपन का बिबास दिया)।

बा०—सरमद, कलमा चिरोन न मे ज़ाँदी (सरमद, फलमा क्यों नहीं पड़ता) ।

सरमद—खुशनां खुशानम के दर मय पदीस्त शीतौ (किस तरह पढ़ें, क्योंकि मेरा शीतान शहरदस्त है) ।

बादशाह इस बातचीत से बहुत नाराज़ हुआ । अपने हुक्म दिया कि यदि वह अपने विचार न बदले तो इसकी गर्दन काट दी जाय । समाम दरबारियों ने समझाया कि वह इन तीन बातों से सोचा करले । खेदम सरमद ने तारक कह दिया कि मैं अपने में कोई देव या खोरी-कपट नहीं देखता कि सोचा करूँ । मेरा आत्म विरदास मेरे साथ है और वह पवित्र है, जो किसी के मार्ग में बाधा नहीं डालता । मैं सोचा नहीं करूँगा ।

उसके बाद अख्ताद को बुलाया गया । उस ज़माने में अख्ताद सुर्त पोशाक में आया करते थे । सरमद ने अख्ताद को सुर्त कपड़ों में आते देखा तो बहुत हँसा, और मौज़ में धारु उमने वह शेर पढ़ा कि—

बहर रगे के ज़वाही बामा मे पोश ।

मन अज़ ज़ेबाए क़रत मे शनासम ।

( जिस रंग के तेरा भी चाहे कपड़े पहन ले, मैं तो तेरे कद की ज़ूब सूरसी से तुझे पहचानता हूँ । )

निदान, अख्ताद ने बढ़कर एक हाथ मारा और उसकी गदन से तिर धकाग होगया । गदन बलाय ज़मीन पर गिरने के एक भज़ा ऊँची होगई और उस वक्त भी एक शेर उमके मुँह से निकला ।—

सर जुदा कर्द अज़ तनम् शोत्रे कि यामा बार बूद ।

क्रिम्मा कोलाह गरत दरमा दर्द मर में निगियार बूद ।

(सर मेरा उस माशुक ने जुदा किया, जो मेरा बहुत दोस्त था । खजो, जिस्सा खतम हुआ, वरना यही तिर-दर्दी थी ।)

मुसलमानी कितारों से आलिमों ने इस काम का अच्छा नज़र से नहीं देखा । मुसलमान अय तक सैयद सरमद के चौखिया होने के क़ायल हैं । उनका मज़ार दिल्ली में पूर्वी दरवाज़े की तारक बामे-मन्जिद के सामने हरे-



मरे पीर के पाम हो है, वहाँ आज तक हिन्दू-मुसलमान उनकी ज़िन्दगी करते हैं। ख़िस्ती मुसलमान शायर ने यह शेर भी लिखा है—

सर कटा है-सब ने सरमद का।

तक़्त ग़ाराज़ होगया है हिन्द का।

चक्रवर्त ने एक नियम बनाया था, और वह सब तक जारी था - कि सब काबे धार्मिक शाही दफ्तर स करकर भाग जाता था, और मुग़ल-राज्य में आश्रय द्रव्यता था तो उस पर निगारानी की जाती थी। इनके लिये गुप्तघर नियुक्त होते थे जो भिन्न भिन्न पेशेवाले होते थे। वे लोग भी बहुत-सी ख़बरें देते थे। इनकी यदीनत बादशाह सब बातों का पता लगाते थे। औरंगज़ेब ने इस विभाग को खूब उन्नत किया था।

औरंगज़ेब ने इस बात की चर्चा की कि लोगों के दिल में यूँ बादशाह की प्रतिष्ठा नष्ट हो जाय, और हमकी इज़्ज़त पड़ जाय। वह बहुधा शाहजहाँ के प्रबंधों पर जुज़्ज़ा खानी किया करता था। इतना कुछ बातें ज्ञात थीं—जैसे मीनापाज़ार खोजना, औरंगज़ेबों को बिगाड़ना, बगीचों को सुँह लगाना—आदि।

जो हिन्दू या उसके दरबार में आते, उनके साथ बादशाह ऊपर से थपड़ा सुलूक करता था, और उन्हें यथा-शक्ति कुछ देता था। पर अब ज़रा भी लगे शक होता कि हमसे हानि होगी, यह सुनचाप उसका सिर चढ़ा होता था।

बादशाह के ग़रीब पर बैठने ही भिन्न भिन्न देशों के बादशाहों ने उसके पास भेंट और वृत्त भेजना शुरू कर दिया। सब से प्रथम उज़्बेक शासक के सातारी बादशाह ने मुबारकनामा देने को पृथ्वी भेजे। वे सब दरबार में आये, सब शाही दर्जारी रीति से तीन-चार कोर्निश करके आदाय बजाया और ख़रीदा पेश किया। जिसे बादशाह ने एक अमीर के द्वारा लिया। उसे पढ़कर उसने उन्हें खिलना दी और फिर नज़र पेश करने का हुक्म दिया।

इनमें आजबद के बने हुए कई उम्दा मन्ज़ूर, खम्बे खम्बे वालोंवाले कई ऊँचे, 'कुछ सुन्दर धूर्ति घोड़े,' कई खैर ताज़े कर्तों—जैसे अगूर, 'सेब,' भारपातियों,

से लड़े हुए, फड़ ऊँट सूख मेवा—जैसे धालूझूझारा, खुबानी, काखे-सफ़ेद  
 धारान्त स्वादिष्ट चमूर, किशमिश आदि से लड़े हुए, आदि आदि।

बादशाह इन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और सोहरे की बहुत बहुत  
 तारीफ़ें कीं। ये एलची चार महीने दिल्ली में रहे। मर का पदम बादशाह ने  
 दिया। अंत में सब का सिरोपाह ८८८ हजार रुपये मजद, और उनके मालिकों  
 के लिये बहुत मुख्य कारचोबी के धान समझोम और मछमल के इलाहचिये,  
 राजाखीन, लड़ाऊ मूठ के खम्भर आदि भेजे।

इसके बाद वहाँ ने भी अपना एलची भेजा। उसने प्रथम शाही दर  
 पर आदाबगाह पर तमलीमात अर्ज़ की और फिर अज़दीक आकर अपने  
 देश के दर पर सखाम किया। बादशाह ने ग़रीता अमीर द्वारा लेकर पढ़ा,  
 और नज़रों को देखा। उसमें कुछ तो लाज और हरे रंग सी बानात के बंदिया  
 धाम थे, कुछ बड़े-बड़े आईने थे कुछ चीन और जागान की बनी हुई चीज़ें  
 थीं, जिनमें एक पालकीनुमा बिहावन बहुत सुन्दर था। इसे कुछ दिन  
 दर में रख, बहुत-कुछ इनाम इकराम दे बिदा किया गया।

इसके बाद एक ही साथ पाँच एलची आए। एक मक्के से आया था, जो  
 कई घरबी छोटे और एक म्हादू लाया था, जो काबे में म्हादूने के काम आखुकी  
 थी। दूसरा यमन के बादशाह का था, तिसरा बसरे के हाकिम का। ये लोग  
 भी मंत्र में घरबी छोटे लाये थे। दो एलची पाँच दो देशों के बादशाहों ने भेजे  
 थे, इनके सामान बहुत सामान्य थे और इनका सरकार भी साधारण हो हुआ।

इसके बाद ईरान के शाह का एलची आया, और इसका स्वागत  
 बड़ी धूम धाम से हुआ। तमाम बाज़ार सजाए गये, और १० मील तक  
 शक्तिवत् सवार खड़े किये गये। उसकी तोपवाने स राज़ामी उतारी  
 गई। उसने ईरानी रीति पर बादशाह को सलाम किया, तथा बादशाह ने  
 उसके हाथ से ग़रीता अमीर के द्वारा न लेकर अपने हाथों में आदर स  
 लिया, और पढ़ा। फिर सिरोपाह दिये। भेंट की वस्तुओं में २५ ऐसे सुन्दर  
 छोटे थे जैसे हि दुस्ताम न कभी न देखे गये थे। हाथी के बराबर बड़े-बड़े  
 २० ऊँट थे। गुलाब और पेदमुरफ के जल से भरे हुए बहुत-से समूक, ५१६

मदे-मदे बहिषा काखोन, कई बहुत ही बहिषा कारखोरो के पाज, बहाऊ मूद के दमिरण के बने बार दण्डर, याः बहाऊ तबखारो, २११ घोड़ों के बहुत ही सुन्दर और बहुमुख्य साज, जिन पर भात्रियों और पीरोजों का बहुत बगिया काम हो रहा था ।

बादशाह इन भौनों से बहुत प्रसन्न हुआ, और बख्शों का २११ महीने खर्च में रखा, उमर उमरा में रखा दिया, और बहुत सम्मान से दिया किया । इन बादशाह के पास चरखा हाथ बख्शी मेकदर मंद मेकने का बादशाह ने मगूबा ज़रिफ किया ।

यद्यपि जतने शाहबहाँ का बड़ी गुप्तरी से क़ैद कर रखा था, और जता था इनकी ताऊ ने सेफारत न था, पर वह ऊपर से उससे बहुत प्रदर और सम्मान का यत्न करता था । कम कम काहो इन्हों में रहने की आजा दे दी गई था जिनमें वह पहले रहा जाता था । जगदी पुत्री बेगम माहेवा कमके पास रहती थी । मइल की और औरतें भी, जैसे बापने-जाने-बात्रियाँ, ल ना बजानेबात्रियाँ भी कमके पास रहती थीं ।

यह शाहबहाँ को ईश्वर भक्ति की भा जाट लगा थी । वह मुहम्मद भी कमके पास खाकर भम-गुप्तके सुनाया करते थे । घोड़े, पाषाणदि कई प्रकार के शिकारी जानवरों के मँगाने और हिरवा तथा मीनों की खबाई की भी परवानगा मिल गई थी । इस प्रकार वह हर तरह बड़े बादशाह की दिख-छोई करता था । वह अधिकता से उसके पास भौनों की खातें भेजता रहता था और राजनीति के विषय में उसकी सलाह लेता रहता था । कमके पत्रों से जो वह समय समय पर लिखता रहता था अन्दा और छाशाकारिता टपकती थी । इन बातों से शाहबहाँ का क्रोध दण्डा पड़ गया, और वह औरमज्जेव से पत्र-व्यवहार करने लगा । दाराशिकोह की पुत्री के भी उससे पास भजन दिया गया था । शाहबहाँ ने जब रत्नों को भी स्वयं कमके पास पहुँचा दिया, जिनके विषय में पहले कमने कहा था कि यदि माँगोते, तो इनको कूँकर पूर-पूर कर दूँगा । अन्त में जतने विजोही पुत्र को समा कर दिया और उसके लिये ईश्वर से प्रार्थना करने लगा ।

परन्तु वास्तव में औरङ्गजेब के मन में खोर तो बना ही था, और वह भीतर से चाक धीबन्द बना रहता था।

इसी बीच में औरङ्गजेब बीमार पड़ा। उसे बार-बार ज्वर चढ़ता था, और वह बेहोश होजाता था। बीच-बीच में निराश होगये, और दरबार में खबराहट फैल गई। यह अफवाह फैल गई कि बादशाह मर गया है। यह भी अफवाह जोर कर गई कि महाराज लसवन्तसिंह और महावत्तर्जा शाह-जहाँ को क्रौंद से छुड़ाने की चिन्ता कर रहे हैं।

यह घटना घटते ही सुलतान मुअज्जम ने चमारों को घूँस दे देकर अपने पक्ष में कर लिया। यहाँ तक कि एक दिन उसने रात को राजा अफ-सिंह के पास जाकर बहुत-कुछ सुशामद दामद की। इधर रोजनबारा बेगम ने भी बहुत-से चमारों को मिला लिया, जिनमें सोपलाने का प्रधान अधिकारी पिदाबकी मीर आतिश भी था। उसकी चेष्टा अकबर को गद्दा पर बैठाने की थी, जिसकी अवस्था ७८ वर्ष की थी।

पर सब लोग जानते थे कि शाहजहाँ का क्रौंद से बाहर निकालना मुश्किल और को बाहर निकालना है। सब दरबारी उसके छूटने की चिन्ता से घबरा रहे थे। सब से अधिक भय एतवारज्जा को था, जो अकारण बेचारे हैदरी बादशाह से निंदयता या व्यवहार करता था।

औरङ्गजेब बीमारी की हाकल में भी इधर से बेचबुर नहीं था। होश में आते ही वह शाहजहाँवा मुअज्जम को बहता कि यदि मैं मर जाऊँ तो बादशाह को क्रौंद से छुड़ा लेना, पर एतवारज्जा का बार-बार लिखा था कि एतवार, अपने काम में मुस्तैद रहना। बीमारी के पाँचवें दिन बादशाह ने साहस करके कहा—“इसको दरबार में ले चलो।” इसके अनिमित्त यह था कि उसके मरने की जो अफवाह फैली है, वह मिट जाय। इस प्रकार वह उसी दशा में, सातवें, गवें और दसवें दिन भी दरबार में गया, और कुछ यदे-बदे चमारों को पाग गुला मेजा। इसके बाद वह स्वस्थ होने लगा। स्वस्थ होने पर अपने दारा की पुत्री को शाहजहाँ के यहाँ से मँगाकर अपने बेटे अफ-

पर से उसकी शाही काने की हृष्टा प्रकट की, पर शाहजहाँ और शाहजहाँ की प्रयाप्यक इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया ।

शाहजहाँ-शाहजहाँ ने पर हकीमों के उम्र लक्ष दायु बदनन कारमीर जाने की मनाह दी । पर यह दरता था कि यहाँ बुद्धि शाहजहाँ फिर गद्दी पर बैठ जाय । उसने ज़ेद की मरिहतयाँ बढ़ा दीं । उसने यह मियकी भी बढ़ करवाया जो अमना की तरफ थी, और जितने से शाहजहाँ बाहर का महारा देखता और हवा खाना था । उसने लिहकी क माचे बन्दूखी नियत कर दिये थे कि यदि शाहजहाँ ठपेर जा मुक, तो गोली मार दें । यहाँ का सब सामान भी बढ़ा लिया गया, और चाफ़ी शोर किया गया । पर शाहजहाँ सुपचाप अस्त्र सह गया । वह सब माच रँग और गाने-बजाने में मस्त रहने का ठोंग करने लगा । श्री अज़रब ने यह सुनकर उसे ज़हर देने का हवादा दिया और मुजरमप्राँ का हम काम के लिये लिया, जो शाहजहाँ का हकीम भार भक्त था । उसे बादशाह ने खिर दिया कि जो चीज़ इंगलायरा ज़हीम आपकी देगा वह शाहजहाँ को खिरा दें, वरना ज़िन्दगी से हाथ धो खीशिय । उसने जवाब दिया—बादशाह ने जो हुक्म दिया है, मैं उससे ज्यादा अशुद्ध काम करूँगा । मेरे लिये यह उचित है कि जिसने विरत्रास काके अगला शरा मुक सुपुर्द किया है, उसी से दात करूँ । यह सोच, उसने सब ज़हर सा लिया और भर गया । और अज़रब ने यह सुना तो वह कुछ अजित हुआ और बादशाह को मारने क दूसरे उपाय सोचने लगा । पर गर्मी निकट आगई थी, और उसे कश्मीर जाना जरूरी था ।

अतः मैं बादशाह ने कारमीर की यात्रा की । हम यात्रा में दो खार आदमी उसके साथ थे । पाठक हम यात्रा के रूप का अनुमान कर सकते हैं । दो वष में बादशाह हम यात्रासे लौटा । परन्तु एक दिन के लिये भी बादशाह के नित्य नियमित द्वार आदि में अंतर नहीं आया ।

आठ वर्षे ज़ेद में रहकर शाहजहाँ की मृत्यु हुई । पिता के मरने का खोंगी और अज़रब ने बढ़ा शोक किया । वह तुरन्त आगरे आया । यहाँ पहुँचने

पर 'उमकी' यहन बेगम साहेबा ने उसका बड़ी धूम-धाम से स्वागत किया। कमरवाय के धान लटकाकर वादशाही मस्जिद सजाई गई—और हमी प्रकार यह मकान भी, जहाँ औरंगजेब का इरादा उठरने का था। औरंगजेब महल में पहुँचा तो शाहजादी ने एक बड़ा सा सोन का थाल जवाहरात ने भरकर बादशाह की भेंट किया। उसका यह स्वरूप देखकर औरंगजेब का मन भी पसीज गया और उसने यहन की सब पुरानी बातें भुगारी, और 'फा तथा' उदारता का व्यवहार उसके साथ किया।

शाहजहाँ के मरने ही उसने जहाद की सलवार उठाई। सर्व प्रथम उसने सब हिन्दू अफसरों को पदच्युत कर दिया, जिस से प्रयत्न में एक अन्धेरादी मध्य गई। इसके बाद उसने काशी पहुँचकर पवित्रता को हुबम दिया कि वे सब प्रकार का पठन-पाठन बन्द कर दें। इसके बाद उसने प्रसिद्ध प्रसिद्ध मस्जिदों को बहाकर उनके स्थानों पर मस्जिदें बना दीं। मथुरा में जाकर उसने सब बड़े-बड़े मन्दिर बहा दिये, हज़ारों अनुष्ण इराद कर दिये। उसने फिर सभी प्रांतों के हाकिमों को क्रमानुसार भेज दिये कि सब मन्दिर बहा दिये जायें, मूर्तियाँ तोड़ दी जायें, और सब प्रकार के हिन्दुओं की पाठशालाएँ बन्द कर दी जायें।

फिर वह कुरुक्षेत्र के मैदान में पहुँचा, और लाखों अनुष्णों को अकारण इराद करवा दिया। इन सब बातों से राज्य भर में अशांति और विद्रोह फैल गया। प्रयत्न तो प्रथम ही गड़बड़ होगया था। नारानील में अन्धनामी साधुओं ने विद्रोह खड़ा कर दिया, जो एक वर्ष में दयाया जा सके और उसमें बहुत सी मुराज सेना नष्ट हुई।

इन सब बातों से चिड़कर और राज्य कोष के ख़ाजो हो जाने के कारण उसने प्रजा पर 'जज़िया' का टैक्स जमा दिया, और देशी राज्यों के राजाओं को भी यह टैक्स वसूल करने की आज्ञाएँ भेजीं।

जब-जब वादशाह तुम्हें की नमाज़ पढ़ने आता, प्रजा धार धार एकत्र होकर प्रार्थना करने के लिये उपस्थित हुई। सामने आने पर औरंगजेब ने उसे 'हाथियों से कुचलवा देने का हुबम दे दिया, जिसमें भीतर ही भीतर' प्रजा बहकने लगी।

वहाँ भी राजा ने इतने प्रबल शत्रु चारों तरफ पैदा कर दिये थे, वहाँ वह अपने मित्रों और सहायकों को भी समेटे और अपने को दृष्टि से देखता रहा। उसने फिर प्रहार करने बंध का सूत्रोद्घेष्ट किया, यह पाठक देख लेंगे। फिर अपने घरने इराक और पुत्र को आक्रमण गवाजिया के दुग में और कर दिया, यह भी पाठक देख लेंगे। अपने चोर और प्रबल साथी अर्थात् और असह्यारिह का भी अपने जहर खिलाया।

उसे मीर जुमला का भय सदा बना रहता था। वह बंगाल में निष्पदक राज्य कर रहा था। पर उसने उसे गाली न बैठने दिया और आग्राम पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। उसका मन प्रबल हो या कि वह दूरस्थ और अपरिचित देश में जाकर मरे। उसके साथ सधे उसने सब तक भी अपने शत्रु में रख दिये थे। इस मुहिम में वह बहुत-सी जान-माल की हानि कराकर लौटा और उसका स्थान इतना गिर गया कि वह बंगाल छोड़ने के कुछ दिन बाद ही मर गया। उसके मरने की सूचना पाकर उसने मीर जुमला के पुत्र को कहा तुम अपने स्नेही पिता के लिये शोक करते हो, और मैं अपने शक्तिशाली और अति भयानक मित्र के लिये दुःखित हूँ।"

राधा से मरिह होने के बाद बादशाह ने अपनी समस्त शक्ति दक्षिण विजय पर लगाया। वह अन्त में स्वयं भारी सना छकर दक्षिण पर चला चला और २४ वर्ष तक सरहदों से दक्षर खेला रहा। उसे फिर दिखी देखनी नसीब न हुई। सरहदों ने समस्त दक्षिण पर अधिकार कर लिया। साथ ही तुर्कों के भी बहुत-से प्रांत जोत लिये। इससे उसका विश दृढ़ गया, और वह वहीं सन्धु की मांग हुआ।

शाहस्त न्या ने इन समय बादशाह को बहुत सहायता दी थी। उसी की वदीयत वह उन्नाव पर पहुँचा था। उसे सगुमा के युद्ध से प्रथम भागते का सुवेदार नियत किया गया था। फिर वह दक्षिण का सुवेशर बनाया गया। फिर मीर जुमला को सन्धु के बाद उसे बंगाल का हाकिम बना दिया गया। अमीर-उमरा की पक्षी उसे प्रदान की गई और आराधन के भयानक दाहू राजा से निरन्तर करने और उद्दय पुर्तगोज लुटेरों से दक्षर

सेने को छोड़ दिया गया। शाहस्त खान ने बड़ी हिम्मत, मुत्तैशी और धीरता से हम शत्रुओं को बरा में किया, और बगाल के निचले प्रदेशों को विष्णुक कर दिया।

बादशाह ने अपने बड़े पुत्र को तो ग्वालियर के किले में घुल घुलकर मरने को बाज दिया था। एक बार छोटे बेटे मुमताज़म को भी शिकार के बहाने पेने खतरे में भेज दिया, जहाँ से यह बड़ी ही बहादुरी से जान बचा कर आया। हम पर औरङ्गजेब ने उसे दक्षिण का सूबेदार बनाकर वहाँ भेज दिया।

महाबतखान, जो प्राचीन थोड़ा था, और जिसने शाहजहाँ पर बड़े बड़े वृक्षान किये थे, क्राबुल से बुला लिया गया। उसने बहुत सी क्रिमती अँट शाहजादी रोजनभारा को तथा १९ हजार अश्वक्रियाँ और बहुत से ईरानी अँट तथा घोड़े बादशाह को भेंट किये। हम पर बादशाह कुछ सम्पुष्ट हुआ, और उसे दक्षिण भेज दिया। इसके सिवा अमीरखान को क्राबुल, खलीलुल्लाह को लाहौर, भीरबादा को इब्नाहाबाद, जुबिन्कारखान को खगुषा भेज दिया। क्राजिदखान, जिसकी योग्य सजाहों से बादशाह को बहुत काम हुआ था, प्रधान खानखाना बनाया गया। देहली की सूबेदारी दानिशमन्दखान को दी गयी। दयानतखान को काश्मीर की सूबेदारी दी गई।

इस प्रकार समस्त हिन्दू मर्दार बेवज्र हो गये थे। इस समय कारखों से हम बादशाह के समय में हिन्दुस्तान में तीन प्रबल विजयिनी हिन्दू शक्तियाँ उदय होगईं। दक्षिण में मराठे, जिनका नायक शिवाजी था, पच्छिम में सिक्ख, जिनके नायक गुठ गोविंदपिंह थे और राजपूताने में राक्षपूत, जिनके नायक मेवाड़ के अधिपति थे।

जिस समय औरङ्गजेब लखन पर बैठा, उस समय मुगल-साम्राज्य का आदि अन्त था। यदि यह कहें कि उस समय संसार भर में ऐसा प्रबल साम्राज्य न था, तो उल्लुक्ति नहीं। पर यह साम्राज्य औरङ्गजेब के पृथ्वों ने हिन्दू-राजाओं के सहयोग से और हिन्दू प्रजा को प्रसन्न करके संगठित किया था। वे जानते थे कि कोई भी जाति बल या घृणा से कभी कबलों में नहीं



था सकती। औरंगजेब के पूर्वजों ने पठानों की सैन्यों वष की निफत और घमक चेष्टा का परिणाम देना लिया था—और वे ममक गये थे कि साम्राज्य की स्थापना में प्रजा का किना हाथ रहना आवश्यक है। औरंगजेब एक सावर, सोन-बुद्धि, चौकला और मयावक परिश्रमी यादराह था। किसी सुशामनो की उमक सामने मुँह खोलने का साहस न होता था। उसी शुरु ही म इस्लाम की याव खेने की नीति पर काम किया था। यदि यह ऐसा न करता तो जो कुर्म उमने राज्य प्राप्ति के लिये किये, उनम यह मफल न होता। पर हम सफरता का कुछ भी महव न रहा क्योंकि, उसके राज्य के जो स्वभ थे—वे राजदूत और दिन्दू शीघ्र ही उमके विरोधी होगय, और वही ने स्वतंत्र शक्ति का संगठन करना प्रारम्भ कर दिया।

यद्यपि भारतीय तेज मर गया था, औरंगजेब को मया था और समाज पराधीनता की कीचद में दूया पड़ा था; पृथ्वीराज का सी अजेय सत्ता नहीं रही थी, ममरसिंह से जूम मरनेवाले मर चुके थे मतापन्वीस मर-कशरी भी समाप्त हो चुके थे परन्तु मयमर ने फिर औरंगजेब को उदय किया।

शिवाजी दक्षिण में एक अवतार होकर लम्ने। ये एक वीर साहसी, निष्ठावान् और मृत्यु योद्धा थे। सोलह ही वष की अवस्था में उन्होंने कुर्ण मित्रों को सज्ज ले, थोड़े पर मवार हो, काम पाम के गाँवों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। ये गाँव बाघापुर के शाह के थे। शाह ने अपजलसों को भेजा। यह एक विकासकाय योद्धा था, और छल से शिवाजी को फल किया। चाहता था, पर शिवाजी ने उसे छल से मार डाला।

यह उम समय की घटना है जब औरंगजेब दक्षिण का सूवेदार था। शिवाजी को उस समय औरंगजेब ने उनेत्रना दा, क्योंकि वह बीजापुर की हानि में मयल था। शिवाजी ने जील हा कोकन प्रदेश जीत लिया।

जब औरंगजेब पिता के विरुद्ध आगरे पर चढ़ने लगा तो उसने शिवाजी से भी सहायता चाही। पर शिवाजी ने उसके हम नीच काम का रूप तिरस्कार किया, और उसके पत्र को पृष्ठ की पृष्ठ में बँधवा दिया। वस, वहाँ से औरंगजेब के हृदय में बैर का बीज पैठ गया। उधर औरंगजेब मारी

पर बैठा और हथर चतुर शिवाजी ने बीजापुर वालों से सन्धि कर ली।

अब उसने मुगल शासकों पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये। उन दिनों दक्षिण में मुगल सूबेदार गयास शाहस्ताखी था। औरङ्गजेब ने उसे शिवाजी का दमन करने का हुक्म भेज दिया।

शाहस्ताखी एक बड़ी सेना लेकर शिवाजी पर दूट पड़ा। उसने कोकण प्रदेश के सभी जिल्ले पकड़े में कर लिये। फिर उसने पूना पहुँचकर उस भवन को भी अधिकार में ले लिया, जिसमें शिवाजी का जन्म हुआ था। शिवाजी चुपचाप समाशा देखने और अवसर ताकते रहे। एक दिन अचानक शिवाजी रात को शाहस्ताखी के घर में जा धमके। जब वे जवान छाने में पहुँचकर सबका चत्ताने लगे, सब स्त्रियों ने नवाब को लगाया। वह हफ्ता पफ्ता होगया और खिचकी स बूझकर भागा। फिर भा उसकी रेंगकियाँ फट गईं, और पुत्र मारा गया। मेवक भी सय काट डाले गये। इस घटना से शाहस्ताखी ऐसा भयभीत हुआ कि सीधा दिवली चला आया। इसके बाद शिवाजीने सुरत नगर को लूट लिया, जो दक्षिण में मुगल का सखुदखाली बन्दरगाह था। यहाँ शिवाजी को बहुत सम्पदा मिली, जिसमें कोकण का सारा कसर निकल गई।

इसके बाद रायगढ़ लौटकर उन्होंने राजा की उपाधि ग्रहण की। इस समय में शिवाजी ने लगभग २ करोड़ काया व्यय किया। अब उनके नाम का सिक्का चलने लगा।

इस प्रकार मुगलों के मजल प्रताप के बीच यह छत्रपति उभरने लगा।

इन समाचारोंको पाकर औरङ्गजेब ने महाराज जयसिंह और सेनपति दिखेरखी को एक बड़ी सेना लेकर भेजा। जयसिंह ने बहुत समझा बुझाकर शिवाजीको सन्धि पर राजी कर लिया। सन्धि की बातें दिखरी भेजा गईं। बादशाह ने भी उन्हें स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने बादशाह की तरफसे बीजापुरसे बुद्ध किया, और बादशाहका निमन्त्रण पाकर अपने पुत्र शम्भाजी, ५०० सवार और १००० सावरी सैनिकों के साथ दिखरीको प्रस्थान किया।

परन्तु औरंगजेब ने इस प्रतापी पुरष का दर्बार में सम्मान नहीं किया। हमसे रुष्ट होकर ये वहाँ से छोट भागे। इस पर बादशाह ने उन्हें कैद कर लिया। पर शिवाजी वहाँ से कौशख से निकल भागे। औरंगजेब ने उनकी राता की उपाधि स्वीकार कर ली, और चागौर भी दे दी। अब उन्होंने दक्षिण छोटकर बीजापुर और मोलहुवा के मधायों से युद्ध करके विजय प्राप्त की और कर प्रदण किया। उन्होंने दक्षिण में खूब राज्य विस्तार किया। विशय बादशाह ने महावतखी को ३० हजार सैन्य लेकर दक्षिण को भेजा। पर इस सैन्य ने पूरी हार खाई। हममें १२ सेनापति मारे गये, शेष कैद कर छिये गये। यह गिवाजी का प्रथम सम्मुख-युद्ध था।

हमके बाद शिवाजी ने विजयोरमष किया, और राज्य विधान में मशोधन किये। उपाधियाँ क्रासों से संस्कृत में नियत कीं सिकों में सुधार किया। कबदा म दृष्टा नवी पर्वन्त का भारत दक्षिण भारत उन्हीं के आधीन था। यह महावीर ३० वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसकी मृत्यु की खबर सुनकर बादशाह ने कहा 'वह एक प्रधान सेनापति था। जिस समय मैंने प्राचीन राज्यों को नष्ट करने की चेष्टा की, उस समय निर्र हसी व्यक्ति ने एक नया राज्य स्थापन कर लिया। मेरी सेना ने १८ वर्ष युद्ध किया, ता भी उसके राज्य की कोई हानि नहीं हुई।

अब राजपूतों का भी विवरण सुनिष्ट। जहाँगीर और उदयपुर के राणा के बीच यह सन्धि हुई थी कि यह स्वयं तथा उसके उत्तराधिकारी राणा होने पर शाहादत में उपस्थित न होंगे। प्रत्येक राजा सिंहासना रुद्ध होने पर शाही क्रमानुसार राजधानी में बाहर आकर स्वीकार करेगा। तब से मुताल्ल खान में मेराब के मुखरतज हाज़िर होते रहे थे।

आमरनिह की मृत्यु पर राणा कर्ण गद्दी पर बैठे। उन्होंने सन्धि की शान्ति में खाम डठाकर देश को हरा भरा कर दिया। कर्ण के छोटे भाई का मुताल्ल-दर्बार में इतना पद बढ़ा कि वे मुताल्ल-सेना के प्रधान सेनापति बनाव गये और मुल्तान सुरम के मन्त्री बनाव गये थे। उन्हें राणा का पद दिया गया था।

८ वर्ष राज्य करके राणा कर्ण स्वर्गवासी हुए । उस समय सुरंग मेवाड़ में शरणागत थे । राणा ने उन्हें सम्राट् स्वीकार किया और शाहजहाँ की पदवी दी । इस अवसर पर जगतसिंह से शाहजहाँ ने पगड़ी बदलकर भाईचारा स्वीकार किया था । उन्म मैत्री को शाहजहाँ ने जन्म भर निवाहा । जगतसिंह ने २६ वर्ष मेवाड़ पर राज्य किया, और उसने मुगल आक्रमणों के सब चिन्हों को मिटा देने को चेष्टा की । वह बहुत उदार मिथनसार और सत्य व्यक्ति था । इसने मेवाड़ को खूब सुन्दर-समृद्ध बना दिया ।

इनकी मृत्यु पर राजसिंह गद्दी पर बैठे । वे सिंह के समान पराक्रमी योद्धा थे । औरङ्गजेब के पिता विद्रोह के युद्ध में इन्होंने बादशाह का पक्ष लिया था । परन्तु भावीवश औरङ्गजेब ही बादशाह हुआ ।

हम यह चुके हैं कि अकबर म छेकर शाहजहाँ तक मुगल-बादशाहों ने इन हिन्दू राजाओं से उदार नीति बर्ती थी । पर औरङ्गजेब ने यह नीति त्याग दी । अकबर ने राजपूतों से धैरादिक सम्बन्ध स्थापित करके प्रेम और विश्वास एवं प्रेम की सब जमाजी थी, तथा राजपूतों को मित्र एवं सम्बन्धी बना लिया था, और उन्होंने दी दिया तक मुगल साम्राज्य के विस्तार करने में अपने जीवा ब्यतीत किए । पर औरङ्गजेब ने उस मुगल-साम्राज्य की जड़ें हिलायीं—सुम्ना को उखाड़-उखाड़कर फेंकना शुरू कर दिया ।

जिस समय औरङ्गजेब गद्दी पर बैठा, राजपूताने में एक-से-एक बढ़ कर शक्तिशाली पुनः उत्पन्न होगये । जम्भराधिपति जयसिंह, मारवाड़ा औरवर जसवंतसिंह, जूँदी और कोटा के हाहा सरदार, योकांनर के राठौर ओरछा और दतिया के मुन्देले, एक से एक बढ़कर शूर थे—जो सभी और गजों से अप्रसन्न होगये ।

औरङ्गजेब के पूर्वजों ने सीम पीढ़ी तक जिस भाँति प्रजा का शासन किया—तथा देश में कला कौशल, साहित्य, विज्ञान, और व्यापार की वृद्धि की, वह सब औरङ्गजेब के अहंता के अत्याचार प्रारम्भ होते ही क्षिप्त-भ्रष्ट होगई । फलतः राज्य-क्रोध प्रजली होने लगा, और तीन पीढ़ी का सन्तत अज्ञानता समाप्त होगया । तब बादशाह ने 'अजिया'-कर लगाया, जो

परन्तु औरंगजेब ने इस प्रतापी पुरुष का दरबार में सम्मान नहीं किया। हमने रुष्ट होकर ये वहाँ से खीट चाये। इस पर बादशाह ने उन्हें छेद कर लिया। पर शिवाजी वहाँ से कौशल से निकल भागे। औरंगजेब ने उनकी राजा की उपाधि स्वीकार कर ली, और जागीर भी दे दी। अब उन्होंने दक्षिण खीटकर बीजापुर और गोळकुटा के जयारों से युद्ध करके विजय प्राप्त की, और कर प्रदत्त किया। उन्होंने दक्षिण में स्व राज्य विस्तार किया। विजय बादशाह ने महावतर्ग को ४० हजार सैन्य लेकर दक्षिण को भेजा। पर इस सैन्य ने पूरी हार खाई। इसमें १२ सेनापति मारे गये शेष छेद कर लिये गये। यह शिवाजी का प्रथम सन्मुख-युद्ध था।

इसके बाद शिवाजी ने पित्रोत्थम किया, और राज्य विधान में संशोधन किये। उपाधियाँ प्राप्ति से संसृति में नियत कीं सिद्धों में सुधार किया। जबदा से कृष्णा नदी पर्यन्त का सारा दक्षिण भारत उन्हीं के आधीन था। यह महावीर ३० वर्ष की वयस्था में शत्रु को प्राप्त हुआ। उसकी शत्रु की खबर सुनकर बादशाह ने कहा— 'यह एक प्रधान सेनापति था। त्रिभु समय मैंने प्राचीन राज्यों को नष्ट करने की चेष्टा की, उस समय निम्न इसी व्यक्ति ने एक नया राज्य स्थापन कर लिया। मेरी सेना ने १८ वर्ष युद्ध किया, ता भी उसके राज्य की कोई हानि नहीं हुई।

अब राजपूतों का भी विवरण सुनिए। जहाँगीर और उदयपुर के राजा के बीच यह युद्ध हुआ था कि यह स्वयं तथा उसके उत्तराधिकारी राजा होने पर शाही दरबार में उपस्थित न होंगे। प्रत्येक राजा सिंहासना रुढ़ होने पर शाही क्रमांत राजधानी से बाहर जाकर स्वीकार करेगा। तब से मुगल दरबार में मेराव के मुखराज हाज़िर होते रहे थे।

अमरविह की शत्रु पर राजा कर्ष गद्दी पर बैठे। उन्होंने सन्धि की शान्ति से लाभ उठाकर देश को हरा भरा कर दिया। कर्ष के छोटे भाई का मुगल-दरबार में इतना पद बढ़ा कि वे मुगल-सेना के प्रधान सेनापति बनाए गये और मुगलान खुरम क मन्त्री बनाए गये थे। उन्हें राजा का पद दिया गया था।

आपके साथ से अक्षय कर लिया है, किन्तु आपकी खो सेवा हो सके, उसको मैं सदा धित से करने को उद्यत हूँ। मेरी सदा इच्छा रहती है कि हिन्दु-स्तान के बादशाह रईस, मिर्जा राजे और राय खोग, तथा ईरान, तुरान और शाम के सरदार खोग, और सार्वों बादशाहत के निरासी और वे मश यात्री, जो जल या मल के माग से यात्रा करते हैं, मेरी अमेद-शुद्धि सेवा से उपकार लाभ करें।

“यह इच्छा मेरी ऐसी उत्तम है, कि जिसमें आप कोई दोष नहीं देख सकते। मेरे पूजना ने पूर्व काल में जो कुछ आपकी सेवा की है, उस पर ध्यान करके मुझको अति उचित जान पड़ता है कि मैं नीचे लिखी हुई बातों पर आपका ध्यान दिवाऊँ, जिसमें राजा और प्रजा की भलाई है। मुझको यह समाचार मिला है कि आपने मुझ शुभ चिन्तक के विरुद्ध एक सेना नियत की है और मैंने यह भी सुना है कि ऐसी सेनाओं के नियत होने से आपका खजाना जा खाली होगया है, उनको पूरा करने के लामा प्रकार के कर भी लगाये हैं।

“आपके परदादा मुहम्मद जंगलुद्दीन अकबर ने, जिसका सिद्दामन अय मार्ग में है, इस बड़े राज्य को वाचन वर्ष तक ऐसी सावधानी और उत्तमता से चलाया कि सब क्षाति के लोगों ने उससे सुख और आनन्द उठाया। क्या ईसाई, क्या मूसई, क्या दामदी, क्या मुसलमान, क्या ब्राह्मण, क्या नारिक—सब ने उनके राज्य में समान भाग से राज्य का न्याय और राज्य का सुख भोग किया और यही कारण है कि सब लोगों ने एक झुँड़ होकर उनको जगत्-गुरु की पदवी दी थी। शाह-शाह मुहम्मद नूरुद्दीन जहाँगीर ने, जो अब बन्दन वन में विशर करते हैं—उसी प्रकार २२ वर्ष राज्य किया, और अपनी रक्षा की छाया से सब प्रजा को शीतल रखा, तथा अपने आश्रित या सीमास्थित राजन्य वग को भी प्रसन्न रखा, अपने बाहु-बल से शत्रुओं का वृमन किया। ऐसे ही उनके शाह-शाह और आपके बड़े परम प्रतापी पिता शाह-जहाँ ने ३२ वर्ष राज्य करके अपना शुभ नाम अपने शुद्ध गुणों से विख्यात किया।

विवाह सम्पादन के पूर्व ही था—इससे हिन्दुओं के कर्जों में आग धधक उठी।

जिन समय राजपूत गरी पर बैठे, तो उन्होंने तिल-तेल-चूल्हा । मर तक साहसही गरी पर था । इस प्रकार पर यह रस होना । कि मर का छोड़ इनाम नीम दिया था । राजपूत से ब्रजमेर के भीमा मारत का माखुरा लूट लिया । जब बादशाह के पास रिवाज गई तो जगते कहा—'यह मेरे भतीजे को देकर मूर्खता है।'

पर औरंगजेब ने गरी पर बैठने पर कानगर की राजकुमारी का हाथ बरान् मँगवाया । राजकुमारी ने राजपूत की गणना खादा । उन्हें यह मूर्खता जगह में दिखाते थे कि हम मित्रा, जबकि उनके साथ मित्र १०० राजपूत थे । अधिक समय नहीं था । वे उन्होंने भी चारों को लेकर चले और माग मे २०० मुगलों से दखन के कुमारी का हाथ चीन लाये ।

इससे राजपूत के नीचे का खोर मर गया, और औरंगजेब कोष से भरकर नीचे लगा । उधर राजपूत भी भारी सदा-युद्ध की तैयारी करने लगे । पर औरंगजेब ने राजपूत को सब तक देखा । वह साहस ग लिया जब तक जबकि और अमरुतगिह आविष्ट रहे । उधर वह शिवाजी द्वारा भी बहुत सग किया जा रहा था । अन्त में उरने इन दोनों धोरों को विप देकर मरवा खाता । साथ ही ज़िन्दा-कर लगा दिया । कि अमरुतगिह की विधवा और पुत्र को कैद करना खादा । बड़े पुत्र को भी विप देकर मरवा खाता । इस प्रकार समस्त राजपूताना पुच्छ होगया, और और राऔर दुर्गादाप ने राजपूत से मित्रपर इन दुर्गम मुगल के भार का उपाय कीक लिया ।

राणा ने एक प्रभावशाली पत्र औरंगजेब की श्रमिया के सम्बन्ध में लिखा जो इस प्रकार था—

“मैंने प्रभार की स्तुति, सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की उचित है, और आश्वी महिमा भी स्तुति करने योग्य है । आपकी उदारता और गमकटि-चन्द्र और सूर्य की भांति प्रमकता है । यद्यपि मैंने आजकल अपने को

आपके साथ से अलग कर लिया है, किन्तु आपकी जो सेवा हो सके, उसको मैं सदा चित्त से करने को उद्यत हूँ। मेरी सदा इच्छा रहती है कि हिन्दु स्तान के बादशाह, रईम, मिर्जा राजे और शाय खोन, तथा ईमान, खान और शाम के सरदार खोन, और सातों बादशाहत के निवासी और ये मख यात्री, जो खज या खज के भाग से यात्रा करते हैं, मेरी अमेद-शुद्धि सेवा से उपकार लाभ करें।

“यह इच्छा मेरी ऐसी उत्तम है कि जिनमें आप कोई दोष नहीं देख सकते। मेरे पूर्वजों ने पूर्व काल में जो कुछ आपकी सेवा की है, उस पर ध्यान करके मुझको अति उचित ज्ञान पड़ता है कि मैं भीचे जिखी हुई बातों पर आपका ध्यान दिताऊँ, जिनमें राजा और मन्त्रा की अज्ञाई है। मुझको यह समाचार मिला है कि आपने मुझ शुभ चिन्तक के विरुद्ध एक सेना नियत की है और मैंने यह भी सुना है कि ऐसी सेनाओं के नियत होने से आपका प्रज्ञान जो प्रगल्भी होगया है, उनके पूरा करने के ताना मन्तार के कर भी लगाये हैं।

“आपके परमाज्ञा मुहम्मद अल्लाहो अकबर ने, जिनका सिंहासन धरत परा में है, इस बड़े राज्य को सावन वर्ष तक ऐसी सावधानी और उत्तमता से चलाया कि सब जाति के लोगों ने उससे सुख और आनन्द उठाया। क्या ईसाई क्या मूसाई क्या दासदी क्या मुसलमान, क्या ब्राह्मण, क्या नास्तिक—सब ने उनके राज्य में समान भाग से राज्य का न्याय और राज्य का सुख भोग किया, और यही कारण है कि सब लोगों ने एक मुँह होकर उनको अगल-गुल की पदवी दी थी। शाहनाह मुहम्मद नूरुद्दीन जहाँगीर ने, जो अब अम्दन-घन में विद्वार करते हैं—उसी प्रकार २९ वर्ष राज्य किया, और अपनी रक्षा की छाया से सब प्रजा को शांत रखी, तथा अपने आश्रित या सीमास्थित राजन्य वग को भा प्रसन्न रखा अपने दाहु-बल से शत्रुओं का धमा किया। वैसे ही आपके शाहजादे और आपके बड़े परम प्रतापी पिता शाहजहाँ ने ३९ वर्ष राज्य करके अपना शुभ नाम अपने शुभ गुणों से विख्यात किया।



‘ आपके पूर्वज पुरखों की यह कीर्ति है । उनके दिव्यार ऐसे उदार और महान् थे कि जहाँ उन्होंने धरत रक्ता, वहाँ विजय-लक्ष्मी को हाथ बाँटते मानने पाया और बहुल-भेद देश और द्रव्य को अपने अधिकार में किया । किन्तु आपका राज्य में वे देश बच अधिकार से बाहर होते आते हैं, और जो लक्ष्य दिसलाई बढ़ते हैं, उनसे निरन्तर होता है कि दिन दिन राज्य का पतन ही होगा । आपकी प्रजा अत्याचार से घृति दुखी है और सब दुःख बढ़ गये हैं, चारों ओर से बरतियों के ठगपट्ट पड़ जाने की और घण्टे प्रकार की दुख की दो बातें सुनने में आती हैं । राजमहल में परिद्रष्टा पाई हुई हैं । सब बादशाह और शाहशाहों के देश यह दशा है, सब और रहस्यों की कौन कहे ? शूरता तो केवल मिट्टा में भा रही है । व्यापारी लोग चारों ओर रोते हैं, मुसलमान अश्वस्थित हो रहे हैं हिन्दू महादुखी हैं,—यहाँ तक कि प्रजा की संख्या-काज के समय खाने को भी नहीं मिलता और दिन की सब दुख के गार अपना निर पीटा करते हैं ।

“देम बादशाह का राज्य के दिन स्थिर रह सकता है—जिसने मारी कर से अपनी प्रजा की ऐसी दुदशा कर दाखी है ? पूर्व से पश्चिम तक सब लोग यही कहते हैं कि हिन्दुस्थान का बादशाह हिन्दुओं का पैसा इपेयी है कि यह एक ब्राह्मण म लेखक योगी पैरागी और सम्पासी सब पर कर दागाता है और अपने उत्तम सैन्यी वंश को, इन घन हीन और निरुपद्रवी, उदासीन लोगों को दुख देकर कर्षाकित करता है । अगर आपका उस किताब पर विश्वास है, जिसका आप ईश्वर का वाक्य कहते हैं, तो उसमें देखिये कि ईश्वर को मनुष्य-मात्र का स्वामी लिखा है, केवल मुसलमानों का नहीं । उसके सामने हिन्दू और मुसलमान दोनों समान हैं । मनुष्य मात्र को उसी में जीवन-दान दिया है । माना हम के मनुष्य अपनी इच्छा से पैदा किये हैं । आपकी मस्तिष्कों में भी उसी का नाम लेकर लिखाने हैं, और हिन्दुओं के यहाँ देव मन्दिरोँ में भी उसी के निर्मित ध्येन पकाते हैं । किन्तु सब उसी पक्ष को स्मरण करते हैं । हमसे किसी क्षति को दुख पैदा परमेस्वर को अप्रसन्न करना है । हम लोग जब कोई चित्र देखते हैं, तो उसके चित्रों का स्मरण

करते हैं। यदि हम उस चिह्न को दिया करें, तो चित्तरे की अप्रसन्नता होगी, और कवि की उक्ति के अनुसार सब कोई पूछ सूँघते हैं, तो उसके बगाने-बाग़े को ध्यान करते हैं, उसको बिगाड़ना उचित नहीं समझते।

“साराश यह कि हिन्दुओं पर आपने जो कर लगाना चाहा है, वह न्याय के परम विरुद्ध है—राज्य के प्रबन्ध को नष्ट करनेवाला है। ऐसा करना अच्छे राज्याधीनियों का लक्ष्य नहीं है, और सब को सिधिल बनाने वाला है, हिन्दुस्तान की नीति-नीति के प्रति विरुद्ध है। यदि आपको अपने मत का ऐसा आग्रह हो कि आप इस बात से आज्ञा न आयेंगे, तो पहिले राजसिंह से, जो हिन्दुओं में मुख्य हैं, यह कर लीजिये और फिर अपने इस दुर्भचिन्तक को बुलाइये। किन्तु यों प्रजा-पीड़न करना वीर घम और उदात्तचित्त के विरुद्ध है। बड़े आश्चर्य की बात है कि आपके सन्निधियों ने आपको ऐसे हानिकर विषय में कोई उत्तम मन्त्र नहीं दिया।”

टॉड राश्ट्रियान,

४४७—४४८, प्रथम खण्ड

पत्र पढ़कर बादशाह तिलमिला उठा। उसने राजपूत की इस दुर्घर्ष शक्ति को कुचकने की भाँती तैयारी प्रारम्भ कर दी। बग़ाल से अपने पुत्र अकबर को कायुक्त से आज़ीम को दक्षिण से दिलेरज़ी को बुलवाया और समस्त शाहा सैन्य लेकर उसने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी।

यह सुन राणा अपने समस्त योद्धाओं और जागरिकों को लेकर दुर्गम पर्वत उपत्यकाओं में चले गये। देश भर उल्लाह कर दिया गया। औरङ्गजेब चित्तौर, मङ्गलगढ़, मन्दसौर, बीरज और अन्य ज़िलों को घनायाम ही अधिकृत करता हुआ, बढ़ा चला गया।

राणा ने अपनी सेना को तीन भागों में बाँटा। एक भाग का अधिपति राणा का ज्येष्ठ पुत्र अयसिंह अरावली की दूनरी चोटी पर स्थित किया गया, जिससे वह दोनों ओर से घानेवाले शत्रुओं की प्रहर रने। राजहमार भीम पण्डित की ओर त्रिभुक्त किया गया, जिसमें वह गुजरात से भागेवाले शत्रु को रोके। राणा स्वयं बाह्य की भाटी पर जाकर बैठे,

और इस ताक में खगे कि शत्रु पहाड़ों में घुसें तो उनके खींचे का मार्ग रोक दिया जाय।

औरतुल्य न अपने पुत्र अकबर को २० हजार सेना देकर जागे करने की आज्ञा दी। उस मार्ग में एक भी अनुपय न मिला। ठगने वाला, सहज, भव्य, घाटिका साया—सब देखे, पर अनुपय का पता न था। अतः ठगने वाला दूरे दूर दिये। सैनिक शत्रु के इस प्रकार भयभीत होकर भाग जाने की खुशी में मस्त होकर सरज मनाते खगे।

अबस्मात् राजमिह नम पर आ पड़े। उस समय कोई ग्रा रहा था, कोई समाज प रहा था, कोई सार शतरज में मरत था। सब गाजर-मूखी की तरह फाट फाड़ पड़े। सो बचे भाग निकले। ठगवा सब गामान लूट लिया गया और धावता फूँक दी गई। उसके १५, थोड़े इधियाद कुत्ते में फाँट दिए गये।

अकबर ने श्रोतने पर देखा कि श्रोतन का राह बन्द है। अब बादशाह र मिला जाना सम्भव नहीं। बाध में राजमिह के दिवाही बंगी लगावार् लिये जमा हैं।

अब अकबर ने गोज़दुपदा के गस्ते मारवाड़ के मैदानों की ओर दौटना चाहा। पर उधर भीरु ने बाधा स उनकी गता को छेद दाका। इधर भी धान सखट में र मग बह दौटकर घूमरी ओर लो फिरा अब कुमार अजमिह ने देखा बन्द लगाया कि पण भी मुगल का बर्दाँ से बाहर जाना असम्भव होगया। निदान अकबर न अजमिह से कहता भेजा कि यदि हमें छौड जाने दिया जाय तो हम युद्ध बन्द कर देंगे। इसपर गिरगम कर, अजमिह ने उन्हें पण प्रदर्शक दूर चितौर की माथौर तक पहुँचा दिया।

अब दिलेरखा की दुर्गति वा हाल सुनिये। वह अपनी सेना लेकर मारवाड़ की ओर देसोरी घाटी में होकर पर्वत-माला में घुसा। उसे भी चिन्मी ने नहीं रोका, वह सेना घुमी ही चली गई। जब वे घूम-घुमौवक मार्ग में मटककर एक चौड़े मैदान में पहुँचे, तो विक्रम सोलंकी और गोपीनाथ राठौर उन पर दूट पड़े, और सँभलने से प्रथम ही उन्हें काट


बाबा । यह सेवा पिछड़ों नष्ट कर दी गई, और उसका तब अपमान लूट लिया गया ।

औरंगजेब अपने पुत्र अजीम को साथ लिये, दीवारी में रहे बाल पना, इस मुर्दों का परिणाम देकर रहा था । राधा शकम्भार ही उस पर दूट पड़ । राधों पर इस बादशाह ने बहुत लुप्त किये थे । उनकी लकड़ों में भी प्यारी हा रही थी । हुमायूँ और राजपूत ने आज बड़ बड़कर लूट लिये सारा की गांधी भाती लोपें, उनके गोदमारा सुयोग्य मानसीसी थे, धनी रह गयी । राजपूतों ने मुगल का लूट पर भर किया । अंत में बादशाह हार कर भाग गया । उनपर बहुत-सा सामान लूट लिया गया । उनका भयदा, दाखी और बहुत सामान राजपूतों के हाथ लगा ।

उधर भीम रातो नहीं देना था । उरुने गुजरात को भेदना इधर पर अधिकार कर लिया, और मुगल किलेदारों को मार भगाया । फिर इनने गान, सिंदपुर आदि जगों का लूट पार लूट की और बड़ा दुर्गति और राधा के मंत्री दामोदरदाह ने भाजरा का लूट लिया ।

आरंगपुर देवान, गानौन, माहू, उज्जैन और चन्देरा लूट लिये गए । समस्त किले जगों में कर लिये-कीर्ता को याद वाला भाजवा उजाड़ हो गया । वहाँ की चट्टन समस्त लूटकर राधा के घरवा में रख दी गई ।

बादशाह फरार और अजीम को १२ हजार सहायहित विचार अधिकार करने का छोड़ गया था । उस पर जयसिंह और दयालशाह ने आक्रमण कर, उसे बाधमौर तक खदेड़ दिया । इस प्रकार प्रतापद मुगल सेवा सर्वथा भंग हो निकाल बाहर कर दी गई ।

अब राधा मारवाड़ की तरफ मुक । वहाँ जनपद की रानी बड़े कामसे सारा सेवा का मुताबका कर रही थी, जो नगर दखल करने को चाह थी । राधा ने गनौरा नामक स्थान पर मुगलों से खोहा लिया । इस युद्ध में राजपूतों ने एक भयानक हास्य मुगलों से किया — १०० कैद मुगलों से चीन लिये । उन पर बहुत-से गड़े-गूदड़ कपड़, लेह से तर कर, उन पर मराठी जलाकर  धावनी में हाँक दिया । पीछे पीछे राधों चले ।

छावनी में डा लखते हुए खैरो ने यह आक्रुत मचाई कि हाहाकार मच गया, और राक्षसों ने उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया ।

इनके बाद बीकानेर के राजा के उद्योग से राणा और राजपिह में सन्धि चर्चा पड़ी । पर, इसी बीच में राजपिह की मृत्यु होगई, और फिर बादशाह और लखपिह के बीच, जो राणा हुए सन्धि हुई । इस सन्धि के बाद औरङ्गजेब का राजपूताने की ओर देखने का शयु तक माहस नहीं हुआ ।

अब सीमा की शक्ति, जो मुगलों के विरुद्ध खड़ी हुई, मिचलों की थी । यह प्रथम एक धार्मिक समुदाय था—बिस्का कार्य हिन्दु-मुस्लिम-येस्व लपन करने का था । इसका लक्ष्य एक शक्तिशाली साधु पुरुष नामक ने किया । इस धर्म का मुख्य उद्देश्य भिक्षु-भिक्षा जाति और धर्म के लोगों को एक होकर रहने का था । इसने सप (इकीसलों और भेद भाषों की लोप निम्न) की । अद्वितीय ईरपा की उपासना ही उसका मुख्य उद्देश्य था ।

नामक के बाद कई गुप्त गद्दी पर बैठे, और वे सब समयमिल-चित्त योगी की भाँति रहते थे । धीरे-धीरे इन पर मुसलमान बादशाहों ने आत्माचार आरम्भ किये । वे, धध-धध में पशु की भाँति छे जाये जाते और उनका वध लोहे के पोंजरे में बन्द कर, निदयता से किया जाता । अन्तर्गत गुप्त की सहागीर ने प्रैद किया, और वह आत्मा-आत्मनाथों से कुहवाटे से मारा गया । इस घटना के बाद सिख उत्तेजित होगये, और उनका पुत्र हरगोविन्द गद्दी पर बैठते ही मुसलमानों का विरोधी होगया । उसने मिक्खों को हथियार धारण की शिक्षा दी । वह स्वयं दो लाखवारें यात्रता था । जब कोई उससे इसका कारण पूछता तो वह उत्तेजित स्वर में कहता— 'एक पिता के बदले के लिये और दूसरी मुगल साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिये ।' इनकी मृत्यु के पीछे उनका पीछा हरराम गुप्त हुआ । फिर हर-किशन गुप्त हुआ । इसके बाद गुप्त तेजाबहादुर हुए । यही वह समय था, जब औरङ्गजेब के आत्माचारों से भारत कम्पायमान् हो रहा था । उनके पास कारमीर के कुछ पीढ़ित प्राकृत्य भागकर जाये और दुहाई दी । तेजाबहादुर

ने संभौर विचार कर, एक भयानक संकल्प किया, और उम्मीद यही पक्का कर  
 दिल्ली भेजा। उन्होंने दिल्ली जाकर कहा—“यदि आप सेनाबहादुर को मुसल-  
 मान बनाएँ, तो हम खुशी में मुसलमान हो जाएंगे।” सेनाबहादुर के प्रति  
 इम्बी रामराय ने भी बादशाह को इसके लिये उत्तेजित किया। तब  
 बादशाह ने सेनाबहादुर पर सेना भेजी, और वे पन्थी करके दिल्ली छे जाये  
 गये। वहाँ भरे दरबार में बादशाह ने कहा—“कुछ करामात दिखाओ।” गुरु  
 ने कहा—“हमारा धर्म सर्व शक्तिमान ईश्वर की बचासना कामना है। परन्तु  
 तुम्हें हम करामात दिखाने ही चाये हैं। इतना कह, उन्होंने कुछ शब्द  
 काताज़ पर लिखकर गले में, ताबीज़ की भाँति बाँध लिये, और कहा—कि,  
 भय मेरी गरदन तलवार से नहीं काटी जा सकती।

बादशाह ने डरते-डरते जवाब की धार करने का संकेत किया। तब  
 तब पड़ते ही उनका सिर घटवर धरती पर लटक गया। यह देख, बादशाह  
 विस्मय हो गया। काताज़ में लिखा था—“निर दिगा, सार नहीं।”

यह निर्दय घटना तुलान की भाँति फैल गई। सेनाबहादुर चकली  
 पार करने पुत्र गोविन्दसिंह को गद्दी पर बैठा चाये थे—जिसकी अवस्था  
 १२ वर्ष की थी। उन्होंने प्राण देने का निश्चय किया था। वे जानते थे  
 कि इसी से देश में आग लग जायगी। इस तेजस्वी बालक ने नगी तल-  
 वार लेकर हुंकार मरी और मिस्त्रों का संगठन शुरू किया। कई छोटे-छोटे  
 मुद मुलाओं के साथ हुए, और भय में उनकी विनय हुई। अन्त में बाद-  
 शाह ने प्रयत्न सेना भेजी जिसमें पराजित होकर गोविन्दसिंह भाग गए।  
 उनके दो पुत्र पकड़े गये और कीते ही दीवार में लुने गये। बादशाह ने  
 गुरु को दिल्ली बुझा भेजा। पर उसने कहछा भेजा—अभी खालसा बाद-  
 शाह से गुरु का बदला लेंगे। अन्त में वे बादशाह से मिलने को राजी भी  
 होगये, पर इस मुलाकात से प्रथम ही बादशाह की मृत्यु हो गई। उनके  
 उत्तराधिकारी यहादुरशाह ने गुरु की बहुत खातिर की। पर उनकी भी  
 अचानक एक पठान के आक्रमण से मृत्यु होगई। यह घटना नवदा तीर  
 के बादर नामक स्थान पर हुई। उस समय गुरु की आयु ७८ वर्ष की थी।

जापनी में उन बजने हुए औरों ने वह आठव मचाई कि हाहाकार मच गया, और राघवों ने उन्हें मर-भट कर दिया ।

इनके बाद बीकानेर के राजा के उद्योग से राणा और राजपूतों में सन्धि चर्चा लगी । पर, इसी बीच में राजपूतों की मृत्यु होगई, और फिर बादशाह और अफगानों के बीच, जो राणा हुए सन्धि हुई । इस सन्धि के बाद औरंगजेब को राजपूताने की ओर देखने का शत्रु तक चाहत नहीं हुआ ।

अब हीसरी शक्ति, जो मुगलों के विरुद्ध खड़ी हुई, निम्नों की थी । यह प्रथम एक धार्मिक समुदाय था—जिसका कार्य हिन्दु-मुस्लिम-येक्य वापस करने का था । इसका धर्म एक शक्तिशाली साधु पुरुष नानक ने किया । इस धर्म का मुख्य उद्देश्य भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के लोगों को एक होकर रहने का था । उसने सब उद्देश्यों और भेद भावों की लीन निम्ना की । अद्वितीय ईश्वर की उपासना ही उसका मुख्य उद्देश्य था ।

नानक के बाद कई गुप्त गद्दी पर बैठे, और वे सब संयमित दित योगी की भाँति रहते थे । धीरे-धीरे इन पर मुसलमान बादशाहों ने अत्याचार आरम्भ किये । वे, वध-वध में पशु की भाँति छे छाये जाते और उनका वध छोड़े क बीजों में बन्द कर, निन्द्यता से किया जाता । अतः नानक को अर्द्धांगीर नज़द किया, और वह आत-आतनाओं से कुल्हाड़े से मारा गया । इस घटना के बाद मिला उत्तेजित होगये, और उनका पुत्र हरगोविन्द गद्दी पर बैठते ही मुसलमानों का विरोधी होगया । उसने सिक्खों को इधियार धारण की शिक्षा दी । यह स्वयं को तलवारें धारणता था । जब कोई उससे इसका कारण पूछता तो वह उत्तेजित स्वर में कहता— 'एक पिता के बड़े के लिये और दूसरी मुगल साम्राज्य को ध्वंस करने के लिये ।' इनकी मृत्यु के पीछे उनका पोता हरराम गुरु हुआ । फिर हर-किशन गुरु हुआ । इनके बाद गुरु तेगबहादुर हुए । यही वह समय था, जब औरंगजेब के अत्याचारों से भारत कम्पायमान् हो रहा था । उनके पास कारमीर के कुछ पीढ़ित माहय्य भागकर आये और बुद्धाई थी । तेगबहादुर

है कि मैं तिफ्त अपनी तन्दुरुस्ती को मुठरम जानूँ, और ज़्यादातर ऐसी इश-  
रत और आराम व आसाइश के डमर में मसरूफ़ रहूँ जिसका भतीजा यह  
हो सकता है कि मैं इस गलीब सरतनत के कामों को किसी यज़ीर के भरोसे  
छोड़ बैठूँ। मगर मालूम होता है कि इसने इस अमर पर और नज़ा किया  
कि जिस हासल में मुझे खुदा ने बादशाही ख़ानदान में पैदा कर, तहत पर  
बिठाया है, तो दुनियाँ में अपनी ज़ातों कायदे के लिये नहीं भेजा, बल्कि  
औरों को आराम पहुँचाने और मिशनत करने के लिये। मेरा यह काम वहीं  
है कि अपनी ही आसाइश को क्रिक फेंकूँ। अलबत्ता रिआया क कायदे की  
तारज़ा त जिस क़दर आराम होता जरूरी है, उसका मुज़ाफ़फ़ा नहीं। बज़ुज़  
इसके कि इत्साक और अदाअत से पैदा हो करना माबित हो या नएत  
गत के कायम रखने और मुवक़ की दिफ़ाअत के लिये यह बात ज़रूरी हो।  
हर मूरत में रिआया की आसाइश और तारज़ी ही एक ऐसी चीज़ है,  
जिसकी क्रिक मुझे दोनी चाहिये। मगर यह शक़ यह बात की यह को  
नहीं पहुँचा कि डग आराम से, जा यह मेरे लिये तजवीज़ करता। क्या  
क्या कहायें पैदा होंगी, और यह भी इसे नहीं मालूम कि दूसरों के हाथ  
में हुकूमत देना कैसी बुरी बात है। शेख़ सादा ने जो यह कहा कि ब दराइों  
को चाहिये कि नयाव खुद कारोबार सततमत का धोम अपने ऊपर  
छे—नहीं तो येदतर है कि बादशाह बइलाना छोड़ दे, तो क्या गुपुग का  
यह कौज़ शलत हँ ? पम आर अपने इस दोस्त से कह दीजिए कि अगर  
यह हमारी खुशी और हमसे आफ़री हासिल करना चाहता है, तो जो काम  
इसके मुपुर्द है, उस ठीक तौर से करता रहे, और ग़बरदार यह सख़ाह जो  
बादशाहों के सुनने के लायक नहीं है, कभी न दे। अफ़सोस, इन्तान  
आराम तजब ह, और ऐसे ज़याअत से बचना चाहता है, जो दूसरों की  
तारज़ी को क्रिक भं शादमी को घुआ बाजते ह। मगर हमको ऐसे क्रिज़  
सखाइकारों की हाजत नहीं है। ऐसी आराम की सख़ाह तो हमारी जगमें  
भी दे सकती हैं।”

एक बार औरङ्गजेब के कुछ मुख़्त साख़ह ने, जिसने बचपन से उसे



इनके बाद निराल-मनुष्य एक छोड़-मनुष्य बन गया। यह बार मोन्दिनिह ने बादशाह को लिखा था—तबदाह रहो! तुम हिन्दू को सुनकर मान करते हो, हम मुसलमान को हिन्दू क्यों हैं। तुम अपने को बेहतर समझते हो, पर मैं कबूतर से बाज़ का ठिकार कराई तो गुरु।

इस गुरु के बाद जगदा धर्म-ग्रन्थ ही गुरु के स्थान पर पड़ा हुआ। तबदाह ने रामदाह और चिन्मयीभाषा में बेनिहासिन् शहर का नामो दिया। दया बैरागी ने बादशाह को लिखा था, और जगदा में निराल-मनुष्य बयसातनिह ने जगदा खबर बाबुद तब को जारी दिया।

इस बात पर विचार करना उचित है कि इस भगवान् व्यक्ति ने ऐसे व्यापार और प्रज्ञानी बन करन पर भा किन मति २० वर्ष तब शहर किया, और बगल करिनाहों को कैसे पार किया। यह व्यक्ति वास्तव में बुद्धिमान और तीव्र, धर्मशील और गुणवत्त था। किसी को मुँह न लगाता था। एक बार का तिक है कि इसके किसी कमरा में गुरान्द स कहा—“हुनर काम में हम कर मयन्त्र है कि यह शब्द है कि हमने सेइते निवमाना प्रशिक्ष दिया तो कृप्यत में हुनर करे या धाय, और सात्रग को हुनर पुत्रवाग पहुँचे।”

यह सुनकर बादशाह ने उग बुद्धिमान उपदेश का जोर से मुँह फेर दिया—मानो उगकी बात सुनी ही नहीं। फिर कुछ उठकर पर और बहुत बड़े जमीर की शोर, भा बहा ही जिहान् और बुद्धिमान था, बेलकर कहा—“आज तमाम बहल्ले हम इस बात में मुत्तकिदुकराय है कि मुस्लिम और ज्ञान के जमाने में जान धोखों में पड़ जाना और जहरत के एक गिराव की बेहतरी न जिये निवे खुदा ने उसे सुपुर्न किया है तजवार पकड़कर मैदान-लग में जान देना बादशाह का प्रज्ञ है। मगर इसक बरशकम यह भक्त और चातमीत्र शत्रु [१] है। यह चाहता है कि रियाया के आराम व आत्माइश के जिये जरा भी सकजीक न उठाई धाय। और उनकी [रियाया की] रिहाइ की लक्ष्मीरों के सोपने में एक रात या एक दिन भी वे आराम रहे और यह मुद्दा हासिल होनाय। इसकी राय

बादशाह सखातीन हिन्दू के नाम से काँपते हैं। सुबहान अख्ताह ! आपकी इस जुगराक्रियायानी और कमाने इकम तवारीख का क्या कहना है ! क्या मुझ-जैसे शम्स के उस्ताद का हाज़िम न था कि वह दुनियाँ की हर एक शौम के हाकात से मुझे मुचिला करता ! मसखन् उनकी बुध्दत बगी से, उनके बसायख भामदनी स, और चर्ज़े बाग से, उनके रसमो रिवाज, मज़ाहिब और तर्ज़े हुक्मरानी और उन खास खास उमूर व तक्रसीम से जुदा-जुदा मुझको आगाह करना, जिनको घे आपने इक में ज़्यादा मुफ़ीद समझते हैं। मेरे जैसे शम्स के उस्ताद को हाज़िम था कि वह मुझको इकम तवारीख पेसी सिखसिखेवार पढ़ाता कि मैं हर-एक सख्तमत की ग़द-मुनियाद, असबाब तारखी व तनज़ुली और उनके साथ उन वाक़यात और उन हालातियों से वाज़िह हो जाऊँ, जिनके बायस उनमें देने इज़्ज़ताबात होते रहे हैं। बनिस्बत इसके कि आप मुझे तमाम दुनियाँ की कामिज़ तवारीख से आगाह काने, आपने सो हमारे उन मशहूर व मारुफ़ मुजुर्गा के नाम भी अच्छी तरह नहीं बतलाये, जो हमारी सख्तमत के बानी थे। उनकी सवावे उध्दी, खास और की ज़ियाज़त, जिनके बाइस वह बदे-बदे क़तूहात करने के क़ाबिल हुए और उन क़तूहात से पहले जो वाक़यात शहर में आये, उनसे भी मुझे आपने नावाज़िह रखवा। बावजूदकि बादशाह को अपनी हमन्साया शौमों की ज़बानों से वाज़िह होना ज़रूरी है, आपने मुझको चरवी क़िस्सा-पढ़ना सिखाया। इम ज़बान के सीखने में मेरी उम्र का एक बड़ा हिस्सा ज़ाया हुआ। मगर, आपने यह समझा कि एक ऐसी ज़बान सिखा कर जो १०-१२ बरस मिहनत किये बिना हासिल नहीं हो सकती, गोया मुझ पर बड़ा भारी ग़दसान किया। आपको यह सोचना था कि एक शाहज़ादे को ज़्यादातर किन किन इकमों के पढ़ाने का ज़रूरत है ? मगर आपने मुझे ऐम क्रना की तालीम दी, जो हाज़ियों के लिये मुफ़ीद है, और ज़ेरी ज़बानों के दिन से फायदा बच्चों की ली पढ़ाई में बर्बाद किये।

“क्या आपको मालूम न था कि छुटपन में, जब कि जूयत हाज़िज़ा मक़नूत होती है, इज़ारों मायूत बाँते ज़हम नशीन हो सकती हैं ? और

शिष्य दो घो—यह सोचा कि अब मेरा भागिर्दा बादशाह हुआ है, कुछ ब-कुछ जागीर देगा, और वह हमीरों की ओरों में उस जिया जायगा। उसने यही-यही शिष्यारथों पहुँचाई और सभी घरदारियों तथा हमीर-उम-रावों को अपने पक्ष में कर लिया। यहाँ तक कि यंगम शीशमनारा तक को पक्षपाती बना लिया, और उसने कई बार बादशाह को वाद दिखाना कि आपका माननीय विद्वान् उस्ताद प्रतिष्ठा किये जाने के योग्य है। पर बादशाहने लोगमहीन तक तो उम्मीदों की ओर जाँस डठाकर भी नहीं देखा। अन्तमें उसने उसे एक दिन घरघारे-ग्राम में हाज़िर होने का हुक्म दिया। यहाँ कुछ शुने हुए हमीर हाज़िर थे। यहाँ बादशाह ने कहा—

‘मुझो, बराप मेहरबानी यह तो क्रमाह्वये कि आप हमारे स चाहते क्या हैं। क्या आपको यह पता है कि हम आपको दरबार के अध्यक्ष दर्जे के उमरा में हाज़िर करछें ? अगर आपकी यह फ़राहिश है, तो पहिले हम बात का हिमाय करना जरूरी है कि आप किसी गिराने-इज़्जत के मुस्तहज़र यमी हैं या नहीं। हम हमने हुक्म नहीं करते कि अगर आप हमारी ताज़ीम व तरबियत टोक और पर करते, तो जरूर ऐसी ही इज़्जत के मुस्तहज़र होते। याव हमको किसी तरबियतवाज़ता नौजवान शख्स का ज्ञान यतलाह्वे, कि उम्मीदों ताज़ीम व तरबियत की बातत मुकमुतारी का इबादा मुस्तहज़र उताका उस्ताद है या उसका बाप ? क्रमाह्वये तो सही कि आपकी ताज़ीम से कौन सी पात्रक्रियत मुझे हासिल हुई है। क्योंकि आपने तो मुझको यह यतलाया था कि तमाम क़िरगिस्तान (पूरोप) एक छोटे-बपीरे से इबादा नहीं, जिसमें सयस बहा बादशाह अब्बकन् शाह मुतगाछ था, फिर बादशाह हॉलीवट हुआ, और हमके बाद बादशाह हुंगलिस्तान। क़िरगिस्तान के और बादशाहों—मनसूर, फ़ात्म और हुंलीवट की बायत आप यह यताया करते थे कि यहलोग हमारे यहाँ के छोटे-छोटे राजाओं के मुमाक्रिज़ हैं, और यह कि हिन्दुस्तान के बादशाहों में सिर्फ़ हुमायूँ, अकबर, ग़हाँगीर, शाहबहाँ हुए हैं, जिनके आगे तमाम दुनियाँ के बादशाहों की शान व शौक़त मखिम है। और यह ईरान, उज्बक, काशगर, तातार, श्याम, चीन और माचीन के

भाइयों से खबरे पर मजबूर होऊँगा; क्योंकि आप यह खूब जानते हैं कि मलातीम हिन्दू की औजाद को हमेशा ऐसे मुघामिलात पेश आते रहते हैं। पस, क्या आपने कभी लड़ाई का क्रन या किसी शहर का मुहायरा करना, या फौज की सफ़ा भाराई का तरीका मुझे सिखाया? यह मेरी खुश किस्मती थी, कि मैंने इन मुघामिलातों में येने लोगों से कुछ सीख लिया, जो आपसे क्यादा भद्रकमन्द थे। पस, अपने गाँव को चले जाइये, और अब से कोई न जाने कि आप कौन हैं, और आपका क्या हाल है?"

एक बार औरङ्गजेब ने बृद्ध बादशाह शाहजहाँ को कैद में एक पत्र लिखा था। वह पत्र भी सुनने योग्य है। उससे बादशाह की सत्परता, राजनीति-ज्ञता और दूरदर्शिता प्रकट होती है। वह पत्र इस प्रकार है —

‘क्या हुजूर यह चाहते हैं कि मैं सफ़ती के साथ पुरानी रस्मों का पाबन्द रहूँ, और जो कोई गोकर्चाकर मर जाय, उसकी सापदाद शक्त करलूँ? शाहाने मुआजिया का यह दस्तूर रखा है कि अपने किसी अमीर या शौकतमन्द महाजन के मरने के बाद बरिक्त बाज़ औज़ात तो दम निकल जाने से पहले, उसके सब मात्र घसबाव का पता लगाते थे, और जब तक उसके मौक़ा चाकर कुल माज व दीलत, बरिक्त अदना घइना ज़ेवर भी, न बचजायें, तब तक उन पर मार-पीट होती और ये तैद किये जाते थे। गोकि, यह दस्तूर बेशक फ़ायदेमन्द है, अगर जो ग़ाहस्ताफ़ी और बेहमी इममें है, उससे कौन हुन्कार कर सकता है? अगर हर एक अमीर नेकनामाज़ों जैसा मामला करे, या कोई औरत उस महाजन की तरह अपने माजिक की दीलत पोशीदा करले, तो उसका हक़ ब-जानिब है या नहीं? हुजूर के फ़ौक़ में मैं बहुत बरता हूँ, और यह नहीं चाहता कि हुजूर मेरे तौरो-तरीक़े की निस्पत हालत क़दमी करमावें। हुजूर करमाते हैं—कि सफ़तवशीनी ने मुझे खुदराय और मरारु बना दिया, लेकिन यह फ़ायदा शक़्त है। ४० बरस के सज़रमे से आप खुद ही क्याल करमा सकते हैं कि साजशहरी किस क़दर गिराँदार चीज़ है और बादशाह जब दरबार से उठता है, तब किस क़दर क्रिमें उसके दिख को तामाग़िन और दर्दमन्द बनाये रहती हैं। हमारे बड़े अमजद बलाछहीन

आतामी के साथ इस्लाम एभी मुहरीद काभीम हागिज कर सकता है  
जिन्मे बिश में निशान काका जवाज्जत पैदा होते है और बिन्ने में बने  
बदे सुगापी कामा के करने के हाकिम हो जाता है जवा जमाज किन करवी है  
क हाकिमे भदा हो सकती है ? और कही कही इस्लाम दुना की दार्तों क  
जानना क्या करवी ही के त्रिप हो सकता है ? जानने हमारे लाहिद  
महीद को तो गर गमका दिया था कि हम इये जिगों/कही पडाने है  
और मुझे एव दादारी बि दार्तों तक देगी येहदा जनों मे आप मे  
रिमाज परान करगे रहे, जो पहिले तो आदा समझ में बडा जातो थी  
और समझ में आदान पर अह भूज आगे थी और ऐसी थी जिगपी दुनि  
मागों मुआमलात में कुतु प्ररात बहा । रा पने उम क कई साल एभी-हं  
तागाम में लगप करार, जो जागप पकर को । मार पर में जागपी दार्तोंम  
मे आ इदा दुमा तो हिमो कइ इस्लाम जामने का दाता मही कर सकता था ।  
बहुत इवक कि ऐसी जग्न अजाव य जगह दाता न पाकिज था जो एक  
अपदा समझ के बीजगाम जगम की हिमाम कर प त, दिनात को मरार और  
तबिदत को ईशाम कर देता है । जगम आप मुझे ये दातें तिलात, जिन्मे  
कहम हम जाविज हो जाता कि कही कही दलीज क बिनी दात की तत  
खीम मही करता, या दात मुमरी यह मदक पडाने जिसप इनाज की तबि-  
यत ऐसी हो जाती है कि दुनियाँ क इम्प्राजत का उम पर फुद भी अतर  
मदा होता, और सकता या तनजुमों की हाजन क कइ एव-या बहता है,  
या, मुझे बुदरता बातों क आगाह करते—तोभा उल्ले भी फा दात कदा  
पडगान मागता—जितना निफन्दर मे आता का माता या और अरस्तू  
से भी क्यादा इनाम आवना नजर करता । मुझा ही, जामुमुजाता का मुझा  
इनाम प्रवामप्रवाद मुक पर न लगाइय । क्या आप कइ दातें जामने ये कि  
शादजादों को इतनी बात हाकर ही जिस्सातो चाहिय कि उन्हा रिवादा के साथ  
और रिवाया को उमके साथ किम तरह का बत-व काला चाहिये । और क्या  
आपका अरस्तू ही यह एवाज कर खेगा मुभा-बि मही था कि मैं किनी तक  
सकता साज की लातिर क आपनी जाग बचाने के लिये सज्जार पकड़कर आपने

कमी कमी दुनियाँ के धरमर बादशाह बिजकुल बहरी और बातरबियत-पाप्रता होने पर भी बदे आदिब हैं। योदे-से धरें में वे बिजकुल दुष्के दुकडे होगये हैं। बस, हकीकत में सब से बड़ा बादशाह बही है, जो रिआया की मुहबबत और धरमर ब हुन्साफ को ही अपना हाथिज अमर खाने।'

इस जमाने में मुसल्लों के महल्लों की क्या दशा थी, और बादशाह किस भाँति अपने ब्यक्तिगत जीवन ब्यतीत करते थे—उनका ऐरब्य कितना महार था—उनका बर्णन बर्नियर के निम्न बिलित उद्धरण में आपकी भिक्षेगा—

"बहुधा राजमहल्लों में भिन्नभिन्न बस्त्रों और आतियों की २००० स्त्रियाँ रहती हैं—जिनमें से प्रत्येक के कतम्य ट्यक् ट्यक् होते हैं। किम्पी का काम तो बादशाह की सेवा होता है, और किसी का उसकी बेगम्बे, थैलियों और आशनाओं की सेवा। उस धेयो में ब्यवस्था प्रबन्ध स्थिर रखने के लिये उनमें से प्रत्येक को अजग अजग कमरे भिजे होते हैं, जिनकी गनाने पहरेदार निगरानी करते हैं। उसके सिवा उनमें से प्रत्येक को १० या १२ बँदियाँ भिजी होती हैं जो उपरोक्त स्त्रियों में से दे दी जाती हैं। इनाने पहरेदारों को अपने दुर्जे के अनुसार तीन चार या पाँचपौ रुपये तक माहजारी बेचन भिक्षता है, और इनकी आधीन दासियों को २०)मे २००)तक। इनाने पहरेदारों के सिवा गानेशाजियों को भी चेतन तो उसी प्रकार भिक्षता है, पर शाहजादे और शाहजादियों ने, जिनके नाम पाठकों के मगोरम्जन के लिये मैं आगे बचकर लिखूँगा—बहुमुख्य तोहफे भी भिक्षते रहते हैं। इनमें से कई तो शाहजादियों को विखना पढ़ना सिखाती हैं, परन्तु बहुधा इन्हें आशिष्टाना गजलें भिक्षाती रहती हैं। इसके सिवा महल की द्वातूने गुजिस्तार और योस्वार नामक पुस्तकें, जो एक प्रसिद्ध खेखक बोल सादी-द्वारा रचित हैं, और अन्य प्रेम सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ती रहती हैं, जो बहुत करके उपन्यास और जिस्तों के बंग की हैं और आत्यन्त धरलोज हैं।

'पह मौकर औरतें बादशाह की सेवा किस तरह करती हैं, यह भी उल्लेखनीय बात है। क्योंकि जिस तरह बाहर भदों में घमीर और मन-

मुहम्मद अकबर ने इस राजा से, कि ठीक-ठीक बीजापूर वावाई, नर्मो और तमीर के साथ सख्तनत करे, अपने बड़े सख्तनत की तारीफ में अमीर तैमूर का बिक्र बसौर नमूना लिखकर अपनी बीजापूर की उमकी तरफ तबज्जह दिखवाई थी। यह तज्जकिया यों है। अब तुम्हीं सुखतान वैजेद गिरफ्तार होकर अमीर तैमूर के हुज़ूर में लाया गया, और अमीर बहुत और के साथ उस मग़रूर कैदी का तरफ़ देखकर हँस दिया, तब वैजेद ने इस हरकत से नाराज़ होकर अमीर से कहा—“तुमको अपनी क्रान्दम-शी पर इस इतराबा न चाहिये। दीवत और हज़रत बख़्शना या लेना खुदा के हाथ में है। तुम किन है कि ज़िम ज़दर तुम भाव पाठें करते हो, कज़ मेरा तराह पकड़े जाओ।” अमीर ने ज़शब दिया—“तुनियौ और उमक ज़रो दीवत की बेपुतवारी मे मैं ख़ुब बाज़िक्र हूँ। और खुदा न करे कि मैं किसी मालूय कुरमब की हूँसी उड़ाऊँ। मेरी हूँसी का सबब यह न था कि तुम्हारा दिख हुआई, बरिक्, मुझे तुम्हें देखकर अपनी और तुम्हारी बदसूरती के ख़याल ने मे अफ़्रितवार हँसा दिया। क्योंकि, तुम तो काने हो, और मैं ख़ौगबा। मेरे दिल में यह गुज़री कि राज और तरफ़ बाज़िरा पेसी क्या चीज़ है, जिसको पाकर बादशाह अपनी हस्ता को भूज भाते हैं। हाज़ाकि सुशाप-बाबा उसको अपने ऐसे बन्दों को अता करता है, जो काने और ख़ौगदे हों।”

‘मालूम होता है कि हुज़ूर यह ख़याल फारमाते हैं कि मेरी मसरूफ़ियत अनित्यत उन उमूर के, जिनसे मैं मुक़ददारी और सख्तनत के अन्वदुस्नी इत-ज़ाम के लिये निहायत ज़रूरी जानता हूँ, जड़े प्रवृत्तात और मुक़ददारी की जानिव निहायत होनी चाहिये। इस अन्न से मैं हरगिज़ इन्कार नहीं कर सकता कि एक बड़े शाहन्शाह का ओहदा, दीवत और नई नई प्रवृत्तात की वजह से मुमताज़ होता है, मगर यह बात क़ाब इन्तज़ा नहीं कि मुझे कादिल और ज़मोरा बैठे रहने का इरज़ाम दिया जाये। क्योंकि बग़ाल और दखिन में मेरी क़ौर्बा का मसरूफ़ियत को तो हुज़ूर ख़याल में का ही नहीं सकते। और मैं हुज़ूर को यह भी याद दिजाता हूँ कि बड़े-स-बड़ा मुक़ददारी भी हमेशा सब से बड़ा बादशाह नहीं हुआ। देखा जाता है कि

और तथा तीर-कमान और हथियारों के प्रयोग में शूण प्रवीण होती हैं। प्रति दिन शाही बाबरची को खाने के खर्च के लिये १०००) ६० दिया जाता है। शक्रसरो को हुस रकम में ने आवश्यक सामान जुटाना पड़ता है। शाही दस्तारवान् पर एक नियत संख्या में भिन्न भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट मांस भिन्न भिन्न प्रकार के खोनी के प्याजों में—सुमहरे भर्तनों में रखकर पेश किये जाते हैं, और जब बादशाह को किसी बेगम, शाहजादी या जनरल पर विशेष वृषा प्रकट करनी हो, तो इनमें से या और किसी चीज़ में से उसे भोज देता है। पर इस प्रतिष्ठा का मोख उन्हें बहुत देना पड़ता है। क्योंकि फ़र्वाजानरा, जो यह खाना लेकर जाते हैं, उनसे भारी रकम इनाम में प्राप्त करते हैं। जब बादशाह शत्रु के देश में हो, तो यथासम्भव बाबरची खाने के खर्च का कुछ हिस्सा नहीं लिखा जाता, परन्तु महल में बेगम और शाहजादियों तथा अन्य स्त्रियों के लिये वृषक् बड़ीकें नियत होते हैं। किन्तु बादशाह के महल में कई हिन्दू राजाओं की कनयियाँ भी हैं, जिन्हें हिन्दू नाम दिये गये हैं। इसी तरह, जैसी उनकी इच्छा हो, मुसलमानों को यह इस्लामी नाम देता है। बादशाहों और मुगल शाहजादों में यह भी दस्तूर है कि वह बुद्धी स्त्रियों से वासूसी का काम लेते हैं, और यह भी वसा हंग के पञ्चाङ्ग साराओं को राज्य भर की सुबरी स्त्रियों के पते देते रहती हैं, जिन्हें यह सुदियार्थ घोषा, फ़रेब, या लालच से, जैसे बन सके, उन्हें महल में ले आती हैं। जहाँ बादशाह या शाहजादे की इच्छा हो, वहाँ उन्हें धारणा लोगों की पत्ति में रखवा जाता है। जैसाकि मैं शाहजहाँ और दारा के धरानों में कह आया हूँ—जब ऐसा संयोग होता है कि वह इन्हें महल में रखना न चाहें, तो इन्हें कोई भारी नज़राना देकर वापस भेज देते हैं। मैं इन घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूँ—क्योंकि मुझे इन गुप्त रहस्यों और धन्य कई बातों के सम्बन्ध में ज्ञास ज़बर है, जिनका उल्लेख करना मैं उचित नहीं समझता।

“यद्यपि औरङ्गजेब ने प्रत्येक प्रकार के राग-रंग को बन्द कर दिया है, फिर भी बेगम और शाहजादियों के मनोरंजन के लिए कई-एक नाचने और गानेवाकियाँ भीकर हैं।”



मजदूर हैं, उन्ही तरह मजदूरों में स्त्रियों में भी हैं। बरिक् पहुँचों के ता गद्दी ओहदे भी होते हैं, जो बाहर मर्दों के। जब बादशाह-सलामत बाहर तय-रीफ १ खाना चाहें, तो इन्हीं ओहदेदारों के द्वारा बाहर के अफसरों को आज्ञा प्रदान की जाती है। इन ओहदों पर जो स्त्रियाँ नियुक्त की जाती हैं, उनसे चुनाव में ज़ात सावधानी की जाती है—जो बुद्धिमान हों और राज्य में जो-कुछ हो रहा हो, उससे परिचित रहें; क्योंकि जिन बातों की बादशाह को सूचना आवश्यक हो, उनकी पूरी रिपोर्ट बाहर से अफसर विश्व भेजते हैं, और जिस तरह बादशाह आज्ञा दें, जनाने अफसर उन पर रिपोर्ट लिखती और जवाब देती हैं, और बाज़ायदा मुहर करके मर्दाने अफसरों के सुपुर्ग कर देती हैं, और इधर-से इधर और उधर से उधर जवाब लाती और जो जाती रहती है। मुगलानों का यह भी एक नियम है कि जो-कुछ राज्य में हो रहा है, सप्ताह में एक बार उसकी रिपोर्ट 'सुक्रिया नवीस' में आवश्यक दर्ज करानी होती है, जो एक प्रकार का गज़द या अज़रार है। इन ज़बरों को खगमग सम्प्रा के ३ यजे महल में जनाने अफसर बादशाह को सुनाती हैं, और इस तरह महल में भी राज्य भर की घटनाओं की सूचना मिलती रहती है। इसके सिवाय जासूस हैं जिनका कर्तव्य है कि सप्ताह में कम-से-कम एक बार दूसरे आवश्यक विषयों और ज़ातकर शाह ज़ादों के कामों के सम्बन्ध में, आवश्यक रिपोर्ट भेजें। यह रिपोर्ट लिखित होती है। बादशाह आधी रात तक बैठा इसी प्रकार काम करता रहता है। इसके बाद वह केवल तीन घण्टे तक सोता है, और उठते ही मामूली नमाज़ पढ़ता है, जिसमें उसे १॥ घण्टा लगता है। प्रति वर्ष वह एक ज़रता करता है, जिससे ईश्वर उसे विजय और प्रताप दे। परन्तु आजकल चूँकि वह बड़ा हो गया है, और शत्रु इसे कुछ करने नहीं देते, इसलिये विवश उसे भाराम करना पड़ता है। परन्तु वह आवश्यक कार्यों के सम्बन्ध में प्रति दिन सोचने तथा उचित आज्ञा प्रदान करने में कमी नहीं करता। इस तरह हमका यह नियम है कि २४ घण्टे में एक बार भोजन करता है, और केवल तीन घण्टा सोता है। सोने के समय बाँटियाँ टनकी रचा करती हैं, जो बड़ी

दिखाने की यही अभिलाषिणी रहती है। इनके ऐसा करने का कारण भी है। मैंने स्वयं देखा है कि कई बार इन्होंने मुझे सम्मति देने के बहाने अपने कमरों में बुलाया, और बात चीत का मित्रमित्रा प्रारम्भ करने के ब्रिये अपने अवाहिरात तथा जेवर मँगाने शुरू किये, जो सोने की यही क्रिस्तिषों में रखकर इनके सामने लाये जाते थे। वे मुझसे उनकी जाति या गुण और विशेषतायें पूछतीं, साथ ही इस प्रकार के अन्य प्रश्न करतीं। इसी बीच में मुझे इनकी सारी पहचान होगई, और मैं यह कह सकता हूँ कि मैंने जगमग प्रत्येक प्रकार के अवाहिरात देखे हैं—जिनमें बाह्य तो अमाधारण है। मैंने एक बार स्वरंग म एक से मोतियों की माला देखी है, जिन्हें प्रथम बार देखकर तो मैंने भिन्न प्रकार के मेवेजात समझा था। मैंने मेवेजात कहा है, क्योंकि यह हीरों की माला थी जो मोतियों की तरह दिखी और पिरोई हुई थी। उनमें से प्रत्येक हीरा आकृति में नारियल के बराबर था। इनका छाछ रंग, जिनमें मोतियों का सफेद रंग अपनी आभा दाखता था—इन्हें फल-फूलों का रंग देता था। क्योंकि योग्य ज्ञानतो है कि इनके निपाय कोई अन्य इनके अवाहिरात को नहीं पहचन सकता इन मालाओं को वे अपने कंधों पर ओढ़नी की तरह पहनती हैं। इनके साथ दोनों तरफ मोतियों की कितनी ही मालाएँ होती हैं। बहुधा इनके गले म तीन से लेकर पाँच तक मोतियों की मालाएँ होती हैं, जो कि पेट के नीचे के हिस्से-तक पहुँचती हैं। सिर में वे मोतियों का गुच्छा-सा पहनती हैं, जो माथे तक पहुँचता है, और जिसके साथ एक बहुमुख्य आभूषण अवाहिरात का बना हुआ सूरज, चाँद या किसी और तारे या कभी कभी किसी फूल की आकृति का होता है। दाहिनी तरफ एक गोल छोटा सा गहना हाथा है, जिनमें दो मोतियों के बीच बड़ा एक छोटा-सा छाल होता है। कानों में बहुमुख्य आभूषण पहनती हैं, और गदन के चारों तरफ बड़े-बड़े मोतियों तथा अन्य बहुमुख्य अवाहिरात के हार, जिनके बीच में एक बहुत बड़ा हीरा, छाछ, याकृत या नीलम और इसके बाहर

“बहुधा ये गानेवासी उस्तादियाँ लग्न से हिन्दू होती हैं, जिन्हें बचपन में घरों से भगा लिया जाता है। यद्यपि उनके नाम हिन्दुमाना है, पर हैं सब मुसलमान। हममें से प्रत्येक की भाषीयता में खगमग १०, शिष्याएँ होती हैं, जिनके साथ वे भिन्न भिन्न बेगमों, शाहजादियों और आशानाओं के महल से उपहार लेती रहती हैं, और प्रत्येक की अपनी स्थिति के अनुसार दानाँ मिला होता है।

“बेगम और अन्य महिलाएँ अपनी अपनी गानेवाहियों के साथ अपने अपने महलों में समय काट लेती हैं। इन गानेवाहियों को विवाह अपनी मातृका के और किसी के यहाँ गाने की आज्ञा नहीं होती; सिवाय उस सुरत के जबकि कोई भारी स्वीकार हो। तब वे सब की सब एक ही होती हैं, और उन स्वीकार पर कुछ न कुछ गाने का हुक्म दिया जाता है। वे जियाँ ममी सुन्दरी, उत्तम बच्चा-भूषणों से सज्जिता होती हैं, मस्तानी चादर न चरती हैं, और बात-चीत में बड़ी गुस्ताख, हाज़िर-जवाब, और चातुर्य वास्तनायुक्त होती हैं; क्योंकि गाने के सिवाय इनका काम सिवाय अभिचार को और कुछ होता ही नहीं।

‘महल के दैनिक प्रच की तादाद कभी एक करोड़ रुपये के कम नहीं होती। यह रजम प्रकट में यद्यपि बहुत बड़ी है, पर इतनी बड़ी नहीं रहती, जब यह समझ लिया जाय कि हिन्दुस्तान के सब खोग सुगन्ध और पुष्पों के बहुत शौकीन हैं, और भिन्न-भिन्न जाति के इन्हीं, सुगन्धित तेला की सुगन्धि और रुखों पर बहुत सा रपया खर्च करते हैं। इनके बाद पान का खर्च है, जो इनके मुँह में रखा जाता है। स्मरण रहे कि यह गोज़ाना के खर्च है। इसमें यह रपया भी सम्मिलित होना चाहिये, जो जवाहरात की गरीब में खर्च होता रहता है, और यही कारण है कि सुनारों को ज़ेवर तैयार करने से पुरसत नहीं मिलती। इन जवाहरातों में से अनेक अत्यन्त बहुमूल्य और दुर्लभ हैं, जो बादशाह और बेगमों तथा शाहजादियों के निज इस्तेमाल में आते हैं। ये बेगमों और शाहजादियाँ अपने-अपने जवाहरातों को देख-देखकर प्रमत्त होती और दूसरों को

मिठी लगती है—जिसे मेंहरी कहते हैं। इससे उनके हाथ-पाँव छाज रँग जाने हैं। मानो, इन्होंने दारताने पहन रखे हैं। इनके पैसा फरने का कारण यह है—कि चूँकि यह देश बहुत गर्म है, इसलिये न तो यहाँ दस्ताने और न मोजो हो पहने जाते हैं। इसी कारण से इनको ऐसी भारीक पोशाक पहननी पड़ती है कि शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्ग भी दोख पड़ते हैं। इन वस्त्रों को साबी और मजमल कहते हैं। यह एक या दो या तीन कपड़े पहनती हैं, जिनका वजन अधिक-से अधिक आधी छटाँक होता है। परन्तु मूल्य उनका ४०) मे २०) रुपया तक होता है। स्मरण रहे, इसमें उस सुनहरी किनारी का मुख्य शरीक नहीं है, जो वे उनमें लगाती हैं। ये छियाँ इन्हीं वस्त्रों में सोमी और २४ घण्टे बाद इन्हें धाज जावती हैं, जिसके बाद फिर इन्हें वहीं पहनतीं, यद्यपि अपनी चाँदियाँ को वे धाजती हैं।

इनके बाल सदा अच्छी तरह गुँचे रहते हैं और सुगन्धित तैलों से तर रहते हैं। सर पर वे भिन्न-भिन्न प्रकार और रङ्गों के दुपट्टे पहनती हैं, जो ज़रमस्त के होते हैं। सर्दों की ऋतु में भी जब यहाँ गर्मी कम होती है—क्योंकि यहाँ जमना तो यहाँ होता ही नहीं—वे यही धज पहनती हैं, परन्तु ऊपरी धज के ऊपर कारमीर की बनी हुई एक थोढ़नी, जो जम्मा-सा खुला चोला होता है, पहन लेती हैं और दूसरे धजों के ऊपर श्यामल सुन्दर गाल ओढ़ लेती हैं जो इतना भारीक होता है कि छोटी थँगूठी में से निकाला जा सकता है। रात के समय बहुधा इनको यह विनोद होता है कि बड़ी-बड़ी भारी मशालें जलवायें, जिन पर वे डेढ़ छाल से ज्यादा रुपया खर्च कर देती हैं। ये मशालें, तेज या मोम की होती हैं। इन शाहजादियों में से कोई-कोई बादशाह की आज्ञा से तिर पर पगबो बाँधती है, जो कि मोतियों और बहुमूल्य जवाहरातों से ढकी होती है, और इनके सौन्दर्य को भीगना कर देती है। नाच-रङ्ग आदि में तवायफ़ों को भी यही हज़ प्राप्त होता है। इन वेगमों और शाहजादियों की अपने-अपने रुखे या खानदान के अनुसार बेतन मिलता है, जो 'बाहान' कहाता है।

चारों तरफ बड़े-बड़े मोतियों के दागे । बाँहों पर कूहनी से ऊपर या हथ्थ चौद बहुमुख्य बाजूबन्द पहनती हैं, जिनके ऊपर विभिन्न जाति के मुख्यवान् जवाहिरात लड़े होते हैं । चारों तरफ मोतियों के छोटे छोटे गुच्छे छटकते हैं । बख्ताइ पर बड़ी क्रीमती पहुँचियाँ या मोतियों के गुच्छे १० या १२ पंक्तियों में होते हैं । इस तरह पर इनकी नज्ज की बागद इस तरह दली होती है कि मुझे बहुधा इस पर हाथ रखना बड़ा कठिन हो जाता था । जँगलियों में बहुमुख्य चँगूठियाँ पहनाती हैं, और दाहिने हाथ के चँगूठे में एक थारमी होती है, जिसमें जवाहिरात का एक छोटा सा गोला आहना रखा इद गिद मोती लड़े होते हैं । इस आहने में वे बार-बार मुँह देखती हैं, क्योंकि इस बात की वे बड़ी शौझोन होती हैं, और हर घड़ी इनकी दृष्टि हमी पर लगी रहती है । इनके कमरों के चारों ओर सोने का एक पटका दो अंगुल चौड़ा होता है जो सारे-का-सारा जवाहिर से भरा हुआ होता है । इज़ारबन्द के दोनों सिरों पर, जो इन के पात्रामों को बाँधने का काम देता है पाँच अंगुल लम्बे १२ लड़ के मोतियों के गुच्छे लटकते हैं, और दागों के मोचे के भाग में या तो सोने का पात्रोय, या बड़े बड़ मोतिया की लड़ियाँ । उन गहनों के विवाय—जिनका मैं इस स्थान पर चक्केल नहीं काता—और जो वे अपनी अपनी इच्छानुसार पहनती हैं, इन शाहजादियों के पास उपरोक्त गहनों के छ स लेखर आठ तक लोड़े होते हैं । इनका पोशाकें बहुमुख्य और हल-गुलाब में बसी हुई होती हैं । दिन भर में कई-कई बार वे वस्त्र बदलती हैं, क्योंकि पूर्वीय देशों में ज़रतु में कई परिवर्तन होते रहते हैं । जब वे महिषायें अपने जवाहिरात को धेचका चाहें, तो इनके लिये पना करना लगभग असम्भव हो जाता है ; क्योंकि मुझे मालूम है कि शाहजादा अकबर जब शिवाजी के हज़ाफ़े में था, तो रुपया समाप्त हो जाने के कारण उसने पाँच लाख गोब्रा में धेचने के लिये भेजे थे, जो इन्हीं जवाहिरातों के बराबर थे । पर इन्हें खरीदने पर कोई राजी न था । क्योंकि एक तो उनकी क्रीमत् बहुल माँगी गई थी, दूसरे वह छिदे हुए न थे ।

“हिन्दुस्तान में सभी स्त्रियाँ अपने हाथों और पैरों में एक प्रकार की

इसके वज्र भस्मस्त मामूली ज़मीन के कपड़े के होते हैं। यहाँ तक कि इस पर १०) से ज्यादा आगत नहीं होती। सितने जवाहरात यह पहनता है, उसके नाम किसी न किसी मण्डप पर रखे हुए होते हैं। जैसे सूर्य, चन्द्र या कोई और मण्डप—जैसा इकीमों ने बतला दिया है। क्योंकि वह सब कोई जवाहरात माँगना चाहे, तो वह यह नहीं चाहता कि अमली नाम लेकर पधर माँगे, इसलिये यह कहता है—‘महताब लाओ।’ ‘आफताब लाओ।’ इन जवाहरातों में से बादशाह को कई तो मुगल सम्राट् तैमूर भादि अपने पूर्वजों से विरासत में मिले हैं। साथ ही कई-एक गोबकुण्डा या बाबापुर की रियासतों से प्राप्त हुए हैं। महल में छोटे बड़े सब प्रकार के लाखों की वयपि नमी नहीं—फिर भी जवाहरात की खरीद बराबर जारी रहती है। जब महल में कोई शाहजादी पैदा होती है तो स्त्रियाँ आवण्त प्रसन्न होतीं, और मन का हर्ष प्रकट करने के तौर पर अमापुण्य खर्च कर दाखती हैं। वस्त्र शाहजादा पैदा होता है, तो दरबार भी उस प्रसन्नता में भाग लेता है। राग रङ्ग होते और वाजे बजते हैं, और कितने दिन तक बादशाह हुक्म दे, बरनों की महकिलें गर्म रहती हैं। अमीर उमरा रुपया, हाथी, घोड़े आदि सोहरे लेकर बधाइयाँ देने आते हैं। इसी दिन बादशाह शाहजादे का नाम रखता है, और उसका ‘याहान’ नियत करता है, जो सदा राज्य के बड़े-बड़े अनरख की सनत्ताह से अधिक होता है। इसके सिवा शाहजादे के नाम पर ज़मीन के बड़े-बड़े टुकड़े नियत किये जाते हैं, और साल के बाद इस ज़मीन का पैशवार से जो कुछ घामदनी हो, पताने में इनके नाम पर अलग जमा की जाती है। और जब इसकी शायो हो जाती है और इसे रहने को अलग मकान दिया जाता है, तो वह रुपया हुये दे दिया जाता है। इन शाहजादों में किसी की सनत्ताह २० हजार से ज्यादा नहीं होती, और यह रकम भी बहुधा सब से बड़े पुत्र को दी जाती है। आज-कल शाहभाखम यही सनत्ताह ले रहा है। परन्तु इसकी अपनी आमदनी दो करोड़ रुपया से ज्यादा है। इसके महलों में १००० के ज़रीब स्त्रियाँ हैं, और उसके दरबार की शान

हमके सिवा वे बहुधा बादशाह के पास से सुगन्ध, वस्त्र और जूने आदि खरीदने के बहाने से लाख भेंट गऊद रुपये की सूरत में भी प्राप्त करती हैं। इस तरह पर वे भोगम आत्यन्त प्रेरकपूर्ण जीवन व्यतीत करती हैं, और इनका काम सिवाय इसके और कुछ नहीं होता—कि अपना साधन संचालन करती रहें, और शान शौकत दिमागें दुनियाँ में इनकी प्रसिद्धि हो, और यह बादशाह का प्रसन्न करने में सक्षम हों। यद्यपि इनमें परस्पर बहुत ही विद्वेष होता है परन्तु ऊपर से वे इसे प्रकट नहीं होने देतीं। इतने निष्ठोपन, मस्ती और ठाट बाट में यह अत्यन्त है कि इनके मन में सुगन्धियाँ उत्पन्न न होतीं क्योंकि वे कभी मृत्यु का विचार भी नहीं करतीं। मारे महल में ऐसा शब्द कभी किसी के मुँह में नहीं सुना जाता, और न कोई ऐसी घटना ही होती है जिससे मृत्यु का भय इनके सम्मुख आ सके। जब इनमें से कोई रोगिनी हो जाती है तो उसे एक सुन्दर महल में ले जाते हैं, जिसका बीमारखाना कहते हैं। यहाँ पर अत्यन्त भावधानी से उनकी चिकित्सा और परीक्षा होती है, और वहाँ से वे आरोग्य प्राप्त करके या मरकर ही बाहर आती हैं। यदि रोगी पैदा हो, जिसके जिये बादशाह के हृदय में ख़ास इज्जत हो तो रोग के आरम्भ में वह एक बार उसकी ख़बर लेन आते हैं। परन्तु अगर वह शब्द आरोग्य न हो, तो फिर उसके पाप नहीं आते, बल्कि समय पर किसी राजा को भेजकर उसके समाचार लेना लेते हैं। यद्यपि महल की छियाँ जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ—प्रत्येक प्रकार का ठाट बाट, दिमाग घेरती और बड़ी नज़ाकत से रहती हैं, पर औगूज्ज्वल इसमें कोई वज्र नहीं देता। क्योंकि सब लोग रूपवती छियों के बड़े शौकेन होते हैं और जगत् में यही एक चीज़ है जो प्रयत्नता प्रदान कर सकती है। मुगल सम्राटों का तो यह एक नियम ही हो गया है। परन्तु वर्तमान बादशाह अपने पिता शाहजहाँ की तरह ठाट बाट से नहीं रहता। इसमें कपटे अत्यन्त सारे होते हैं। पगड़ी में साज़ुराँ और छाती पर एक हार के सिवाय यह काई जोवर नहीं पहनता। यद्यपि उसकी सन्तान—बल्कि चौथी पीढ़ी तक सब-के-सब, मोतियों की आँखों पहनते हैं। परन्तु वह इस ओर से उदासीन है।

इसके वज्र अत्यन्त मामूली कीमत के रुपये के होते हैं। यहाँ तक कि इस पर १०) से ज्यादा खर्चा नहीं होती। जितने क्षमाहरात वह पहनता है, उसके नाम किसी न किसी मन्त्र पर रखे हुए होते हैं। जैसे सूर्य, चन्द्र, या कोई और मन्त्र—जैसा इस्कीमों ने बतला दिया है। क्योंकि वह जब कोई क्षमाहरात माँगना चाहे, तो वह यह नहीं चाहता कि उसका नाम लेकर पावर माँगे, इसलिये यह कहता है—‘महताब आओ।’ ‘याफ़ताब आओ।’ इन क्षमाहरातों में से बादशाह को कई तो मुग़ल सम्राट् तैमूर भादि अपने पूर्वजों से विरामस्त में मिले हैं। साथ ही कई-एक शोबकुण्डा या यात्रापुर की रियासतों से प्राप्त हुए हैं। महल में छोटे बड़े सब प्रकार के खानों की यद्यपि कमी नहीं—फिर भी क्षमाहरात की खरीद बराबर जारी रहती है। जब महल में कोई शाहजादी पैदा होती है तो स्त्रियाँ आयन्त प्रसन्न होतीं, और मन का हर्ष प्रकट करने के तौर पर अवापुण्य सर्प कर बाँधती हैं। परन्तु शाहजादा पैदा होता है, तो दरबार भी उस प्रसन्नता में भाग लेता है। राग १३ होने और बाजे बजते हैं, और जितने दिन तक बादशाह हुक्म दे, खरनों की महकिलें गर्म रहती हैं। अमीर डमरा रुपया, हाथी, घोड़े आदि तोहफ़े लेकर बचाइयाँ देने आते हैं। इसी दिन बादशाह शाहजादे का नाम रखता है, और उसका ‘याहान’ नियत करता है, जो सदा राज्य के बड़े-से-बड़े अनरख की तनज़ाह से अधिक होता है। इसके सिवा शाहजादे के नाम पर ज़मीन के बड़े-बड़े टुकड़े नियत किये जाते हैं, और साज के बाद इन ज़मीन की पैदावार से जो कुछ आमदनी हो, प्रजा में इनके नाम पर अन्नग जमा की जाती है। और जब इनकी शादी हो जाती है और इसे रहने की अलग मकाम दिया जाता है, तो वह रक्का हुमे दे दिया जाता है। इन शाहजादों में किसी की तनज़ाह २० हजार से ज्यादा नहीं होती, और यह रकम भी बहुधा सब से बड़े पुत्र को दी जाती है। आज कल शाहजादों की तनज़ाह छोटी रह गई है। परन्तु इसकी अपनी आमदनी दो करोड़ रुपया से ज्यादा है। इसके महलों में १००० के खरीद स्त्रियाँ हैं, और उसके दरबार की शान



विशेषतः बादशाह के दरबार पैसी है। अब यह शाहजादे एक बार शाही राज ने बादर या खान हैं तो फिर गुप्त रीति से हिन्दू राजाओं और मुसलमान ग़मरानों को इनाम इकराम और वेतन बढ़ाने के साक्ष्य भावि देकर उन्हें अपना मित्र बनाना शुरू कर देने हैं। यह भी इनमें सहमत हो जाने है और अब यह शाहजादा बादशाह हो जाने, तो यह बड़ी समझता है कि यह अभी हमारे पक्ष में है। अब किसी शाहजादे के यहाँ लड़कियाँ पैदा हो, तो बादशाह जगका नाम रखता है, और बड़ी उमर का वेतन भी नियत करता है जो वो-मीन मौ रउये शोशाना तक पहुँचता है। बच्चे का बाप भी आमदनी के अनुसार उमर का वेतन नियत कर देता है—जब तक कि वह विवाह योग्य अथवा को न पहुँच जावे, और जब कि उने विरोधता: तबक-भटक करती पड़ती है। बादशाहजादे और उनके पुत्र 'शाहजादे' कहाते हैं, और उन्हें मुलतान की पदवी दी जाती है। बादशाह को जो महारें भेंट की जाती है, वह उन्हें माजिक की हैनियत से स्वीकार करता है। अर्थात् यह समझना है कि भेंट देनेवाला अपनी बाधीमता प्रकट करने के लिये पर यह भेंट दे रहा है, और इसे लेना बादशाह का अधिकार है। बाहर को भेंट देने पर भी यही प्रथा चलता है। क्योंकि उन्हें बसूल करते समय बादशाह प्रकट करता है कि मानो उसे स्वीकार करके यह कोई ख़ास हज़ार कर रहा हो, क्योंकि वह अपने आपको दुनियाँ में सब से बड़ा बादशाह समझता है। इसी प्रकार से अब वह किसी बादशाह को कुछ जिस तौ उसे भी अभीर या रेज़ीनेट करके सम्बोधन करता है। यदि कोई आदमी रयान या मौकरी प्राप्त करने की इच्छा से कोई भेंट उपस्थित करे और फिर उसे यह अगह न मिले, जैसा कि कभी-कभी होता है तो उसकी भट ध्वंस हो जाती है। मुझे खूब याद है कि एक फ़ारसीवी सौदागर मोशिये पेरियन के प्रति यही घटना हुई थी, जिसने इस आशा पर कि बादशाह इसके तमाम जवाहिरात ख़रीद लेगा—एक हजार रुपये कीमत का एक जमर्द भेंट किया था। पर जब बादशाह ने इनमें से एक भी न ख़रीदा, तो वह बहुत पड़ताया और मुँहलाऊँ से, जो इस समय शाही

त्रिखण्डप्राने का सऊसर था, आकर अनुभव निबन्ध करने लगा कि उसका कमरुद्दयह उमे थापित दिजा दे इसमें सम्येह नहीं कि मुलताफज्जी की सिफा-रिया से वह कमरुद्द उस थापित मिज गया, पर फिर भी उस पर उसका आधा मूल्य इर्ष होगया; और यह भी बादशाह की उस पर रिदेखी होने के कारण हुआ थी। भारतवर्ष में यह एक मधा-सी होगई है, कि वसीखे और रपया राख किये बिना कुछ नहीं मिज सकता। यहा तक कि जब शाहजादे भी कोई मतकय सिद्ध करना चाहें, तो बिना दयाया पत्र किये नहीं कर सकते। माल गिरह या सम्य स्थीहार के धवमरों पर और द्रासकर मौ-नोज के दिन—जब, जैसा कि मैं आगे बतकर बताऊंगा, बादशाह और शाहजादे अपने आपको छौखते हैं, तमाम धमीरों की छियाँ बेगमा और शाहजादियों को मुबारिकबादी देने के छिये जाती हैं। यह भी, ज़ाली हाथ नहीं—सदैव बहुमूल्य भेंट लेकर आती और हम स्थीहार की समाप्ति तक—जो बहुधा ६ से ८ दिन तक रहता है—दरयाही में रहती हैं। माघने और गानेवालियाँ बधाई गा चुकती हैं, तो बेगमात सोने चांदी की बनी हुई किरितियाँ प्रदान करती हैं। तमाम खाने पदरेदारों को सिर से पैर तक वस्त्र और जवाहरात दिये जाते हैं, तथा तमाम्राहों में सारंगी की जाती है। धमीरों की छियाँ भी जब जाती हैं, तो इन्हें बहुमूल्य वस्त्र और जवाहरात मिखते हैं, और जब वह बिदा होती हैं, तो उनके हाथ खिचड़ी से भरे होते हैं। खिचड़ी एक प्रकार का खाना है, जो भिन्न प्रकार की मेवा और फलों को मिजाकर तैयार किया जाता है। पर स्मरण रहे, इनकी खिचड़ी साधारण खिचड़ी नहीं होती, बरिन् सोने चांदी के सिको और बहुमूल्य जवाहरात तथा छोटे बड़े मोतियों की बनी हुई होती है। जिन दिन कोई शाहजादा या शाहजादी पैदा हो, तो बच्चे को एक पीखे रेशम का तागा पहनाकर उसमें गाँठ दे दी जाती है, जो उस दिन का चिन्ह है, जब वह पुष्पी पर जन्मा हो। अगले वर्ष उसी दिन एक और गाँठ दे दी जाती है। और हम वर्ष-गाँठ उपलक्ष्य में बीसे ही और अक्स-अरन और गाने बजाने का याज़ार गर्म रहता है। पैदा होने के थोड़ी देर बाद

बच्चे का नार काटा जाता है, और १० घावों से बाँधकर ३० दिन तक कुछ तावीजों के साथ उसके तिरहाने रख दिया जाता है। ३० दिन के बाद, यह तार और तावीजों की पैखी शाहजादे के गले में बाँध दो जाता है। मुसलमाना राज्य में यह रस्म बिना पाखन किये नहीं रह सकती।

“यहुषा और मज्जेब को ‘बीर-दस्तगीर’ कहकर पुकारते हैं। अर्थात् वह पूज्य पुरुष हाथ के दिखाने से दुःख और रंज दूर कर सकता है। जब यह छोटा शाहजादा, जिनका मैं जिक्र कर रहा हूँ, दो साल की आयु को प्राप्त होता है, तो इसे पिता की भाषा या—तातारी, जो तुर्क की पुरानी भाषा है, सिखा साईं जाता है। इसके बाद, इन्ने विद्वानों और फ़्यामासों के हवाले कर दिया जाता है। ये इसे समस्त शैली और सांसारिक विषयों सिखा देते हैं। इस बात की विशेष चेष्टा की जाती है, कि वह पूरी धादसे न साधने पाये। विषय के तौर पर कई नाटक भाषि इसे दिखाये जाते हैं, या मुकदमे पेश किये जाते हैं, जिनमें वह दोनों तरफ़ के अमान और जिहद आदि चुनकर फैसले करता है। इसी तरह इमको युद्ध में भी ले जाते हैं, जिनसे वह अनुमान किया जाता है कि यह यदि कभी अधिकार प्राप्त करे, तो उसे संसार का कुछ-न-कुछ अनुभव हो, और वह प्रत्येक मामले पर ठोड़े दिज और दिमाग न तौर कर सके।

“जब बादशाह शिकार खेलने को या मस्जिद में जाते हैं, तब इन छोटे शाहजादों को साथ ले जाते हैं। इस तरह ये महल के अन्दर सोलह साल की आयु तक रहते तथा शिक्षा पाते हैं। इसके बाद इनकी शादी की जाती है। ये आयु भर महल ही में रहते हैं, और इन्हें खानी पेग़मान मिलती है। शादी के बाद शाहजादों की अलग महल मदान किया जाता है। इनके पास बहुत-सी आमदनी और दास-दासियों की एक बड़ी संख्या होती है। परन्तु अच्छे-बच्चे विद्वान् और आसुम मदा इनके साथ रहते हैं, जो बादशाह को सब बातों की सूचना देते रहते हैं। जब यह शाहजादे अपने अपने महलों में रहते हैं, तो वे स्वयं उपरोक्त विधि से अपनी लाखगिरह और लौहार मनाने हैं, और उनके अफ़मरों को उन्हें उसी प्रकार भेंट आदि

देनी पड़ती है। सन् १६९६ ई० में, जब बादशाह आलमशाह औरंगाबाद में अपनी चर्प-गाँठ की प्रमत्तता मना रहा था, तो उसकी माता ने कई बहु-मूल्य भेंटें—जिनका मूल्य १० हजार के लगभग था—उसे दीं, परन्तु इस पर भी उसने अग्रपक्ष होकर शिकायत की, कि दूसरे वर्षों की अपेक्षा इस साल माता ने बहुत कम चीजें दिखाई हैं। इस तरह पर मरका को निवश और भेंट देनी पड़ी। महल की आम शाहजादियों ने भी इसी तरह अपनी शक्ति के अनुसार भेंट दी। इन अवसरों पर इन बातों का यहाँ तक ध्यान रखा जाता है कि प्रत्येक चादमी, चाहे वह बड़ा चादमी हो, चाहे मामूली हैसियत का, अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य कुछ न कुछ ले जाता है। उन लोगों का वष १० माघ को आरम्भ होता है, और उस दिन—जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ—एक भारी महोत्सव मनाया जाता है। महल के इर्द गिर्द और भीतर बाहर बहुमूल्य पर्चे लटकाने जाते हैं, जो शाहजहाँ की आज्ञा से तत्प्रत ताऊन के साथ तैयार किये गये थे। यह तत्प्रत बहुत मूल्यवान् है, परन्तु बनानेवाले के भाग्य में इस पर बैठना नहीं लिखा था। औरङ्गजेब ने ही पहिल पहिल अपने राजतिलक के दिन इसका प्रयोग किया था। यह एक ऊँची छत के कमरे में रक्खा हुआ है, और उससे के बिन बादशाह इस पर विराजता है। उस दिन का यह दस्तूर है कि हिन्दुस्तान के इससे प्रथम के बादशाहों ने जो तत्प्रत काम में लिये थे, वे इस तत्प्रत के चारों तरफ—झरा नाचे, रखे जाते हैं।

“उस दिन पुरानी रीति के अनुसार खादी जामाना के तमाम व्यक्ति मिश्र मिश्र रीति से लोले जाते हैं। प्रथम, हर प्रकार की धातुओं के साथ, जैसे सोना, चाँदी, ताँबा आदि। फिर विविध प्रकार के चमकों के साथ, जैसे हरवस्तु, कच्चायत्त, श्वमल आदि। तत्परचात् मिश्र प्रकार के चमकों के साथ, जैसे गहूँ, चावल, जौ आदि। इससे अभिप्राय यह होता है, कि पिछले साल और इस साल के यजन में यन्त्र मालूम हो जाय। वे तमाम वस्तुएँ शरीरों में दाख कर दी जाती हैं और प्रत्येक का यजन उस दिन की पुस्तक में दर्ज कर लिया जाता है। बादशाह को उस दिन दूध प्रायश्च होता है।

क्योंकि महर के प्रत्येक व्यक्ति और धर्म के अमीरों का कर्तव्य है कि उसे जेंट दें। उस दिन को नौरोज माने गया साज कहते हैं। बादशाह भी इस दिन अनेक रीतियाँ से अपना कृतार्थ प्रदान करता है। जैसे, उस दिन वह कई जगह नये हाकिम नियत करता है, कई जगह पुरानी बातों में परिवर्तन करता है, और बहुत से खोगा को हाथी, घोड़े, गवाहरात, सरोपा आदि देता है। जब वह सऊर में हो, तो वैसे शान से टरमव नहीं होता, बल्कि साये जाते हैं। क्योंकि वह दिल्ली के किले के बाहर नहीं लाये जाते।

"एक और त्योहार भी है, जो बड़ी शान से मनाया जाता है। इसे ईद कुरबानी यानी कुदानियों का त्योहार कहते हैं जो इनके रोजों की समाप्ति पर होता है, और उस दिन बादशाह नीचे बड़े ठाट बाट के साथ महर के बाहर निकलकर मस्जिद में जाता है। वहाँ पर क्राजा अजम सात मन्बर के ज्ञान के पास गया हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। उसके पीछे एक गुलाम नगी सतवार हाथ में लिये हुए खड़ा होता है। पछ्छी खूब हो खुश के पीछे क्राजी बड़ी ऊँची आवाज़ में तैमूरजग से आरम्भ करके सलाम गुलाम बादशाहों के नाम और उनकी प्रशंसा बड़ी सफाई के साथ और बड़ा चढ़ाकर सुनाता है। इस तरह जब वर्तमान बादशाह का मन्बर जाता है, तो वह उसकी प्रशंसा में बहुत-कुछ कहता है, जिसके साथ खुशामद की भारी मात्रा होती है। वह बादशाह को अनेक प्रकार के धार्मिक खिताब देता है, और अंत में उसके गुणों की ताराज के पुज पाँच देता है, तथा उसकी बहादुरी और ग्याय को सराहना करता है। इस क्रतवे के पढ़ते समय यह अनिवार्य होता है कि वह पूरे साथधान रह, और अपने हृदय की सभी बातों को बयान करे। क्योंकि क्राजी भी मूल या तालतरयानी करने पर मिर काटने के लिये जम्माव उसके पीछे खड़ा रहता है। जब वह बात खत्म हो चुकती है, तो क्राजी को खुद बादशाह मिर से पैर तक के वस्त्र प्रदान करता है। मस्जिद से जिस समय खलते हैं, तो सोईयों के नीचे कुरबानी के लिये एक कैंट लैवार खड़ा रहता है। बादशाह अपनी सवारी पर सवार होकर उसकी गर्दन पर नेजे स बार करता है। या यदि स्वयं

पेसा न करवा-चादे, तो अपने पुत्रों में किसी को पेसा करने की आज्ञा देता है। बहुतों का शाहजाहद्वारा दरबार में होना था, तो वह इमरूम या कुराना को—जैसा कि यह खोग हुने कहते आये हैं—किया करता था। इसके बाद गुलाम ऊँट को ज़मीन पर लिटाकर इसका गोश्त इस तरह बाँट देता है, मानों यह किसी महारामा का प्रसाद है।

इबाज़ासरी को—जिनका मैंने ऊपर नाम दिया है—नाज़िर यानी सुपरिन्टेंडेन्ट का खिताब मिला हुआ है। बादशाह, शाहजादे, शाहजादियाँ, बेगमात आदि पर विश्वास करते हैं, और हर एक बेगम, शाहजादी या महल की शन्य स्त्री का एक-एक नाज़िर होता है, जो इसकी आयदाद, जागार और आमदनी का हिसाब फ़िताब रखता है, अथवा इनका प्रबन्ध करता है। तमाम अकसर, नौकरो और गुलामों को अपने तमाम कामों और तमाम फ़र्के आदि का हिसाब इन इबाज़ासराओं को देना होता है। बहुतों नाज़िर को आधीनता में भी अन्य कई युद्ध और जयान व शानामरा होते हैं, जिनका महल में आगमन खगा रहता है। इनमें से कोई चिट्ठी पत्री आदि ले जाता है, और कहाँ पर इमर ऊपर के बहुत-से कामों की जिम्मेवारी होती है। कई एक का जातक पर यह काम होता है कि वह महल के अन्दर आनेवालों को देख लें, और इस बात की सावधानी रखें कि महल में शराब, भंग, अक्रोम या अन्य कोई बुरी चीज़ न जाने पाये, क्योंकि महल की तमाम स्त्रियाँ ऐसी ऐसी नशीली चीज़ों को बहुत चाहती हैं। न महल के अन्दर गाजर, मूली, बैंगन और ऐसी सब्ज़ी, जिनका नाम न खेना चाहिए, प्रवेश नहीं हो सकती। जब कोई स्त्री किसी को मिलने महल में आये—तो, यदि वह परिचित न हो, तो बिना इस बात का फ़याल किये कि इसकी पदमर्यादा क्या है उसकी सलाही ली जाती है। इनकी कहाँ-का कारण यह है कि इबाज़ासरी का इस बात का भय रहता है कि कोई मययुक्त-मर्द ज़नानी पोशाक में महल के भीतर न आ जाय। जब राज मिस्त्री या अन्य मज़दूर वहाँ काम करते हों, तो प्रत्येक घाँगे से गुज़रते हुए इनके घाम रजिस्टर में नोट किये जाते

हैं। साथ ही, इनके चेहरों के निशान आदि, जिनसे इनकी पहचान हो सके, खिस खिये जाते हैं। एक काग़ाज़ पर यह सब विवरण खिसकर घ्यामा सराओं के मुमुद कर दिये जाते हैं—इन्हें महज़ से इसी तरह बाहर ले जाते हैं, और ये इस बात की विशेष सावधानी रखते हैं कि वापस आने वाला व्यक्ति वही और उसी दुखिये का है। इस तमाम सावधानी का कारण यह भय है, कि कहीं कोई आदमी भीतर न रह जाय, या किसी को भीतर से बहुतकर न भेज दिया जाय। दरवाज़ों पर छियाँ भी निपत होती हैं, जो बहुधा कारमोर को होती हैं। उनका काम यह है कि जिस चीज़ की आवश्यकता हो, महज़ के भीतर ले जायें, और वहाँ न बाहर ले जायें। ये छियाँ किसी से पर्दा नहीं करतीं। महज़ के बड़े-बड़े दुर्वाज़े सूर्यास्त होने पर बन्द कर दिये जाते हैं, और बड़े फाटक पर सिपाहियों का एक मज़बूत दस्ता पहरे पर होता है। इनके सिवा उम पर मुहर भी लगा दी जाती है। सारी रात मशालें जलती रहती हैं। प्रत्येक के पास एक-एक पदियाज़ होता है, तथा एक छोटी भी मौजूद रहती है, जिस माज़िर को प्रत्येक घटना और सब आने-जानेवालों के सम्बन्ध में रिपोर्ट देनी पबती है। जब किसी इकीम को महज़ के भीतर ले जाने की आवश्यकता होती है, तो उसके तिर और शरीर को कमर तक ढक दिया जाता है, और इस दशा में उसे अवाधासरा अन्दर ले जाते हैं, तथा इसी प्रकार बाहर निकाल जाते हैं। अन्य अमीर भी अपनी स्त्रियों पर इसी प्रकार कड़ाई करते हैं, जैसाकि बादशाह। इसका कारण यह है कि, इस मामले में मुमकमान जोग बहुत ही अनुदार होते हैं, और उनका स्वभाव इसका शङ्काशील होता है, कि अपनी स्त्रियों को ये किसी के सामने जाने की आज्ञा नहीं देते। यही नहीं, हालत यहाँ तक पहुँची हुई है कि बहुत-सों को अपने भाइयों तक पर विरवास नहीं। इन तरह स्त्रियाँ कभी निगरानी में बन्द रहती हैं, और कदी पाय न्दियों में दिन काटती हैं। न इन्हें रखाबीनता है, न कोई काम। हमलिये तमाम दिन इन्हें विवाय ग़ज़ार-पटार के और कोई काम नहीं। इनके मन की भावनायें उल्लेखा से परिपूर्ण होती। इस बात का एक बार स्वयं इन

स्त्रियों में से एक ने मेरे सामने इज़्ज़ार किया था। यह रानी आसफ़ज़ी बज़ीर की पानी थी। इसका नाम नवजबाई था। इसने मुझे बताया, कि 'मेरे ज़्यादातर सदा यह सोचने के लगे रहते हैं, कि कोई-न कोई ऐसा ज़रिया हो, जिससे मैं अपने पति को प्रमत्त कर सकूँ, और यह दूसरी स्त्रियों के निष्काम फर्कें।' इससे यह नतीजा निकलता है, कि जब सब के विचारों की धारा केवल एक ही ओर है। उसके सिवाय कोई और विचार उन्हें जाता ही नहीं। अश्वे-अश्वे शोरसे क़ायम खाने और अश्वे-से अश्वे कपड़े पहनने तथा जवाहरात और मोतियों से सजी रहने का उन्हें बड़ा चाव है। शरीर को सदा हथ और सुगन्ध से तर रखने की उन्हें इच्छा होती है। हाँ, इस बात का इन्हें धेराक आज़्ञा होती है कि स्वर्ग तमारे और नाश देसों, इश्रिया बड़ा भियाँ और क्रिसे सुने, फूलों की सेखों पर आराम करें, बातों के धूमें, बढ़ते हुए पानी में किलोख करें, राग रग का आनन्द लें, आदि आदि। कोई-कोई ऐसी है, जो केवल इसलिये समय-समय पर बीमारी का पहाना करती है, कि हम बहाने हकीम देखने आयेगा, जो बात चीत करने और बच्चा लुभाने का मौक़ा हाथ आयगा। हकीम आकर पर्दे में हाथ देखता है, तो यह उसे पकड़कर घूम खेती है, और धीरे-से दाँतों में दबा खेती है। बरिद कई-एक तो उसे अपनी छाती पर रक्क खेती है। ऐसी घटनाएँ मेरे साथ कई बार हुई हैं। परन्तु मैंने ऐसा प्रकट किया, मानो कुछ हुआ ही नहीं। अन्यथा, इतने गिर्द की स्त्रियाँ और ज़्यादातरा असल मामले को भाँपकर सादेह में पड़ जाते। ये स्त्रियाँ हकीमों से बहुधा उत्तम व्यवहार करती हैं, और जब भी इनके साथ बात चीत अथवा अन्य विषयों में बड़ी बुद्धिमानी से फर आते हैं। कारण कि इनकी भाषा अच्छी हुई और संयत होती है। ये दरबार के उमरावों को दवाइयाँ देने में बड़ी उदारता दिखाती हैं, और उनके लिये—जिनकी ये इज़्ज़त करती हैं—तराफ़ी और ज़ास मौक़रियाँ प्राप्त करने में बुद्धिमान होती हैं। इनके दोहरे बहुधा घोड़े, सरापा, शराँ तथा अन्य चीज़ें होती हैं।

शायद—ही इनकी कोई ऐसी सेवा की जाती होगी, या हमसे कोई



अन्तर्गत किया जाता होगा जिसका एक एक या दूसरी तरह से बदला न चुका देती हों। हाँ, इतना अन्तर अन्तर होता है, कि प्रत्येक भाग्यी को अपनी अपनी दृष्टिगत के अनुसार ही सब कुछ मिलता है,—या, यह कि जितना ये इस महिमाओं के दिल पर अपना प्रभाव डाल सकें। मैं देखता हूँ, कि श्रीरंगराज की लड़ाई ने मराठ सुविजयाराजों और उनके पिता के साथ भित्त भित्त व्यवहार किये थे। इस मराठ को बादशाह ने फर्ग्यूसन का दायित्व सौंपा था, और वहने म प्रथम यह इस शाहजादी से विदा होने लगा; क्योंकि इसका विवाह इसके किसी सम्बन्धी से ही हुआ था। शाहजादी ने अन्तर्गत समय इसे एक पान की विविधा और एक तोते का पीरदान प्रदाय किया था, जो आरों शत्रु जीतती अन्तर्गत से लड़ा था। इस लड़ाई के एक साथ यह कुछ सरकारी कार्यों से बादशाह ने अपने पुत्र कामराज को बगैर आतङ्कता की आर्चिता में उसी ओरदे पर नियुक्त करके भेजा, और जब बगैर इस शाहजादी से मिलने आया, तो उसने खड़े वह एक पान की विविधा प्रदान की—जो आरों की थी। इस पर आतङ्कता म इतने कम मूल्य का ओरदे देखकर शिकायत करते हुए कहा —“कम-से कम मुझे अपने प्यारे पुत्र से अधिक नहीं, तो उनके बराबर तो निजना चाहिये; क्योंकि मैं उसका पिता हूँ, और उसने ऊँचा पद रक्खा है, तथा साम्राज्य का प्रधान-मन्त्री हूँ।”

शाहजादी—“परन्तु उनमें और आपमें एक अन्तर भी है। वह यह कि आपका पुत्र हमारा सम्बन्धी है, परन्तु आप केवल नौकर हैं।” यह सुनकर बेचारा युवा कुछ न बोले सच, और कोहिल करके खड़ा बना। —क्योंकि सभी शाही व्यक्तियों की उसी तरह अभिवादन करना पड़ता है, चाहे उनका बादशाह से कैसा ही निकट का रिश्ता क्यों न हो।

इन दिनों से विदा माँगने की विधि यह नहीं, जो आप में स बहुतों का रिश्ता होगया है; क्योंकि उन्हें कोई देख तो पाता नहीं, इसलिये मैं यहाँ उसका भी कुछ वर्णन किये देता हूँ। जब किसी आदमी को इनमें, विदा होना हो, तो वह पहले सड़क के दरवाजे पर जाकर अन्तर्गतों से

कहता है कि मैं हम मलजम से आया हूँ, और अमुक व्यक्ति को मेरे आने की सूचना दे दो। इलाक़ासरा यह सन्देश भीतर से जाकर उसका जवाब के आते हैं। जैसाकि मैंने ऊपर कहा है, इन छियों में से कोई बाहर नहीं निकलती, सिवाय उस दरा के, जबकि कोई ब्रात कारण हो। किन्तु उन समय भी वह पर्व में डकी हुई, पावकियों में मगार होती हैं, जिनमें छोटी छोटी खिचकियों में भोने की लाखियाँ होती हैं, और जिनके भीतर से ये वेश 'सकती हैं। अभिप्राय यह है कि कोई आदमी इन महिलाओं के निकट नहीं पहुँच सकता, सिवाय इनके पतियों के, या इन हकीमों के, जो इसकी गारंटी दे सकते हैं। आमीर उमरा छोड़े से उतरकर कोर्निश बना जाते हैं। इसमें जिन व्यक्तियों से वे ज़्यादा प्रीति करती हैं, उन्हें निकट आने की आज़ा 'देती हैं, और अन्तिम सख़ाम के तौर पर अपनी सवारी से ही बजाजासरा के हाथ पान भेज देती हैं, जिने लेकर आमीर एक और कोर्निश बनाकर भज देते हैं। यह प्रतिष्ठा कई अवसरों पर मुझे भी प्राप्त हुई है। एक बार शाहजाह बेगम आमी शाहजाहम की आता ने मुझे अपनी प्रमदता और शाहजादे के साथ रहने के कारण दरबार में आने के समय मेरी सेवाओं के प्रति ऐसा ही किया था। यह बेगम मेरे साथ बहुत प्रेम करती थी क्योंकि मैंने कई बार इनका इलाज किया था, और इसकी प्रशंसा खोजी थी। रोगी रहने के कारण बहुधा मैंने मेरी सेवाओं की आवश्यकता रखी थी, और चूँकि मैं ही इसके लिये सुझाव लखवीज किया करता था, इसलिये वह कोई कभी उन्दा खीज बहुधा मुझे भेज दिया करती थी, जैसाकि ऐसी मदि छाओं का, उन लोगों के साथ, जिनकी ये प्रतिष्ठा करती हो— करने का दस्तूर है। जब मुझे इनकी प्रशंसा खोजभी पड़ती थी, तब वह अपने दर को परदे से बाहर निकाल देती थीं, जो रोगों के निकट एक दो मगुल चौकी 'आगह के सिवाय सब का-सब टका दीता था। उस इलाज के लिये मुझे ५००) और सरोवा मिलता था। बाकिपरा साज में दो टका इनकी प्रशंसा खोजभी पड़ती थी। यह भी स्मरण रखना चाहिये कि प्रथम इसके कि कोई जिरगा इन शाहजादों के बसके, उते मुदत तक अपनी योग्यता भादि

यस प्रमाण देना पड़ता था, क्योंकि य खोग इन मामलों में राखी और अनुपस्थित के होते हैं। हर महीने देगमें और शाहजादियाँ, इसी तरह से, जैसाकि मैं ऊपर लिख चुका हूँ, क्रय सुखवाती हैं। यही विधि इस समय पाम में जाई जाती है, जब उन्हें पाँच से छून निकलवाना हो—या, किसी ज़ख्म या फोड़े की मरहम पट्टी आवि कराणी हो। सिवाय घायल स्थान या उस रग के, जिससे छून निवाटना हो, बाक़ी शरीर का कोई भाग नगा नहीं किया जाता। जब मैं शाहजादम की ज़ियों और बेटियों की क्रय फोड़ने को आया करता था, तो मुझे प्रति रोधी २००) और एक सरोपा मिलता था। परन्तु यदि स्वयं शाहजादे का, जो मेरा स्वामी था, छून निकालना होता, तो बादशाह की आज्ञा के बिना ऐसा नहीं किया जा सकता, और तब मुझे ४००) रुपये, एक सरोपा और एक घोड़ा मिलता था। जब मैं और पाँच समाप्त कर चुकता, तो मुझे निवाले हुए रक्त की मात्रा और शाहजादे की इस समय की वृत्ति की रिपोर्ट बादशाह को देनी होती थी, और उा सवालों का, जो वह पूछना चाहें—जवाब देना होता था। इसके बाद सरोपा प्रदान करके मुझे विश्र कर दिया जाता था। शाहजादम के गुर्जों की क्रय सुखवाने के लिये मुझे २००) और एक घोड़ा, फ्री व्यक्ति प्रदान किया जाता था।

अर्नियर ने औरज़ज़ेय के दरबारियों और सरदारों आवि का वर्णन इस भाँति किया है:—

‘बादशाह के दरबार में उपस्थित रहनेवाले अमीरों के अतिरिक्त प्रांतीय तथा सैनिक अमीर भी होते हैं, जो भिन्न भिन्न स्थानों में रहते हैं। उनकी संख्या कितनी है यह मैं ठीक नहीं कह सकता। बादशाह के दरबार में उपस्थित रहनेवाले अमीरों की संख्या २५ से ३० तक है, और जैसाकि पहले लिखा था चुका है, घोड़ों की संख्या के अनुसार उनका वेतन है, जो एक हजार से बारह हजार रुपये तक होता है।

ये अमीर राज्य के स्वयं हैं। इनको राजधानी अथवा दूसरे नगरों की सेना में बढ़े-बढ़े उच्च पद और अखण्ड माननीय छिताव दिये जाते हैं।

इसमें राज दरबार की शान बनी रहती है। जो राजधामी में रहते हैं, वे बहुत उत्तम वस्त्र पहने बिना कभी घर से बाहर नहीं निकलते, और कभी हाथी घोड़े पर और कभी पालकी में सवार होते हैं। इनके साथ में सवारों के अतिरिक्त वैद्य ज़िम्मेदार व्यक्ति भी होते हैं, जो सवारी के आगे आगे दोनों तरफ़ वैद्य चबूते हैं, और केवल रास्ते में से छोड़ों को हटाते और राहें बनाते हैं। यद्यपि कोई-कोई तो पीरदान, खज की सुराही, हुक्का, और कभी कभी क्रिस्ते-कहानी की कोई पुस्तक भण्डा खोजकर ही साथ-साथ रहते हैं।

प्रत्येक अमीर के लिये यह आवश्यक है कि प्रति दिन प्रातः काल ११ बजे, जब बादशाह दरबार में बैठता है, और फिर संध्या के समय ६ बजे, सलाह करने के लिये उपस्थित हों, और प्रत्येक को अपनी अपनी घाटी पर दुग में उपस्थित होकर सलाह में एक दिन पहरा देना पड़ता है। उस समय ये लोग विज्ञान के वस्त्र और क्रांतीय अपने साथ ले जाते हैं, परन्तु भोजन इन्हें शाही भोजनालय से ही मिलता है, जिसको छेते समय एक विशेष प्रकार की प्रथा के अनुसार कार्य किया जाता है। अर्थात् लड़े होकर और बादशाह के तथा बादशाह के महल की ओर मुँह करके अमीर तीन बार झुककर सलाह करते हैं। फिर अपना हाथ प्रथम भूमि तक छेजाकर फिर मस्तक तक उठाता है।

जब कभी बादशाह पालकी, हाथी या सव्य पर सवार होकर निकलता है, तो बीमार या बुद्ध भण्डा उन आदमियों को छोड़कर जो किसी विशेष कारण से मुक्त होते हैं, सब अमीरों को उसके साथ अवश्य ही रहना पड़ता है। हाँ, जब वह नगर के निकट शिकार खेलने, या बाग में या किसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये जाता है, तो केवल कभी-कभी वही अमीर उसके साथ जाते हैं, जिसकी उस दिन खीची होती है। नियम यह है कि बादशाह चाहे शिकार में हों, चाहे सेना लेकर किसी जगह में जायें, अथवा एक नगर से दूसरे नगर को जाते हों, कुछ रैपर आदि उसके साथ में और अमीरों को—चाहे किसी भी

हो, वहाँ

हो, या गर्मी के मारे मर चुका हो,—घोड़ों पर चढ़कर बिना किसी प्रकार की छाया के साथ-साथ रहना होता है ।

मजदूरदार एक प्रकार के सवार हैं, जो मजसब या वेतन पाते हैं । उनका वेतन मासिक और उनकी प्रतिष्ठा के योग्य होता है । यद्यपि वह अमीरों के वेतन व समान नहीं है—परन्तु साधारण सवारों से बहुत अधिक है । इसी कारण छोटी श्रेणी के अमीरों में इसकी गणना की जाती है । बादशाह के अतिरिक्त वे किसी के आधीन नहीं हैं, और जो काम अमीरों से लिया जाता है—यहाँ इनसे भी लिया जाता है । यदि इनका पाम भी कुछ सवार हों, जैसा कि पहले नियम था, तो यह भी अमीरों के बराबर हो जाये । परन्तु आज कुछ इनके पास केवल दो-चार घोड़े रहते हैं, जिस पर बादशाही चिह्न होते रहते हैं । इनका वेतन कभी-कभी १२०-२० मासिक तक होता है । परन्तु ७००) २० मासिक से अधिक नहीं होता ।

रोज़ीनेदार भी एक प्रकार के सवार ही हैं जिनका वेतन प्रति दिन मिल जाता है, जैसा कि रथ उनका काम से प्रगट है । परन्तु इसकी आमदनी बहुत है । कभी-कभी तो ये लोग मजसबदारों व भी अधिक पा सकते हैं । तथापि विशेष प्रकार का वेतन होने के कारण अधिक वेतन से इनकी प्रतिष्ठा नहीं है, और मजसबदारों की भाँति ये लोग ऐसे कालीन और प्रश मोल खेने को विवश नहीं हैं जो महलों में वास में आने के बाद मजसबदारों को खेने पड़ते हैं ; तथा प्रायः दिनके लिये मजसबदारों को बहुत मूल्य देना पड़ता है । इन लोगों की संख्या बहुत अधिक है, और छोटे-छोटे कार्य इन लोगों के सुपुर्ब हैं । इनमें बहुत-से मुस्लिम और नायब-मुस्लिम हैं, और बहुत से इन काम पर नियुक्त हैं कि उन आशा पत्रों पर, जो रक्का देने के लिये लिखे जाते हैं—सरकारी मुहरे लगायें । वहाँ में कुछ ऐम हैं, जो इन आशा-पत्रों का कार्य शीघ्र समाप्त कर देने के बदले धूम लिया करते हैं ।

अब साधारण सवारों का वृत्तान्त सुनिये । ये उन अमीरों के आधीन होते हैं—जिनका हाथ ऊपर लिखा जा चुका है । साधारण सवार दो प्रकार

के होते हैं। एक तो दो घोड़ेवाले, जिसको बादशाही सेवा के लिये तैयार रखना अमीरों के लिये आवश्यक है, और जिनके घोड़ों की रातों पर उन अमीरों के चिह्न खगे रहते हैं। दूसरे एक घोड़ेवाले होते हैं, और दो घोड़ेवालों का वेतन और सम्मान एक घोड़ेवाले की अपेक्षा अधिक है। यद्यपि सरकार से एक घोड़ेवाले नवार के निमित्त १५) ६० मासिक के हिस्सा से मिलता है, परन्तु सवारों को कम या अधिक देना बहुत कुछ उनके सवारों, अर्थात् अमीरों की उदारता पर निर्भर रहता है।

पैदाश तिपाहियों का वेतन सब प्रकार के उपर लिखे कर्मचारियों से कम है। इनकी ओरों के लोग बन्दूकची हैं। इन्हें आराम और शान्ति के समय भी बहुत-से पखेड़ों में रहना पड़ता है। अर्थात् बन्दूक खजाते समय जब ये घुटने टेककर बैठते हैं, और अपनी बन्दूक को लपकी की तिपाहियों पर रखकर, जो बन्दूक के साथ लटकती है—खजाते हैं तो उनकी यह बैठक देखने ही योग्य होती है और इतनी सामधानी काने पर भी यह डर लगता रहता है, कि कहीं बन्दूक दागनेवाले की खगरी दादरी और धाँसों न जल जाय, अथवा किसी भूल प्रेत के विघ्न से बन्दूक फट न जाय।

पैदाश सैनिकों में किसी का वेतन २०) ६० मासिक है, किसी का १५) और किसी का १०) ६०। परन्तु गोलन्दार्जों का वेतन बहुत है,—विशेषकर विदेशी गोलन्दार्जों का, अर्थात्—पुर्तगीजों, डचों, फ्रेंचों, जर्मनों और फ्रान्सीसियों का, जो गोला और डचों तथा फ्रेंचों की कम्पनी के कार्यालयों से भाग घाते हैं। प्रारम्भ में जब मुगल लोग तोप खजाना अपनी तरह नहीं जानते थे, इन विदेशी गोलन्दार्जों को अधिक वेतन मिलता था, और उनमें से अब भी कुछ लोग हैं, जो २००) ६० मासिक तक पाते हैं। परन्तु अब बादशाह इन लोगों को बहुत कम भौकर रखता है, और २०) ६० से अधिक वेतन नहीं देता।

तोपखाना दो प्रकार का है—एक भारी, दूसरा हल्का। भारी तोप खाने के विषय में मुझे स्मरण है कि जब बादशाह बीमारी के बाद सेना सहित काहीर के गया था—जिसको भारतवर्ष में द्वितीय

स्वयं कहते हैं, तो उस यात्रा में हमेशाओं अर्थात् ऊँटों पर एक प्रकार की बहुत छोटी-छोटी तोपें रखनेवालों के अतिरिक्त, जो दो-तीन-सी तोपें ऊँटों पर थे, अन्तर भारी तोपें, जिनमें प्रायः त्रिम्बी तोपें थीं (ये छोटी तोपें दो-तीन यन्त्रों के बराबर थीं) साम थीं।

भारी तोपघाना बादशाह के साथ बड़ा रहता था, क्योंकि आखेट करन या घासी के निवृत्त रहने में अभिप्राय तो बादशाह सीधे मार्ग से चलन होकर चलता था, और ये तोपें ऐसी भारी थीं कि दुर्गम मार्गों, मार्गों या दुर्गों पर से, जो शाही सेना के उत्तरे के जिये बसाये गये थे—जा नहीं सकती थी। परन्तु इसका तोपघाना सदैव बादशाह के साथ रहता था। आखेट के स्थानों में, जो बादशाह के जिये बीच किये हुये रहते हैं, और जानवरों को रोक रखन के जिये, जिसकी जाके-बन्दी आखेट के समय का जानी है, जब बादशाह यन्त्र से अथवा और किसी प्रकार से आखेट करना चाहता है, तो यह तोपघाना जितना शीघ्र सम्भव होता है, आगे क पड़ाव—जहाँ बादशाह और बड़े बड़े अमीरों के प्रेमे पहुँचे से लगे होते हैं—जा रहता है। बादशाह प्रेमों के सामने इन तोपों की छाइन छाती दो जाती है, और जब बादशाह पड़ाव में पहुँचता है, तो सब की सूचना क जिय मन्त्राली की जाती से।

जो सेना प्रान्तों में नियत रहती है, उमकी, और बादशाह के साथ रहनेवाली सेना की व्यवस्था में इसका अतिरिक्त और कुछ अन्तर नहीं है। प्रान्तों में रहनेवाले सैनिकों की संख्या अधिक है। प्रत्येक प्रान्त में घसीर सम्भवदाय, आधारय प्यादे और तोपघाने उपस्थित रहते हैं। एक दक्षिण प्रान्त में २५ ३० सहस्र सवार रहते हैं, जो गोलकुण्डा के शक्ति सम्पन्न बादशाह क घमकाने, और बादशाह-बीजापुर तथा अब राजाओं से लड़ने के जिये आदरयक हैं, जो आपके बधाव के विचारसे अपनी सेना लेकर बीजापुर के बादशाह से मिल जाते हैं। द्रावुज प्रान्त में जो सेना है, और जिसका ईराज, बिलोविरतान, अक़शानिस्तान तथा अम्बान्य पहाड़ी देशों के विरोध और उपद्रवों की रोक-थाम करने के जिये रहना प्रयोजनीय है, यह बाराह

अथवा पन्द्रह सहस्र से कम नहीं हो सकती। कारमीर में चार सहस्र से अधिक सैनिक, और यन्त्रालय में जहाँ सर्वत्र खड़ाई भिड़ाई रहा ही करती है, बहुत अधिक सेना रहती है। कोई ग्रन्थ ऐसा नहीं है, जहाँ उसकी लम्बाई, चौड़ाई और अवस्था के विचार से कम या अधिक सेना रखना आवश्यक न हो। इन्हींमें समय समय की संख्या इसकी अधिक है, जिस पर सहसा विरवास नहीं हो सकता। पैदल सेना को, जिसकी संख्या कम है अलग रखकर और घोड़ों की उस संख्या को, जो माम-मात्र के लिये है, और जिसको मुनकर अमजान आदमी घोसा जा सकता है, छोड़कर, मैं तथा दूसरे जायकार लोग अनुमान करते हैं कि वे सवार, जो बादशाह के साथ रहते हैं, राजपूतों और पठानों-समेत पैंतीस या चाबीस हजार होंगे, जो प्रान्तीय सैनिकों के साथ मिलाकर दो लाख से अधिक होजाते हैं।

इस बात का वणन भी आवश्यक है कि अमीरों से लेकर सिपायियों तक का वेतन के दर-दूतरे महीने चाँट दिया जाना प्रयोजनीय होता है, क्योंकि वेतन के लिये, जो कि बादशाही खजाने से मिलता है कोई और डार उनके पेट पालने का नहीं है।

आगरे और देहली के अस्तबलों में दो या तीन सहस्र तो केवल अर्धे घोड़े ही हैं, जो आवश्यकता के लिये सदा तैयार रहते हैं, और आठ या बीसौ हाथी तथा बहुत से टट्टू और खर और भ्रूपुर भी होते हैं जो इन असंख्य और बड़े खम्बे चौड़े खेमों और उनके साथ छोटे खेमों, तथा घेगमों और महल की अम्पाम्ब लिफों, और सामान तथा बायची-खाने के अम्बाय और गंगा जल आदि बहुत-सी वस्तुओं के उठाने के लिये होते हैं, जिनका यात्रा के समय बादशाह के साथ रहना आवश्यक रहता है।

औरंगजेब के समय की दिल्ली, जिहा और तत्कालीन नागरिकता का वणन भी 'वर्नियर' इस भाँति करता है:—

"यह नगर और जिले, दोनों को घेरे हुए है, तथा उसकी खम्बाई इतनी है, जिसकी लोग समझते हैं; क्योंकि



में भी उसके चारों ओर फिर घाटा है। मेरे छोड़े की आज एक प्राम्सीमी 'बीग' या तीन-मील प्रति घण्टे से अधिक न थी। मैं इसमें राजधानी के आस पास की उन वस्तियों को नहीं मिलाता, जो बहुत दूर तक काहोरी बरयाजे की ओर खड़ी गई हैं, और पुरानी देहली के उस बचे हुए भाग को, और उन तीन चार वस्तियों को भी नहीं मिलाता हूँ जो राह के पाम हैं। क्योंकि इन्हें भी उसी में मिलाने से शहर की सगोई इतनी बढ़ जाती है कि यदि शहर के बीचोबीच एक सीधी रेखा खींची जाय, तो वह साढ़े चार मील से भी अधिक होगी। यद्यपि याता आदि के बीच में आबाजान के कारण मैं नहीं कह सकता कि नगर का ठीक व्यास कितना है,—पर फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि यह कुछ छोटा मोटा नगर है।

जिल्ला जिसमें शाहा महमूद और भकान हैं, जिनका पण्ड में जाने चलकर कहेंगा अर्द्ध-गोलाकार-सा है। इसके सामने घमना नदी बहती है। जिल्ले की दीवार और घमना नदी के बीच में एक बड़ा मैदान है, जिसमें हाथिया की लड़ाई दिखाई जाती है, अमीर सरदारों और हिन्दू राजाओं की प्रौढ बादशाह के देखने के लिये खड़ी की जाती है, जिन्हें बादशाह महल के झरोखों से देखता है।

जिल्ले की दीवार अपने पुराने ढग के गोख चुर्चों के के कारण शहर पनाह से मिलती जुलती है। यह छाया पाथर की ईंटों से बनी हुई है, जो सगमरमर से मिलता-जुलता है। इसीलिये शहरपनाह की अपेक्षा यह अधिक सुन्दर है। साथ-ही यह शहरपनाह से ऊँची और सुन्दर भी है। इस पर छोटा सौंफ खड़ी हुई है, जिनका मुँह नगर की ओर है। नदी की ओर को छोड़कर जिल्ले की सब ओर गहरी और पक्की खाई बनी हुई है। इसके बाँध मजबूत पत्थर के बने हुए हैं। यह खाई हमेशा पाना से भरी रहती है, और इसमें मछलियाँ बहुत अधिकता से हैं। यद्यपि यह इमारत देखने में बहुत बड़ी मालूम होती है, पर वास्तव में यह बड़ नहीं है। मेरी समझ में एक साधारण घोषणाणा इमे गिरा सकता है। इस खाई के निकट एक बहुत बड़ा खाता है, जिसमें बहुत सुन्दर और अच्छे फूल होते हैं। जिल्ले

की खाल रंग की घोषार। सामने होने के कारण यह बात बहुत ही सुन्दर  
 मालूम होता है। इसके सामने शाही चौक है, जिसके एक ओर ज़िले का  
 दरवाज़ा है, और दूसरी ओर शहर के दो बड़े बाज़ार व्यापक समाप्त होते हैं।  
 जो नौकर प्रति सप्ताह यहाँ चौकी देने आते हैं, उनके छोटे इसी मैदान में  
 खगाये जाते हैं; क्योंकि यह लोग, जो एक प्रकार के छोटे बादशाह होते हैं, ज़िले  
 में रहना स्वीकार नहीं करते, और इसीलिये ज़िले में उनका और मन्सबदारों  
 का पहरा होता है। इस जगह सयेरे, बादशाही घोड़े फिगये जाते हैं, और  
 वे उनके निकट ही एक बड़े घरतयल में रहते हैं। इसी स्थान पर फ़ौज का  
 मोरबाग़ मये सवारों के घोड़ों को देखता भाजता है, और तुर्कों या और  
 अन्ये महबूब घोड़ों की राग पर बादशाही तथा उस अमीर का निज़ान  
 खगवा देता है, जिसकी फ़ौज में वे नौकर हैं। इससे यह ज्ञात होता है, कि पेश  
 करने के समय मये सवार इन्हीं घोड़ों को लेकर पेश नहीं कर सकते। इसी स्थान  
 पर तरह-तरह की चीज़ों की बिक्री के लिये पेंड लगाती है। इसमें पेरिस  
 के 'पॉप' नि-योज़' की तरह भानमती का रा खेला दिवानेवाले हिन्दू तथा  
 मुसलमान नज़मी इकट्ठे होते हैं। ये गूरे ज्योतिषी, धूप में एक मैला  
 शालीन का टुकड़ा बिछाये बैठे रहते हैं। उनके सामने एक लकीरी किताब  
 खुली पड़ी रहती है, जिसमें ग्रहों के चित्र बने होते हैं, और सामने रमल  
 फेंकने का पोसा होता है। इसी प्रकार ये लोग राह चलतों को घोसा देते  
 और फुसलाते हैं। लोग उन्हें निहान् समझकर इससे प्ररन करते हैं। एक  
 पैसा लेकर ये लोग उस बेचारे को उसका भविष्य बतला देते हैं, और उसके  
 हाथ और मुँह को अच्छी तरह देख भाजकर उन्हें त्रिवात दिखाते हैं कि  
 वे वास्तव में कुछ दिखाव लगा रहे हैं। किसी काम के आरम्भ करने के  
 लिये समय पूछने पर, ये लोग मुहूर्त बतलाते हैं। नामसम सिपायों सिर  
 से पैर तक सफ़ेद चादर ओढ़कर, उनके निकट खड़ी रहती हैं। ये प्रायः घरनी  
 के सम-य में उनपर कुछ-कुछ पूछा करती हैं, और अपना सारा  
 सुना देती हैं; ठीक वैसे ही—वैसे फ़ाग़स में के  
 किये जाने के लिये अपने सारे दोष

मूर्खों को पूर्ण रूप से यह विरक्त होना है, कि ग्रहों के कक्षा को बदल देना इन्हीं ज्योतिषियों के हाथ में है। इनमें सब से विचित्र एक दोहाजा पुतली था—जो गोमा से भाग पाया था। वह भी ज्ञानविद्या के दृष्ट बड़े-ही शान्त भाव से बैठा रहता था। इसके पास बहुत-से लोग आया करते थे। यह व्यक्ति कुछ भी शिक्षा पढ़ा नहीं था। इसके पास ज्योतिष के ग्रन्थों के स्थान में केवल एक पुराना जहाजी दिग्दर्शक पत्र था कुतुबनुमा था, और ज्योतिष की पुस्तकों के स्थान में रोमन कैलेंड्रिक ईसाइयों की मगाना की दो पुरानी सचित्र पुस्तकें थीं। वह कहा करता था—“योरों में ग्रहों के चित्र ऐसे ही होते हैं। एक दिन एक पादरी फ्रांजर कुजी ने यह बात सुनकर उससे प्रश्न किया कि तू यह क्या कहता है। उसने निजजता से उत्तर दिया—“ऐसे मूर्खों का ज्योतिषी भी ऐसा ही होना चाहिये।”

यह हास्य उन शरीर ज्योतिषियों का है, जो बाज़ार में बैठे दिखाई देते हैं। घर जो ज्योतिषी ग्रामीरों के पास जाते हैं, वे बहुत ही विद्वान् समझे जाते हैं। यों ही ये लोग घनवान् बन जाते हैं। सारा एशिया इन् व्यर्थ के वहम में फँसा हुआ है। स्वयं बादशाह तथा और बड़े बड़े ग्रामीर इस धोखेवाला भविष्य वक्ताओं को जग्ये-बीड़े घेतन देते हैं, और बिना इनकी सलाह के साधारण काम भी आरम्भ नहीं करते। मानो यह नज़्मी भविष्य की सारी बातें जानते हैं। अत्येक काम के आरम्भ करने के लिये उत्तम समय नियत करते और कुत्ता के पछे दड़दड़-मड़दड़कर सब प्रश्नों का उत्तर दे देते हैं। दिन के समय यही लोग कारों पर बैठकर व्यापार और सराफे का अपना अपना काम करते हैं, और ग्राहकों को माछ दिखाते हैं। इस ग्राम्यों के पीछे असबाब आदि रखने के लिये कोठियाँ बनी हुई हैं, जिनमें रात के समय सारा असबाब रखा दिया जाता है। इनके उपर व्यापारियों के रहने के लिये मकान बने हुए हैं, जो बाज़ार में देखने पर बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं। ये मकान इलाका होते हैं, और इनमें गह या धूज बिखरुन नहीं जाती।

यद्यपि शहर के भिन्न भिन्न भागों में भी दुकानों के ऊपर इसी प्रकार के मकान होते हैं, पर ये इतने छोटे और नीचे होते हैं, कि बाज़ार से भली भाँति दिखाई नहीं देते। घनिक व्यापारी वृत्तों पर नहीं सोते। वरन् रात को काम कर चुकने पर अपने अपने मकानों को, जो शहर में होते हैं—चले जाते हैं।

इनके अतिरिक्त पाँच और बाज़ार हैं। यद्यपि उनकी बनावट आदि वैसी ही है, पर ये इतने सख्ते और सीधे नहीं हैं। और भी बहुत सारे छोटे छोटे बाज़ार हैं, जो एक दूसरे को काटते हुए चले जाते हैं। यद्यपि उनके सामने को इमारतें महाराज के दर को हैं, तथापि ये ऐसे लोगों के हाथ की बनी हुई होने के कारण, जिन्हें इमारत के सुसज्ज होने का कोई विचार नहीं था, इतनी सुन्दर, चौड़ी और सीधी नहीं हैं, जितने वह बाज़ार हैं, जिनका वर्णन मैंने अभी ऊपर किया है। शहर के गली-गुच्छों में मस्जिदों, हाकिमों और घनी व्यापारियों के मकान हैं। उनमें भी बहुधा अच्छे और सुन्दर हैं।

हैद या पत्थर के बने मकान बहुत ही कम हैं; कच्चे या घास कुप के घर अधिक हैं। इतना होने पर भी ये सुन्दर और हवादार हैं। बहुत-से मकानों में चौक और बाग होते हैं। इनमें सब प्रकार की सुख सामग्री वर्तमान रहती है। जो मकान घास-मूस के बने होते हैं, वह भी अच्छा सज्जेदी किये हुए होते हैं। इनमें साधारण चौकर, खिदमतगार और नानबाद आदि जो बादशाह के दरबार के साथ जाया करते हैं—रहते हैं। इन्हीं के कारण शहर में प्रायः आग लगती है। गत वर्ष सोन बार ऐसी आग लगी कि तेज़ हवा के कारण, जो वहाँ गर्मी के दिनों में चलती है, कोई १० हजार छप्पर जलकर ग्राह हो गये, और कुछ छेद, छोटे तथा परदेदार स्त्रियाँ भी इसमें जल मुनकर राख हो गईं। यह स्त्रियाँ कुछ ऐसी खजीली होती हैं, कि पुरुषों के सामने मुँह छिपाने के लिये और कुछ इनसे होता ही नहीं। इसी लिये, जो स्त्रियाँ आग लगने के कारण जल मरीं, उनमें इतना माहस नहीं था, कि भागकर बच सरयें। इन कच्चे और घास-मूस के मकानों के कारण ही मैं समझता हूँ, कि देखी कुछ देशों का समूह या पौजा की

जावनी है, पर भेद इतना है कि यहाँ कुछ घोषा सा सामान-आगम का भी है।

घमरों के मकान प्रायः नदी के किनारे और शहर के बाहर हैं। इस गरम देश में भी वही मकान चबड़ा समझा जाता है, जिसमें सब प्रकार का धाराम मिले, और चारों ओर से—विशेषतया उत्तर की दिशा से—सुखो हवा आता हो। यहाँ वही मकान अच्छे बड़े जाते हैं, जिनमें एक अच्छा दास, पेड़ और हौड़ा हो, और दाखान या दरवाजे में छोटे छोटे फ्रीम्बारे या सहजाने हों। इन सहजानों में बड़े बड़े पंखे लगे होते हैं। और गर्मी के दिनों में सन्ध्या को (दोपहर से चार या पाँच बजे तक हवा ऐसी गर्म होती है, कि साँस नहीं लिया जाता) यहाँ बहुत धाराम मिलता है, पर सहजानों की अपेक्षा खोग, गम ज्ञानों को अधिक पसन्द करने हैं। यह छोटे छोटे ग्रास घमरे होते हैं, जो एक प्रकार की सुशुद्ध आस की जहाँ से, बाग में हौड़ा के निकट इस अभिप्राय से बनाये जाते हैं, कि मौसम चमड़े की छोलचिपों में भर भरकर अच्छी तरह उन पर पानी छिड़क, और उन्हें तब बंद सके।

जिस मकान के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे दाखान हों, और वे किसी बाग के चन्दर बन हों,—तो बहुत अधिक पसन्द किये जाते हैं। वास्तव में काह बड़िया मकान ऐसा नहीं है, जिसमें घरवालों के सोने के लिये आँगन न हो। यहाँ या धाँधी के समय या रातरे, लव ठगनी हवा चलती हो—ओस पड़ने लगती है, तो पल्लव को खसकाकर अन्दर कर लेते हैं। यह ओस यद्यपि अधिक नहीं होती, तो भी बहुत से बैठ जाती है, तो कभी कभी हाथ-पाँव जैठ जाते हैं।

अच्छे घरों में बैठन के लिये जर्श के ऊपर रह या एक भारी और चार शंगुल मोटा गद्दा बिछा रहता है जिस पर गर्मी के दिनों में अच्छा कपड़ा (चाँदनी) और जाड़े के दिनों में रेशमी कालीन बिछाया जाता है। इस दीवानखाने में अच्छे स्थान पर दो छोटे चारे पड़े रहते हैं, जिन पर रेशम की इल्के काम की सुझनी—जिसमें सुनहरी और लालकी जरी की-

बारिषां होती हैं, पड़ी रहती हैं। इन पर सांखिक या और पतिष्ठित लोग, जो उनसे लिखने आते हैं, बैठते हैं। अत्येक गद्दे पर कमप्रभाव का एक तकिया पड़ा रहता है। इनके अतिरिक्त और लोगों के बिये वाखान में इधर उधर मछमछी और फूजदार रेशमी लाकपे पड़े रहते हैं। जमीन से वेद या दो गज ऊँचाई पर भाँति भाँति के सुन्दर साक बने होते हैं, जिनमें चीनी के यत्न और सुन्नदान रखे जाते हैं। दातान की छत पर येज बूटे बने होते हैं, और उन पर सुन्नमा कृपा हुआ होता है। पर मनुष्य या किमी और जीवित पदार्थ को तस्वीर डम पर नहीं होती, क्योंकि यह बात सुसखमानी घम में वर्णित है।

भारतवर्ष के एक अत्येक मकान का यह पूरा वर्णन है। दिछी में ऐसे बहुत-से मकान हैं। मैं समझता हूँ कि भारतवर्ष की राजधानी के मकान, यद्यपि योरोप के मकानों से उनकी समानता नहीं हो सकती, सुन्दरता में किसी प्रकार कम नहीं हैं। भारतवर्ष में योरोप के शहरों की सुन्दरता का कारण है, वे सबकी सबी शम्दार दुकानें, जिनका दिछी में अभाव है। यह शहर एक बड़े और जबरदस्त बादशाह के दरबार का स्थान है, जहाँ पर बहुमुख्य भीतों की अरझी दुकानों का होना एक आवश्यक बात है। पर, फिर भी यहाँ कोई ऐसा बाजार नहीं है—जैसा हमारे यहाँ 'मैण्डेलेन' है, और जिसकी समानता का बाजार कदापिन् एशिया भर में न होगा।

बहुमुख्य घरतुँ यहाँ प्रायः साकप्रातों में रखी रहती हैं, और इस्लाम की तरह भद्रकवार और बहुमुख्य अग्नयार्थों से दुकानें शायद ही कभी सजाई जाती हों। यदि किसी एक दुकान में परमीना, कमप्रभाव जरीदार मन्दोर्ज, और रेशमी कपड़े-आदि हैं, तो पास ही कोई पक्षीय दुकानों में चावल, दाल, घी, तेल और गेहूँ आदि अनेक प्रकार के अनाज—जो न केवल शाका हारि हिन्दुओं ही के खाद्य पदार्थ हैं, बल्कि शरीर सुखलमान और बहुत-से सिपाही भी यही खाते हैं—घोरियों में भरे हुए रखे रहते हैं। हाँ, एक बाजार ऐसा है, जिसमें केवल, सेवा विक्रता है। गर्मों के दिनों में इन दुकानों में ईरान, और ससरकम्प के मेरे बादाम, पिस्ता, किसमिरा, के

शक्रताखू और अनेक प्रकार के सूखे फल और चादों के दिनों में रहने की तरह में छपेटे हुए बड़िया लाले अंगूर, जो विदेशों से आते हैं, और नाशगती सया कई प्रकार के अच्छे सेब और सदे लो लाइनों पर बिकने हैं, होते हैं। ये मेरे मंहगे मिलने हैं। इनके मंहगेपन का अन्दाजा आर हमी से लग सकते हैं कि एक सर्वा चीने चार रुपये को मिलता है। इतना मंहगा होने पर भी यहाँ के लोग और मेरों की अपेक्षा हमे अधिक पसन्द करते हैं। घमीर लोग इसे बहुत अधिक खरीदते हैं। मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरे आता के यहाँ सबेरे भोजन के समय २०) २० क मेरे आते थे। गर्मी के दिनों में ऐसा खरबूजे बहुत सस्ते मिलते हैं। पर ये कुछ अधिक स्वादिष्ट नहीं होते। हाँ ये खरबूजे, जिसका बाज ईरान से मँगवाया और यहाँ पाया जाना है (प्रायः अमोर लोग ऐसा ही करते हैं) बहुत अच्छे होते हैं। इतना होने पर भी अच्छे और स्वादिष्ट खरबूजे यहाँ बहुत कम मिलते हैं, क्योंकि यहाँ की जमीन इनके अनुकूल नहीं है। गर्मी के दिनों में आम यहाँ बहुत सस्ते और अधिकता से मिलते हैं। पर देहली में जो आम पैदा होता है, वह न तो कुछ ऐसा अच्छा होता है और न सुरा। सब से अच्छा आम बंगाल, गोलकुण्डा और गोंदा से आता है जो वास्तव में बहुत अच्छा होता है और निराली बराबरी कोई मिठाई भी नहीं कर सकती। खरबूज यहाँ बारहों मास रहता है। पर जो खरबूज देहली में पैदा होता है, वह नाम और फीटा होता है। इसकी रसता भी अच्छी नहीं होती। पर अमीरों के यहाँ कभी-कभी बहुत ही स्वादिष्ट खरबूज देखने में आते हैं, जो हमक ज़िये बहुत घन रस करके ग़ादर से चीज मँगवाकर बड़ी सावधाना से पेक लगाते हैं।

ग़ादर में इजलाहियों की बूकनें अधिकता से हैं। पर मिठाई हममें अच्छी नहीं बनती। उन पर गर्ह पड़ी होती है, और मक्खियाँ भिनभिनाया करती हैं। नाशवाई भी बहुत हैं। पर यहाँ के सेंदूर हमारे यहाँ के सेंदूरों से बहुत ह। भिन्न और बड़े होते हैं। इसी कारण रोगी न अच्छी होती है, और न भली माँति सिक्की हुई। पर जो रोटी किन्ने में बिकती है, वह कुछ

मरती होती है। अमीर खोग तो अपने मकानों की पर रोटीयाँ बनवा लेते हैं। उनमें दूध, मक्खन और अण्डा खाता जाता है। इससे वह और भी स्वादिष्ट हो जाती हैं। यद्यपि वह बहुत फूलवानी है, पर स्वाद उसका जल्दी हर्द रोटी-सा होगा है। यह रोटी साधारण से छेकर बिजावती चराती की तरह होती है, पर पैरिस की 'गैजिन' (एक प्रकार की रोटी) की स्वादिष्ट नहीं होती। याज्ञार में बहुत तरह का कगार और कजिया विकता है, पर मुझे पिरवाप नहीं कि वह किसी अच्छे जानवर का मांस हो; क्योंकि मैं जानता हूँ कि कभी कभी यह मांस ऊँ, घोड़े या बीमार पशुओं का भा होता है, और इसीजिये जो चोत्रें अपने मकान पर न बनाई जाय, व कभी खां और व्यवहार में खाने के योग्य नहीं होतीं। दिल्ली की प्रत्येक गली में मांस विकता है। पर कभी बकरी के घोबे में भेड़ का भी मांस दे देते हैं। इसजिये इन सबों की अच्छी तरह देख भात्रकर लेना खाना चाहिये। यद्यपि बकरी का अन्य ऐसे पशुओं के मांस का स्वाद कुछ नहीं होता, पर वह कुछ गर्म होता है, तथा बासी करता और देर में पचता है। बकरी के बच्चे का मांस सब से अच्छा होता है। पर वह याज्ञार में नहीं मिलता। इससे जीवित बच्चा धरतीवना पड़ता है। बड़ी बढिनता तो यहाँ यह है कि सुबह का मांस शाम तक नहीं ठहरता। दूसरी यह कि जानवर दुबले मिलते हैं, जिससे उनके मांस का स्वाद बिगड़ जाता है। याज्ञार में क्रमाह्वों की दुकाना पर भी दुबली बकरियों का मांस मिलता है, जो बहुधा कठोर होता है। पर मैं इन सब कष्टों से बचा हुआ हूँ। कारण यह है कि मैं इन लोगों के घरों से परिचित हूँ, और इसजिये अपने खान का मुख्य वादराह के बावर्चीजाने के दारोसा के पास क्रिडे में अपने मौकर के हाथ भेज देता हूँ, और वह मुझे शूरी से अच्छा भोजन देने हैं। यद्यपि इन चोत्रों पर उनकी खागत बहुत हो कम जाती है, पर मैं उन्हें मुख्य कुछ अधिक देता हूँ। मैंने एक दिन अपने आता से इस चोत्रों और याज्ञाकी के विषय में कहा भी—जिस पर वह बहुत हँसा। अन्त में मैं ॥) में वादराही भोजन कर लिया करता था। पर यहाँ यदि ऐसी याज्ञाकी न करता, तो कदाचित



१०६) व० में, जो मुझे मेरे चाचा की सरफ़ार से मिलते हैं, मेरा पुत्राल  
कभी न होना और मैं भूषणों से बाधा ।

इस देश के लोगों में वृषा अधिक है, और इसी-कारण मुर्ती बाजार  
में दिखाई नहीं देती । पर नहीं मालूम यह वृषा कम मनुष्यों के मार में  
क्यों नहीं होती, जो जानने मकानों के लिये इज्जा बनाता है । प्रिविषी  
बाजार में बनेक प्रकार की अण्डरी और सखी मिलती हैं । यहाँ हर प्रकार  
की छोटी मुर्ती, जिसका चमड़ा काया होता है और जिसका नाम मैंने  
'विपसी' रक्खा है मिलती है । कपूर भी मिलते हैं, पर कपूर नहीं मिलते ।  
इसका कारण यही है, कि यहाँ के लोग यहाँ को मारना सभी निष्ठावा  
की कार्य समझते हैं । छोटी भी मिलते हैं, जो हमारे देश के तीसरी से  
छोटे होते हैं । मनु बाजार में फाँसकर और रिजरे में बन्द करके जाये जाने  
के कारण वे येन अण्डे नहीं होते जैसे और अनेक पशु । यही अवस्था यहाँ  
मुर्तियों और इज्जाओं का होती है, जो बीविल प्रकृति का हर रिजरे में  
भरे हुए शहर में जाते हैं । देखनी के मनुष्य अपने कार्य में कुछ ऐसे चतुर  
नहीं हैं । पर फिर भी मनुष्यों कभी कभी बाजारों में अण्डरी बिकती हैं,—  
विशेषकर विधाही को अपने यहाँ की 'आप' के समान होती है—अण्डरी  
होती है । जाड़े के दिनों में मनुष्य मनुष्यों कम पकड़ते हैं । कारण कि,  
यहाँ के लोग नहीं से उतना हा करते हैं, जिसने हम लोग जाड़े के दिनों में  
गर्मी से । यदि कोई मनुष्य बाजार में दिखावा दे तो इज्जासरा उसे  
स्वयं खरीद लेते हैं । वे लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं । परन्तु इसका कोई  
विशेष कारण मुझे अब तक मालूम नहीं हुआ । अमोर लोग अपने लोगों  
के बल, जो उनके दरवाज़ा पर इसी कार्य के लिये लटकते रहते हैं—जाड़े  
के दिनों से प्रायः मनुष्य पकड़वाया करते हैं । इसमें सम्देह नहीं, कि यहाँ  
के सभी लोगों को हमेशा अण्डरी औरों निजा करती हैं; पर इसका कारण—  
केवल वृषा और उनके पात्र बहुत-से औरों का रहना ही है । देखनी में साजा  
रथ स्थिति के छाग नहीं रहते । बड़े-बड़े असीर, जमरा और रईस बिजकुल  
ही कम हैं । ऐसी हीमिष्ट के लोग—जिनका जीवन कष्ट से बीता है,

अधिक रहते हैं। यद्यपि मुझे यहाँ अच्छा चेतन मिलता है, परन्तु सामान्य को मिनता भी है, यह बहुत ही रही और बेबल रही, जोकि समीर लोगों के नापमन्द होने के कारण बंध रहता है। मदिरा, जो हमारे यहाँ भोजन का प्रधान अन्न है—दिखी की किसी दुकान में नहीं मिलती। जो मदिरा यहाँ बेरी अंगूर की बन सकती है, वह भी नहीं मिलती; क्योंकि गुप्त साधों की क्रूरता और दिव्युषों के जासूसों में उसका पीना वर्जित है। मुगल राज्य में भी जो मदिरा शीराज वा बनारी टापू से आती है, अच्छी होती है। शीराजी मदिरा ईरान से सुन्नी के रास्ते—‘सुन्दर मन्नास’ और यहाँ के महाराज के द्वारा सूरत में पहुँचती और फिर यहाँ से दिखी आती है। शीराज से देहली तक मदिरा आने में ६ दिन लगते हैं। बनारी टापू से मदिरा सूरत होती हुई दिखी आती है। पर यह दोनों मदिरायें इतनी फिहरी होती हैं कि इनका मूल्य हो इन्हीं, बदमजा कर देता है। एक शीराजी, जो तीन आमेजी घोटकों के बराबर होती है, १६ या १७ रुपये में आती है। जो मदिरा इस देश में बनती है, जिनमें यह लोग अर्क करते हैं—यह बहुत ही तेज होती है। यह भभके में खींचकर गुद से बाहर निकाली है, और बाजार में नहीं बिकने पाती। धर्म विरुद्ध होने के कारण अंग्रेजों ने इसी रूपों के प्रतिरिक्त होते कोई नहीं भी सकता। यह अर्क हीन पैसा ही है, और जो पोलीश के लोग अनाज से बनाते हैं, और जिसे परिमाण से जरा भी अधिक पीजाने से मृत्यु बीमार पड़ जाता है। समझदार आदमी जो यहाँ सादा पानी पीयेगा या नींबू का शरबत, जो यहाँ सहज ही मिल जाता है, और जो हागिकारक भी नहीं होता। हम गर्म देश में लोगों को मदिरा की आवश्यकता भी नहीं होती। मदिरा न पीने और बराबर पसीने आते रहने के कारण यहाँ के लोग सर्दों, बुखार, पीठ का दर्द आदि रोगों से बचे रहते हैं, और जो ऐसे रोगी यहाँ आते हैं, यह शीघ्र ही मरते भी जाते हैं, जिसकी मैं स्वयं परीक्षा कर चुका हूँ।

शरीर और महजारी करने का काम तो यहाँ पैसा, अन्न और है, जिसे देखकर मैं अर्कित होगया। अर्कवर।

बड़ी लाग्गवाई की तस्वीर, एक चित्रकार ने साथ भर्ष में, एक हाथ पर बनाई थी। उसे देखकर ही हैरत रह गया। परन्तु भारतीय चित्रकार सुंद तथा किर्गी राज्य भंगों द्वारा उन भावों को व्यक्त नहीं कर पाते, जो पात्र की चित्रित रंग में हुआ करते हैं। यदि हमें इसकी पूर्ण रूप से शिक्षा हो जाये, तो यह इस दोष से मुक्त हो सकते हैं। हाँ, हमसे स्पष्ट प्रकट है कि भारत में बहुत अच्छी कच्ची चीजों का न होना वहाँ के लोगों की जयो-ग्यता के कारण नहीं बल्कि शिक्षा के अभाव में है। यह भी स्पष्ट है कि यदि इन लोगों को उपाय दिखाया जाय, तो भारत में उदात्त कलाओं का प्रादुर्भाव सहज ही में हो सकता है। कारीगरों को वहाँ हमके कला कौशल का यथोचित प्रस्कार नहीं मिलता, बल्कि उनके साथ कठोरता का व्यवहार होता है।

घनी छोग मय वस्तुएँ सस्ते मूल्य पर लेना चाहते हैं। जब किसी घसीर को कारीगर की आवश्यकता होती है तो वह उन्हें बाज़ार से ढूँढ-बधा मँगता है, और उस देखते में ज़बरदस्ती काम लिया जाता है तथा चीज़ तय्यार हो जाने पर उसके योग्यतानुसार नहीं, किन्तु अपनी हज़्ज़ा अनुसार उसे माफ़गूरी देता है। कारीगर कोइों की मार खाने में ही बच जाने में अपना छोटीमाय समझता है। तब बेसी अशरफा में यह कब सम्भव है, कि कोई कारीगर कच्ची और सुन्दर चीज़ें बनाने की चेष्टा कर सके ?

जिसे के दरवाज़े पर कोई बेसी वस्तु नहीं है, जिसका वर्णन दिया जाय। हाँ, उसके दोनों ओर दो पाथर के बड़े बड़े हाथी बनाकर खद कर दिये गये हैं, जिनमें से एक पर बिधौर के सुविख्यात राजा जयमल और दूसरे पर उनका भाई फला की मूर्ति घनी है। यह दोनों धीरे बड़े पराक्रमी थे। इनकी माता हमसे भी अधिक बहादुर थीं। यह दोनों भाई एक-दूसरे के साथ बड़ी बहादुरी से लड़े थे, कि उनका नाम प्रलय तक समाप्त में अमर रहेगा। जिस समय शाहजहाँ अकबर ने इनके नगर को चारों ओर से घेर लिया था, उन्होंने बड़ी वीरता से उसका सामना किया, और इतने बड़े बादशाह के सामने भी पराजय स्वीकार करने की अपेक्षा उन्होंने, तथा

उनकी बीरीगना माता ने, रण भूमि में अपने प्राण विमर्जन कर दिये। यही कारण है, जो उनके शत्रुओं ने भी उनकी इन मूर्तियों को चिन्ह स्वरूप स्थापित रखना अपना श्रीभाग्य समझा। यह दोनों हाथी—जिन पर यह दोनों घोर बैठे हैं, बड़े शाब्दार हैं। इन्हें देखकर मेरे मन में ऐसा भातक उठा, जिसका वर्णन मैं नहीं कर सकता।

इस फाटक से होकर किले में आने पर एक छम्बी चौड़ी सड़क मिश्रती है, जिसके बीचो-बीच पानों की एक गहर बहती है, और उसके दोनों ओर पाँच पाँच फागसीसी फुल खँसा और प्रायः चार फुट चौड़ा चबूतरा बेगिस के 'पॉण्टनियोफ़' की भाँति बना हुआ है। इसको छोड़कर दोनों ओर बराबर महाराजदार राजान बनते चले गये हैं। जिनमें भिन्न भिन्न विभागों के दागोला और छोटी छोटी क मोहरेदार बैठे हुए अपना काम करने रहते हैं, और वह सम्मवदार भी, जो रात के साथ पहरा देने आते हैं, पदां ठहरते हैं। पर इनके नीचे से आने जानेवाले सवारों और साधारण लोगों को इनसे कोई कष्ट नहीं होता।

किले की दूसरी ओर के फाटक के अन्दर और भी ऐसी ही छम्बी चौड़ी सड़क है। उसके भी दोनों ओर ऐसे ही चबूतरे हैं। पर मेहराजदार राजानों के स्थान में वहाँ दुकानें बनी हुई हैं। सध पूछिये, तो यह एक बाज़ार है जो लड़ाव की छत के कारण, जिसमें ऊपर की ओर हवा और प्रकाश के लिये रोशनदान बने हुए हैं, गर्मी और धरसात के काम की जगह है।

इन दोनों सड़कों के अतिरिक्त इसके दाहिनी और बाईं ओर भी अनेक छोटी-छोटी सड़कें हैं, जो उन मकानों की ओर जाती हैं जहाँ नियमानुसार उमरा लोग सहाद में बारी-बारी से पहरा दिया करते हैं। यह मकान, जहाँ उमरा लोग चौकी देते हैं, अच्छे हैं। इनके सहन में छोटे-छोटे बाताई जिनमें छोटी छोटी महर्, झोला और क्रमारे बने हुए हैं। जिस चमीर की नौकरी होती है, उसके लिये भोजन शाही खाने से आता है। सब है, तो चमीर को सम्मवाद और सम्मान स्वरूप महल की

कोर हुई करके तीन बार पढ़ाया गया जाता, अर्थात् जमीन तक हाथ ले जाकर माथे तक ले जाता होता है। इनके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों में सरकारी दफ्तर के विभिन्न दीवार-प्रान्त बने हुए हैं, और इनमें खगे हुए हैं, जिसके प्रत्येक भाग में किसी कच्चे कारीगर की निगमांगी में काम हुआ करता है। किसी में चित्रनदोज और ज़रदोज आदि काम करने हैं, किसी में मुनार, किसी में चित्रकार और चित्रकार किसी में बग्याज, बगई और बग्याज, किसी में बगई और बगई, किसी में बग्याज और बग्याज बग। बागों और बग्याज, जो बग्याज, बग्याज के बग्याज के बग्याज परदे और ज़रदोज बागों के बग्याज के बग्याज बग्याज हैं—बग्याज हैं। यह बग्याज इतना महान होता है, कि बग्याज 10 बग्याज में काम में ये काम हो जाता है। यह २५) २५) मुराब का होता है। जब इस पर बग्याज बग्याज ज़रदोज का काम किया जाता है तो इसका मुराब और भी अधिक हो जाता है। यह सब का सीकर सधरे से आकर अपना अपना नाम करते हैं, और काम को अपने घर लाने जाते हैं। इसी दिनचर्या में इन लोगों का जीवन व्यतीत हो जाता है। जिस व्यवस्था में यह लोग काम लेते हैं, उसमें टर्मिनेशन होने की चेष्टा तक नहीं करते। चित्रनदोज आदि कारीगरों को अपने ही काम मिलाने हैं। मुनार का बग्याज मुनार हो जाता है। शहर का इकाम अपने घर को इकाम का बग्याज होता है। यहाँ तक कि कोई व्यक्ति अपने बग्याज का बग्याज का विवाह करने चेष्टाओं के अतिरिक्त और किसी के घर नहीं जाता। इन नियमों का पालन मुतकमान भी होता ही करते हैं, जिसकी हिम्मत जिनके शत्रुओं की यह आशा है। इसी कारण से बहुत-सी ग़दर बग्याजों की मुराब हो रह जाती हैं। उनके माता पिता यदि चाहें, तो उन बग्याजों का विवाह। कुछ बग्याज बग्याज हो सकता है।

घर में दरबार प्रान्त व काम का बग्याज उचित समझता है—जो इन मकानों के आगे मिलता है। यह इमारत बहुत सुन्दर और बग्याज है। यह एक बग्याज मकान है, जिसके चारों ओर महाराजे हैं, और यह पैलेस 'रॉयल' से मिलता है। पर भेद इतना ही है कि इसके ऊपर कुछ इमारत

महीं है। हमकी महाराजे ऐसी बनी हुई है कि एक महाराज से दूसरी महाराज में जा सकते हैं। हमके सामने एक बड़ा दरवाजा है, जिसके ऊपर मन्त्रारखाना बना हुआ है। हममें शहनाई, नज़ीरियाँ और मन्त्रारखे हैं। इसी से खोग इसे मन्त्रारखाना कहते हैं, जो दिन और रात को नियत समय पर बजाये जाते हैं। यह मन्त्रारे एक-साथ बजाये जाते हैं। इसमें मन्त्र से बड़ी नज़ारी—जिसको 'करना' कहते हैं, ३ फीट लम्बी है, और इसके नीचे का गुँद एक फ़ाग्साली फुट से कम नहीं है। छोटे या पीतल के मन्त्र से छोटे मन्त्रारे की लोड़ाई कम न कम छः फीट है। इससे आप समझ सकते हैं, कि हम मन्त्रारखाने से कितना शोर होता होगा। जब मैं पहले पहल यहाँ आया, तो शोर के मारे कान बहरे हो गये। अग्न्याय के कारण अब मैं उन्ने मन्त्रे चाव से सुनता हूँ। विशेषतः रात के समय, जबकि मफान की छत पर खड़े हुए इसकी आवाज़ दूर से सुनाई देती है, तो बहुत ही सुरीली और भली मालूम होती है। और यह कोई आश्चर्य की बात भी नहीं है कारण कि इसके बजानेवाले बचपन ही में इसकी शिक्षा पाते और इन वाजों की मफान को ऊँचा मोटा करने और सुरीली तथा क्षय पूर्ण बनाने में बड़े चतुर होते हैं। यदि यह मफान दूर से सुनी जाय, तो अच्छी मालूम होती है। मन्त्रारखाना शायी महल से बहुत दूर बना है, जिससे बादशाह को इसकी आवाज़ में कष्ट न हो।

मन्त्रारखाने के दरवाजे के सामने सहन के आगे एक बड़ा पालान है, जिसकी छत मुनवरे फ़ाम की है। यह बहुत ऊँचा दवादार और ताज और से सुजा हुआ है। उस दीवार के चोखोंबीच, जो इसके और महल के मध्य में है, प्रायः ३ फीट ऊँचा और १ फुट चौड़ा शहमशीन बना हुआ है, जहाँ नित्य दोपहर के समय बादशाह आकर बैठता है। उसके दाएँ बाएँ शहजादे खड़े होते हैं, और फ़वाज़ातनावा सो मोर्चल दिखाते हैं या मन्त्रे मन्त्रे बोलते हैं, और या बादशाह का हुक्म बजा लाने के लिये हाथ-बाँधे खड़े रहते हैं। ताल के मोचे चारों ओर बँधवा लगा हुआ है, जिसमें उगरा, राजे तथा राज्य-शासकों के प्रतिविम्ब हाथ-बाँधे और मोची आँखें बंदे

केंचा है। यहाँ क़ुरसी पर बैठकर बादशाह—बाग़ीरों से, जो इधर उधर खड़े होते हैं, सलाह करता है, बड़े बड़े ज़मीनों और सुबेदारों की अतिथि सुनता है, और अनेक ग़ुद राज्य-कार्य करता है। यद्यपि मुख्य ख़ाने के दरबार में वही घात होती है, जो मैंने अभी बड़ी है, पर आम व ख़ाम की तरह यहाँ भी सचिकंश ख़ानवरों आदि का मुचाहज़ा होता है। हाँ, रात हो जाने के कारण और सामान सहन के छोटे हो जाने के कारण ज़मीनों के रिसालों का मुचाहज़ा वहीं हो सकता। इस समय के दरबार में यह विशेषता है, कि वह मन्तबदार, सिगकी उम्र दिन चौकी की जारी होती है, बड़ी ही शिष्टता और ख़द के साथ सामने से सख़ाम करते हुए गुज़र जाते हैं। इनके आगे छो़ग हाथों में 'कौर' छिये हुए थकते हैं। यह 'कौर' बहुत ही सुन्दर होते हैं, और चौकी की छदियों के सिरे पर मढ़े होते हैं। इनमें से कुछ तो मज़ छियों की शक़ के और हाथ और पजे की तरह बने हुए होते हैं। इन छो़गों में तो बहुत से गुर्जरदार होते हैं, जो इन्फ़ पुष्ट शरीर देखकर भर्ता किये जाते हैं, और मित्रका काम है कि दरबार के मनम हुक्म या ग़दबद न होने दें, तथा बादशाही आज्ञा-पत्र आदि यथा-स्थान पहुँचा दें और बादशाह को आज्ञा दे, बहुत भीम ज़यका पाज़न करें।





के हाथ की कठपुतली बना रहा। इसके राज्य काल में दक्षिण विजयनगर हाथ से निकल गया, और उस मरहटों का करव राज्य स्वीकार कर लिया गया। इसी बादशाह ने अंग्रेजों को बंगाल में बिना चुगी व्यापार करने का अधिकार दे दिया। मिर्जा जैसी व दूर, १६०० मिर्जा जैदियों-मदित दिल्ली आये गये और प्रति करता से मारे गये। अन्त में दक्षिण का सैयद सुवेदार १०००० मरहटों को ताबाना विरवनाय पेशवा को अभ्युत्थता में बना आया अिनके हाथों यह बादशाह मार डाला गया।

इसके बाद सैयदों ने एक और व्यक्ति को बादशाह बनाया, जिस पर रोग था। तीन मास ही बादशाह रहकर यह मर गया। फिर एक और व्यक्ति बादशाह बना। यह एक वर्ष राज्य करके मर गया। इन बीच में मुगल प्रान्त एक-एक करके टूटने लगे। तब सैयदों ने बहादुरशाह के एक पोसे मुहम्मदशाह को गद्दी पर बैठाया, पर सैयदों के उपद्रव से लग आकर इनने दो पराक्रमी सरदार सभादतखान और आम्बरकाह की सहायता से उन्हें मार डाला। इसके इत्नाम में सभादतखान को अंग्रेज की नज़ाबी दी गई, जिसे उस सरदार ने अकब्र ही एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित कर लिया। तब से किसी ने भी अंग्रेज को फिर इलाक़ों में काने की चेष्टा नहीं की, और १३० वर्ष तक सभादतखान के वंशधर वहाँ की बादशाहत भोगते रहे।

इसके दो वर्ष बाद आम्बरकाह ने, जो इसका मन्त्री था, मन्त्री पद से हटोकर दे दिया, और दक्षिण में आकर हैदराबाद की राजधानी बना, जहाँ राज्य स्थापित कर लिया। १० वर्ष तक यह मरहटों से जोड़ा होता रहा और एक विषयात राज्य पैदा कर दिया।

शिवाजी के वंशधर अब मुगल-सम्राट् से का प्रहण करते थे। शिवाजी के समय में राज्य-सत्ता बाबराजी विरवनाय के हाथों में पहुँच गई थी, जो पेशवा के नाम से प्रख्यात हुए। दूसरा पेशवा बाबोराव इतना सशक्त हुआ कि उसके समय में महाराष्ट्र-शक्ति उन्नति के उत्तम शिखर पर पहुँच गई। तीन ही मरहटों के तीन बड़े राज्य स्थापित होगये। सिन्धिया ग्वाजियर में, होवकर इन्दौर में, और गायकवाड बकौदे में।

तीनों सरदार युद्ध से पराजित-वर्ष में परिचित हुए। अन्त में मराठों की पूरा शक्ति संगठित होकर दिल्ली पर चढ़ आई। बादशाह ने अमरावती को सहायता के लिये लिखा। यह हैदराबाद से मारी सैन्य छोड़ चला। अमरावती में बाजीराव ने ८० हजार मवार सैन्य उभरा छोड़ा दिया। मिर्जापुर की पूरी हार हुई, और उसने माववा प्रान्त गहड़ों के हाथों पर दिया, तथा २० लाख रुपये दिल्ली व अजमेर से दिजाने की छान कर लिये। बाजीराव ने माववा सिन्धिया और होत्रकर को हजाने में दे डाला।

अब बादशाह ने भारत पर आक्रमण किया। यह सुरासन का एक गहरिया था जिन्होंने अपने बाहु-बल से ईरान का राज्य प्राप्त किया था। मिर्जापुर और सहायत ने उस करनाम में शेरना आह, पर वे पूरी तरह हराये गये। दिल्ली के निकट पहुँचकर उसने बादशाह को लिखा—“दो करोड़ रुपये दो, वरना दिल्ली की ईंट से ईंट बजा देंगे।”

अब यह दूत दरबार में पहुँचा, तो बादशाह शराब पी रहा था, और और-नाइके गाढ़ का रहा था। बादशाह स्वयं भी अपनी कविताएँ सुना रहे थे, और अमीर उमरा उन्हें ‘कलामुल्लुख लुल्लुखलाह’ कहकर मुँह मुँहकर सलामें मुँहा रहे थे। दूत ने ज्ञात दिया तो बादशाह ने बगीर से कहा—“क्यों क्या है?” बगीर ने पना और कहा—“हुजूर ऐसे गुस्ताखी के अवकाश हैं कि जहाँपनाह के सुनने लायित नहीं।” बादशाह ने कहा—“साहब—क्यों?” ज्ञात सुनकर कहा—“क्या यह मुमकिन है, कि यह शहर दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दे?” सुशामरी दरबारियों ने कहा—“हुजूर, कतई नामुमकिन है।” तब बादशाह ने हुक्म दिया—“यह ज्ञात शराब की सुराही में डबो दिया जाय, और इसके नाम पर एक एक दौर चले।” जब दौर चलत हुआ तो दूत ने कहा—“हुजूर, क्या को क्या दरशाह है?” बादशाह ने हुक्म दिया—“पाँचसौ अशक्री और एक दुशाजा इसे इनाम में दिया जाय।”

दूत चला गया और बादशाह अज्ञान की भाँति दिल्ली में घुस आया। तब रज़ीजे बादशाह की भाँति सुनीं। उसने नगर पर और जिजे पर अधिकार कर लिया। बादशाह ने तिर मुँहाकर सलाम उसकी मज़र

किया। कहने हैं कि हमने उसे हुसम दिना महल की तमाम बेगमां और शाहजादियाँ उसके सामने हाज़िर की काँई। अब उसके हुसम की तामीन की गई थीर तमाम धीरते' उनके सागने खड़ी पर दी गई, तो करने कमर मत खवार शोख़र सप्रत के दूर किनारे रख दी थीर आराम से सफ़न पर छोट गया। कुछ देर बाद यह बड़ा और जाज़-जाज़ धाँकों से घूरर मयेक धीरत को देखा, धीर कहा 'तुम लोग शाहजादी और शाहा बेगमां हो परन्तु हम इन्द्र येतर्मी और येहीरत हो, कि मिला तमम्मुक दुरमन के सामने आ-लखो हह। किपी में हुतनी हीत न भी, जो खान लो देतो, मगर मेरे सामने न आता है मने तजरा पुर रख दी और हुतनी न धाँसों बन्द किये पड़ा रहा। हम पर भी किपी की हिम्मत न हुई कि अपनी येतुर्मेसी और ये हुग़ल्लो करनेवाले दुरमन के बख़्ते में कटार भोंक दें। ओ, ज़ाज़ील धीरतो! क्या तुम यह उम्माद को लाय कि तुम हिन्दुस्तान पर हुकूमत करनेवाले बख़ वीरा कर सकते हो? हरो मामने से।' — यह कहकर यह वहाँ से खज़ दिया।

दूसरे दिन उनके मरने की अफ़वाह फैल गई, और उनके सिपाही वहाँ वहाँ मारे जाने लगे। यह देख वह राय पाये पर सज़ा होकर निकला, पर उस पर भी पथर पेंडे गये। यह देख वह सुग़दरो मस्जिद पर खड़ा गया और वहाँ से अपने लखे धान का हुसम दिना। चार दिन तक लखे धान होता रहा। शहर बाग़ों से घट गया। नगर धाँय धाँय खज़ने लगा। शहर भर लूट लिया गया। राज्य का इज़्ज़ात भी लूट लिया गया। व्यापारियों और सरदारों के जवाहरात लूट लिये गये। सप्रत-साऊन भी यह लूट ले गया। हम लूट में उसे सप्रत के बलाया दम करोड़ का माल मिला।

हमके बाद दिन्नी की शक्ति विघ्न भिन्न होगई। दक्षिण, माज्जा, गुजरात, राजपूताना, यह सब दिन्नी के अधिभार से यादर होगये। अब से बग़ल के मन्त्र अधीनदीर्ग ने भी धरने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया और तिराज देखा बन्द कर दिया। यह सब उज्जट पुजद माया के आदू से — औरइजोव को शत्रु के बाद सिरुं दीन बर्ब के भीतर ही भीतर होगई।

उसके मरने पर अहमदशाह तख्त पर बैठा। छ वष राज्य करने के बाद गाज़ीउद्दीन नामक एक सरदार ने उसको पटककर धाँसें निकाल लीं, और जहाँदार के घेरे को तख्त पर बैठाया। उसका नाम आजमगीर द्वितीय रहता। हमके गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिन बाद अहमदशाह दुर्गाने ने ममानक रीति से दिल्ली को खूग। फिर वह मथुरा पर चढ़ गया, और वहाँ ख़ुशामम मचा दिया और छोट गया। अजगाज़ीउद्दीन ने बादशाह से बिराद कर मरहटों को बुलाया। पेशवा का भाई रघुनाथराव दिल्ली आया और गाज़ीउद्दीन को बादशाह का मन्त्री बनाकर पचास चत्ता गया। वहाँ से दुर्गाने के हाकिम को मार मगाया। अज मरहटों का आधिराज्य सर्वोपयोगी हो गया, और ये प्रत्येक प्रान्त से चौक बसून करने लगे।

अज दुर्गाने फिर एक भारी सेना लेकर चढ़ आया। गाज़ीउद्दीन ने यह देख, आजमगीर को मरवा छात्रा और वह स्वयं जाटों की रियासत में भाग गया। उधर मराठे बड़े रूप से दुर्गाने का मुक़ाबिला करने पानीपत के मैदान में आ बटे। परन्तु परस्पर की फूट और विग्रह ने उनका पतन किया। होश्वर और सूरजमल ज़दाई से फिर गये। दो लाख मरहटे काट काटे गये और बाईस हजार को पकड़कर दुर्गाने गुलाम बनाका खेगया। इस घटना ने महाराष्ट्र में हाहाकार मचा दिया।

मुद्र के पीछे अमी-गौहर गद्दी पर बैठा और अगना नाम 'शाहेआज़म' रक्खा। इसके समय में गुलाम कादिर नामक एक सदार रूहेतों को चढ़ा आया। गुलाम औरों से महल में गुम गया और बादशाह को तख्त से नीचे गिराकर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। क़ार से धाँसें निकालकर बाहर फेंक दीं। फिर क़िले को खूब खूटा। वहाँ तक कि बेगमों के बदन में कपड़े भी उतरवा लिये। महाराष्ट्रों ने जब यह सुना, तो गुलाम महामती सिन्धिया दिख़ा पर छा घमके, और गुलाम कादिर को पकड़कर दुबड़े दुबड़े कर दावा। इसके बाद सिन्धिया ने बादशाह को छो क़िले में बन्द कर दिया और नगर पर अपना ज़ब्त कर लिया।

अज अंग्रेज़ रंग-मन्च पर सुल्लम सुरक्षा आये। छौंड जेक ने दिल्ली

दिया। कहते हैं कि उसने उसे दुबन दिया। मद्रक का सामान बेगमान और शाहजादियों उनके सामने हाजिर का कार्य। जब उसने दुबन की सामीप्य की गई और सामान औरते उनके सामने लगी कर दी गई, तो उसने कमर में तब्रवार खोजकर लज्ज के एक दिनार रख दा और चाराम से तपन पर छोट गया। कुछ देर बाद वह उठा और छात्र छात्र भाँसों से गुरदर मन्वेक योग्य को देखा, और कहा 'तुम जाग शाहजादा और ताहा बामाय हो परन्तु हम जरा बेरमी और मेरीगत हो, कि बिना तप्यमुक दुरमन के सामने पान्त्रही हई। किपी में हतनी गीत न थी, जो धान जो हेला, अगर मेरे सामने न जाता। मैंने लज्जवार पूर राश दी, और हतनी पर भाँसों बन्द किये पदा रहा। हम पर भी किपी का हिमाल न हुई कि धाननी बेहुर्मती और बेहजती करनेवाले दुरमन क कछेजे में कटार भीक दे। जो, ताजीक औरतो। बस तुम पर यह उम्मीद को जाय कि हम हिन्दुत्वा पर दुद्रुमक जानेवाले पक्षे पैरा कर सकती हा। इरो सामने से।' यह कहकर वह वहाँ से चला दिया।

दूसरे दिन उसके मरने की खबरवाह फैल गई, और जयजय विवाही काही वहाँ मारे जाने लगे। यह देख वह रात पाड़े पर मगार होकर निकला, पर उस पर भी पक्षर पँडे गये। यह देख वह मुनहरो मस्तिश पर चढ़ गया और वहाँ से उसने ऊँचे आस का दुबन दिया। पार दिन तक लखे आस होता रहा। शहर आसों से ढक गया। मगर धीव धीव जलने लगा। शहर भर लूट क्रिया गया। राज्य का इरहाना भी लूट क्रिया गया। व्यापारियों और सरदारों के बगइरास लूट क्रिये गये। तपत-साऊर भी यह लूट खे गया। हम लूट में उसे तपन के भजावा दन करोड़ का मात्र मिता।

हमके बाद दिवा की शक्ति द्विज भिन्न होगई। पचिय, माजवा, गुजगल, राजपूताना यह सब दिव्यी के अधिका से बाहर होगये। अब से बगावत के नवाब अलीवरदीखाने से भी चरणों को स्वतन्त्र घोषित कर दिया और प्रिराज देना बन्द कर दिया। यह सब उज्जट पुनट माया के बाद से— और अज्ञेव की मृत्यु के बाद दिव्य सीम वर्ष के भीतर ही भीतर होगई।

एक दूर बज जाता जाकर यह जिराज पहुँच करे। माना कदनवीस से भी सहायता माँगी गई। सिन्धिया पूरा पहुँचकर माना से हुए सम्बन्ध में सलाह कर ही रहे थे, और सम्भव था कि एक भारी सैन्य लेकर वे बलवन्त जिराज के लिये चढ़ दीजते, पर, चकमावट ही उनकी सृष्टि होगई। कहा जाता है कि उन्हें मरवा डाला गया।

इस व्यक्ति की मरता में एक बार बादशाह ने कहा था—

“माओजा सोधिया कृष्णद जिराज बड़ेमन्।

हस्त ममरूक लडाक्रीव मितमगरी एमा ॥”

अर्थात्—माओजा सोधिया मेरे जिराज का दुश्मन और मेरा घेरा है। मेरे दुश्मनों को दूर करने में खूना हुआ है।

इसके बाद चैमेशों ने सरहटों और बादशाह में विरोध दायर करा दिया और एक इस्तेमाल नामा बिल दिला, जिसका अभिप्राय यह था कि उन्हें सरहटों से सम्पूर्ण अधिकार दिया दिये जायेंगे।

परन्तु यह बात कभी पूरा नहीं किया गया। लार्ड लोक न दिल्ली के समस्त अधिकार अपने कब्जे में कर लिये और बारह लाख रुपये बादशाह की पेन्शन निपट करदी। अब बादशाह के हाथ में कुछ भी अधिकार न थे। वह मिर्ज़ा पैशावोगी नाम मात्र का बादशाह था। दिल्ली पर कब्जा रखने और बादशाह को कब्जे में रखने के लिये, दिल्ली में एक मजबूत सेना रखने की व्यवस्था की गई। एक बार बादशाह को दिल्ली से हटाकर गुँगेर भेजने का विचार किया गया परन्तु विद्रोह के भय से यह विचार काम में न लाया गया।

शाहजहाँ के बाद बादशाह अकबरशाह (दूसरा) गद्दी पर बैठा। इसके समय में ही लखनऊ के बन्नाबों को बादशाह की उपाधि प्राप्त हुई और चैमेशों ने उन्हें बादशाह स्वीकार किया।

अब तक चैमेश अधिकारी दिल्ली के बादशाह को भारत का बादशाह मानते तथा कम्बोरी सरकार का न्यायाधिश स्वीकार करते थे। उनके साथ बात-चीत करने, मिलने और पत्र-व्यवहार में, सभी अकसर

## इस्लाम का विष पृष्ठ

बादशाह को सिन्धिया की सैन्य से लुटाया और इलाहाबाद ले गये। उन्होंने अवध के नवाब से दस घमसाकर इलाहाबाद और कदा का इलाका बादशाह के त्रिये से त्रिये, और बादशाह को इलाहाबाद का ज़िन्दा और दिया। इसके बाद ही खोर्ट वज्जाह ने आकर बहाल, विहार, उदोना की दीवानो बादशाह से ले ली। इनका मतलब यह था कि अंग्रेजों का इस सीना "गुप्तों" से पर और खगान उगाहने का अधिकार मिल गया। अंग्रेजों ने इसके बदले बादशाह को सुन्नीस काख रुपये पेन्शन देने का बंधन दिया। मुर्शिदाबाद के नवाबों का केवल शासनाधिकार-भात्र रह गया।

परन्तु इसके कुछ दिन बाद ही वयोहो बादशाह दिल्ली आये उधर वारेन हेस्टिंग्स गवर्नर हुए। उन्होंने पचास लाख रुपये मजदूरी कर अवध के नवाब को फिर इलाहाबाद और कदा का इलाका देव दिया। साथ-ही बादशाह को ज़िराज भेजना भी बन्द कर दिया। उसका कारण यह बतला दिया कि बादशाह मगलों से मिल गया है।

बादशाह ने कई बार गवर्नर को पत्र लिखा। एक बार पत्र के उत्तर में वारेन ने लिखा था —

"जब आप कम्पनी और अवध के नवाब बज़ीर से अजहदा होकर दूसरों का (मराठों को) अपना कृपा पात्र बनाने लगे, जिनमें कम्पनी की सरासर हानि है, तो जो कुछ आपके पास था, उसी समय कम्पनी का हो चुका।"

परञ्च, बादशाह ने फिर भी ठपड़े-ठपड़े लिखा —

"कम्पनी के अधिकारी सुलहनामे की रु से आप हमारे पाक वामन से अजहदा नहीं हो सकने, और बहाल के रुपये का ज़िराज भेजना बन्द कर फ़र्मा दें। हम कहा क्यों न रहें कदा और इलाहाबाद हमारे चौकनों के हाथों में बने रहने चाहियें। दो वर्षों से हमें इलाहाबाद और कदा के रुपये नहीं मिले। दरियों की हमें अजहदा ज़रूरत है।"

परन्तु इस पत्र का कोई जवाब नहीं दिया गया। विशय, बादशाह ने फिर मगलों की शरण ली। उन्होंने महादजी सिन्धिया को लिखा कि

का नाम दिल्ली के बादशाह के घर से हटाकर अब अंगरेजों के तिर पर रक्त दिया जाय ।”

कहा जाता है कि शाही प्रान्दान और उसके अधिकारियों ने इस पञ्चा पर गहरा शोक मनाया । उन्होंने धनुमध किया कि इससे प्रथम उन्हें मराठों के कारण और तत्कालीन चाहे कुछ भी क्यों न सरणी पड़ी हो, किन्तु मराठे दिल्ली मराठा को राजा समस्त भारत का ग्याय अधिकार स्वीकार करते रहे । अब पञ्चा को हटाकर हलवा होना गया है ।

बादशाह ने खिन्न होकर लॉर्ड ब्लेक का दण्डाती इज्जतनामा देकर राजा राममोहनराय को विश्वास में रखा था । वहीं वह गुम का दिया गया और इस बात पर रोद प्रकट कर दिया गया कि किसी भी भाँति यह नहीं मिला ।

अब तक मगनी का रेड्रीडेक्ट, जो कि दिल्ली में रहता था साधारण घमौर की भाँति बादशाह को दाय्यदा तत्काल, कीर्ति और सुवरा किया करता था और शाही प्रान्दान के प्रत्येक चरण के प्रति प्रतिष्ठा प्रकट करता था । पर, अब उसके स्थान पर मोटका निपुण होकर आया । उसने अपना व्यवहार मित्रपुत्र बद्ध दिया, और बारम्बार बादशाह का अपमान करना शुरू कर दिया ।

बादशाह ने अपने पुत्र मिरजा सलीम को युवराज पद देना चाहा, परन्तु अंगरेजों ने उसे हवाहावाद क्रिस्ते में गजरकट्ट कर दिया । अन्त में बादशाह मरा, और उसका पुत्र महानुराह बिता की भाग्यहीन गद्दी पर बैठा ।

यह वह समय था, जब भारत में भीतर ही भीतर अशांति के सिन्धु बह रहे थे । बादशाह की आर्थिक स्थिति बहुत नाशक थी । बादशाह ने अंगरेजों को प्रार्थ की रक्त अधिक देने को जिस्सा, पर उसे जराब दिया गया—आप अपने और अपने वंशजों के समस्त अधिकार पम्पनी को सौंप दें, तो यह रक्त बह सकती है ।” बादशाह ने इसे नार्मजूर किया ।

अब तक भी यह रक्त बनी थी कि ईद के दिन या मौतेज या बाक-



प्राचीन मर्यादा का पाखन करते थे, तथा प्रत्येक गवर्नर जनरल दिल्ली आकर ठनने मिलता था। परन्तु जब चारन हेल्सिंग्म गयार हुए, तब बादशाह अकबरशाह ने हेल्सिंग्म को विश्वासी सुझाया चाहा। परन्तु हेल्सिंग्म ने साफ़ इनकार कर दिया, और यह कहा कि मुझे इस नियम को स्वीकार करने में ऐतसाज़ है कि, दिरजा के बादशाह काशमी की सरकार के अधिराज है।

जब लॉर्ड एमहस्ट गवर्नर बनकर आये, तब दिल्ली आकर बादशाह से मिले। इन्होंने यह प्रथम ही तय कर लिया था कि इस मुल्काजात में प्राचीन शाही अलफ़ाब आदाब काम में न लाये जायेंगे। जब गवर्नर बादशाह के सामने पहुँचा, तब वे तख़्त पर बैठे थे। एमहस्ट बादशाह के सामने दाहिनी ओर की शाही कुर्ची पर बैठे। उनका राज बादशाह के बाईं ओर था। रज़ीदेयत और बटे-बटे तमाम अफ़सर खड़े रहे।

जब बात चीत शुरू हुई, तो खाटा एमहस्ट ने बात चीत में सब अलफ़ाब आदाब बदल दिये, और इस प्रकार बादशाह तमाम दरबारियों की बज़र में सुख्य होगये। उन्होंने युगाने शायदों को भी राजनैतिक एल्ल कह कर पाखन करने से इनकार कर दिया। इसके बाद जो पत्र व्यवहार बादशाह से अँगरेज़ी सरकार का हुआ, उसमें भी कोई आदाब-अलफ़ाब काम में नहीं लाया गया।

इस मुल्काजात का जो असर हुआ, उसका बयान 'पीटर थॉर्स' नामक एक अँगरेज़ ने इस भाँति किया है —

‘इससे प्रथम कि इस करपना का अन्त कर दिया जाय कि अँगरेज़ी सरकार दिल्ली के बादशाह की प्रजा है, अत्यन्त स्वभाविक था कि इस से आने एक अवदस्त मनसुनी पैदा कर दो थी; क्योंकि यह पहला अवसर था, जबकि हमने सुजे और निश्चित और पर दृष्टि-सत्ता की स्वाधीनता का प्रतिपादन किया। लोग आम और पर यह कहते थे कि—हिन्दोस्तान

॥ गवर्नर की मुहर पर 'दिल्ली के बादशाह का क्रिदशी ज़ात' सुझा रहता था।

१—दिल्ली का ज़िन्दा छाती करना पड़ेगा ।

२—एक लाख मारिक के रथान पर १२ हजार राये मारिक राय के जिंघे मिला करेगा ।

१० मई को सन् १२० का विद्रोह मोरठ में पूरा निकला और उमरी दिन रातो ज़ीने दिवली को चला दी । यह ज़ीने ११ मई को दिल्ली में आ पहुँची । दिल्ली के सिपाही उनसे मिल गए और सज्जमों को मार डाला । संतुल मना कारमीरा दाराजे से शहर में घुसी । दरियागंग को तमाम चैम्पेज़ी मस्ती जज़ा दाज़ा गई, और बहुत से चैम्पेज़ी काट डाले गये । दिवली के ज़िन्हे पर सुरूत उनका कज़ा होगया । इनने में मरठ की पैदाश ज़ीने और सोपज़ाना भा था पहुँचा । उसने ज़िन्हे में घुसते ही बादशाह को ११ सोपों की सलामी दी । बादशाह ने उनसे कहा - 'मरे पास कोई ज़ानावा नहीं । मैं आप लोगों की तनज़वाह कहाँ से दूँगा ?'

सिपाहियों ने कहा--"हम लोग हिन्दुस्तान भर के चैम्पेज़ी खज़ाने का बूढ़का भाप के बूढ़ों पर डाल देंगे ।'

अन्त में बादशाह ने सहर का नेतृत्व ग्रहण किया । ज़िन्हो में प्रत्येक नागरिक ने विद्रोह का हरागत किया । जो चैम्पेज़ी कहाँ मिला काट डाला गया । दिवली निषाही विद्रोही सिपाहियों को ओलों और पत्तारों का शरयत सुदियों में धोड़ धोड़कर बिखाने लगे । दिवली का चैम्पेज़ी दूतावात बूढ़कर मज़ा मिया गया । अन्य चैम्पेज़ी हमारयें भी तहस भदस कर दी गई । दिवली के मेगज़ीन में ६ भारत कारगुप, १० हजार बन्धुक तथा बहुतसा गोला-बारूद था । मेगज़ीन में ६ चैम्पेज़ी और कुछ हिन्दुस्तानी सिपाही थे । हिन्दुस्तानियों ने जब ज़िन्हे पर डरा और सुनहरा मरठ का डराने देखा, तब ये भी उनमें मिल गये । जो चैम्पेज़ी ने मेगज़ीन का बचना अममभव देखकर उसमें आग लगादी । उसके धडाके से तमाम दिवली दिव गई । ६ चैम्पेज़ी, २२ हिन्दुस्तानी सिपाही और ३०० चारमी इधर उधर गली में टुकड़े टुकड़े होगये । बन्दूकें विद्रोहियों के हाथ आई । प्रत्येक सिपाही को ५२ बन्दूकें मिलीं ।

शाह की साख गिरह पर गवर्नर खानख और कमायदर इन चीक, दोनों, शाही दरबार में हाज़िर होकर था रेज़ीडेन्ट द्वारा, नज़रें पेश करते थे। बहादुरशाह के तख़्त पर बैठने तक भी यह रस्म की गई थी। परन्तु इसके कुछ ही घण्टा बाद खॉर्से एलेनमूक ने इस नज़ा को भी बन्द कर दिया।

इस घण्टा पर गवर्नर-जनरल खाटें एलेनमूक ने रेज़ीडेन्ट टॉमस मंत्राफ को लिखा था—

“बादशाह की करारी शानो-शौकत का ग़ार उतर चुका है। उसके वैभव की पहली सी चमक दमक नहीं रही। बादशाह के वे अधिकार बिन पर समूर के ज्ञानदानवालों को धमक या, एक दूसरे के बाद ख़िन चुके हैं। इसलिये बहादुरशाह के मरने के बाद कलम के एक डोबे में ‘बादशाह’ की उपाधि का अन्त कर देना कुछ भी कठिन नहीं है। बादशाह की बज़र, जो गवर्नर-जनरल और कमायदर इन चीक देते थे, बन्द हुई। नज़रों का सिक्का, जो बादशाह के नाम से बाका जाता था, बन्द कर दिया गया। गवर्नर-जनरल की मुहर में जो पहले ‘बादशाह वा क्रिदवी-ख़ास’—ये शब्द रहते थे, वे निबाख़ दिये गये, और हिन्दुस्तानी रईसों को सम्बाह कर दी गई कि वे अपनी मोहर्तों में बादशाह के प्रति ऐसे शब्दों का उपयोग न करें। इन सब बातों के बाद गवर्नरमेंट ने अथ ज़ैसखा कर लिया है कि, दिखावे की अथ कोई भी बात ऐसी न रखी जाय, जिससे हमारी गवर्नमेंट बादशाह के आधीन मौलूम हो। इसलिये दिल्ली के बादशाह की उपाधि एक ऐसी उपाधि है, जिसे रहने देना गवर्नमेंट की इच्छा पर निर्भर है।”

सन् १८३६ में बादशाह का पुत्र दाताग़ज़त की मृत्यु हुई। बादशाह उसके बाद बेगम ज़ीनतमहल के पुत्र शाहज़ादे जवाँहरत को सुवराज नियत किया चाहते थे। परन्तु ब्रिटिश सरकार ने बादशाह के आठ पुत्रों में से मिरज़ा क्रोमास के साथ एक गुप्त सन्धि करके उसे सुवराज स्वीकार कर लिया। उस सन्धि में तीन शर्तें थीं—

१ — वह बादशाह के स्थान पर ‘शाहज़ादा’ कहा जायेगा।

दुरमर्षों को एक-ही दिन में मार भगावेंगे, परन्तु मेरे विचार में अब पर विराम नहीं किया जा सकता।”

उधर चॅम्पेज़-सरकार ने इन राजाधों को अपने आधीन करने में कदी-कदी सुविधियाँ काम में लाई।

अब निम्न राजाधों की सहायता लेकर सर होरी बर्नार्ड भारी सेना ले, दिल्ली पर चढ़ गये। उगहाने भी मार्ग में खूब मार, अग्नि काण्ड, जल्ले आम बराबर जारी रक्खा। उधर दिल्ली में पञ्चन और प्रज्ञाने जमा हो रहे थे। बादशाह के नाम राज भक्ति के पत्र आ रहे थे। शहर में बारूद और हथियारों के कारखाने खुल गये थे जिनमें हथौतों से तोड़ डकड़ों, और हजारों मन बारूद तैयार होती थी। बादशाह, हाथी पर बैठकर नगर में निकलता और नगरवासियों को डरवाहित करता था।

बादशाह ने एक पेशान छपाकर सब क्रीडों और बाज़ारों में बँटवाया था। वह इस प्रकार था—

“तमाम हिन्दू मुपजमानों से नाम। हम महज़ा अरना धर्म नमस्कार बनता के साथ शीक हुए हैं। इस मौके पर जो मुझदिली दिखावेगा — या भोजवन के काख दगाबाज़ क्रिस्त्रियों पर एतवार करेगा — वह सन्धु गमिन्द्रा होगा, और इज़तिस्तान के साथ अरनी बराबारी का पैसा ही इशाम पावेगा, जैसा खन्वनऊ के गवाओं ने पाया। हमके अज्ञावह इस बात की भी ज़ास्त है कि इस सज़ में तमाम हिन्दू और मुपजमान मित्र का काम करें, और किसी प्रतिष्ठित नेता की हिदायतों पर चलकर हम तरह का व्यवहार करें, जिससे कि अमनो अमात कायम रहे, और शरीफ सन्तुष्ट रहें तथा इनका रसवा और शान बढ़े। जहाँ तक मुमकिन हो सकता है सब का चाहिये कि इस पेशान की नज़र क के किसी आम जगह पर लगायें।”

अब दिल्ली में युद्ध छिड़ा, मिरज़ा मुगल सेनापति थे। पर ये सुप्रबन्धक और सुशासक न थे। वे कोई सेनापति ही उस समय योग्य था। बादशाह ने उनकी जगह बख़्तख़ाँ की प्रधान सेनापति बनाया। वह बार

शीघ्र ही यह विद्रोह की आग भारत भर में फैल गई। असंख्य भोगरेज मारे पाटे और लूट लिये गये।

लॉर्ड केनिंग ने एक भारी सेना जनरल नील की आधीनता में विद्रोह दमन को भेजी। यह सना बिचारे से गुजरी, रास्ते भर बिना बिचारे ब्रजे भ्राम करती, गाँवों को लूटती, और धूँकता घरी चली ग्राह। इस समय का यर्ज़न् सर बॉन ने ह्व प्रचार किया है —

‘फौजी और सिविल दोनों अदायतों बिना किसी तरह क मुकदमे का होंग। चे, धार बिना मर्द औरत या छोटे बच्चे का बिचार किये—मारत घासियों का सहार कर रही थीं। घड़ी औरतों और बच्चों का बली ताह बध किया गया, भिन प्रकार विद्रोहियों का। उन्हें सोच-समझकर फाँसा नहीं दो गइ, उरिक्त उन्हें उनके गाँवों में अदर बजाकर मार डाला गया, गाँवों से डहा दिया गया। सड़कों के चौस्तों पर, बाजारों में दो फार्शें टेंगी हुइ थीं ठाको उठार। मैं प्रात फाल से सभ्या तक मुरादे दोने घासी आठ-आठ गावियाँ ब्यापर सोन महीने तक खाली रहों।”

जनरल नील भयानक मार पाट करता हुया हवाहावात तक बधा चया गया। इताहावाद का त्रिज्जा अथ भी सिक्खों की बदीलत भोगरेसी अशिक्षा में था। यहाँ के विद्रोही नेटा मोलघी लियाक़तअली ने उठ कर युद्ध किया। अठ में ताव फाल करयेका ज्ञाता जेहर कानपुर को भाग आया। इताहावाद म भयानक ब्राजे आन और अग्नि-कायड करक यह लेना आगे बढा। —बखनक, कानपुर इत्यादि विद्रोह के मुख्य केन्द्र थे। उधर सिक्खों ने किसी भीति विद्रोह म महायत्ता न दो। बादशाह ने एक अगना ग्राम दून ताजुद्दीन पटियाबा, नामा आदि रिषामतों क राजाओं के पास भेजा था। उनने बादशाह को लिखा—

“बिर मरदार सब सुरत और फायर हैं। उनने बहुत कम आता है। वे क्रिगियों के हाथों के खलौने है। मैं उनसे एकात में मिजा और बाते की उनके पामने कबजेजा पानो कर, दिया। ह्व पर उहों भयाव दिया—हम मौजे की इन्तजारी में है। बादशाह का हुक्म होते ही हम

रथीम अगस्त तक युद्ध होता रहा। इसके बाद बिद्रोही मेरा में इस भाव उत्पन्न होगया। अब साहस्य करके चँमेत्री सेना नगर की ओर बढ़ने लगी। इस समय चँमेत्री सेना में पाँच हजार सिक्ख, गोरखे और पंजाबी तथा दार्द हथार कारमीरी और अन्य महाराज और चपली सेना सहित थे। दोनों ओर भयानक सार-काट होती गई। अन्त में १४ सितम्बर को चँमेत्री सना दिवली में घुस आई। इसी दिन सेनापति निकलमन घायल हुआ और २२ सितम्बर का अन्त्येष्टा म मरा। इस चम्पवस्था बढ़ गई थी। कुछ सेना दिवली छोड़कर चले दी। अन्त में १६ सितम्बर तक अधिकांश नगर चँमेत्री अधिकार में आगया। तब बादशाह क्रिमा क्रोध का हुमायूँ के मन्त्रियों में खले गये। अन्तर्गत मन्त्रियों की दाहिनी ओर शीव शिखे पड़े थे। उन्होंने बादशाह से कहा—“अभी आप हिम्मत न हाविये। मेरे साथ दिवली से निकल चलिये। हम पूरी सैपारियों से फिर युद्ध करेंगे।” पर मिरजा हजाहीबख्श, जो चँमेत्रियों के पूजेय थे, बादशाह से भागने की सलाह न देते थे। अन्त में बादशाह ने उससे कहा—

‘बहादुर, मुझे तेरी सार का यकीन है, और तेरी सार भी दिव से पसन्द करता हूँ, मगर, जिस की कुश्कल न सारा दे दिया है। इसलिय मैं मातका सऊदार के दवाले करता हूँ। मुझे मेरे हाथ पर छोड़ दो, और विविगियलाद करो। यहाँ से जाओ, और कुछ काम करके दिखाओ! मैं नहीं, मेरे खानदान म से नहीं, तुम या और कोई हिन्दुस्तान की लाज रखे। इसारी क्रिड न करो, अपने कर्जों को अदा करो।’

बादशाह के इस जवाब से अन्तर्गत हताश होगया। यह गर्दन भीषी करक मन्त्रियों के पूर्वी दरवाजे से निकल आया। उधर हजाहीबख्श ने परिषदी दरवाजे से निकलकर बसाम इस्तन की सुचना दी, कि बादशाह को गिरफ्तार करने का यही समय है। उसने शुभ २० सवार सेकर, परिषदी दरवाजे पर पहुँच, बादशाह को गिरफ्तार कर लिया।

बादशाह, योगम जीनतमहल और शहजादे जर्गवस को आकर बाक क्रिड में छोड़ दिया गया। अन्तर्गतों का किसी को पता नहीं लगा।

## इस्लाम का विप युद्ध

और माहसी था। इसके साथ चौदह हजार पैदल, तीन हजार सवार, और अनेक तोपें थीं। सारा को डमने छ महीने का वेतन पेशगी बांट दिया था, और चार लाख रुपये बादशाह को नजर दिया था। उसने नगर में घोषणा कर दी थी, कि कोई शस्त्र-रहित न रहे। जिनके पास शस्त्र न थे, उन्हें मुफ्त में हथियार बांट दिये गये। यह प्रबन्ध कर, तीन जुगाई को आम परेद हुए। इसमें बीस हजार विपाही सम्मिलित थे।

चार जुगाई को बघतख़ाँ ने थैमेजी मेना पर आक्रमण किया। छोटे मछे घमासान हुए हुए। अय्यपुर, बोधपुर, विजिगा, और होतखर घसी तक आगा-पीछा पड़ रहे थे। फिर भी बादशाह के पास पचास हजार सेना थी। परन्तु सेनानायक का अभाव था। बघतख़ाँ धीरे धीरे माहसी था, पर कुछ-बरा का डब न था और बूझीत राजे उसकी छापीनता में मुद करना अपना अपमान समझते थे।

बादशाह ने शोरा में आकर एक ज़त राग़श-राजाओं को अपने हाथों से लिखा—

“मेरी यह लिखी इबादिरा है कि जिस जरिये और जिस क्रोमत्त पर भी हो सके, विरदियों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल दिया जाय। मेरी यह जयदास्त फ़रादिरा है कि समस्त हिन्दुस्तान आजाद होजाय। इस मज़-सद को पूरा करने के लिये धो लड़ाई शुरू की गई है उसमें उस तक तक क्रतदयायी नहीं होगकती, जब तक कि कोई शास्त्र अपने ऊपर ऐसी जिम्मे बरी न ले ले जा क्रोम की मुद्रनजिक ताक़तों को संगठित करके एक ओर लगा सकें और अपने तई समस्त क्रोम का जुमाहन्दा कह सकें। थैमेजों का हिन्दुस्तान से निकाल देने के बाद अपने जाती फ़ायद के लिये हिन्दुस्तान पर हुकूमत करने की मुझे ज़रा भी इबादिरा नहीं है। अगर आप सब देशी राजे दुरमन को निकालने की शरज से अपनी सबवार खोचने के लिये तैयार हों तो मैं इस बात के लिये राजी हूँ कि अपने समस्त शाही हुज़ूर और अफ़यारात ग़ज़ाओं के ऐसे विरोध के हाथों में मौप हूँ—जो इस काम के लिये जुने धार्ये।”

१२

३३

यह ज्ञात हुआ किने के बाद ३ दिन भयंकर ज्वर की तीव्र बाढ़ को लुटा रहा। इसका इयन निजामा साहब ने घायली पक्ष पुनः में लिखा है कि— एक दुम्मा फौज का इस काम के लिये नियुक्त किया गया कि वहाँ कहीं आयात्री पाओ - मर, बीमार और बर्बाद को घर के भयदायक-मरित गिरफ्तार कर, खं आओ। आगे-आगे मर दागदाग के मर मिट पर अपने हुए आने, और पीछे पाएँ उनही बीमारी मरने पा-रिज और बर्बादों का साथ लिये हुए। जिन बीमारों को मर पाकर बर्बादों को आदर म थी, वे दोहरे आ-मरार गिरती थी, बाप मरने म मरि पड़ते थे और सिताही मरने के साथ उन्हें आगे चलने के लिये बर्बाद थे।

‘जब वे छोड़ आने वेग होने लगे तब दिवा लागी कि अगलाज के जितनी बीमारी चाहें हैं, उन्हें हँसकर जल मारो। मरने की बीमारी उन्हें बाधित न दो। यह हो चुकने पर दूसरा हुक्म हुआ कि उन्हें सिताही की देख-रेख में गाड़ीरी दरवाजे तक ले जाओ, और वे लोग बाहर से बाहर चला देकर निकाल दिये जाने।

दिल्ली शहर के बाहर इस प्रकार हजारों मर, बीमारी और बर्बाद मरहाफ, नगे पाँव, नगे गिर गूले प्याले गिर रह थे। “मिकी माताएँ छोटे बच्चों का दुख न दूर करने के कारण उन्हें अदृष्टा धोकर कद में डूब मरा। नगर के अन्दर हजारों बीमारी दिगी थी, जो वे इम्पूरी और मुमीयतों से बचने के लिये दुर्घा में गिरने लगी। वे जलनी अधिक संख्या में गिरि कि दुखने का पानी न रहा। अनेक मरने बीमारी की बाढ़ों से मर गये थे।

“इस प्रकार बदनमीन दिल्ली ने एक बार फिर आगलाज दिन देखे। शाही आनदाम पर घुरी जाती। मरुनों को ला मारीय हुए। कुछ शाहसादे खेजपाते में भेज दिये गये। जब वे न कर सकेंगे थे—तो कल के कोनों की गार पड़ती थी।”

कोमराता

मनामा मीकता



बादशाह के दो बेटे मिरजा मुसल और मिरजा अफ़्जल सुलतान तथा बादशाह का पोता मिरजा अकबर हुमायूँ के मक़बर में ज़प भी थे। इन्हीं की वजह से सूचना पाकर इल्तुमिश ने फिर यहाँ आकर उन्हें ज़ेद कर लिया। इल्तुमिश के समझाने से वे चुनबा ज़ेद होगये। जब उन्हें रथों पर मगार कराकर इल्तुमिश शहर की ओर बौल, और शहर पक भीड़ रह गया तब उसने रथों को उलटकर और साइनाहों को रथों से उतारने का हुक्म दिया। इनके फइड़े उतरवाए और एक भिखाह के हाथ से समवा लेकर दोनों को गोली मार दी। उनके बाद उनके तख़्त तिर फाट किये गये, और उन्हें ह्माज़ में रखकर बादशाह के सामने पेश किया गया, और कहा गया— 'आपको बहुत दिन से शिफायत था कि कमरों ने आपको ख़िराज़ नहीं दिया। यह ज़िंमन हालिह है।'

बादशाह ने देखकर मुँह फेर लिया और कहा— "अल्लह्म शिज़ाह।" 'तैमूर की मौआद है, जा सुज़ंफ़ होकर पार के सामने आई है।'

अगले दिन दो निर भूमी दरवाज़ों के सामने खटका दिये गये। और घण कोतवाली के मांगी टांग दिये गए। दूसरे दिन उन्हें ज़मना में फिक्का दिया गया। इनके बाद दिहरी की तख़्तोंन भयानक अवस्था का रोमांचकारा वृत्तांत खोंडें शब्दों ने लिखा है—

"हम सुबह को खादीरी दरवाज़ों से चादनी खोल गये, तो हमें शहर वास्तव में मुर्दों का शहर नज़र आता था। कोई आवाज़, बिनाय हमारे घोड़ों की टापों के, सुनाई नहीं दती थी। कोई जीवित मनुष्य नज़र नहीं आया। सब ओर मुर्दों का निज़ोना बिछा हुआ था, जिनमें से कुछ मरने से पहले पड़े लिपक रहे थे।

हम खज़ते-खज़ते बहुत धीरे धीरे बाट करते थे, हम डर से कि कहीं हमारी आवाज़ ने मुर्दों को चौंक पड़े। एक ओर छाशों को कुल खा रहे थे और दूसरी ओर छाशों के आस पास गिद्ध बसा थे, जो उनका मौत भोज नाचकर खा रहे थे, और हमारे घोड़ों की टापों की आवाज़ से बच-बचकर थोड़ी दूर परे जा बैठते थे।

है कि थय हम प्रयत्न प्रतापी मिटिश की कायदाद हैं—उस समय उसमें वही शाही छटा देखने को मिलती है। जगर खोज की जाय तो आज भी वहाँ नवाब फनकने और नवाब बदेर देखने को मिल सकते हैं। खम्मीरी तम्बाकू की मोती मँहक में हूषकर प्रत्येक पुराना मुसलमान थय भी अपने ऊपर इतराता है।

खलनक की नवाबी की जीव नशाब सभादतख्त खर्गमुल्लू सुल्तान ने शाही थी। इनका थसली नाम मिरजा मुहम्मद अमीर था। उन दिनों दिल्ली के तख्त पर मुहम्मदशाह रेंगीले मौज पर रहे थे। अवध में तब खैरों ने बड़ा ऊँचम भया खला था। उनकी देखा देखी दूसरे जमींदार भी सरका हो उठे थे। जो कोई अवध का सूबेदार बनकर जाता, उसे ही मार डालते थे। इमलिये बादशाह किसी ज़बरदस्त आदमी की तलाश में थे। मिरजा साहब का दिवली दरबार में बड़ा भारी दबदबा था। वहाँ तक कि खय बादशाह सलामत भी इनसे सशय रहते थे। वे इन्हें दरबार से हटाना चाहते थे, और अन्त में अवध की सुबेदारी देकर उन्होंने इन्हें दूर किया।

बादशाह ने मिरजा साहब को अवध की सुबेदारी और खिलमत तो दे दी थी, पर फौज का कोई भी न-दोकरत न था। मिरजा साहब ने हिम्मत न डाली—आवाज और बेहार मुसलमान-सुल्तानों को घटोरकर सगठित किया और कहा—“क्यों पड़े-पड़े बेकार जिन्दगी बरपाद करते हो? सुदा ने चाहा, तो अवध पर दज़ल करके गज़ा करेंगे।”

कुछ ही दिनों में हजारों आदमी जमा होगये। कुछ तोपे और शयियार शाही शस्त्रागार से मिल गये। इस फौज को अवध तक ले जाने और सामान के लिये बैल खरीदने को मिरजा ने अपनी धोगम के ज़ेवर बेच दाले।

थय मिरजा इस ठाठ से चले, तो रास्ते में आगरे के सूबेदार ने इन की ज़ातिरदारी करनी चाही। आपने कहा—“जो कुर्या मेरी ज़ातिर खवाज़ में प्रार्थ करना चाहते हो, मुझे नज़द द दो, क्योंकि रुपये की मुझे बड़ी जरूरत है।” आगरे के सूबेदार न पहा किया। वहाँ से चलेकी पहुँचे

## इस्लाम का निषेध

किया था, एक दिन दिरन्नी के पास बाग़ में घोड़े पर सवार बना खड़ा दिखाई दिया था। दहमन उसकी सलाह में घूम रहा था। उसके पास आज तक उसका पता न लगा, कि कहाँ है ?

महमूदशाह की एक बेटी रज़िया बेगम ने रोटियों से मुहताब होकर दिल्ली के एक बाग़ में हुसैनी से शादी करली थी। उनकी दूसरी बेटी क़ातिमा मुलताना ७ ईसाई-ज्ञानानुसूत्र में नौदारी करली। बादशाह, बेगम ज़ीनतमहल और शाहज़ादा ज़ाहिरुद्दौल्लाह के रंगून भेजे गये, जहाँ सन् १८५३ में इन्हें मृत्यु बादशाह का देहाव हुआ, और उनके साथ साथ दिल्ली के प्रतापी मुलाज-साम्राज्य का टिमटिमाता दीपक सदा के लिये बुझ गया ॥

( १३ )

## तख्ते-लखनऊ

दिल्ली इस्लाम की पाम प्रतापी राजधानी बनकर रही—परन्तु इस धामी नज़ाकत, जो ऐरावी और मरु से उत्पन्न हुई थी—उसका ज़हूर तो खलनऊ ही में नज़र आया। आज भी खलनऊ अपनी क़ानून और नज़ाकत के लिये मशहूर है। खलनऊ के मन्तव्यों के एक-से एक बढ़कर मजोबार और आश्चर्यजनक कारनामे सुनने को मिलते हैं। यह बाँकपन वह अलख रूपन, वह रहस्यो भेदगुहो दुनियाँ में सिर्फ़ खलनऊ ही के हिस्से में थाई थी। आज भी वहाँ सैकड़ों नवाब जूरे खटकाते खिरे हैं। यद्यपि अंग्रेज़ी दौर कीरे ने खलनऊ को पूरा ईसाई बना दिया है, पर कुछ बुढ़ा खूबत अथ भी गज़ मर चौद पाँच के पायबामा और हज़ी दुपारजी टोपी पहनकर उसी पुराने टाट से निकलते हैं। सज़ियेदारी के दिन भागों खलनऊ मूँज जाता

अधिवेमीरकासिम को जान से परिभ्रम कर रहा था। शुजाउद्दौला बादशाह के वजीर और मन्त्र थे। मीरकासिम ने उनसे सहायता माँगी थी। उस समय अँगरेजी कम्पनी के अधिकारियों ने मीरकासिम को नवाब बनाया था। शुजाउद्दौला ने एक पत्र अँगरेज कौन्सिल को लिखकर बादशाह के अधिकार और उनके कर्तव्यों की चेतावनी दी थी। पर उसका कोई फल न देख, युद्ध की तैयारी कर दी। युद्ध हुआ भी, परन्तु अँगरेजों की मेद नीति से शुजाउद्दौला की हार हुई। उसमें नवाब को हजारों के पचास लाख रुपये और हुसाहाबाद तथा कड़े के जिले अँगरेजों को देने पड़े। अँगरेजों का एक एजेण्ट भी उन के यहाँ भेजा गया, और दोनों ने परस्पर के शत्रु मित्रों को अपना निजु शत्रु मित्र समझने का कौल करार भी कर लिया।

नवाब को हमारतों का भी बड़ा शौक था। १० लाख रुपये के जंगम और हमारतों पर भी खर्च किया करते थे। इनकी बनाई हमारतें आज भी खसतक की रोशनी हैं। दौलतगज या दौलतखाना जहाँ नवाब दर्य रहते थे—इन्द्र भवन के समान शोभा रखता था।

यह वह समय था, जब ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की कौंसिल में वारेन हेस्टिंग्स का दौरा होता था, और मुगल सम्राट शाह आज़म के पैरों नीचे गमगा रहा था। हम कह आये हैं, कि खसतक में भी कम्पनी का एक रेज़िडेण्ट रहता था। उस समय तक रेज़िडेण्टों को नवाब के सामने जाने पर दरबार के नियमों का पालन करना पड़ता था, और अन्य दरबारियों की भाँति उन्हें भी श्रद्धा के साथ नवाब से मिलना पड़ता था।

नवाब ने रेज़िडेण्ट के रहने के लिये एक विशाल हमारत बनवाई थी, जो तद्वर की घटनाओं के कारण अब बहुत प्रसिद्ध होगई है।

एक बार नवाब घोड़े पर सवार सैर को निकले, तो एक चूना आप के घोड़े की टाप के नीचे दब गया। इस पर आपने वहाँ उस की उग्र खना दी, और एक भाग खगधाया को 'मृषा बाग' के नाम प्रसिद्ध है। वह भाग नवाब को बहुत प्रिय था। इसी में बादशाह जानवरों की खवाई देखा करते थे।

तो यहाँ के सुदेदार से भी दावत के बदले रूपया खीज कर लाया था। वहाँ के नवाब ने कहा—“लखनऊ के शेर बड़े खड़ाके और चक्क के आदमी भारी सरदार हैं। आप एकाएक गंगा नहर, पहले आस-पास जमींदारों को और रईमों को मिला लें, सब सब की मदद लेकर लखनऊ पर चढ़ाई करें।” मिरजा ने यही किया—और जब ये धूम धाम से लखनऊ पहुँचे और शेरों को अपने आने की सूचना दी, तो ये इनकी सेवा से डर गये, और कहा—“आप गोमती के उस पार मच्छी भवन में देरा ढालिये।” मच्छी भवन अनायास ही दरवाजा हुआ देवदर मिरजा बहुत खुश हुए क्योंकि उन्हें आशा न थी कि बिना रक्तपात हुए सफलता मिल जायगी।

नवाब ने अपने मुखवाच और चतुर्गई स भोदे ही दिनों में सूबे की आमदनी सात लाख रूपया कर दी। और घड़ाईव वरों तक बड़ी सफलता से शासन किया। मृत्यु के समय मिरजा ने भी करोड़ रुपये जमा थे। यह मन् ११२० हिजरी की बात है।

इनकी मृत्यु पर इनके भाँजे और दामाद मिरजा मुहम्मद मुन्नीम अजुज मम्सूरगर्ज सफ़दरजा के नाम से बजारे नवाब नियुक्त हुए। यह अपनी राज-धाबी लखनऊ से उठाकर फैजाबाद ल गये। यहाँ नवाब की सेना की छावनी थी। यह बुद्धिमान न थे इसलिए इनका जीवन युद्ध और कगर्हों में गया। इनके समय में शेर फिर तिर उठाने लगे। अन्ध सरदार भी बागी होगये।

इनमें एक गुण था—एक-नारी प्रीति। इनकी पत्नी नवाब सदा वहाँ बेगम युद्ध-स्थल में भी छाया की आँखि साथ रहती थीं। ये सौदाह वष नवाबी भोगकर मरे।

इनके बाद मिरजा जखालुद्दीन हैदर नवाब शुभाजिदा के नाम से मसलत पर बैठे। ये २४ वर्ष की आयु के हीर युवक थे पर चरित्र ठीक न था। गद्दी पर बैठते ही किसी हिन्दू स्त्री के अपमान करने के कारण हिन्दू विगड़ गये। परन्तु इनकी माता से बहुत-कुछ समझा-बुझाकर हिन्दू रईमों को शान्त किया। इन्होंने बाईस वर्ष तक नवाबी की। इनके जमाने में निजामी की गद्दी पर बादशाह सादरगढ़म थे, और अगाख की सुबेदारी के

रहस्यों से ढाये रख्य करता था। विरक्त हो, नवाब ने चुनार के बिले में गवर्नर से मुजाफात की, और बताया कि केवल सेना की मद में ही मुझे एक बड़ी रकम देनी पड़ती है।

अतः में गवर्नर न नवाब से मिलकर यह तै किया, कि चूंकि स्वर्गीय नवाब शुजाउद्दौला मृत्यु के समय में अपनी माँ और बिधवा बेगम को बड़े बड़े खजाने दे गया है, और कौशाबाद के महल भी उन्हीं के नाम पर गया है, तथा ये बेगम अपने असंख्य सम्बन्धियों, चाँदियों और गुलामों के साथ वहीं रहती थीं—अतः उनसे यह रकमा ले लिया जाय। आसफुद्दौला यह बात सुनकर बहुत लजित हुआ, पर लाचार हमें सहमत होना पड़ा, और इसके प्रबन्ध अंगरेज अधिकारी स्वयं कर लेंगे, यह निश्चय होगया।

पाठकों को स्मरण रखना चाहिये कि शूत नवाब इन बेगमों को धौंग-रौंगों की संरक्षता में छोड़ गये थे। अब इन पर काशी के राजा चेतनचंद के साथ विद्रोह में सम्मिलित होने का अभियोग लगाया गया, और सर इल्हा-हूजा कद्दारों की डाक बैठाकर इस काम के लिये कलकत्ते से तेज़ी के साथ रवाना हुआ। सख्तमछ पहुँचकर उसने गवाहों के इलफनाये लिये, और बेगमों को विद्रोह में सम्मिलित होने का प्रसन्नता परके कलकत्ते लौट गया।

कौशाबाद के महलों को अंगरेज़ी फौजों ने घेर लिया—और बेगमों को हुक्म दिया कि आतः कौदी हैं, और आप समस्त ज़ेबरात, सोना, चाँदा, जवाहरात दे दीजिये। जब उन्होंने इसकार किया, तो बाहर की रसद बन्द कर दी गयी, और वे मूर्खों मरने लगीं। अतः में बेगमों ने पिटारों पर पिटारे और खजानों पर खजाने देना शुरू कर दिया। हम रजम का आदाता एक करोड़ रुपये के अनुमानत होगा।

इस घटना से अथर्व भर स सहजका मच गया, और आसफुद्दौला का दिल डुकड़े डुकड़े होगया।

हमके बाद हेस्टिंग्स ने कनख ईमरी को नवाब के यहाँ भेजा और उसे बहराहच तथा गोरखपुर ज़िलों का कलकत्ता बनवा दिया। इसने उन ज़िलों



इनके बाद मवाब आसफ़उद्दौला के भाई सच्चादतघलीज़ाँ गद्दी-शीन हुए। इस समय इनकी उम्र ३० वर्ष की थी। ये बड़े बुद्धिमान, कूरदर्शा, ईमानदार और योग्य शासक थे। पर, लोग इन्हें कज़ूम कहा करते थे, क्योंकि ये आसफ़उद्दौला की भाँति शाह ख़र्च न थे। परन्तु ख़र्च की ख़गद पीछे न इटते थे। ये ऑंग्रेज़-सरकार के बड़े भक्त थे क्योंकि इन्हें ऑंग्रेज़ सरकार ने ही गद्दीनशीन किया था, और उम्र तक कम्पनी के ग़ाय इनकी ये शर्तें हो गई थीं —

१ — कम्पनी की बकाया रकम दे दें।

२ — इलाहाबाद का ज़िन्दा कम्पनी का है। उमकी मरम्मत के लिए घाठ ख़ास करवा दे दें।

३ — फ़तहगढ़ के ज़िले की मरम्मत के लिये सीन ख़ास रुपये दे दें।

४ — क़ौज़ों के ऊपर उधर जाने जाने का इर्षा दें। कितने ख़ास ? — यह पीछे देखा जायगा।

५ — उन्हें तनाव बनाने का चेष्टा में लो ख़र्च हुआ, उसके लिये १२ लाख रुपये दें।

६ — पदच्युत मवाब बग़ीतारों को सेह ख़ास की पेन्शन दे।

७ — 'सब मीरियरी सेना के ख़र्च के लिये २८ लाख के स्थाण पर ७६ लाख करवा ख़ालाना दे।

मेजर घड का अनुमान है कि इस प्रकार कुछ मिलाकर एक करोड़ रुपये से ऊपर लगा इलाहाबाद का ज़िला एक वर्ष ही के अन्दर कम्पनी को मिला गया। एक बात यह भी कि सिवा कम्पनी के धादमियों के अन्य कोई भी यूरोपियन अवध राज्य में न रहने पावे।

इस सन्धि के सम्बन्ध में फ़तहगढ़ा रिग्यु में सर हेनरी लॉरेन्स ने लिखा था "शायद सर जॉन शोर की सन्धि से ऑंग्रेज़ पाठकों के सब से अधिक यह बात ख़टक, कि अवध के शासन प्रबन्ध का हममें कहीं झरा भी बिक नहीं है। मालूम होता है कि अवध की प्रजा सब से बढ़कर बोली बोलनेवाले के हाथ नोख़ाम कर दी गई। सर जॉन शोर ने



पर भयानक सत्याचार किया, और तीन वर्ष के अन्दर ही उसने पैताबीस लाख रुपया कमा लिया। मवाब ने तब होकर उसे बर्खास्त कर दिया। पर इस्लाम न फिर उस मवाब के सिरमर्झा चाहता। तब नवाब ने लिखा—“मैं दूरत मुहम्मद की कसम खाकर कहता हूँ कि यदि आपने मेरे यहाँ किसी काम पर कर्मचारी को भेजा—तो मैं सख्तमत छोड़कर निरक्षर जाऊँगा।”

मर कौन कमार तीसरे अंगरेज गवर्नर थे। उन्होंने मवाब की पुरानी सन्धि को तोड़ डाला, और मवाब पर जोर दिया कि आप माये पाँच लाख रुपया साखाना इत्यर्थ पर एक अंगरेजी एग्न धरने पहाँ और रखें। मवाब 'सबसे सी दिया सना' के लिये पचास लाख रुपया साखाना प्रथम ही देता था। इसने हमसे इकार कर दिया। तब अंगरेजों ने जबरन मजीर मालखाना को पकड़कर छेड़ कर लिया। पीछे जब सर आन शोर लखनऊ पहुँचे, तो वह क्रोध का पत्र मवाब के सिर मड़ दिया।

हम धीगा मुरती से मवाब के दिल को सदमा पहुँचा। वह बीमार होगया, और दवा खाने से भी इकार कर दिया। इसी रोग में उसकी श्वासे होगई।

इन्होंने २१ वर्ष राज्य करके शरीर त्यागा। इसके बाद इनकी धँसी बत पर मिग्ना मजीरमली गद्दी पर बैठे। पर इन्होंने एक ही वर्ष में सबको भाग्य कर दिया। अन्त में ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने बनारस में उन्हें मजूर बन्द कर दिया। यहाँ उन्होंने विद्रोह की सैयारियाँ कीं, तो अंगरेजों ने उन्हें कलकत्ता भुजाया। लखनऊ में मि० जोरी उन्हें यह सम्देश देने गये, तो बात बढ़ चली और नवाब ने अपनी सख्तवार निजालकर साहब को राज कर दिया। मेम साहब भागकर बच गईं। आप नैपाल के खंगत्रों में भेष बदले मुरत तक फिरते रहे। अन्त में जब नगर के राजा के विरवांसध स से गिरफ्तार किये गये, और लखनऊ में तब पर कल का मुकदमा चला। पर गवाह कोई न मिलने से फाँसी से बच गये। तब वे कलकत्ते में छेड़ कर लिये गये। यहाँ वे २६ वर्ष की आयु में श्वासे को प्राप्त हुए।

इनके बाद नवाब आसफ़उद्दौला के भाई सच्चावतअलीख़ाँ गद्दीनशीन हुए। इस समय इनकी उम्र १० वर्ष की थी। ये बड़े बुद्धिमान, कूदशी, ईमानदार और योग्य शासक थे। पर, लोग इन्हें कजूस कहा करते थे; क्योंकि वे आसफ़उद्दौला की भाँति शाह खर्च नहीं थे। परन्तु खर्च की जगह पीछे न हटते थे। ये ऑंग्रेज़-सरकार के बड़े भक्त थे; क्योंकि इन्हें ऑंग्रेज़ सरकार ने ही गद्दीनशीन किया था, और उस बात कम्पनी के साथ इनकी ये शर्तें हो गई थीं —

१ — कम्पनी की बकाया राशियाँ दे दें।

२ — इलाहाबाद का क़िला कम्पनी का है। उसकी मरम्मत के लिए आठ लाख रुपये दे दें।

३ — फ़तहगढ़ के क़िले की मरम्मत के लिये सोन लाख रुपये दे दें।

४ — लीजों के ऊपर उधर जाने जाने का खर्चा दें। कितने लाख? — यह पाछे देखा जायगा।

५ — उन्हें नज़ाब बनाने का खेया में जो खर्च हुआ, उसके लिये १२ लाख रुपये दें।

६ — पदच्युत नवाब वज़ीराली को खेद लाख की पेन्शन दे।

७ — 'सब लीडियरी सभा के खर्च के लिये २ लाख के स्थापन पर, ७६ लाख दाया सालाना दे।

मेजर वड का अनुमान है कि इस प्रकार कुल मिलाकर एक करोड़ रुपये में ऊपर सदा इलाहाबाद का क़िला एक वर्ष ही के अन्दर कम्पनी का मिला गया। एक शर्त यह भी कि सिवा कम्पनी के आदमियों के अन्य कोई भी यूरोपियन अथवा राज्य में न रहने पाये।

इस सन्धि के सम्बन्ध में कलकत्ता सिन्धू में सर हेनरी जोरिन्स ने लिखा था — “शायद सर जॉन शोर की सन्धि से ऑंग्रेज़ पाठकों को सब से अधिक यह बात खटके, कि अवध के शासन प्रबन्ध का इसमें कहीं ज़रा भी बिक्र नहीं है। मालूम होता है कि अवध की प्रजा सब से तद्वक्त बोली बोलनेवाले के हाथ मोलाम कर ली गई।” सर जॉन शोर ने

अपघ की अपवाद को केवल एक ऑग्रेड-गवर्नर के हाथों की एक यिद्धी की चीज बना दो थी।”

इसके बाद अग गवर्नर होकर ऑर्ड वेल्शेजकी भाये, तो उन्होंने दो बप बाद ही यह संधि छोड़ दी। तमने बवाय को अपनी सेना में कुछ संशोधन करने की भी अनुमति दी। तम संशोधन का अभिप्राय यह था, कि माजगुजारी की बमुझी प्रादि के लिए जितनी सेना दफ्तर हो, उने घोड़र शेष सब सेना छोड़ दी जाय और उसके स्थाप पर कम्पनी के प्रमथ और मवाय के नाम से कुछ ऐसी सेनाएँ बखी जाएँ—जिनका खर्चा ७५ लाख रुपये साझाना हो।

मवाय ने इसके उत्तर में एक तर्क पूर्ण और बड़ा उत्तर लिखा, और ऑग्रेड सरकार को इस प्रकार हस्तक्षेप करने के लिए भाठी फटकार दी।

इस पत्र को ऑर्ड वेल्शेजकी ने तिरस्कारपूर्वक वापिस कर दिया, और मवाय का ज्ञिष दिया, कि कुछ पेग्शन साझाना छेकर सततनत से इत बामो या जो दो पक्षों में गई या रही हैं उनके छार्चों के लिये चाचा राज्य कम्पनी के हवाले को।

ये पक्षों में भेज दी गई और रेजीडेण्ट को लिख दिया गया, कि यदि बवाय की सपद कर, तो सेना-द्वारा राज्य पर कब्जा करलो। वेल्शेजकी ने यह भी स्पष्ट लिख दिया कि मवाय की सैनिक शक्ति खत्म करदी जाय, और अपघ की सारी सततनत के दोशानी और फौजदारी अधिकार कम्पनी के हो जाएँ।

मवाय ने बहुत दिक्कतों मचाई पर बरोमा कुछ न हुआ, और बवाय को अपनी सततनत का आचा भाग, जिसको भाग एक करोड़ पैंतीस लाख रुपये साझाना थी, और जिससे वर्तमान युक्त-प्रान्त का बुनियाद पड़ी, सदा के लिये कम्पनी को सौंप देन पड़े।

इसने कुछ दिन बाद ही कर्ह-खानाई के मवाय को, जो अपघ का सूया था, एक लाख आठ हजार रुबना साझाना पेग्शन देकर राही से उतार दिया गया।

इनमें एक दुर्गुण भी था। ये शराबी और विजामो थे। पर पीछे स तोषा करली थी। इन्होंने खखनऊ में बहुत सी मन्दिर इमारते बनवाईं। ये खखनऊ को एक खूबसूरत शहर की शक्ल में देखना चाहते थे। इन्होंने बहुत से मुहल्ले और बाजार भी बनवाये।

इनकी मृत्यु पर इनके बड़े बेटे नवाब शाहजोउद्दीन हैदर गद्दी पर बैठे। इन्होंने अपना खिताब नवाब बज़ीर की मजाय यादशाह रखा। यादशाही पदवी प्राप्त करके इन्होंने अपना नाम 'अबुल मुत्तज़र मुरउद्दीन शाह जिमनगाज़ीउद्दीन हैदर यादशाह' रखा। इन्होंने अपने नाम का मियका भी चलाया।

ये भी उदार, साहित्यिक और गुणग्राही यादशाह थे। मिरजा मुइम्मद् खानवी किरमाली इनके दरबारी थे। उर्दू के प्रसिद्ध कवि आतिश और वासिफ़ इन्हीं के ज़माने में थे। इन्हें के अवसर पर कवियों को बहुत इनाम मिलता था। उस समय के प्रसिद्ध शायरों राजफ़ख़री और क़ज़ल खली का भी दरबार में पूरा मान था। पंड सोनो 'ख़याल' गाने में अपनी खानी नहीं रखते थे। एक दखिनी पेशवा का भी इनके यहाँ बहुत मान था।

इनके प्रधान मन्त्री नवाब मोतमिदुद्दौला आज़ा मोर थे जो बड़े बुद्धिमान् थे। इन्होंने राज्य की बड़ी उन्नति की। राजाना दरगों से भरपूर रहा। करोड़ों रुपया ईस् हथिलपा कम्पनी को कर्जा देने रहे।

यादशाह की प्रधान बेगम यादशाह बेगम कहाती थीं और बड़े ठाठ से अलग महल में रहती थीं। इनमें किय। यात पर यादशाह की खूब गर्ई थी। इन्होंने भी कई अच्छी इमारते बनवाईं। प्रसिद्ध शाह मज़रा इन्हीं ने बनवाया था। जोहे का पुल, ओ गोमती नदी पर है, इन्हीं ने विज्जायत से बनवाकर अँगणिया था, पर उसे तैयार न कर सकी, और आपकी मुन्यु होगई।

इस खमाने में कम्पनी की आर्थिक स्थिति बहुत ही नाजुक थी। इसकी दुबिदियों की दर बाज़ार में बाह्य क्रोसदी बट्टे पर निकलती थी। इन दिनों में जेज



नसीरुद्दीन घड़े देयाश थे। इनके महल में कई यूरोपिया छेड़ियाँ भी थीं। छुतरमजिद धारा ही ने बगवाई थी। और भी बहुत सी कोठियाँ आपने बनवाई। इन्होंने कर्नल बिलकान्स की आधीनता में एक वेधशाला भी बनवा दी थी, जो शहर में नष्ट होगई थी। इन्होंने दस वर्ष राज्य किया।

इनके घमाने में गवर्नर लॉर्ड वैटिंग थे। उन्होंने अवध के दौरे में नवाब यादगढ़ को पूरा नरा घमकाकर राज्य में बहुत से डबल फेर किये, और यह अपवाद फैल गई थी कि चँगरेल अब नवाबी का अंत किया चाहते हैं। नवाब ने घरकाकर हँगलिस्तान की पार्लियामेण्ट में अपील करने के हराये से कर्नल यूनाक नामक फ्रांसीसी को हँगलैण्ड भेजा। पर वैटिंग ने नवाब को डरा घमकाकर बीच ही में उसकी सद्मांस्तगी का परधाना भिजवा दिया।

इनके बाद बादशाह की बेरया का पुत्र मुल्ताजान गद्दी पर बैठा। पर नसीरुद्दीन की माता ने उसका मारी विरोध कर, उसे गद्दी से उतरवाया। कुछ छून पगवा भी हुई। अन्त में ये चुनार में कैद कर लिये गये। इनके बाद नव व मद्रादतदली त्तौ के द्वितीय पुत्र मिरजा मुहम्मद-अली गद्दी पर बैठे। ये विद्या-व्यसनी और शान्त पुरुष थे। हुसेनाबाद का इमामबादा इन्होंने बनवाया था। इन्होंने सिर्फ २ वर्ष राज्य किया।

इनके बाद मिरजा मुहम्मद अमजददली त्तौ गद्दी पर बैठे। ये शाह मुहम्मदअली के बेटे थे। ये भी २ ही वर्ष राज्य कर मृत्यु को प्राप्त हुए।

इनके बाद सलिद और अन्तिम बादशाह चारिदअली शाह २२ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे। ये बड़े खौफात साजुक्त मिशान और विमोह प्रिय थे। इन्होंने नये फैतल के चँगरखे, कुन्ने दोषी इजाद किये। दुमरी भी इन्हीं की ईजाद है। इनका जीवन म २४ घण्ट नाच-गाने का रँग रहता। स्वयं भी नाच-गाने में उस्ताद थे। सिकन्दर बाग, ज़ैनरबाग आदि इमारतें इन्हीं की बनवाई हुई हैं।

यह नवाब खवान, सुन्दर, डरसाह और समझदार था। उसने अवध

मवाय मे गवर्नर मे इसकी शिकायतें की। गवर्नर छलमछल करे, पर मर्ताजा उठता हुआ। इस समय में एक चलावालीन गवर्नर लॉर्ड हेलिंग ने लिखा है—

मवाय मकर पक्ष के उदित प्रभुओं के भीचे हर घंटे घाई भगत था। उस घाटा था कि मैं उसे इस कल्याण से छुड़काया दिया दूंगा। किंतु मैं मकर देखी था प्रहृत्य और भी पटा कर दिया। मेरा बेग। दोरा से दोरा बाता पर मवाय पर दुर्मुख बगला था। मय कभी मेरा मला का कपास से कुछ बहना हुआ था, वह चाटे-खर बिना-कुचला रिप मरहा में का धमकता था। उरने कपो (आश्मियों को) दही बही ताग्रह हों पर मवाय के चर्चा जग बगला था, जो काएमी का काम जान थे। मेरा बही सिर हाकिमाना शान व ताप हमारे मवाय से बात बगला था उससे बारण उर मे मवाय को उसके मुटुमिर्छों और मला लन की कछारों में गिरा दिया था।”

इस पत्रा में मवाय ने मवाय से दाईं गोद दूधे मकर मैला छुड़ के लक के बिय बसुल विचे थे। इससे बढ़ते मैला ल मिर्छी भूमि का दुकना मवाय को दिया गया था जो कारम मे अतमग बकर था। इसके बाद मवाय ने एक दवार काके 'स्वभन्त्र-बादशाह' का पत्र दिया गया। इनमें भी एक शान्ति-दृष्ट था। योंकि इस पत्र से दिल्ली के साम्राज्य को मंग रिग गया था। बादशाह वन वन मवाय के अधिकार देवे थे, न स्वतन्त्रता—यह चेदक एक हाथपापद मइसम था।

मायके बाद मायके उपेष्ठ पुत्र ताजानसीहोन हैदर गहा पर बैठे और इन्होंने लपटा नाम व मुलकम-‘गुलुपुद्दी’ सुखेमान कह करताहोन हैदर बार राह गवला। ये पक्षाम बर के पुत्रक थे। इन्होंने गहा पर बैठने ही पिता के यक्षों को दारारल काके एक बीजाम को दधार धमाना, और उस पुत्र-होना का लिताय लिया। पर ये भीष्ट ही मर गये। तब मवाय मुताबिमु रीटा इलीम वेदहीमकी द्वा बजीर हुए। इन्होंने एक चरन्ताज और एक औरतगाना सपा एक खीपी हावालावा भी सुलयावा। एक औरतकी सुल भा सुत्रा।

नसीरुद्दीन बड़े पैवार थे। इनके महल में कई यूरोपिया छेड़ियाँ भी थीं। छतरमजिद आर ही ने बनाई थी। और भी बहुत-सी कोठियाँ आपने बनवाई। इन्होंने कर्नल विलकॉक्स की आधी-ता में एक बेधशाला भी बनवा दी थी, जो शहर में बप हो गई थी। इन्होंने दम घप राज्य किया।

इनके दामाने में गवर्नर लॉर्ड बैटिंग थे। उन्होंने अवध के दौरे में नवाब सादराह भी पूरा दरा धमकाकर राज्य में बहुत से उलट फेर किये, और यह अफवाह फैल गई थी कि अंगरेज अब नवाबी का अन्त किया चाहते हैं। नवाब ने घराने में हंगल्लिस्तान की पार्लियामेण्ट में अपील करने के इरादे से कर्नल यूनाक नामक फ्रांसीसी को हंगल्लेय भेजा। पर बैटिंग ने नवाब को दरा धमकाकर बीच ही में उसकी बर्खास्तगी का पर-नामा भिन्नवा दिया।

इनके बाद सादराह की बेरवा का पुत्र मुज्जाजाम गद्दी पर बैठा। पर नसीरुद्दीन की माता ने उसका भारी विरोध कर, उसे गद्दी से उतर-बाया। कुछ पूरा लगवी भी हुई। अन्त में वे सुनार में छैद कर जिये गये। इसके बाद नवाब सदादतखी पूरा के द्वितीय पुत्र मिरजा मुहम्मद बखी गद्दी पर बैठे। ये विद्या-व्यमनी और शान्त पुरुष थे। हुसेनाबाद का इमामबादा इन्होंने बनवाया था। इन्होंने सिर्फ २ वर्ष राज्य किया।

इन्के बाद मिरजा मुहम्मद अमनदखी पूरा गद्दी पर बैठे। ये शाह मुहम्मदखी के बेटे थे। ये भी २ ही वर्ष राज्य कर, मृत्यु को प्राप्त हुए।

इनके बाद प्रसिद्ध और अन्तिम सादराह याजदखी शाह २२ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे। ये बड़े शीक्री नाजुक मिशाल और विनोद प्रिय थे। इन्होंने नये फैशन के अंगरेज, कुरसे रोपो इजाद किये। कुमरी भी इन्हीं को ईजाद है। इनके जीवन में २४ घण्टे नाच-गाने का रंग रहता। स्वयं भी नाच-गाने में उस्ताद थे। सिकन्दर बाता, प्रैपरकता आदि इमारतें इन्हीं की बनवाई हुई हैं।

यह नवाब जवान, सुन्दर, उत्साही और समझदार था। उम्मे



का गज-सोम समझ लिया था। उसने सुलैही न सेना को बुलाना शुरू किया, और रोजाना घने घासने कीड़ से कृषक वगैरों को बुलाया। बाद गद्द दीवहर तक कृषकों देखाया था। कम्पनी सरकार ने इस काम से नवाब को बख्शाना रोका।

कॉर्पोरलजीजा ने गवर्नर होते ही घोषणा की कि नवाब शासन के योग्य नहीं, अतः अफगानों की सहायता कम्पनी के राज्य में लिया खी लायगी। गवर्नर के हुक्म से रेजिमेंट सुदरम महल में यह परवाना लेकर गया और उस पर नवाब को बख्शाना करने को कहा। नवाब ने इससे विरुद्ध इनकार कर दिया। अफगानों और मजदूरों को दिये गये। तीन दिन सुदर गये। पर, नवाब ने बख्शाना करना स्वीकार न किया। इस पर कम्पनी की 'मजदूरियों'-सेना बख्शाना महल में घुस पड़ी। महल खुलवा दिया और नाजिदुल्लो को पकड़कर कैद करके कठकती भेज दिया गया। समस्त अफगानों पर कानून का अधिकार हो गया। कैद में बादशाह को १ लाख रुपया महीना इर्ष के लिये मिलता था। यह घटना सन् १८५६ में हुई।

इसके बाद अफगानों को बख्शाना दीयी गई, और अफगानों का संप्रदाय के लिये धूम में मिल गया।

## रहेलो का अन्त

अमघ के उत्तर और रंगा के पूर्व हिमाक्षय की तराई में जो इरा-  
मरा सुहावना प्रदेश है, वही रहेलसयट है। दिखी के बादशाह मुहम्मद-  
शाह रंगीले के जमाने में वहाँ के सूबेदार मयाब अली मुहम्मद था। सन्  
१०४८ में जब वह मरा, तो उसके आधीन एक लाख सेना अफगानों और  
पञ्जाबों की थी। पञ्जाने में तीन करोड़ आलीस लाख रुपये और एक करोड़  
मोहरों का खजाना की मोहरें थीं।

अमघ के मयाब बहुत दिनों से रहेलसयट को हथियाता चाहते थे,  
मगर जब कभी सब रहेले सवार मिलकर युद्ध का झूठा बजाते थे, तब  
उनकी सहायता आसमी हजार पहुँचती थी। इसके सिवा ये भी भी थे, जहाँ  
मयाब को उन्हें लेवने का साहस न होता था। जब उसने अंग्रेजों की घन  
क्रिप्ता को देखा, तो उसने गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स को लिखकर इस काम में  
मदद माँगी। दोनों ने सलाह कर ली, और आलीस लाख रुपये और सेना  
का कुछ खर्चा देना स्वीकार करके अंग्रेजों ने भाड़े पर अपनी सेना देना  
स्वीकार कर लिया।

रहेलों से अंग्रेजों का कोई मतलब न था, न कुछ टयटा था, इसके  
सिवा ये अन्य सूबेदारों की तरह बादशाह के अधिकार प्राप्त सूबेदारों थे। ऐसी  
दरा में बदल रुपये के लाखों से भाड़े पर सेना भेजना सधवा अनुचित  
काम था।

इस विषय पर मेकॉले ने लिखा भी था—

“धन लेकर और भदौ बनकर किसी पामर अमघा”

में प्रकृत होना अवरय ही अकीर्ति का काम है, और बिना छेड़ पाह के किसी पर अड़-धीरमा अवरय ही नाजता का काम है।'

इस्तिस्व ने इन ही धैर्यवश की आधीनता में तीन मिग्रेड अंगरेजी सेना और ४०० फरायो रवाने किये। रदेजों ने प्रथम तो बहुत-कुछ खिन्ना-पदा की, पर अन्त में हार कर खुद की सैन्यागिरी की और हाफिज रहमनप्राँ ५ हजार सेना छोड़ अवरय के नगर और अंगरेजों की समिम जित सभा की गति रोकने को समयपर हुए। पापुर भाखे पर घोर गुनहूमा, और खइला की बीरता से इन संयुक्त सभा के दुक्टे छूट गये। पर भात में गुपजमानों का भाग्य अरु सेना में कि रहा था २३ अग्रेज १९०४ में स्मरणीय दिन हाफिजप्राँ खुद में मारा गया, और पूर्ण सनाओं के दंगर के अजुगार अमक माल ही सेना का अरवाह मंग होगया, और यह भाग खडा। रदेज का अस्तिस्व मिग गया।

अब व की फौज ने भागते रदेजों को मारने और छूने में दबी फुर्ती दिखाई। एक लाख से अधिक रदेजे अरने सुख निपातों का दोड़-धोड़कर विपद जगलों में भाग गये।

नवाब १ फसल बजाव की, छुछ घोड़ों से पुछनवा दी। अंगर-नाईकों में आग खगवादी। वशा मनुष्य वषा खी, वषा बाबक, था तो ब्राख कर दिये गये, था अंग भग करके लकते पाह दिये गये।—अपरा गुताम बनाकर बेच दिये गये। रदेजे-मरदारों की कुछ महिलाओं और कुमारी कन्याओं का अल्पम पाशविक डंग से सतीत्य मल किया गया। यह सब काम सब भर पछ नाराज के निपाहा कर रहे थे तब अंग्रेज-सेना अवरय

इस्तिस्व के इस कृत्य का विरोध करते हुए, कलकत्ते में मेम्बरा ने विज्ञापन की लिखा था—

“रदेजखण्ड की दर्यादी की अतली तक नदी विपी रहेगी। अब यह समय दूर पूर्व ही परिणाम मन्द हो जायेगा। ऐसा अकदिन कि किम व्यक्ति की दुर्म्यस्या

‘एक राज्य का अधिकार’ नारा हुआ, और दोनमें ‘सन्नेपाछे’ मनुष्य ‘मिस्त्रमों’ की दशा को प्राप्त हुए।’

सुद कर्नेल चैम्पियन, जो इस नाम के किये भेजे गये थे, लिखते हैं—

‘हम ब्रिटिश-शांति को आधुनिक रोमन्स को उगाधि में हमखिये विभूषित घर सज्जते हैं कि उनही राजनैतिक सभा के सदस्य अपनी जातीय प्रतिष्ठा को बलवित्त करने के किये भाड़े पर एक चैंपेन-जनरल को काफिर हाकिम के आधीन कर देने की बात कभी न मूल मन्त्रों।’

हेस्टिंग्स ने हम विषय में अपने पक्षाय में कहा था कि रहेछे मरहटों के साथ लगाव रखते थे, यदि वे उससे मिलकर एक हो जाते तो कम्पनी और उसके मित्र नवाब खज़ीर की सरहद में शांति बनाये रखना असम्भव हो जाता। पर यह सब झूठ था। मरहटे तो रहेछों पर आक्रमण ही करते थे, वे उनके मित्र नहीं थे। एक बार उन्होंने मुरादाबाद तक आक्रमण किया था, और भारी लूट पाट मचाई थी। तब राम घाट के पास नवाब खज़ीर ने ही मरहटों की गति को रोका था। हमके सिवा मरहटों का अन्त दो वर्ष प्रथम पानीपत के मैदान में अहमदशाह अब्दाली के भी यह युद्ध में हो चुका था, जिनमें दो लाख मरहटे उग्र क्षेत्र में घट गये थे। यह कैसे सम्भव था, कि दो ही वर्ष में मरहटे फिर वैसे ही सशक्त बन जाते, जो उस समय की विजयिनी और सुशिक्षित कम्पनी की प्रवृत्ति सेना को, जो रहेछों एवं नवाब खज़ीर तथा कालिम की संयुक्त सेनाओं की दुरी तरह पराजित कर चुकी थी शांति स्थापित रखना असम्भव कर देते?—और एक हँसी के योग्य बात है कि जो नवाब-खज़ीर कल भीरकामिम का पक्ष लेकर कम्पनी से इलाहाबाद तक का प्रदेश छिनवा बैठा था, वह आज ४० लाख रुपये देते ही कम्पनी का मित्र बन गया।

इस युद्ध के बाद ही नये शासन सुधारों की योजना हुई और गवर्नर को एक कौन्सिल दी गयी। तब तक हेस्टिंग्स ही सर्वोच्च थे, जो कौन्सिल ने उनसे के सम्बन्ध के कागज़ पत्र माँ उगड़े।

इलाहाबाद की। कौन्सिल में

के मेम्बरों ने हेस्टिंग्स के पिछे मिडिल्टन साइड को छलनक की रेजीमेन्सी से र्युत कर दिया, और कम्पनी की पट्टेनें कौटा कीं। नवाब मज़ीर को सब रुपये भेज देने की ताकीद कर दी।

कर्नल चैम्पियन जिनके आधीन अंग्रेजी सेना रहेलों के विरुद्ध भेजी गई थी, नवाब से न जाने-व्यों बहुत खिन्न रये थे, उनके कपरायाले मोर से ही पता चलता है कि उन्होंने नवाब को काफ़िर कहा था। जब उन्होंने ही इस युद्ध का भरपूर फोड़ दिया। हेस्टिंग्स के शक्ति से मिडिल्टन ने इन पर कई दोष लगाये। हेस्टिंग्स ने कर्नल चैम्पियन पर नवाब की आज्ञा भंग करने के अपराध से मुकदमा चलाने की धमकी दी थी। इस पर कर्नल ने इस्तीफा दे दिया। पर कौन्सिल के मधीन सम्मेलन ने रहेल युद्ध की जाँच करना आरम्भ किया। कर्नल खैतली, मेजर इष्टो, कर्नल चैम्पियन आदि से बिरह हुई। सभी मेम्बर बिरह के समय मरत फात थे। अनेक मर्हें घातें मकत हुई।

इसी बिरह में मरहठों के आक्रमण की बात सूट सिद्ध हुई। इसी बिरह में मुन्नी बेगम के छंगूठी टूटने तक उतारवाये जाने की बात सुनी। इसी बिरह में महबूबज़ाँ की लड़की पर नवाब के पारिविक अत्याचार से विप्लव छाकर आत्म घात करने की पाप-कथा सुनी। इसी जाँच में यह मालूम हुआ कि रहेलों का डेढ़ करोड़ रुपये का भाल लूटा गया है। इसी जाँच में यह बात भी सुना कि जिन रहेले सरदारों की बेगमों ने घरों की छोटियों के बाहर पैर नहीं घरा था—वे दाने-दाने के लिये दर दर की भिक्षारिणी बनायी गयीं। इसी जाँच में त्रिदित हुआ कि इस जीत से नवाब-मज़ीर को ७० ८० लाख साजाना की रियासत मिल गई। इसी जाँच में यह पता लगा कि छलनक के नवाब ने छैदी रहेलों को समय-दान देकर उनके साथ विरामघात किया था। इसी जाँच से त्रिदित हुआ कि कर्नल चैम्पियन की नज़र बंधाने के कमिषन से बटोर अत्याचार और दम्न-आर्थें सुनाने के लिये रहेले सरदार महबूबज़ाँ और क्रिदाउलज़ाँ के कैशानाद भेज दिये गये।

( १५ )

## बंगाल के मुस्लिम राज्य ।

११ वीं शताब्दी में इलाहाबादी ने गुर्जराज चौहान को बन्दी करके दिल्ली की गद्दी गुलाम कुतुबुद्दीन को दी । उसके १० वर्ष बाद उसने अपने सेनापति इफ्तखार खिलजी को बंगाल विजय के लिये भेजा । उस समय बंगाल में राजा खम्मण्दन राज्य करता था । उसे हटाकर इफ्तखार ने बंगाल पर अधिकार कर लिया ।

इसके बाद शमशुद्दीन अस्तमश ने बंगाल के विद्रोह को दमन कर, उस पर अपना अधिकार जमाया । फिर जब अलाउद्दीन मलिकुद्दीन खिलजी के सपत्त पर था, तब मुगलों ने तत्काल के शास्त्र से बंगाल पर आक्रमण किया था, पर पराजित होकर भाग गये ।

इसके बाद जिलजी यश का वहाँ कुछ दिन अधिकार रहा । उसका भी वहाँ का सूबेदार था ।

मुगल-काल में कभी हिन्दू और कभी सुमलमान शाहजादे और अमीर बंगाल के सूबेदार रहे । शाहजहा के जमाने में शाहजादा शुजा और औरंगजेब के जमाने में प्रथम मीर जुमला और बाद में शाहस्ताज्जौ वहाँ के सूबेदार रहे ।

इसके बाद नवाब अलीउद्दौल्ला बंगाल, बिहार तथा बंगाल और उड़ीसा के सूबेदार रहे । जब उन पर मराठों की मार पड़ी और कमजोर दिल्ली के बादशाह ने उनकी मदद न की, तो नवाब ने दिल्ली के बादशाह को सालाना मालगुजारी देना बन्द कर दिया । परन्तु वह बराबर अपने को बादशाह के आधीन ही समझता रहा ।

अलीउद्दौल्ला एक सुयोग्य शासक था, और उसके राज्य में राजा बल्लभ

प्रमत्त हो। ऐम० मी० हिस्स ने लिखा है—“ बंगाल के किसानों की हासत उस समय के माग्य भयना जयन्ती के किसानों ने एही अधिक चरखी थी।” बंगाल की राजधानी मुर्शिदाबाद के सम्बन्ध में बड़ाहर ने लिखा था—

“मुर्शिदाबाद शहर उमरा ही खम्भा चौड़ा, भावाद और धनवान है जितना लन्दन शहर। अन्तर बिर्ल इतना है कि मन्जु के धनाध्य से धनाध्य मनुष्य के पास जितनी सम्पत्ति हो सकती है, उससे बहुत ज़्यादा मुर्शिदाबाद निवासियों के पास है।” एर्नेस्ट मिच ने इस भारी सम्पत्ति को देखकर पर्यटन योरोप भेजो था। उमरा लिखा था—

“मुगल साम्राज्य मोने चाँदी से खजाना भरा हुआ है। यह साम्राज्य मदा ल निर्बल और भरपूर रहा है। यह चारपय को धाम है कि साम्राज्य योरोप के किसी भी बादशाह ने जितने पास जल सेना हो, बंगाल को क़तल करने की कोशिश नहीं की। एक ही बार में अन्तर्भव प्राप्त किया जा सकता है जो कि मोलीख और पैर को सोने की खानों के मुकाबिले होगा। मुगलों की राजनीति ज़राब है। उनका सेना और भी अधिक प्रभाव है। जल-सेना उनके पास नहीं है। राज्य भर में विद्रोह होते रहते हैं। मदीयों और बदरगाह दोनों विदेशियों के लिये 'रुने' हैं। यह देश इतनी ही भावानी से क़तल हो सकता है, जितनी आसानी से कि स्पेनवालों ने अमेरिका के मंगे बाशिर्दों को अपने आगिन कर दिया था।

“अखीरदीर्घा के पास ३० करोड़ रुपया नज़द है, और उसकी साजाना आमदनी भी सवा दो करोड़ से कम नहीं। उसके प्रान्त समुद्र की ओर से खुले हुये हैं। ३ मदाओं में डेढ़ या दो हजार सैनिक इस काम के लिये काफ़ी हैं।”

जब चैम्पेल बंगाल में आये और उन्होंने वहाँ के “ब्यापार से” आम उठाना चाहा, तो वहाँ के हिन्दुओं से मिलकर उन्होंने मुस्लिम-धर्म्य को पवित्र करने की चेष्टा की। एक पंजाबी धनी ब्यापारी अमीर-उद्-दौला को इसमें मिलाया गया, और उसके द्वारा उनके लुके लुके बड़े बड़े हिन्दू राजाओं को वध

में किया गया। अमोचम् को बड़े-बड़े सम्झना दिखाने गये। अमोचम् के घर और अंग्रेजों के बापों ने मिलकर, बवाब के दरबार को येईमाच बना दिया।

इसके बाद अंग्रेजों ने अपनी सैनिक-शक्ति बढ़ाने और ब्रिटेन की शुरु करदी। दोनारी के अधिकार से प्रथम ही ले चुक थे। अलीवर्दीखाने अंग्रेजों के इस संगठन को ध्यान से देख रहा था, पर वह कुछ कर न सका और उसका देहान्त हो गया।

( १६ )

## सिराजुद्दौला

यह भाग्यहीन मुगल बवाब २४ वर्ष की आयु में अपने माता की मारी पर मृत्यु १७२६ में पैदा। इस समय मुगल साम्राज्य की नींव टिक चुकी थी, और अंग्रेजों के हाथले बढ़ रहे थे। उन्हें दिल्ली के बादशाह ने बंगाल में बिना शुंगी महसूल दिये व्यापार करने के पास दे दिये थे। इन पासों का सुलभसुलझा बुरा उपयोग किया जाता था, और ये किसी भी हिन्दु स्वामी व्यापारी को बेच दिये जाते थे, जिससे राज की बड़ी भारी हानि होती थी।

मारे बक्त अलीवर्दीखाने पुत्र को यह हिदायत की थी - " पोरों पियन क्रीमों की साकल पर नज़र रखना। यदि खुदा मेरी उम्र बढ़ा देता, तो मैं तुम्हें इस घर से बचा देता। अब, मेरे बेटे! यह काम तुम्हें सुद करना होगा। तिलगों के साथ उनकी लड़ाइयाँ और राजनीति पर नज़र रखो—और सावधान रहो। अपने अपने बादशाहों के घरेलू झगड़ों के बहाने हम लोगों ने मुगल बादशाह का मुक़्त और उनकी प्रजा का घन चीनकर आपस में घाँट लिया है। हम तीनों क्रीमों को पक-साथ गेर करने



या प्रयास न करना; छेमेजों की ही पहचान हो जाना। अब तुम देना न सोचो तो यादो तभी तुम्हें इयादा तकलीफ न होगी। उन्हें जिसे बनाना या प्रीति करने की इयाजत न देना। यदि तुमने यह राज़ती की, तो मुझ तुम्हारे हाथ से निकल जायगा।"

मिराजुद्दीन पर, मालूम होता है, हृदय नसीहत का भाव प्रभाव पड़ा था, और वह छेमेजी शक्ति की ओर से चौकचा था। उसके सप्रत नसीब होने पर नियमानुसार छेमेजों ने उस ओर नहीं दी थी; इसका अर्थ यह था कि वे उस मयाय न रोककर करते थे। वे प्रामाणिकता से सीधा रुग्ण्य भी नहीं करने थे, आवरणकता पक्ष पर अपना काम कर रही कर निकाल लेते थे।

धीरे धीरे नयाव और छेमेजों का मन मुटाव बढ़ता गया। छेमेजों ने जो क्रांतिम वातावरण में जिज्ञासी करती थी, मयाय उसका अत्यन्त विरोधी था। अपने वहाँ के मुखिया को दुआकर समझाया—“यदि छेमेज शान्त व्यापारियों की भाँति देश में रहा चाहते हैं, तो सुखी से रहें। विन्तु ऐसे के हाजिर की हियत से मेरा यह हक है कि वे उन सब जिज्ञाओं को औरत तुझाकर बराबर करदें, जो उन्होंने राज ही में बिना मेरी आज्ञा के बना किये हैं।”

परन्तु हृदय कुछ भी कम न हुआ। अन्त में मयाय ने क्रांतिम वातावरण में सेना भेजने की आज्ञा देदी। अचानक क्रांतिम वातावरण में मयाय सिपाही दीव्य पक्ष लेते। होते होते और भी सैकड़ों सवार और बरगन्दाज आ-आकर शामिल होने लगे। सम्प्रा के प्रथम ही दो बहाके हाथी मूमते मूमते क्रांसम वातावरण में घा पहुँचे। यह कैक्रियत देखकर, छेमेजों के प्राण काँपने लगे। राजदूत का आमान धरन की बात ममी को मालूम थी। एक एक करके छेमेज कोडीवाले भागने लगे। महामति हेस्टिंग्स भागकर अपने दीवान का-ता यादू के घर में छिप गये। सब ने समझ लिया, राज के आ-घकार के बढ़ने की देर है वस, मयाय की सेना बलपूर्वक जिज्ञे में घुसकर छेमेजों के माल अस्वाय का सायाबाध कर, लूट पाट मचा देगी।

क्रिस्ते में जो मौक़र तथा गोरे-काळे सिपाही थे, वे तैयार होकर दावाज़ो पर आ खड़े । परन्तु, मुद्दिमान नवाब ने आक्रमण नहीं किया । उसका मतलब, खून बहाने का न था । वह केवल इनकी राजनीति के विरुद्ध, क्रिस्ते बनाने की कार्यवाही का विरोध करने और अपनी आज़ा के निरादर का दण्ड देने आया था ।

सोमवार, मंगल बुध, बृहस्पतिवार भी बीत गया । नवाब की अग्र-स्थित सेना क्रिस्ता घेरे खड़ी रही । पर आक्रमण नहीं किया । उस युद्ध क्रिस्ते को रात का डेर बताना दण्ड भर का काम था । इस युगी से ऑंग्रेज़ धन-शक्ति हुए; घराबे भी । न-मासूम नवाब का इशारा क्या है ? अन्त में साहस करके डा० फोय साहब को बून बनाकर नवाब की सेवा में भेजा ।

उमाचैग ने डॉक्टर को तसम्मा दिया—‘घवाग़ो मत, नवाब का इशारा खून झग़ायो का नहीं है । आपके सरदार वाट्स साहब को नवाब के दरबार में भिन्न एक मुचज़्ज़ा ज़िस्ते देना होगा । और उवे ये यदि रात्री से न ज़िस्ते, तो ज़बदखी खिस्तीया आयेगा । सिर्फ़ इतनी सेना इसीज़िस्ते नहीं चाहें है ।’

पर वाट्स साहब को धारम-समर्पण करने का साहस नहीं हुआ । उन्होंने अत्यन्त मध्दनायक लिफ़ा भेजा—

“नवाब साहब का अभिप्राय शांत होखाने भर की देर है । परन्तु जो उनकी आज़ा होगी—ऑंग्रेज़ों को बड़ा स्थीकार होगा ।” इस पत्र का नवाब के दरबार से यही उत्तर मिला—‘क्रिस्ते की पहारहीवारी गितादो—बल, यही नवाब का एक-मात्र अभिप्राय है ।’

ऑंग्रेज़ों ने यह शिष्टाचार और मध्दता से कहला भेजा कि—नवाब का जो हुक्म होगा, यही किया जायेगा । परन्तु वे अपनी अम्पन्त निरवत और सुशामद के ज़ोर से मतलब निज़ाखने की चेष्टा करने लगे । उन्होंने समीर डमरायों को इसी वक्त पर अपना घर में कर लिया । पर, वास्तव में ऑंग्रेज़ मिराजउद्दौला के स्वभाव और उद्देश्य को नहीं जानते थे । उन्होंने इस खटवट का यही मतलब समझा था कि निरवत और भेंट को-को लिये यह

का प्रयास न करना; चँमेहों को ही पड़चे जोर करना। जब तुम देना न कोगे, तो याही नीमें तुम्हें इयादा तबखीर न देंगी। उन्हें जिन्हे बसाने या शीत करने की इजाजत न देना। यदि तुमने यह शरती की, तो मुश्क मुश्कारे हाथ से निकल जायगा।”

बिगलतरीका पर मालूम होना है, हज्र असीद का भापूर मभाव था था, और वह चँमेहों शक्ति की धोर से चौकता था। उसके सफ़त मरीफ होने पर नियमातुवार चँमेहों ने डम भेंर नहीं दी थी, हमका कर्प यह था कि ये उमे मवाय न रहीबार करते थे। ये प्रायः बिगलतरीका से शीघा रुम्कन भी नहीं करने थे, आवरयकता एवने पर धरना काम करवा-ही कर निहाय छेमे थे।

धारे धीरे मवाय और चँमेहों का मन मुताब बढ़ता गया। चँमेहों ने जो क्रासिम बाजार में लिखे लगी करली थी मवाय उसका आवगत विरोधी था। उवने वहाँ के मुखिया को बुलाकर समझाया—“यदि चँमेह शान्त ज्वापानियों की भाति देश में रहा चाहते हैं, तो सुली से रहें। किन्तु तुम्हें के हाजिम की हैमियत से मेरा यह दखम है कि ये उस सब लिखों को औन्तु तुम्हारा बराबर कर देंगे उहोंने हात ही में बिना मेरी आज्ञा के बना दिये हैं।”

परन्तु हज्र का कुछ भी फल न हुआ। अन्त में मवाय ने क्रासिम बाजार में सेना भेजने की आज्ञा दे दी। अचानक क्रासिम बाजार में मवायी सियाही हीन एवने लगे। होने होते और भी सैकड़ों सवाय और बरकन्दज आ-आकर शामिल होने लगे। सम्पत्ति के प्रथम ही दो लकाके हाथी मुमते कामने क्रासिम बाजार में आ पहुँचे। यह कैकियत देखकर, चँमेहों के प्राय कर्पने लगे। राजदूत का आमान करन की बात सभी को मालूम थी। एक एक करके चँमेह छोड़ीशले भागने लगे। मदामति हेस्टिम भागकर अपने शीघा कान्ता याधू के घर में छिप गये। सब में समझ लिया, रात्रि के अन्धकार के बढ़ने की देर है, इस, मवाय की सेना बखपूर्वक लिखे में घुमकर चँमेहों के माल प्रमवाय का सत्यानाश कर, खुद पाट मचा देगी।



सया खाज खेजाया गया है। काशी लोगों की हीन समझने वाले इन बनिनों के दिमाग में यह बात न आई कि सितामहोदय पुरुष और भेगश है—जो क्या है, वह देश का राजा है। पिछले खिराबटदीया, इन प्रयोगों से जरा भी विचलित न हुआ।

अन्त में बाद्य साहब हाथ में रुमाख बाँधकर दरबार में हाजिर हुए। नवाब ने उनकी खैरेमों के उद्घाटन-व्यवहार के लिये बहुत जानठ सजामत की। बाद्य बेचारे हवा में घेत की खाद काँपते-भारभराते खड़े रहे। लोगों को भय था कि नवाब इन्हें वहाँ कुर्छों से न मुचम दे। परन्तु, उसने कोधित होने पर भी कर्तव्य का कयाज रिया। उसने साहब को अपने द्वारे में लाकर मुचतका बिछ देने का आज्ञा दी। बाद्य साहब ने खरदी-जखरी मुचलका बिछ दिया। उसका अभिप्राय यह था—

“कलकत्ते का ठिका गिरा दगे। कुछ अपगभी, जो भागकर कलकत्ते में छिप गये, उन्हें बाँधकर ला देने। बिना महसूज ठपपार करने की जो सनद सादराह से कलकत्ती ने पाई है, और हमके सहाने बहुतरे खैरेमों ने बिना महसूज व्यापार काके जो हानि पहुँचाई है, उनको मा पाई कर देंगे। कलकत्ते के खैरेम बर्मेबागी हॉलवेजके आत्याचारों से—देशी प्रजा जो कठिब बजेग भोग रही है, उसे, उनसे मुक्त करोगे।”

मुचलका बिखराकर बाद्य और चेम्बर्स को उसकी शर्तों के पाखन होने तक मुठिदाबाद में नज़ारबन्द करके नवाब शाश्वत हुए। पान्थु पन्द्रह दिन बीतने पर भी मुचलके की शर्तों का कलकत्तेवालों ने पाखन नहीं किया। बाद्य की स्त्री और नवाब की माता में जेज-कोल था। वह अरत पुर में आकर योगम-भयटली में ‘हाथ-दिया’ मचाने—रोने पीटने लगीं। उसके कटप विद्यापों से पिछकर नवाब की माता ने पुत्रवे दोनों को छोड़ देने का अनुोध किया। माता की आज्ञा शिरोधार्य कर, नवाब को बिलकुल अनिच्छा से दोनों बन्धियों को छोड़ना पड़ा।

शीघ्र ही नवाब को मालूम हुआ, कि खैरेम-जोग मुचलके की शर्तों का पाखन नहीं करेगे। अतएव उसने ‘व्यय’ आलस्य में समय न खो,

कलकत्ते को एक दून मीठा और स्वयं सेवा से, बचने की सैपारी करने लगा ।

बैंगरेजों ने यह समाचार पाकर झटपट हाका, बालेश्वर धगदिया आदि स्थानों की कोठियों की सूचना दे दी कि बड़ीखाता आदि ममेठ-समाट कर सुरक्षित स्थानों में बसे जाओ । कलकत्ते में गयनर छोड़ कर नगर रखा के लिये सैन्य संग्रह और बन्दोबस्त करने लगे । वास्तव में वे मिराज को बरखाई ब्याव मम करने थे । उमका फ़पाक था, अनेक घरों में आगुओं से घिरा रहकर वह हमारे इस सुख काम पर क्या दृष्टि डालेगा ? हमके लिये, हमी तक अपनी घुँस और विश्वास पर उन्हें बहुत भरोसा था ।

पर सिराजुद्दौला वास्तव में नातिशय पुरुष था । वह जानता था कि मेरे सभी सहाय भरे बिरोध हैं । वे बार बार उम्मे कलकत्ते न जाने की सलाह देते थे; क्योंकि प्रायः सभी नमकहंगम और घुँस खाये बैठे थे । पर मवाय ने किसी की न सुनी । बानू, इम सित पर उसे पदच्युत का संदेह हुआ, उम उम को उसने अपने साथ ले लिया; जिससे पीछे का खडका भी मिट गया । राजवन्धु, मोरजादार, जगतपेठ, मानिक्यन्द, सभी की अनिच्छा होने पर भी मवाय के साथ चलना पड़ा । बैंगरेजों ने स्वप्न में भी न सोचा था कि वह ऐसी बुद्धिमत्ता से राजधानी के सब कगड़े मिटा कर, विजकुल घे-खटके होकर, इतनी सैन्य से, कलकत्ते पर आक्रमण करेगा ।

उमन को सार्व कलकत्ते पहुँची । नगर में हलचल मच गई । बैंगरेज जाग प्रायपथ से सैपारी करने लगे । उसी शिखे में जेरीं सोपें लगायी गई । नज मार्ग सुरक्षित करने को, बातायाजार वाली खाई में खड़ाई के बहाज खगा दिये गये । १२-० विपाही खाई के बराबर खड़े किये गये । बहारदीवारी की मरमत्त करवाकर उसमें अग्रादि भर दिया गया । मद्रास से उद्द मार्गने को हरकारा भेजा गया, और भिन्न प्रकासीसी राश्यों के घर से क्रिया बनाने का पढ़ाना किया गया था, उनसे तथा उर्धों से भी सहायता माँगी गई ।

उध लोग तो सीधे-सादे सौदागर थे । उन्होंने लड़ाई-झगड़े में कँलने

से राजा इनकार कर दिया। परन्तु ज्यों वे बग़ावत दिया—“यदि अंगरेज़ों से माफ़ी से बहुत ही भयभीत हो रहे हैं, तो वे ज़ीत ही बिना किसी रोक-रोक के बम्बैनगर में हमारा आग़्रह करें। आग़्रहों की माफ़-नफ़ा के ज़िन्ने फ़ाग़सीमी और तिपाही अपने माफ़ देने में तनिक भी कातर न होंगे।”

इन उत्तर से अंगरेज़ खन्वित हुए, और सीधे। बज़कता ने ज़ाई ज़ेत पर घना के दिगारे बग़ावत का एक गुराना ज़िन्ना था। २० तिपाही ठसमें रहते थे। यह कभी किसी काम न आता था। अंगरेज़ों ने दौड़कर ठस पर हमला कर दिया। बेचारे तिपाही भाग गये। उसकी तोपें तोड़-तोड़कर अंगरेज़ों ने गंगा में बहा दी, और बड़े गौरव से अपनी विजय पत्राका ज़म पर फहरा दी। लोगों ने समझ लिया, वस, अब अंगरेज़ों की छीर नहीं है। नवाब यह उद्घोषणा न सदन करेगा। दूसरे दिव २००० नवाबी सिपाही ज़िन्ने के सामने पहुँचे ही थे, कि अंगरेज़ अग़्रसर ख़ासा को बर्दाँ दोड़, रामकन ज़मे। परन्तु सिपाहियों ने भागलों पर भी तरस न किया। भागते ज़हाज़ों पर तज़ातज़ गोले बरसने लगे। अंगरेज़ अपना गोला शरूद नष्ट कर, और अपनी मय़बी उखाड़, बज़कते छौट आये।

यहाँ आकर ठग़्हाँने दो-एक और भी बर्दिता काम किये। हुस्नदज़म, जो राजा शम्बरदज़म का पुत्र था, और भागकर विद्रोह के अपराध में अंगरेज़ों की शरण आ रहा था, उसे इन कर से ज़ैद कर लिया कि, कहीं यह ज़मा-आदि माँगकर नवाब से मिल न जाय।

अमीरन्द बज़कते का एक प्रमुख ब्यापारी था। सेठों में ज़ैती प्रविष्टी खगतसेठ की थी, ब्यापारियों में वही दूसरा अमीरन्द था। यह व्यक्ति भारतवर्ष के पश्चिमी प्रदेश का बनिषा था। अंगरेज़ों ने उसी की सहायता से बग़ावत में नायिब-बिरफ़ार का जुभीता पाया था। उसी की मार्कत अंगरेज़ गाँव-गाँव अपना बटिकर कपस तथा रेशमी घस की प्ररोह में प्रसू अपना पैदा कर सके थे। उसकी सहायता न होती तो अंगरेज़ लोगों को अपरिचित देश में अपनी शक्ति बढ़ाने और प्रविष्टी प्राप्त करने का मौक़ा

क्यापि न मिलता। इस व्यक्ति के परिचय में इतिहासकार अय्यप्पुमार लिखते हैं:—

“केवल व्यापारी कहने ही से अमीचन्द का परिचय नहीं मिल सकता। सैकड़ों विद्याल महलों से मन्त्री हुई उसकी राजधानी, तरह तरह की पुष्पा येनियों से परिपूर्ण उसका वृहत् राज भवदार, मशहूर सैनिकों से सुसज्जित उनके महल का विद्याल काटक, देखकर औरों की तो बात क्या है स्वयं अहमरेज उसे राजा मानते थे। विपत्ति पड़ने पर अहमरेज लोग सदा अमीचन्द की ही शरण लेते थे। अनेक बार अमीचन्द ही के अनुग्रह से अहमरेजों की इज्जत बची थी।”

अहमरेज इतिहासकार ‘अमी साइब’ ने लिखा है—

“अमीचन्द का महल बहुत ही आलीशान था। उनके मित्र मित्र विभागों में सैकड़ों कमरागि हर एक काम किया करते थे। काटक पर पर्पास सेना उसकी रक्षा के लिये तैयार रहती थी। वह कोई मामूली सौदागर न था, बल्कि राजाओं की भाँति बड़ी शान-शौकत से रहता था। नवाब के दरबार में उसका बहुत आदर था और नवाब उसे इतना मानते थे कि कोई आक्रुत मुसीबत आने पर नवाब सरकार से किसी तरह की सहायता लेने के लिए लोग प्रायः अमीचन्द की ही शरण लेते थे।”

जिस समय नवाब की सत्ता कलकत्ते की तरफ धारही थी, तो अमीचन्द के मित्र राजा रामसिंह ने कुछ रूप से एक पत्र लिखकर अमीचन्द को चिन्ता दिया था कि ‘तुम सुखित स्थान में चले जाओ तो अच्छा है।’ देवयोग से वह पत्र अहमरेजों के हाथ लग गया। मर, इसी अपराध पर धीरे धीरे अहमरेजों ने उसको पकड़कर कैदखाने में ठूस देने का हुक्म प्रौज को दे दिया। अमीचन्द को इस विपत्ति की कुछ खबर न थी। एकाएक प्रौज ने उसे गिरफ्तार कर लिया, और अभियुक्तों की तरह बाँधकर ले चली। कलकत्ते के देशी लोगों में इस घटना से हाहाकार मच गया।

अमीचन्द का एक सम्बन्धी को सारे कारबार का प्रबन्धक था, इस व्यापार से डरकर लोगों को कहीं सुरक्षित स्थान में पहुँचाने का बन्धोबस्त करने लगा। पर अहमरेजों ने जब यह सुना, तो अमीचन्द के घर पर धावा



बोल दिया। समीचन्द के यहाँ जगन्नाथ नामक एक बूढ़ा विरवासी-जमाकर था। वह शांति का शत्रु था। वह सरकाज समीचन्द के भीतर पराक्रमियों को इच्छा करके महल के काटक पर रखा करने को कमर बसकर तैयार होगया। अँगरेजों ने घाबर काटक पर खड़ा-दृष्टा शुरू कर दिया। दोनों पक्षों की मार काट ने जून की मदी यह निकली। अन्त में एक-एक करके समीचन्द के सिपाही धराशायी हुए। आनुपिक-शक्ति से जो सम्भव था, हुआ। अँगरेज बड़े जोरों से अन्त-पुर की ओर बढ़ने लगे। बूढ़े जगन्नाथ का पुराना शत्रुत्व रक्त गर्म होगया। तीन शायं महिलाओं को भगवान् भुवन भास्कर भी नहीं देख सकते थे, वे क्या विदेशियों द्वारा दलित होंगी? इसी के परिवार की लज्जावती पुत्र कामिनिषी भी क्या चौधर विधर्मियों की बन्दी की जाएंगी?

धम, पल भर में बिजली की तरह तड़पकर उमने हुए-बधर से दूटे दूटे काठ किवाड़ और लकड़ी पतल कर घाग लगादो और नली लज्जदार से, अन्त पुर में घुस गया, तथा एक-एक कर ११ महिलाओं का तिर काट कर घाग में डाल दिया। अन्त में पतिव्रताओं के जून से काज—वही पवित्र-लज्जदार घपभी छाती में बाँस ली, और उसी रक्त की बीच में गिर पड़ी। देखने ही देखत घाग और पुर्ण का दुकान टूट छड़ छुट्टा। वही कठिनता स जगन्नाथ को सिपाहियों ने ठाकर ज़ेद किया—उसके साथ नहीं निकले थे। पर अँगरेजों को भीतर घुसने का समय न मिला,—चाँच चाँच करके वह विराज महल बलने लगा।

नवाब हुगली तक आ पहुँचा। गङ्गा की धारा को पीरती हुई सैकड़ों सुश्रुति नावें हुगली में जमा होने लगीं। दृष्ट और अस्तीसी सौदागरों ने नवाब से निवेदन किया कि 'यूरोप में अँगरेजों से सन्धि होने के कारण वे इस खर्चा में शरीर नहीं हो सकते हैं।' नवाब ने उनकी इस नीति युक्त बात का स्वीकार कर, उनसे गोला-बारूद की सहायता ले, उन्हें जिदा किया।

नवाब के कलकत्ते पहुँचने की खबर बिजली की तरह से फैल गई। अँगरेज लोग क्रिख में घुमकर काटक बन्द कर, बैठ रहे। जिसको बिबर राह

खुशी, भाग निपटता। रास्तों, घाटों, घागलों और नदियों के किनारों में इक-ठे-इक की-पुग्ग तुहराम मखान मागने लगे। पर सब से अधिक दुदुरा उन अभागों की हुई थी जिन्होंने कालेचमटे पर टोपा पहनकर अपने धर्म का तिलोत्थानि दी थी। इनमें देशवासी भी पृथक् करते थे, और अँगरेज भी। निदान, इन्हें यहाँ आसरा न था। ये सब खी, बच्चे, बूढ़े हाथे होकर क्रिछे के द्वार पर तिर पेटने लगे। अन्त में इनके अर्त्तनाय से निरुपाय होकर अँगरेजों ने इन्हें भी क्रिछे में आश्रय दिया।

बयाब की दृढ़दाकार तोपें भीषण गजन द्वारा जत्र अपना परिचय देने लगीं, तो अँगरेजों के एक छूट गये। उन्होंने अब भी सायाबाज फ़िजाने, घूस देने, और नज़र-भेंट देने की बहुत चेष्टा की, पर बयाब ने इरादा नहीं बदला। उसका यही हुक्म था, कि क्रिजा अवश्य गिरा दिया जायेगा।

यह क्रिजा पूर की ओर २१० गज़, दक्षिण की ओर १३० गज़, और उत्तर की ओर सिर्फ १०० गज़ था। मज़बूत चहारदीवारी के चारों कोनों पर चार गुज़ थे। प्रत्येक पर १० तोपें लगी थीं। पूर की ओर विशाल काटक पर २ दृढ़दाकार तोपें मुँह बँजा रही थीं। इसके दक्षिण की ओर रींगा की प्रवण धारा समुद्र की ओर बह रही थी। पूर का ओर काटक के पास से गुज़रती हुई जालघाज़ार की रीपी और सुन्दर सबक बज़िदाघाट तक बहती गढ़ थी। इस क्रिछे पर पूर, उत्तर और दक्षिण की ओर तोपों के तीन मोर्चे और भी थे। जनकरी के तीन ओर मराठा स्थाई थे। दक्षिण की ओर स्थाई न थी — घना घंगल था। पीछे गंगा में सुद तज्जा से सजे जहाज़ तैयार थे। १८ जून को मराव की तोर दागो। अँगरेजों ने सरलाज क्रिछे और जहाज़ों से आग बरसानी शुरू की।

अँगरेजों का प्रयास था कि जालघाज़ार की ओर से ही मराव आक्रमण करेगा। उस मोर्चे पर उन्होंने यही बड़ी तोपें लगा रखी थीं। पर, अमीचन्द के उस ज़रमी जमादार जगन्नाथ की सहायता से मराव का यह भेद मालूम होगया कि नगर के दक्षिण में मराठा-स्थाई गढ़ा है। अतएव बयाब ने उसी ओर से आक्रमण किया।

बोझ दिया। अमीचन्द के यहाँ जगन्नाथ नामक एक बड़ा विश्वासी-जमादार था। यह शक्ति का शत्रिय था। वह सरकाज अमीचन्द के मौकर धरमदाजों को इच्छा करके महल के फाटक पर रक्त करने को कमार बतकर तैयार होगया। अँगरेजों ने घाबर फाटक पर खड़ाई दहा शुरू कर दिया। दोनों पक्षों की मार काट स खून की बंदी बह निकली। अन्त में एक-एक करके सभी चन्द के सिपाही धराशायी हुए। मानुषिक-शक्ति ने जो सम्भव था, हुआ। अँगरेज बड़े जोरों से अन्तःपुर की ओर बढ़ने लगे। दूरे जगन्नाथ का पुराण शत्रिय रक्त गर्म होगया। दिन धाँये महिमाओं को भगवान् मुवश भास्कर भी नहीं देख सकते थे, ये क्या विदेशियों द्वारा दलित होंगी? इसी के परिवार की सजावटी युद्ध कामिनिषी भी क्या बाँधकर विधर्मियों की बन्दी की जाएंगी?

अस, पक्ष भर में बिजली की तरह तड़पकर उसने इषा-उधर से दूटे पूटे काट किवाड़ और लकड़ी पत्र कर घाग खगादी और नली तखवार से, अन्त पुर में घुस गया, तथा एक-एक कर १३ महिमाओं का सिर फाट काट कर घाग में दाल दिया। अन्त में पतिव्रताओं के झूट से काज—वही पवित्र-तखवार अपनी छाती में खोंस ली, और उसी रक्त की कीचड़ में गिर पड़ा।

देखने ही देखते घाग और गुर्दे का सुकान उठ खड़ा हुआ। सभी कठिनता स जगन्नाथ को सिपाहियों ने उठाकर ज़ेद किया—उसके साथ नहीं निकले थे। पर अँगरेजों को भीतर घुसने का समय न मिला,—धौंच धौंच करके वह विशाल महल खलने लगा।

नवाब हुगली तक आ पहुँचा। गङ्गा की घास को चीरती हुई सैकड़ों सुपन्नित गाँवें हुगली में जमा होने लगीं। दूध और ज़ांसीसी सौदागरों ने नवाब से निवेदन किया कि 'यूरोप में अँगरेजों से सन्धि होने के फारस्य से इस खड़ाई में शरीक नहीं हो सकते हैं।' नवाब ने उनकी इस नीति-युक्त बात को स्वीकार कर, उनसे गोला-बारूद की सहायता ले, उन्हें विदा किया।

नवाब के कलाकत्ते पहुँचने की छपर बिजली की तरह से ज़ेक गई। अँगरेज लोग ज़िन्ने में घुसकर फाटक चन्द कर, बैठ रहे। जिसको बिचर राह

सूची, भाग निश्चया । रातों, घाटों, खण्डों और मदिपों के किनारों में दूध-  
के-दूध की-शुल्क कुहगम मचान भागने लगे । पर सब से अधिक दुधरा उन  
अमागों की हुई थी जिन्होंने कालेबमड़े पर टोपा पहनकर अपने धर्म का  
तिर्थात्रिती थी थी । इनमें देशवासी भी पृथक् करते थे, और अंगरेज  
भी । निदान, इन्हें पड़ा आसना न था । ये सब की, बच्चे, पूड़े हाँट्टे होकर  
क्रिस्ते के द्वार पर सिर पेटो लगे । अन्त में इनके घर्षनाद से निरुपाय  
होकर अंगरेजों ने इन्हें भी क्रिस्ते में आश्रय दिया ।

नवाब की वृद्धदाकार तोपें भीषण गजन द्वारा जल अपना परिचय देने  
लगीं, तो अंगरेजों के लक्ष्य छूट गये । उन्होंने अब भी मायाबाल फैलाने,  
धूस देने, और गज़र-भें देने की बहुत चेष्टा की, पर नवाब ने हरादा नहीं  
बदला । उसका यही हुक्म था, कि क्रिजा अवश्य गिरा दिया जावेगा ।

यह क्रिजा पूर की ओर २१० गज़, दक्षिण की ओर १३० गज़, और  
उत्तर की ओर विस्तृत १०० गज़ था । मज़दूर चहारदीवारी के चारों ओर  
पर चार गुज़ थे । प्रत्येक पर १० तोपें लगी थीं । पूर की ओर विशाख काटक  
पर ५ वृद्धदाकार तोपें मुँह फैला रखी थीं । इसके पश्चिम की ओर रंगना की  
प्रवण धारा समुद्र की ओर यह रही थी । पूर की ओर काटक के पास से  
गुज़रती हुई खाखवाज़ार की सीढ़ी और सुन्दर सड़क बलिदाघाट तक  
बनी गई थी । इस क्रिस्ते पर पूर्व, उत्तर और दक्षिण की ओर तोपों के तीन  
मोर्चे और भी थे । फलकत्ते के तीन ओर मराठा खाई थी । दक्षिण की  
ओर खाई न थी — घना जंगल था । पीछे गंगा में शुद्ध सज्जा से सजे जहाज़  
सैवार थे । १८ जून को नवाब की तोपें दागे । अंगरेजों ने तुरन्त क्रिस्ते और  
जहाज़ों से घायल बासानी शुरू की ।

अंगरेजों का प्रयास था कि बाखवाज़ार की ओर से ही नवाब का  
बख करेगा । उन मोर्चों पर उन्होंने बड़ी बड़ी तोपें लगा रखीं थीं । पर  
अमीरन्द के उन ज़फ़्ती जसादार जगन्नाथ की सहायता से नवाब का यह  
मेव मालूम होगया कि नगर के दक्षिण में मराठा-खाई नहीं है । अतएव  
नवाब ने दक्षिण से आक्रमण किया ।

## इस्लाम का विष-मृष

बोख दिया। इसीचन्द के यहाँ जगन्नाथ नामक एक बूढ़ा गिरवासी-ब्राम्हण था। यह शक्ति का प्रिय था। यह सत्काय इसीचन्द के गौबर पाउन्वालों की इच्छा करके महल के बाटक पर रहा कामे की कसर करके तैयार होगया। अँगरेजों ने बाबर बाटक पर छद्मारे-यज्ञा शुरू कर दिया। दोस्रो पक्षों की मार काट से छून की मदी बह निकली। अन्त में एक-एक करके इसीचन्द के सिपागी घराणापी हुए। मानुषिक-शक्ति से वो परमेश था, हुआ। अँगरेज बड़े जोरों से अन्त-पुर की ओर बढ़ने लगे। यूँ जगन्नाथ का पुराना प्रिय रख गये होगया। निज कार्य महिलाओं को भगवान भुवन भास्कर भी नहीं देख सकते थे, ये क्या विदेशियों द्वारा दलित होंगी? इसी के परिवार की सम्भावना कुछ कामिनीयों भी क्या बाँधकर विधियों की बन्दी की आवेंगी?

धन, पद भर में विजली की तरह लड़पट्टर उसने इस-उधर से दूटे दूटे काठ बिबाह और लक्ष्मी पक्ष पर आग लगादी और लक्ष्मी लक्ष्मी के, अन्त पुर में धुन गया, तथा एक-एक कर १३ महिलाओं का सिर काट कर आग में डाल दिया। अन्त में पतिव्रताओं के दून से लाख—बड़ी शक्ति लक्ष्मी अपनी दाती में लौं ली, और उसी रक्त की कीचड़ में गिर पदा।

देखने ही देखते आग और धुँएँ का दूकान उठ खड़ा हुआ। बड़ी कठिनता से जगन्नाथ का सिपाहियों ने उठाकर छेद किया—उसके प्राण नहीं निकले थे। पर अँगरेजों की भीतर घुसने का समय न मिला,—घाँव घाँव करके यह विशाल महल लखने लगा।

नवाब हुगली तक आ पहुँचा। राजा की चारा को चीरधी हुई सैकड़ों सु-सज्जित गाँवें हुगली में जमा होने लगीं। दूध और फ्रांसीसी लौहागारों ने नवाब से निवेदन किया कि 'यूरोप में अँगरेजों से सन्धि होने के कारण वे इस खड़ाई में शरीक नहीं हो सकते हैं।' नवाब ने उनकी इस नीति मुक्त बात को स्वीकार कर, उनसे जोला-बारूद की सहायता ले, उन्हें विदा किया।

नवाब के वधावसे पहुँचने की छत्र विजली की तरह से फैल गई। अँगरेज लोग क्रिद्ध में घुसकर बाटक चन्द का, बैठ रहे। चित्तको बिबर राह

सूखी, भाग निकला। रास्तों, घाटों, खगलों और भदियों के किनारों में दल के-दल खी-पुरुष गृहराम मचाने भागने लगे। पर सब से अधिक दुर्दशा उन अभागों की हुई थी जिन्होंने फाल्गुनमासे पर टोपा पहनकर अपने धर्म की तिथिअजि दी थी। इनमें देशवासी भी घुणा करते थे, और अंगरेज भी। निदाम, इन्हें वही भासता न था। ये सब खी,बच्चे, धड़े हाँटे होकर क्रिष्ण के द्वार पर सिर पेटो लगे। अन्त में इनके चर्तनाएँ से निरुपाय होकर अंगरेजों ने इन्हें भी क्रिष्ण में फाँव दिया।

मयाय की वृद्धाकार तोपें भीषण गजन द्वारा घाय अपना परिचय देने लगीं, तो अंगरेजों के घुके छूट गये। उन्होंने अब भी मायाबाज फैलाने, घुँस देने, और मज़र-मैड देने की बहुत चेष्टा की, पर मयाय ने इरादा नहीं बदला। इसका पक्षी ह्वम था कि क्रिष्ण अवरय गिरा दिया जावेगा।

यह क्रिष्ण पूव की ओर २१० गज़, दक्षिण की ओर १३० गज़, और उत्तर की ओर सिर्फ १०० गज़ था। मज़दूर चहारदीवारी के चारों ओर पर चार गुज़ थे। प्रत्येक पर १० तोपें लगी थीं। पूव की ओर विशाख फाटक पर २ वृद्धाकार तोपें मुँह फैला रही थीं। इसके पश्चिम की ओर गंगा की प्रवह धारा समुद्र की ओर बह रही थी। पूव का ओर फाटक के पाम से गुज़रती हुई जालबाज़ार की स्तीपी और सुन्दर सबक बलिगाघाट तक बहती गई थी। इस क्रिष्ण पर पूव, उत्तर और दक्षिण की ओर तोपों के तीन मोर्चे और भी थे। कलकत्ते के तीन ओर मराठा स्थाई थे। दक्षिण की ओर स्थाई न थी — घना खगज था। पीछे मया में युद्ध सज्जा से सजे जहाज़ तैयार थे। १८ जून को मयाय की तोपें दगो। अंगरेजों ने तत्काल क्रिष्ण और जहाज़ों से आग बमबानी शुरू की।

अंगरेजों का उपास था कि जालबाज़ार की ओर से ही मयाय आक्रमण करेगा। उस मोर्चे पर उन्होंने बड़ी बड़ी तोपें लगा रखी थीं। पर, अमीरन्द के उस ज़ुल्मी अमादार खगजाय की सहायता से मयाय का यह मेव मालूम होगया कि अगर के दक्षिण में मराठा-स्थाई नहीं है। अतएव मयाय ने उसी ओर से आक्रमण किया।

कालबाजार के रास्ते के द्वार पूर की चोर की तोपों का मंच बनाया गया था, उसके सामने ही कुछ दूर पर जेब्राना था। अँगरेजों से उसकी एक दावार की फोड़कर कुछ तोपें जुग स्थानी थीं। उनका प्रयास था कि कालबाजार के रास्ते बचाबी सेना के अग्रसर होते ही जेब्राने और पूर्व वाले मोर्चों से आग बरसाकर सेना को सहस्र सहस्र कर देंगे। परन्तु बचाव का सभा घण्टाओं की तरह तोपों के आगने सीधी नहीं आई। उसने सावधानी से सहकवाजा रास्ता ही छोड़ दिया। केवल पहरेदारों को मारकर वह उत्तर और दक्षिण को हटने लगी।

देखते ही देखते अँगरेजी तोपों के तीनों मार्चें फिर गये। अब तो जगर रक्षा अयमभव होगई। कलकत्ते के रक्षामी डॉनवेज साहब और मोर्चों के अग्रसर कप्तान ब्रैटन जिले में भाग गये। मोर्चों बचाबी सेना के कब्जे में आगये। अब वही तोपों से जिले पर गोळा बरसने लगा। जिले में कुहराम मच गया।

जिले के नीचे गंगा में कुछ नाव और जहाज तैयार थे। उनके द्वारा रिजिया को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देने की व्यवस्था शाम को हुई, जियों को बहाज तक पहुँचाने को दो अग्रसर मेनिहम और फ्रांकलेयड रात्रि के अन्धकार में चुराके चुराके निकले। परन्तु बहाज पर पहुँचकर उन्होंने फिर जिले में आने से साक ह्मसार कर दिया। उनकी इन कार्रवाही का अर्थ न बरतन साहब ने इन शब्दों में किया है—“उनका पारस्परिक अन्वेष और मतभेद तथा कन्नौ के कुछ प्रधान कमवातियों की रिता हो कुछ हानि उठाये भाग जाने की इच्छा,—यह ऐसे मोच काम थे, जो परामर्श के अन्तिम समय में किये गये और जो शायद अँगरेजों में कमी नहीं हुए।”

जिले की भीतरी दशा अजीब थी। सब कोई दूबरों को सिखाने में लगे थे। पर स्वयं किमी की बात को कोई नहीं मानना चाहता था। बाहर तो बचाबी सेना अग्रसरों की भीति बुरकाई और शोर मचा रही थी, भीतर किरगियों का आर्चबाद, सिपाहियों की परस्पर की कलह और

सेनापतियों के मतिभ्रम हृष्यादि से जिज्ञे में शासक-शक्ति का सर्वथा क्षय हो गया था।

यही कठिणता से रात की दो बजे सामरिक सभा लुढ़ी। हममें कोट्टे-बूँदे खरी थे। यहीझाता समेटकर भाग जाना ही निश्चय हुआ। रात काज को भागने को एक गुप्त दूतोंवा खोला गया, जो बहुत मे चादियों ने दवावकी से भागकर, बिनरे पर आकर पोलाहल मचा दिया, और बाघों पर बैठने में छोला फपटी करने लगे। परियाम गुरा हुआ—नवाबों सेना ने सावधान होकर तौर बरसाने शुरू किये। कितनी ही घायल बल्लट गई। कितनी तरह कुछ लोग छारा लक पहुँचे। उस पर गोले बरसाये गये। फिर भी गवर्नर डेक, सेनापति मनचन, कप्तान भागट आदि बड़े बड़े आदमी इस तरह से भाग गये।

अब कलकत्ते के जमींदार डॉक्टर साहब ही मुलिया रट गये। वे क्या करते? डॉक्टर समझने थे कि, महामति डेक घबराकर मतिभ्रम होने के कारण भाग गये हैं। सायद, वे विचार कर, सहकारियों की सजित करके अपने साथियों की रक्षा के लिये फिर आवें। पर चारा खप चुई। टूँक साहब न आवें। जिज्ञेवाकों ने छोले के बहुत संरस भिये—घरावर विवेदन किये। गवर्नर साहब न आवें। एक ऑमेश ने खिरा दी—“देवद एक नवाब और पन्द्रह और पुराओं की सरदारी ही से पुराकारियों की पुरेण का अन्त हो सकता था। परन्तु खेक! भागे हुए ऑमेशों में ऐसे पन्द्रह और न थे।”

अब हारकर डॉक्टर साहब अपने पुराने सहायक जमीन्दार की शरण में गये जो डर्हीं के ज़ैरुजाने में बन्दी पड़ा था। जमीन्दार ने उस समय उनकी कुछ भी खानत मसामत न कर उनके कातर फन्दन से ज़वी भूत हो नवाब के सेनानायक मानिकचन्द को एक पत्र द्वारा चाराय का खिरा दिया—“अब नहीं। बाकी शिवा निज गई है। नवाब की जो आज्ञा होगी—आजरेख वही करेंगे।”

यह पत्र डॉक्टर साहब ने चहारदीवानी पर लदे होकर



दिना । पर इसका फेई क्याव नहीं आया । पता नहीं, वह पत्र ठिकाने पहुँचा भी था नहीं । एकाएक क्रिजे का परिचय दावाला टूट गया, और दुर्भाग्यवश नवाबी सेना क्रिजे में घुस आई । सब अंगरेज कैद कर लिये गये । क्रिजे के बाइक पर नवाबों पताला बंधो करदी गई ।

सीसरे पहर नवाब ने क्रिजे में गपारकर दर्शन किया । अमीरुल्ला और कृष्णब्रह्म को खोजा गया । अंगरेजों के दो इतिहास में लिखा है कि—  
‘ये दोनों आकर जब नवाब के सामने नम्रतापूर्वक खड़े हुए, तो नवाब ने समझा तिरस्कार तो बुर रहता, उनका आदर करके आसन दिया । यही कृष्णब्रह्म का—जिपकी बदौलत इतने आगे हुए थे ।’

इसके बाद अंगरेज कैदियों की तरह बाँधकर नवाब के सामने लाये गये । सामने आते ही इन्हें ब्रह्मसाधु के सम्पन्न सुतवा दिये गये, और उन्हें अन्न-दान देने हुऐ पहा—‘तुम लोगों के उत्पन्न-व्यवहार के आधा ही इनामी पट दता हुं है ।’ इसके बाद मेनारति आनिकुल्ला को क्रिजे का भार सौंपकर दर्शन पत्रालन किया । यही मर्दो सेना आराम का स्थान उपलब्ध होने लगी ।

यह बात बहुत प्रसिद्ध हो गई है, कि नवाब ने १७६ अंगरेज कम दिन ( २० जून को ) रात को—एक १८ फुट आयतन की कोठरी में बन्द करवा दिये जिपमें सिर्फ एक लिफ्टकी थी और जिपमें छोटे के छड़ लगे हुए थे । प्रातः काठ जब दरवाजा खोला गया, तो सिर्फ २१ आदमी जिन्दा बचे ।

कास-कोठरी की यह बात इतनी प्रसिद्ध होगई है कि समस्त भारत और इंग्लैण्ड में बधा-बधा हम बात को जानता है । पर यह बात प्रमा खिल गयी था खुली है यह भिन्न नवाब को बदनाम करने की होंकवेन सादर ने कक्षाती गयी था, जिनके आस्थाचार का भिन्न मुचनने में है, और जो बधा । मप्पावादी आदमी था ।

अत्यन्त साधारण बुद्धिवादी व्यक्ति को समझ सकता है कि, १८ फुट की आयतनवाली कोठरी में १७६ आदमी, यदि वे बोरों की तरह भी जाड़े



गये। पर पञ्जाबी युद्ध में सीताबदर से नूतन में १ लाख रुपया इन्हें मिला।  
जय उम्होंने कलकत्ता के राज्य थोड़ी-सी समीचीनी प्रसीद की। कुछ दिन  
कलकत्ते के गमन भी रहे। पर शीघ्र ही विजयपुर के अधिकारियों से बचने  
मिलने के कारण अलग कर दिये गए और जिव मोरजाया ने इतना करपा  
दिया था, अब ही मुँदा कलकत्ता खगाकर राज्य प्रयुक्त किया। अन्त में  
इस्लाम का मर गये।

भारतु - कलकत्ता का शासन भार राजा मानिकचन्द्र को दे, मराठ ने  
कलकत्ते से बचकर दुर्गका में बसाव डाला। दण और फूँसीसी सीमागत  
गाने में दुर्गा वाले प्राचीनता सीमा करने के लिये सम्मानपूर्वक मजूर  
में डाले। दणों ने ३५ लाख और फूँकों ने ४॥ लाख रुपया मराठ को  
में डाला। मराठ ने द. अंग्रेज वादत और बड़े की मुवाकर यह सम्मान  
दिया कि—' मैं तुम लोगों को देश से बाहर निकालना नहीं चाहता। तुम  
दुर्गा से कलकत्ते में रहकर व्यापार करो।' मराठ तो राजधानी को गये,  
और अंग्रेज कलकत्ते में बसित आये, और अमोचन्द की उदारता की  
बड़ीत उम्होंने अलग-अलग पाया।

इस यात्रा से और कर ११ लुकाई को मराठ ने राजधानी में गाने  
गाने में प्रवेष्ट किया। लोगों की सखामी दली। भाव-रंग होने लगे।  
मराठ रत्न-अटित पाजकी पर अमोर समराओं के साथ नगर में होकर जब  
गाने गाने से मोती माल को ला रहा था, उस समय रास्ते में, कारागार  
में स्थित हॉलवेज साहब पर मजूर पड़ी। उसने सखाम सब गाने बन्द  
करवा दिये, और पाजकी से उतर, वैदिक कारागार के द्वार पर बाहर थोप  
वार को हॉलवेज को हथकड़ी चेड़ी सुलवाने का हुक्म दिया—हॉलवेज  
साहब और उनके तीन साथियों को बंधे हुए स्थान में जाने को मुक्त कर  
दिया। हॉलवेज साहब ने स्वयं यह बात लिखी है।

धीरे धीरे अंग्रेज फिर कलकत्ते में आकर प्राधिकार करने लगे। पर  
शीघ्र ही एक बार दुर्घटना हो गई। एक अंग्रेज साजन ने एक निरपराध  
मुसलमान की हत्या करवा दी। वस, राजा मानिकचन्द्र की आज्ञा से सब

भँगरेज कलकत्ते से निकाल बाहर किये गये। भँगरेज लोग निरुपय होकर पल्लवानन्दर पर इकट्ठे होने लगे। 'हम अस्वस्थ रह स्थान में भँगरेजों की पत्नी दुर्दशा हुई। प्रचण्ड गर्मी, तिमिर पर निराश्रय, और खाद्य पदार्थों का अभाव ! लड़ाई का भयंकर ख़ाज़ी, पान में रुखा नहीं। न कोई याज़ार ! केवल कुछ रूख, फूँटीमी और काखे बगावतियों की कृपा से कुछ खाद्य पदार्थ मिल जाया जाता था।

दुर्दशा के साथ दुर्गति भी जनमें बढ़ गई। किसके दोष से हमारी यह दुर्दशा हुई ?—इसी बात को लेकर परस्पर विवाद चलता। सब लोग कलकत्ते की कौमिल को तारा दोष देने लगे। कौमिल के सब लोग परस्पर एक दूसरे को दोष देने लगे। घोर पैमाने पर। अन्त में सब पक्षी कहने लगे कि लोभ में आकर कृष्णचक्रवर्ती को जिन्होंने आश्रय दिया, और कम्पनी के नाम से परवाने औरों को बेचकर जिन्होंने बदमाशी की, वे ही इस विपत्ति का मूल कारण हैं।

पौखों अगस्त को मद्रास में आगे हुए भँगरेजों ने पहुँचकर कलकत्ते की दुर्दशा का हाल सुनाया। सुन कर सबके तिर पर बसू गिरा। सब दल-बुद्धि होगये। जब वे अगस्त में एक कमेटी की। रूख गजन तजन हुआ। उन दिनों क्राय में कुछ छिपने के कारण भँगरेजों का बख़ खोख हो रहा था। वे इसलिये कुछ निश्चय न कर सके।

उधर पल्लवानन्दर में भँगरेज पुग्घाप नहीं बैठे थे। यदि जवाय पल्लवानन्दर तक यदा चला जाता, तो भँगरेजों को चोरों की तरह भी भागने का अवसर न मिलता। पर उसका उद्देश्य केवल उनके हुए व्यवहार का दण्ड देना ही था। अनेक बगावती इन दुर्दिनों में भी लुक-छिपकर इनकी सहायता कर रहे थे। औरों की तो बात अलग रही—स्वयं जमी-अन्व, जिसका कि अमेज़ोंन सत्यनाश किया था, और जो इन्हीं की कृपा से शोक मस्त और मम अहित हो, पय का भिलाती बन चुका था, यह भी जवाय के द्वाँर में उनके उत्थान के लिये बहुत कुछ अनुनय विनय कर रहा था। उसने एक गुन बिट्टी भँगरेजों को लिखी थी—जिसका आशय

“मदा की भांति मैं राज भी हूँ। भाव से भाव छोड़ों का भका खाऊँ हूँ। यदि भाव उपासना चाहिये, जगत्पद, या जगत् मानिक्यम् मे मृत पत्र ध्वजदार बना था—तो मैं तुम्हारे पत्र उन्मूलन करने का काम करूँगा।”

इस पत्र से अंगरेजों को ग्राह्य हुआ। कीमती मानिक्यम् की कृत-रति बन पर हुई। उनके लिये बाजार खोल दिया गया, और ताड़ ताड़ की मत्त विनितियों से मत्त के दृष्टि में व्यापार करने के आशा-त्र के साथ प्रार्थना-त्र मान छोड़े, और उनके सफल होने की भी कुछ-कुछ आश्वस्त होने लगी। ५१म्ह इसी वर्ष में इतिहास का नाम से इतिहास में लिखा,—“मुर्शिदाबाद में बड़ा शहबद मचा है। दिल्ली में शीख-मग १ बगल, बिहार, और बड़ी-बा की मत्तों की सज्ज मत्त करली है और भाव सभी इन्हीं-द्वारा उनके पत्र में लज्जत उठावेंगे। अब मिताहरीका का गर्व पूर्ण हुआ आदता है।”

इस एकर के मिलने ही अंगरेजों के इरादे ही लज्जत गये। अब वे शीख-मग १ में बगल की व्यवस्था करने लगे। पर मत्त को इन्हीं कुछ एकर में था। उसके साथ बाजार अनुभव-विभव के पत्र का रहे थे, जो इसे इस शान विद्रोह की कुछ भी एकर लज्जत काय, तो शायद पञ्जता बन्द ही अंगरेजों का समाधि पत्र बन जाय।

एकर मदा-मत्त अंगरेजों ने कोई दो महीने पीछे लज्जत की रचा का निरवय बड़े बाद विवाद के बाद किया और फ्रांस बनाइए तथा पत्र मितल वाट्सन के साथ और एकर की सेनायें भेज दी गईं। ये लोग २ मैजिक बहाजों के साथ १३ यों कलकत्ता को लड़े। २ लड़ाई पर अलवाय था। १०० गोरे और १५०० काछे सिपाही थे।

दिल्ली का बिहास भीरे भीरे काछ के काछे हाथों से रंग रहा था। पर अब भी उसके नाम के साथ अलवाय था। मत्त ने सुना कि शह-नादा शीख-मग की मदायत्तार्थ था रहा है तो अपने उसके जाने से पूर्ण ही शीख-मग को परास्त करने का निरवय किया। उसे यह मदायत्त था

कि शौत्रतजंग पिरतुज मूर्ख, धमण्डी और दुराचारी आदमी है, और उसके मायो—स्वार्थी और शुकामयी ! उसे हराना जरूर है । परन्तु यह भी अस्त्रीधर्मीयों के प्राम्दान का था । यतएव उसने शौत्रतजंग को एक चिट्ठी लिखकर समझाया । उसका जवाब को मिला—यह, यह था—

“हम बादशाह की सनद पाकर बगाल बिहार और उड़ीसा के नवाब हुए हैं । तुम हमारे परम घायमीय हो । इसलिये हम तुम्हारे प्राण खेना नहीं चाहते । तुम पूरी बगाल के किसी निर्जन स्थान में भागकर अपने प्राण बचाना चाओ, तो हम उसमें बाधा नहीं देंगे । यदि तुम्हारे लिये सुस्थवस्था कर देंगे, जिससे तुम्हें अन्न-यज्ञ का कष्ट न हो । यत्न, धैर्य मत करना, पत्र को पढ़ते ही रातबानी छोड़कर भाग जाओ । परन्तु—‘घाबरवार’ ज्ञान के एक पैले में भी हाथ न खगाना । जितनी जरूरी हो तब, पत्र का जवाब लिखो ! अब समय नहीं है । छोड़े पर ज़ीन कमा हुआ है, पाँच राजा में बाँट चुका हूँ । केवल तुम्हारे बचाव की देर है ।”

इस पत्र से ही प्रभावित होता है कि शौत्रत किस योग्यता का आदमी था । नवाब ने यह पत्र उमरावों को पढ़ सुनाया । उसे आशा थी, सब कूच की सलाह देंगे और बाड़ी, गुरताज शौत्रत को सब दुरा कहेंगे । परन्तु ऐसा नहीं हुआ । मंत्री से लेकर दरबारियों तक ने विषय लिखते ही बाद विषाद उठाया । जगतसेठ ने प्रतिनिधि बनकर साफ़ कह दिया—  
“जब आपके पास बादशाह की सनद नहीं है—शौत्रतजंग ने उसे प्राप्त कर लिया है, ऐसी दशा में कौन नवाब है—इसका कुछ निर्णय नहीं हो सकता ।”

नवाब ने देखा, विमोह ने टेढ़े मार्ग का अवसर न किया है । उसने गुस्से में आकर जगतसेठ का क्रोध भर लिया, और दरबार बर्खास्त कर दिया । फिर क्रौर्य आक्रमण करने को पुर्नर्पा की ओर कूच कर दिया ।

शौत्रतजंग मूर्ख, धमण्डी, और निकम्मा नौजवान था । यह किसी की राय न मान स्वयं ही सिपहमाजार बन गया । इससे प्रथम उसने कुछ पत्र की कमी शूरत भी नहीं देखी थी । अनुभव से नापसियों ने सलाह :

“मरा की मर्ति में छात्र भी दली भाव स चार लोगों का मरवा चाहता हूँ। यदि चार दयाला भात्रिह जगतमर, या राजा मादिहचम् से गुप्त पत्र व्यवहार करना चाहें, तो मैं तुम्हारे पत्र उमड़ेगा पढ़ूँगा और बचाव मगा दूँगा।”

हम पत्र में चैंगरेजों को सादर दुःखा। शीघ्र ही मनिहचम् की कृत-दृष्टि उन पर हुई। उनके दिले बाह्यार खोज दिया गया, और साह साह की मर विमर्शियों में मराह के द्वारा म रगारा करने के भागा पत्र के साथ प्रार्थना-त्र जाने लगे, और उनके सङ्घ होने को भी गुप्त-गुप्त भाव्य होने लगी। परन्तु इसी बीच में हासिम-बाग्यार स हेरिहम से लिखा,—“मुर्तिहा बाद में बचा मरवक मरवा है। दिखी म शीघ्रतया म बगात, बिहार, और उड़ीसा की मराधी की सनद प्राप्त करली है और भावः सभी इमींदार उनके पत्र में लक्ष्यार उठाईये। अत्र निराशरीया का गर्व पूर्ण हुआ चाहता है।”

हम मरार के मित्रों ही चैंगरेजों के हरादे ही मरव गये। यह मे शीघ्रतया स मेर बढ़ाने की व्यवस्था करने लगे। पर मराव को हमकी दुःख मरार म था। उनके पास बाग्यार अनुभव दिन के पत्र ला रहे थे जो हमें हम राज विद्रोह का पक्ष भी दावर लग लाय, तो शायद पक्षता-मरार की चैंगरेजों का समाधि पत्र बन आय।

हमर मद्रासवाले चैंगरेजों ने कोई दो महीने पीछे मरकले की रण-का निरचय बड़े बाद निराद के बाद किया, और काँच बराह सपा पद मिरछ बाटूमन के साथ और रमक की सेनायें भेज दी गईं। ये लोग २ सैनिक बहाजों के साथ ११ थीं अक्नूरा को लगे। २ लड़ाओं पर धमकाव था। ६०० गोरे और १२०० आले सिपाही थे।

दिखी का विहासम धीरे-धीरे काख के काखे हाथों से रँग रहा था। पर मर भी उसके नाम के भाव कमलकार था। मराव ने सुना कि शाह-कादा शीघ्रतया की सहायताय था रहा है तो हमने उनके घाने से लूँ हा शीघ्रतया को परास्त करने का निश्चय किया। उसे वह मारूम था

मैं से किसे कितना हिस्सा मिलेगा। दोनों से बहुत चाद विवाद के पीछे जलम झड़ा तब हुआ।

जिन्होंने इन दोनों को बंगाल भेजा था—उन्होंने सिर्फ बंगाल में वाणिज्य-स्थापना करने की हिदायत कर दी थी, और बिना रक्तपात के यह काम हो, इसीलिए निजाम और सरकार के नवाब से सिकारिशी चिट्ठिया भी सिराजुद्दौला के नाम लिखाई थीं। पर ये लोग तो रास्ते ही में लूट के माल का हिस्सा लगा रहे थे।

इधर पल्लता-मन्दर के अंगरेजों की विनोत प्रार्थना से नवाब उन्हें फिर से अधिकार देने को राजी होगया था। सब बखेड़ों का अन्त होने वाला था, कि एकएक नवाब को खबर लगी, कि मद्रास से अंगरेजों के बहाज फौज और गोछा मारुद खेबर पल्लता-मन्दर आगये हैं। इस खबर के साथ ही बादशाह साहब का एक पत्र भी आया, जिसमें बकी देकड़ी से नवाब को अंगरेजों के प्रति निन्द्य-व्यवहार की गई मजामत की थी, और उन्हें फिर बमने देने और हर्जाना देने के सम्बन्ध में धैसी ही देकड़ी के शब्दों में धातें लिखी थीं।

इनके साथ ही बलाह्व ने भी एक बड़ा अभिमानपूर्ण पत्र नवाब को लिखा, जिसमें लिखा था—“मेरी दक्षिण की विजयों की खबर आपने सुनी ही होगी—मैं अंगरेजों के प्रति किये गये आपके व्यवहार का दण्ड देने आया हूँ।”

कलकत्ते के व्यापारी लड़ाई को भी दबाना चाहते थे, क्योंकि मरावा ने उन्हें अधिकार-देना स्वीकार भी कर लिया था। परन्तु बलाह्व और बादशाह के तो हरादे ही और थे।

वे शीघ्र-ही सजित होकर कलकत्ते की ओर बढ़ने लगे। गंगा किनारे बलचन-नामक एक छोटा जिला था। अंगरेजों ने उस पर घावा कर दिया। मानिकचन्द डोंग बनाने को कुछ देर झूठ-झूठ लड़ा, पर शीघ्र ही भागकर मुर्शिदाबाद आ पहुँचा। यही हाल कलकत्ते के निखेवालों का भी हुआ। खो किले में बलाह्व ने घूमघूम से प्रवेश किया।



देनी चाही, तो उसने अफ़सूस भराव दिया—“धनी मैंने हम उमर में ऐसी ऐसी सौ शीशों की ज़ौबकारी की है। सेनानायक बेचारे अभिवादन कर-करके खौटने लगे। परियाम यह हुआ कि हम युद्ध में शौर्यवश मारा गया। नवाब की विद्वय हुई। पुर्निया का शामन भार मशाराज मोहमबाल को लेकर और शौर्य की माँ को धावर के साथ मंग लाकर नवाब राज धानी में खौट आया, तथा शौर्य की माँ सिराज की माँ के साथ अन्त पुर में रहने लगी।

इस बीच में उते खँगरेजों पर दृष्टि देने का अवकाश न मिला था। अतः उन्होंने घूम रिरवत दे दिखाकर बहुत-से महायक बना लिये थे। जगतसेठ को मेजर किङ्गपाट्रिक ने लिखा—“खँगरेजों को अब धापका ही भरोसा है। ये इतने आप पर-ही निर्भर हैं। जो खँगरेजा एक वर्ष पहले कलकत्ते में टकपात्र खोसकर जगतसेठ को खीपट करने के लिये बादशाह के दरबार में पूत के रूपों की बौद्धार कर रहे थे, वे ही अब, जगतसेठ के तलपु पाटने लगे। आनिकचन्द को घूम लेकर पहले ही मिखा लिया गया था। सब ने मिलाकर खँगरेजों को पुनः अधिकार देने के लिये नवाब से प्राथना की। नवाब राजी भी हुआ।

परन्तु खँगरेजा इपर खयखो-यतो कर रहे थे, और ऊपर मद्रास से ज़ौन मँगाने का प्रयत्न कर रहे थे। जमकहराम आनिकचन्द ने नदी की छोर बहुत सी लोपे सजा रखी थीं। पर सब बिजावा था ये सब टूटी फूटी थीं। क्रिडे में सिर्फ २०० सिपाही थे, और हुगली के क्रिडे में सिर्फ २०। ये सब छाने खँगरेजों को मिला रही थीं।

शाहब और बादसन धीरे धीरे कलकत्ते की छोर बढ चले जा रहे थे। दोनों 'घोर-घोर मौतेरे भाई' थे। कुछ दिव पहले आझावार के किनारे पर युद्ध ग्यावार में दोर्जा ने ज़ूब खाम उठाया। मराठों ने इन दोनों की सहायता से स्वर्णदुर्ग को घट कर डाला था, और इसके दखले इन्हें १२ लाख रुपये मिले थे। उबासा के किनारे पहुँचकर एक दिन बहादुर पर दो दोनों में हम धात का परामर्श हुआ कि यदि बंगाल को हमने लूट पाया, तो लूट

मैं से किसे कितना हिरसा मिलेगा। दोनों से बहुत घाद बिदाद के पीछे बदम अदा तय हुआ।

जिन्होंने इन दोनों की बर्गाल भेजा था—उन्होंने सिक्र बगाल में वाणिज्य-स्थापना करने की हिदायत कर दी थी, और बिना रक्त-पात के यह काम हो, इसीलिये गिज़ाम और सरकार के नवाब स सिक्रारिशी चिह्नियाँ भी सिराजुद्दौला के नाम लिखाई थीं। पर ये लोग तो रास्ते ही में लूट के भाव का हिसाब लगा रहे थे।

इपर पञ्चता बन्दर के अँगरेजों की विनीत प्रापना से नवाब उन्हें फिर से अधिकार देने को राजी हागया था। सब पक्षों का अन्त होने वाला था, कि एकाएक नवाब को खबर लगी, कि मद्रास से अँगरेजों के बहाज फौज और गोला-बारूद लेकर पञ्चता-बन्दर आगये हैं। इस खबर के साथ ही बादसन साहब का एक पत्र भी आया, जिसमें बड़ी हेकड़ी से नवाब को अँगरेजों के प्रति निन्द्य व्यवहार की गई मजामत की थी, और उन्हें फिर बसने देने और हर्जाना देने के सम्बन्ध में वैसी ही हेकड़ी के शब्दों में बातें लिखी थीं।

इनके साथ ही बलाइव ने भी एक बड़ा अहिमानपूर्ण पत्र नवाब को लिखा, जिसमें लिखा था—“मेरी दृष्टि की विजयों की खबर आपने सुनी ही होगी—मैं अँगरेजों के प्रति किये गये आपके व्यवहार का दयः देने आया हूँ।”

कलकत्ते के व्यापारी खबाई को भी दबाना चाहते थे, क्योंकि नवाब ने उन्हें अधिकार-देवा स्वीकार भी कर लिया था। परन्तु बलाइव और घादमन के तो हरादे ही और थे।

वे शीघ्र ही सज्जित होकर कलकत्ते की ओर बढ़ने लगे। गंगा किनारे बज्रवज्र-नामक एक छोटा क़िला था। अँगरेजों ने उस पर घावा कर दिया। मानिकचन्द हांग बनाने को कुछ देर मूठ मूठ लगा, पर शीघ्र ही भागकर मुर्शिदाबाद जा पहुँचा। बड़ी हाल कलकत्ते के त्रिखेवालों का भी हुआ। खूने क़िले में बलाइव ने धूमधाम से प्रवेश किया।

देनी चाही, तो उसने धकड़कर दिया—“अली मैंने इस उमर में ऐसी ऐसी सौ शौजों की शौजकरी की है। सेनानायक बेघारे अभिषादन कर-करके खीटने लगे। परियाम यह हुआ कि इस युद्ध में शौजतशत्रु मारा गया। नवाब की विजय हुई। पुर्निषा का शासन भार महाराज मोहनलाल को देकर और शौजत की माँ को भावर के साथ संग लाकर नवाब राब धामी में खीट आया, तथा शौजत की माँ सिराज की माँ के साथ अन्त पुर में रहने लगीं।

इस बीच में उसे अँगरेजों पर दृष्टि देने का अवकाश न मिला था। अतः उन्होंने घूस रिकवत दे दिखाकर बहुत-से महायक बना लिये थे। जगतसेठ को मेजर किङ्गप्पाट्रिक ने धिखा—“अँगरेजों को अब आपका ही भरोसा है। वे इतने आप पर ही निर्भर हैं। जो अँगरेज एक वर्ष पहले कलकत्ते में टकसाज खोजकर जगतसेठ को खीपट करने के लिये बादशाह के दरबार में घूस के दरपों की बौझार कर रहे थे, वे ही अब, जगतसेठ के लघुप पादने लगे। मानिकचन्द को घूस देकर पहले ही मिखा लिया गया था। सब ने मिखकर अँगरेजों को पुन अधिकार देने के लिये नवाब से प्रार्थना की। नवाब राजी भी हुआ।

परन्तु अँगरेज इधर खरखो-पल्लो कर रहे थे, और उधर मद्रास से शौज मँगाने का प्रबन्ध कर रहे थे। बमकराम मानिकचन्द ने नदी की ओर बहुत-सी लोपे सजा रखी थीं। पर सब दिखाया था वे सब टूटी फूटी थीं। जिले में सिर्फ २०० सिपाही थे, और हुगली के जिले में सिर्फ २०। ये सब खरखे अँगरेजों को मिख रही थीं।

झाड़व और बादसन घीरे घीरे कलकत्ते की ओर बढ़ पड़े आ रहे थे। दोनों 'घोर-घोर मीसेरे माई' थे। कुछ दिन पहले माझाबार के किनारे पर युद्ध प्पागर में दोनों ने खूब खाम उठाया। मराठों ने इन दोनों की सहायता में स्वर्ण-दुग को बट कर बाँटा था और इसके बदले इन्हें १५ लाख रुपये मिले थे। उदासा के किनारे पहुँचकर एक दिन बहादुर पर ही दोनों ने हम बाठ का परामर्श हुआ कि यदि बंगाल को हमने लूट पाया, तो लू

निकाजना उचित था ! —“वे लोग शाही फरमान पर भरोसा रखकर  
‘दम रक्त-पात और दम धायाधारों के बजाय— जो दुर्भाग्य से उन्हें सहने  
पड़े—मदैव आपने ज्ञान-माल को सुरक्षित रखने की आज्ञा रखते थे।

‘यथा यद् काम युक्तं शाहजादे की प्रतिष्ठा के योग्य था ? —  
इसलिये आप यदि यद् शाहजादे की तरह श्यामी और यशस्वी बना चाहते  
हैं, तो कम्पनी के साथ जो आपने दुरा व्यवहार किया है, उसके लिये उन  
सुरे मन्त्राहकारों को लिखने आप को बहकाया था—दण्ड देकर कम्पनी  
को मस्तुट छोड़िये, और उन लोगों को, जिनका मास छोना गया है— रागी  
‘कीजिये, जिससे हमारी सख्तियों की यह धार श्याम में रहे, जो शीघ्र-ही  
आपकी प्रजा के निरों पर गिरने के लिये सैवार है। यदि आपको मि० टूंक  
‘के विरुद्ध कोई शिकायत है, तो आपको उचित है कि— आप उसे कम्पनी  
को लिख भेजिये, क्योंकि गौफर को दण्ड देने का अधिकार स्वामी को  
होता है। यद्यपि मैं भी आपकी तरह सिपाही हूँ, तथापि यद् पसन्द करता  
हूँ कि यद् आप स्वयं कम्पनी इच्छा में सब काम कर दें।—यह कुछ चमत्कार  
नहीं होगा कि मैं आपकी निरपराध प्रजा को पीड़ित करके आपको यद् काम  
‘करने पर बाध्य करूँ।”

— यह पत्र वादस्तम साहब ने लिखा था। जिस समय मन्त्राह को यह  
पत्र मिला, उस समय के कुछ पुर हो हुगली की लूट का भी वृत्तान्त मिला  
‘शुद्ध था। मन्त्राह जैंगरेजों के मतलब को समझ गया, और जब उसने एक  
चिट्ठी जैंगरेजों को लिखी—

“तुमने हुगली को लूट लिया और प्रजा पर आधाधार किया। मैं  
हुगली जाता हूँ। मेरी क्रांति तुम्हारी दायगी की तरफ धावा कर रही है।  
फिर भी यदि कम्पनी के वाणिज्य को प्रबलित नियमों के अनुसार चलायें  
की तुम्हारी इच्छा हो, तो एक विरवात-पत्र आदमी भेजो, जो तुम्हारे सब  
‘दावों को समझकर मेरे साथ सन्धि स्थापित कर सके। यदि जैंगरेज आप  
‘पारोही बनकर पूर्व नियमों के अनुसार रह सकें—तो मैं अवश्य ही  
‘उनकी हानि के मामले पर भी विचार करके उन्हें समुत्त पढ़ूँगा।”

इस सड़िया विषय पर बजाइव और बाइसन में इस बात पर खूब हो  
 भगवा हुआ कि क्रिस्ते पर कौम अधिकार समावे । अन्त में बजाइव ही  
 उसका विजेता माना गया । प्रथम यूँक साइव पुनः बड़े गौरव से कश्कते  
 आकर बिना किसी खजाना के गवर्नर बने गये ।

क्रिस्ते के भारत की सब वस्तुएँ उषों की-रवों थी । नवाब ने उसे  
 लूटा न था, न किसी ने शुरुआत । क्रिस्ते कहत होगया, अगर लूट तो हुई  
 ही नहीं । बजाइव को बड़ी आगुरता हुई । अन्त में हुगली लूटने का निश्चय  
 हुआ । वह पुगली व्यापार की जगह थी । वाणिज्य भी वहीं प्रवृत्त था ।  
 मेजर क्रिस्पाट्रिक बहुत दिन से बेकार बैठ थे । उन्हें ही यह कीमत-सम्पा  
 दन का काम सौंपा गया । पैदल, चालटियर, गोखन्दाज, सभी अंगरेज  
 हुगली पर दृढ़ पड़े । अगर को लूट पाटकर भाग खगा ही गई ।

हुगली को लूटकर जब अंगरेज क्रिस्ते में छोड़ आये, नवाब का पत्र  
 मिला—

‘ मैं कह चुका हूँ कि कम्पनी के प्रधान कर्मचारी टूँक ने मेरी आज्ञा  
 के विपरीत आचरण करके मेरी सामन-शक्ति का वर्तमान किया, तथा दरबार  
 को निन्दासी का पावना भेजा न कर, मेरी भागी प्रज्ञा को आघात दिया ।  
 मेरे बार-बार रोकने पर भी उन्होंने इसकी परवा नहीं की । इसी का मैंने  
 उन्हें दण्ड दिया । अतएव राज्य और राज्य के निवासियों के कल्याण  
 के लिये मैं तुम्हें सूचित करता हूँ कि किसी व्यक्ति को अल्प न्युक्त करो;  
 तो पूरा प्रचलित नियम के अनुसार ही तुमको वाणिज्य के अधिकार प्राप्त  
 होंगे । यदि अंगरेजों का व्यवहार व्यापारियों-जैसा रहेगा, तो इस सम्बन्ध  
 में मैं निश्चित रहूँ कि मैं उनको रफा करूँगा, और वे मेरे कुरा पात्र रहेंगे । ”

नवाब के इस पत्र का अंगरेजों ने इस प्रकार जवाब भेजा—

“ आपने इस भगड़े की जड़ को टूँक साहब का उद्दण्ड व्यवहार  
 किया है—तो आपको जानना चाहिये कि शासक और राजकुमार लोग न  
 धाँस न देखते हैं न कानों से सुनते हैं । प्रायः असाइ खबर पाकर ही  
 काम कर बैठते हैं । क्या एक आदमी के अपराध में सब अंगरेजों को

नवाब ने मधुर स्वर और सम्पद् भाषा में उनका कुशाग्र प्रश्न पूछा, और समझाकर कहा—“मैं तुम्हारे वाणिज्य को रक्षा करना चाहता हूँ, और अपने तथा तुम्हारे बीच में सन्धि-स्थापना करना ही मेरे हृत्ना फट ठठो का कारण है।”

अंगरेजों ने झुककर कहा—‘हम खोग भी सन्धि को उद्यत्कृत हैं, और झगड़े छवाई से हममें बड़ी बाधाएँ पड़ती हैं।’ इसके बाद नवाब ने सन्धि की शर्तें ही करने को, उन दोनों के बिचे दोपहर के ठेरे में जाने की आज्ञा दे, द्वाँर खोलकर दिया।

पदचन्द्रकारियों ने देखा—काम तो बड़ी द्रुमी में समाप्त होगया है। उन्होंने इस दायसर पर एक गहरी साँस खेकी। ये अंगरेज दोनों सिविलियन थे। छवाई झगड़े के काम बेघारों का पेशाब निषेधता था। बम, बमीचन्द ने बड़े शुभचिन्तक की तरह उनके काम में कहा—“देखते क्या हो, जान क्याना हो, तो भाग जाओ। यहाँ बेरों में तुम्हारी गिरफ्तारी की पूरी पूरी तैयारियाँ हैं। यह सब नवाब का आज्ञा है। नवाब की तोपें पीछे रह गई हैं। इसीलिये यह धोखा दिया जा रहा है। भागो, मशाल गुल करशो।” हतना कह, बमीचन्द झपटकर घर में घुस गया, और दोनों घँग रैज हाशुद्धि होकर भागें।

उस दिन रात भर अंगरेजों ने विधान न किया। बजाइय जलते अग्नारों की तरह जाल-जाल होकर सैन्य-सज्जित करने लगा। बाटुसन से ६०० बहादुरी गोरे माँगकर अपनी पैदल सेना में मिलाये, और रात के ठीक बजे नवाब के पहाव पर आक्रमण कर दिया। नवाब के पहाव में उस समय साठ हजार सिपाही, दस हजार सवार और खालीस तोपें थी। सब मगो में सो रहे थे। बजाइय ने यह न भोखा, इस विशाल सैन्य के आगने पर क्या अमर्ष होगा ? उसने एकदम तोपें दाग दीं।

एकाएक ‘गुवम्-गुवम्’ सुनकर नवाब की छावनी में हल चल मच गई। बहरी-बहरी खोग सजने लगे। सिपाही, मशाल जला, हथियार छे, तोपों के पाय आने लगे। फिर तो नवाबकी तोपें भी प्रचण्ड अग्नि वर्षा करने लगीं।

## इस्लाम का विष-वृक्ष

“तुम ईसाई हो, तुम यह अवश्य जानते होगे कि शान्ति-स्थापन के लिये सारे विवादों का फैसला कर डालना—घोर विद्वेष को मन से दूर रखना कितना उत्तम है, पर यदि तुमने वाणिज्य स्वार्थ का नाश करके लड़ाई लड़ने ही का निश्चय कर लिया है, तो फिर उसमें मेरा अपराध नहीं है। सचकारी युद्ध के अनिवार्य उपरिणाम को रोकने के लिये ही मैं यह जिद्दी किछता हूँ।”

हुगली को लूट और नवाब को मार्गमर्म पत्र लिख चुकने पर विलायत से कुछ ऐसी खबरें आईं कि फ्रेंचों से भयङ्कर लड़ाई आरम्भ हो रही है। भारतवर्ष में फ्रेंचों का जोर दोंगरेजों से कम न था। दोंगरेज-लोग अब अपनी करतूतों पर पड़ताने लगे। शीघ्र ही उन्हें यह समाचार मिला—कि नवाब सेवा लेकर चला आ रहा है। अब बलाइय बहुत खरापा। वह बीड़कर—बागलसेठ और अमीरखान की शरण गया। पारसु उन्होंने सारा कह दिया कि नवाब अब कमी सन्धि की बात न करेगा—हुगली लूटकर तुमने डरा किया है। पारसु अब नवाब का उक्त पत्र पहुँचा, तो माओ भोग रेजों ने चाँद पापा—उनको कुछ लसवा दुई।

कलकत्ते में ब्रिटिशराज अमीरखान के ही महल में नवाब का दरबार लगा। आँगन का घाँसीया तरह तरह के दाग-बहारी और प्रदीपों से सजाया गया। चारों ओर नंगी ललवार लेकर सेनापति लनकर खड़े हुए। भारी भारी बहुमूल्य राजद्रवित वस्त्र पहनकर लोग जुझारू होकर, सिर नवाकर बैठे। बीच में सिंहासन, उसके ऊपर विशाल मसमर, ऊपर सोने के दखों पर चन्दोवा—चिम पर मोती और रत्नों का काम हो रहा था खगाया गया। उसी रत्न द्रवित चम्पे के फूल-जैसी लिखी मुख-यागित से दीप्तमान—बगाव, बिहार और उषीसा का शुक्ल नवाब आसीन हुआ।

वाट्स और स्कॉटलन दोंगरेजों के प्रतिनिधि चलकर, आये। नवाब के ठेरवर्ग को देखकर चम्प भर वे स्तम्भित रहे। पीछे हिम्मत बाँध, धीरे धीरे निहामन की ओर बढ़े, और सम्मानपूर्वक अभिवादन करके नवाब के सामने खड़े हुए।

माफ़ बजाव दे दिया कि खंगरेजों की तरह भासीसी भी मेरी प्रजा है,—मैं कदापि अपने भाषितों पर तुम्हारा कोई चत्पाचारन होने दूँगा। क्या यही तुम्हारी शान्ति मियता है? खंगरेज खुर होगये। नवाब ने बख्शकते से प्रत्यान किया। पर माग में ही उसे समाचार मिला कि खंगरेज खन्दानगर सूटो की तैयारियाँ कर रहे हैं। नवाब ने बाटसन साहब को लिख भेजा -

“सारे क़गड़ों पर शांस्त करने ही के लिये मैंने तुम्हें सब अधिकार तुम्हारी हुकूम के अनुसार दिये हैं। परन्तु मेरे राज्य में तुम फिर क्यों कलह सृष्टि कर रहे हो? सैयूरखान के समय में छत्र साक़ कभी यूरोपियन यहाँ पक़र नहीं पड़े। अभी डग़ दिम सन्धि हुई—और अब तुम फिर युद्ध हाथ देगा चाहत हो? मराठ सुन्दे य, पर तुम्हारे भी सन्धि नहीं छोड़ी। शपथपूर्वक की हुई सन्धि की शर्तों को तोड़ना घोर पाप है। तुमने सन्धि की है। हमका पालन तुम्हें करना होगा। ज़बरदार, मेरे राज्य में कड़ाई-जलाबा न मचे। मैंने जो-जो-प्रतिज्ञायें की हैं—उनका पाबन करूँगा।”

पत्र लिखकर ही नवाब शांस्त न हुआ। उसी प्रजा की रक्षा के लिये महाराज मन्दाइमार की आधीनता में हुगली, चमड़ाप और पलासी की सेनाएँ तैयार करदीं।

मुर्शिदाबाद पहुँचकर नवाब ने सुना कि खंगरेजों ने खन्दानगर पर आक्रमण करना निश्चय हो कर लिया है। उसने फिर एक पत्रकार का पत्र लिखती बार लिखा कि—‘बाह्यिक की क़सम और ख़ौद की दुहाई ले लेकर भी सन्धि का पालन नहीं करना—शर्म की बात है।’

अब की बार खंगरेजा ने भी बजाव लिखा, उसका सार इस प्रकार था—  
“आप फ़ासीसियों के साथ युद्ध से सहमत नहीं हैं—यह मात्लूम हुआ। फ़ासीसी यदि हमसे सन्धि करले, तो हम न खढ़ेंगे, पर आपको सूवेदार की हैसियत से उनका ज़ामिन होना पड़ेगा।”

नवाब ने इस बूढ़-पत्र का सीधा जवाब दिया—‘उमका अभिप्राय येता है—‘फ़ासीसी यदि तुमसे खढ़ेंगे, तो मैं उनको रोहूँगा। मेरा अभिप्राय



सवेरा होजाने पर चारा तरफ धुंधी था। कुछ न दीखता था—तोपों का गजन चढ़ रहा था। जब धक्की तरह सूरज निकल आया, सब लोगों ने चारचर्य से देखा—बजाइव की समस्त पिपासा बुझ गई है, और बसकी गर्वोन्मत्त पपटन जिले की ओर भाग रही है। नयाबी सेना ठनका पीड़ा कर रही थी। अँग्रेजों के कटे मिपाही बड़ों तहाँ धुंध में पट लोट रहे थे। उनकी तोपें भी जिन गई थीं।

बजाइव की हठधर्मी से अँग्रेजों का सवनाश होगया। इस सुबह सेना में १२० अँगरेजों के प्राण गये।

नवाब ने जब इस एकाएक युद्ध का फरस मालूम किया, तो—उसे अपने मंत्रियों का क्रूर और मालूम हुआ। उसे पता लगा, मीरजापर भी उस गाय फान में खित है, जिये वह अपना आदरणीय सत्तापति समझता था। उसने आक्रमण रोकने की आज्ञा दी, सुरक्षित स्थान में डेरे डलवाये और अँगरेजों को फिर सन्धि के द्विप शीघ्र बुझा भेजा।

बजाइव बहुत भयभीत होगया था, और सन्धि के लिये प्रवृत्त रहा था। परन्तु दादून उसकी बात को न माना। नवाब ने अँग्रेजों की इच्छादुस्तर ही सन्धि करली। अँगरेजों ने छो मँगा—नवाब ने उन्हें वही दिया। उन्हें व्यापार के पुराने अधिकार भी मिले जिनका भी बचा रहने देता शोकार कर लिया। एकमात्र क्रापम करके शाही सिखे डलाने की भी आज्ञा मिल गई, और नवाब ने अँगरेजों का पिछड़ी शत को पूर्ति भी स्वीकार किया।

इस उदार सन्धि में अँगरेजों को कोई बात शिकायत की न रह गई थी। परन्तु नवाब को यह न मालूम था, कि फ्रान्स के साथ, जो जाति १०० वर्ष न लड़कर भी रक्त-पिपासा को शांत न कर सकी, वह किन्तु प्रकार प्रतिज्ञा पालन करेगी? नवाब ने समझा था, बनिये हैं, चलो, डकड़े दे दिला कर डपटा करें—ताकि रोज का कगड़ा मिटे।

परन्तु सन्धि को एक बसाह भी न हुआ था, कि अँगरेज फ्रांसीसियों को सदा के लिये निवास देने की सैपारी, करने लगे। उन्होंने इस पर नवाब का भी मन लिया। मुनकर नवाब को बड़ा क्रोध आया, और उसने

पर और भी बहादुर सेना लेकर आवेंगे, और हम ऐसी युद्ध की आग भड़कावेंगे—जो तुम किसी तरह भी न बुझा सकोगे । ”

नवाब ने इस उद्धृत पत्र का भी भ्रम बढ़ाव लिखकर जता दिया—  
 “सन्धि के नियमानुसार मैं इर्लाबा भेजता हूँ । मगर, तुम मेरे राज्य में उत्पात मत मचाता । फ्रान्सीसियों की रक्षा करना मेरा धर्म है । तुम भी ऐसा ही करते, यदि कोई शत्रु भी तुम्हारी रक्षा चाता । हाँ, यदि वे शरारत करें, तो मैं उनका समर्थन न करूँगा । ”

अंगरेजों ने समझ लिया, नवाब की सहायता या आशा मिलनी सम्भव नहीं है । उन्होंने कुछ मार्ग से बादसन की कमान में और स्पष्ट भाग से झाड़व की आघीनता में सेनाएँ बम्बैनगर पर रवाना कर दीं ।

७ फ़रवरी को सन्धि-पत्र लिखा गया, और ७ ही मार्च को बम्बैनगर के सामने अंगरेजी सेरे पक गये । इस प्रकार बाह्यविश्व और मसीह की क्रमशः आकर जो सन्धि अंगरेजों ने की थी, उसकी एक ही मास में समाप्ति हो गई !

फ्रान्सीसियों ने किले की रक्षा का पूरा पूरा प्रयत्न किया था । पास ही महाराज नन्दकुमार की अभ्युत्थता में सेना चाक चौबन्द उनकी रक्षा के लिये खड़ी थी । झाड़व, जो बड़े जोरों में आ रहा था—यह सब देखकर भयभीत हुआ । अन्त में अमातो अमीरपन्थ की आर्जित महाराज नन्दकुमार का भरा गया, और लफ्फाज वे अपनी सेवा लें, दूर जा खड़े हुए । फिर मुडी-भर फ्रान्सीसियों ने बड़ी बीरतासे २३ फ़रवरी तक किले की रक्षा की, और सब चीजों के घराशाही होने पर किले का पतन हुआ । इस प्रकार इस महायुद्ध में अंगरेज विजयी हुए ।

इधर नवाब नन्दकुमार को वहाँ भेजकर इधर की तैयारी कर रहा था । अहमदशाह दुर्गानी की बग़ावत की खबर गम्य थी, और अंगरेजों से घृस आकर भीरजापुर, जगतसेठ, रायचुर्लाम आदि नमकहरामों ने नवाब के सब में दुर्गानी के विषय में तरह तरह की शंकाएँ, भय तथा विभीषिकाएँ भर रखी थीं । खेद की बात है, नन्दकुमार ने भी नमकहरामी की । फिर

प्रजा में शान्ति रखने का है। सन्धि के लिये मैंने 'सियों को लिखा है।"

यथा-समय फ्रांसीसियों का प्रतिनिधि सन्धि के लिये कलकत्ते पहुँचा, परन्तु अंगरेजों ने सन्धि पत्र पर दस्तखत करती धार अनेक वितरका बंद धिये। वाट्सन साहब हममें मुग़ल थे। निदान, सन्धि नहीं हुई।

नवरोज पत्र में नवाब ने यह भी लिखा था कि दिल्ली की सेना मेरे विरुद्ध था रही है। यदि तुम मेरी मदद अपनी सेना से करोगे, तो मैं तुम्हें एक लाख रुपया दूँगा।

अब फ्रांसीसी दूत को लगभग बठाकर वाट्सन साहब ने लिखा—  
"यदि आप हमें फ्रांसीसियों को नारा करने की आज्ञा दें, तो हम आपकी सहायता अपनी सेना से कर सकते हैं।"

हम बार सिराजुद्दौला घोर विपत्ति में पड़ गया। बादशाही कौज बड़े जोरों से बढ़ रही थी। ऊपर अंगरेज फ्रांसीसियों के नारा की सैन्यियाँ कर रहे थे। नवाब पश्चात्त फ्रांसीसियों का सर्वनाश करवाकर अंगरेजों की सहायता भोज्य थे—या स्वयं शकट में पड़े।

वाट्सन का प्रयास था कि नवाब के सामने धर्म-प्रधर्म कोई बस्त नहीं, अपने मतलब के लिये वह अंगरेजों को राजी करेगा। परन्तु नवाब ने वाट्सन को कुछ जवाब न देकर स्वयं सैन्य-संग्रह करने की सैन्यियाँ कीं।

ऊपर अंगरेजों की वृद्ध बढ़ पकटों बम्बई और मद्रास से आ गई। सब विचारों को ताज़ पर रखकर अंगरेजों ने फ्रांसीसियों से युद्ध की आज्ञा की, और नवाब को शकटावृद्ध दूख वाट्सन साहब ने नवाब को लिख भेजा—

"अब साज़-साज़ कहने का समय आगया है। शान्ति की रफा यदि आपसे अभीष्ट है, तो आज के इस दिन के भीतर भीतर हमारा सब पानना रुपया इर्जाने का शुका दीजिये, वरना अनेक दुष्टबाएँ उपरिपत होंगी। हमारी राजी कौज कलकत्ते पहुँचनेवाली है। अकृत पबने

“आपके बज़ीर, और प्रौढी सरदार सब अँगरेज़ों से मिले हैं, और आपको गद्दी से उतारने की कोशिश कर रहे हैं, केवल फ़्रान्सीसियों के भय से खुलने का साहस नहीं करते। हमारे हथों ही युद्धान्त्र प्रशस्ति होगी।” नवाब ने सब बात समझकर भी आचार कहा—“आप आग भा गलपुर के पास रहें, मैं बग़ावत की सूचना पाते ही आपको खबर दूँगा। सेनापति जॉन ने आख़ों में चाँस भरकर तिरफ़ इतना हो बड़ा—“यही अंतिम भेद है—अब हमारा आपका सौदा १ होगा।”

इतना करके नवाब के समकहसामों को दण्ड देने पर कमर कसी। मानिकचन्द पर अपराध प्रमाणित हुआ, और घट क़ैद में भेजा गया। पर, पाँचे बहुत अनुग्रह वित्त कर, १० लाख रुपये दे, छूट गया। उसके छूटने से ही भयकर पदचक्र की लड़ लगी।

इस उदाहरण से जगतसेठ, अमीरचन्द रायदुर्लभ-आदि सभी भयभीत हुए—और जगतसेठ का भयन गुप्त मन्त्रणा का भयन घटा। जैत जगतसेठ, सुबलमाग़ मीरगल मीरगाकर, वैद्य राजवल्गल, कायस्थ रायदुल्लभ, सुदज़ोर अमीरचन्द, और प्रतिहिंसा परामय मानिकचन्द इनमें से न किसी का मत मिलता था, न धर्म, न स्वभाव, न काम। ये केवल स्वाध्याय होकर एक हुए। इनके साथ हा कृष्णभार के राजा महाराजेन्द्र कृष्णचन्द्र भूप बहादुर भी मिले। जब आधे बग़ावत की अफीरवरी शची भयानी की राजा साहब का हथ फ़ालिमा का पता चलता, तो उसने इशारे से उपदेश देते को उनके पास सूखी और सिन्दूर का उपहार भेजा, किन्तु स्वार्थ के रंग में राजा बहादुर का उस उपमाग़ का कुछ प्रयास न हुआ।

नवाब का उमाज था कि फ़्रान्सीसियों से साथ ये सब और अँगरेज़ चिढ़ रहे हैं तो उन्हें हटा देने से सब सम्पुष्ट हो जावेंगे, परन्तु जब नवाब ने सुना कि फ़्रान्सीसियों को ध्वंस करने को अँगरेज़ी पलटन का रही है, तो नवाब १ मोघ में आकर बाटूना साहब से कहना भेजा—“या तो इसी समय फ़्रान्सीसियों को पीड़ा न करने का सुझाव लिख दो, वरना इसी समय राजधानी त्यागकर चले जाओ।”

की 'तवाब' ने अपना कर्तव्य पारक किया। जो फ्रान्सीसी भागकर किसी तरह प्राण बचा, मुर्शिदाबाद पहुँच गये; उन्हें पत्र, वस्त्र वगैरह की सहायता दे, क्रायिमबाजार में स्थान दिया गया।

इस पण्डित त्रिपाय से गर्दित अंगरेजों ने जब सुना, कि मवाब ने भाते हुए फ्रान्सीसियों को सहायता दी है, तो वे बड़े विगड़े। वे इस बात को भूल गये कि मवाब देश का राजा है। शरणागतों और त्रासित प्रजा की रक्षा करना उसका धर्म है। पहले उन्होंने जख्मों चपों का पत्र लिख कर मवाब से फ्रान्सीसियों को अंगरेजों के समर्पण करने की लिखी। पीछे जब तवाब ने इसका न जोदी तो गान-धर्म में बुद्ध की धमकी दी।

मवाब ने कुछ जवाब नहीं दिया। जब बड़ बुराया सावधान हो, कर अंगरेजों के हुशों का पता लगाने लगा। हफ्ते अंगरेज बाहर से तो फ्रान्सीसियों के भार क लिये मवाब से कमी जख्मों पत्तों और कमी बुद्धक-पदक से काम ले रहे थे, और ऊपर मवाब को सिद्दायन से उतारने की तैयारी कर रहे थे।

विश्रायत में, हादसों अर्द्ध कॉमम में गवाही देते हुए बजाइय ने साक-नाक यह कहा था—

‘‘अन्दगमगर पर अधिकार होते ही मैंने सब को समझा दिया था कि ‘जब, इतना करके बैठ रहने से काम न चलेगा—कुछ दूर और चाने बढ़कर ‘मवाब’ को गद्दी से उतारना पड़ेगा। इस मेरे मन्तव्य से सब सहमत भी होगये थे।’’

जब अंगरेजों ने गद्दी चाल चली। पूरा को मदद से मवाब के उम रावों द्वारा यह बात मवाब से कहानी कि फ्रान्सीसियों के क्रायिमबाजार में रहने से शांति-भर होने की आशा है,—‘‘चाप इन्हें पटने भेज दें—वहाँ यह सुरचित रहेंगे।’’ मवाब को इस बात में कुछ चाल न सूझी। उसने ‘‘अंग्रेज संनापति अर्द्ध को पटने जाने का हुक्म दे दिया।’’ अर्द्ध एक बुद्धिमान चालसर था। उसने कुछ दिन दरबार में रहकर सब व्यवस्था मज्जी भाँति ‘‘अर्द्ध की थी। उसने मवाब से कहा—

परन्तु अहमदशाह दुरानी भारत से छोट गया इसलिये नवाब को पदने आना ही नहीं पड़ा। इसके सिवा उसने बंगरेजों की जागी भौकाफ़ रोहिली, और पक्षावी में ज्यों-की-त्यों छावनी डाले रहा। बंगरेजों के पीछे गुलघर छोड़ दिये गये। ग्राम्नीमियों को भागलपुर ठहरने का कदवा भेजा, और मीरजापुर को १२ हजार मेवा लेकर पलासी में रहने का हुक्म दिया।

द्वार मीरजापुर से एक गुप्तपत्र पत्र लिखाकर १० मई को बलकसे में दस पर विचार हुआ। इस मखि पत्र में एक करोड़ रुपया कम्पनी को, दस लाख बजकने के धर्मेशों, दरमानी और बंगालियों को, तीस लाख अमीरन्द को देने का मारजापुर ने वादा किया था। इसके सिवा बहावल के प्रधान सहायकों और पय प्रदत्तकों की रज़में अलग एक चिट्ठी में दर्ज की गई थी। राज-कोष में इतना रुपया नहीं था। परन्तु रुपया है या नहीं?—इस पर कौन विचार करता? चारों ओर गदर ही हो था।

मसौदा भेजते समय वाट्सन साहब ने लिखा—“अमीरन्द को मांगता है, उस वही मंजूर करना। परना, सब भयदाफोड़ हो जाएगा।” पहले तो अमीरन्द को मार डालने की ही बात सोची गयी, पीछे बजाइव ने शुक्ति निकाली। उसने दो दस्तावेज़ लिखाये—एक असली, दूसरा जागी वाला कागज़ पर। इसी जागी पर अमीरन्द की रज़म थवाई गई थी। असली पर उसका कुछ जिक्र न था। वाट्सन ने इस जागी दस्तावेज़ पर इस्ते-पर करने से इनकार कर दिया। पर, चतुर बजाइव ने उसके भी जागी दस्तावेज़ बना दिये।

इसी दस्तावेज़ की जाखसाज़ी के सम्बन्ध में डाइस ऑल कॉमन्स में गवाही देते समय झाइव ने कहा था—

“मैंने कभी इस बात को छिपाने की चेष्टा नहीं की। मेरे मत से ऐसे अवसरों पर जाल मूठ से काम निकाला जा सकता है। मैं इस्तरत पवने पर और सौ-बार ऐसा काम करने के लिये तैयार हूँ।”

इन महापुरुष की तारीफ में मैकॉले ने लिखा है—

यह ज़रूर सरकाज साइब को छगी। उसने प्रौरन<sup>१</sup> व्यापारी मौकएँ सजभाई। उनमें भीतर गोला-बारूद था, और ऊपर चावल के बोरे। उनके ऊपर भी ४० सुशिक्षित सैनिक थे। इस प्रकार ० गाँवों को छोड़ झाड़व कलकत्ते रवाना हुआ। साथ ही ब्रासिमवाजार के ज्ञाने का कलकत्ते भेजने का गुप्त आदेश भी कर दिया गया।

इसके बाद बाटूमन ने नवाब को अन्तिम पत्र लिखा—

‘एक भी फ्रांसीसी के ज़िन्दा रहते ऑंगरेज शांत न होंगे। हम ब्रासिम वाजार को प्रौप्त भेजते हैं, और शीघ्र ही फ्रांसीसियों को वापस खान को पढ़ने प्रौप्त भेजी जायगी। हम सब कामों में आपको ऑंगरेजों की सहायता करनी पड़ेगी।’

बारखतोरुज्जा, पहले अगस्तसेठ के यहाँ रोटियों पर मौक़र था। समय पाकर वह तिरागुरौखा की सेना में २००० सवारों को अभिरक्षि होगया। भीरवाज़र की नमक़दरामी का सम्देश सर्व प्रथम उसी के द्वारा ऑंगरेजों के पास पहुँचा। दूसरे दिन एक भरमानी सौदागर प्रवाजा बिन्दू ने, जो पहले पल्ला-बन्दर पर भी ऑंगरेजों की खाएँसी करता था—ज़रूर दी कि भीर वापस। हम शास पर आपकी मद्दत को तैयार हैं कि आप उसे नवाब बनाइये, और पीछे यह आपकी इच्छानुसार कार्य करने को तैयार हैं। अगस्तसेठ-आदि सब सरदार आपके पक्ष में होंगे। यह भी सन्नाह हुई कि इस समय बज़ाइब को ख़ौट खाना चाहिये। नवाब शीघ्र ही पटना की तरफ़ दुर्गानी की कौब से छड़ने को कूच करेगा। सब पीछे राज़चापी पर हमला करना उत्तम होगा।

बज़ाइब सरकाज ख़ौट गया, और नवाब को ऑंगरेजों ने लिखा—“हम तो सेना ख़ौटा जाये। भव आपने पज़ासी में क्यों छावनी खाल रखली है?” जो दूत इस पत्र को लेकर गया, वह बाटूमन साइब के लिये यह बिट्टी भी लेगया—“भीरवाज़र से कहना, बहरामो नहीं, मैं येमे ५ हजार सिपाहियों को लेकर उसके पक्ष में था मिलूँगा, जिन्होंने युद्ध में कभी पीठ नहीं दिखाई।”

इधर सिराज को इस सन्धि का पता चला । यादसग साहब सावधान हो, घोड़े पर चढ़ हवाखोरी के बहाने भाग गये । नवाब ने बँगरेजों को अन्तिम पत्र लिख कर अन्त में लिखा—‘हँवर को धन्यवाद है—मेरे द्वारा सन्धि भग नहीं हुई ।’

१२ जून को बँगरेजों की फौज चली । जिसमें ६५० गोरे, १५० पैदल गोलम्वारा, २१ नाविक, २१०० देशी सिपाही थे । थोड़े पुर्तगीज भी थे । सब मिजाफर फुल ३००० आदमी थे । गोला बारूद आदि लेकर २०० नावों पर गोरे चले । काखे सिपाही पैदल ही गंगा के किनारे किनारे चले । रास्ते में हुगली, काटोरा, चमहीप, पलासी की छावनियों में नवाब की काफ़ी फौज पड़ी थी । पर दाप ! बगिये बँगरेजों ने सब को छरीद लिया था । किसी ने रोक-टोक न की । ऊपर नवाब ने सब हाजि जानकर भी मीरजाफ़र को उसके अपराधों का चमा करके महज़ में तुला भेजा । खोगों ने उसे गिरफ़्तार करने की भी सलाह दी थी । परन्तु नवाब ने सभका—खलीयदी के नाम और इस्लाम धर्म को ध्याज करारकर सम्झौते बुझान से यह सीधे भाग पर आजायगा । पर मीरजाफ़र डरकर राजमहल में नहीं गया । अन्त में आरमाभिमान को छोड़कर नवाब स्वयं पाखकी में बैठकर मीरजाफ़र के घर पहुँचा । मीरजाफ़र को चम बाहर निकलना पड़ा । उसकी आँखों में शर्म आई । उसने अपने प्यारे मित्र सरदार के मुख से बरुणाजगक घिझार सुनी । मीरजाफ़र ने नवाब के पैर छूकर सब स्वीकार किया । कुरान डठायी और उसे सिर से छागाकर हँवर और पैगम्बर की क़सम खाकर, उसने बँगरेजों से सम्मग्य छोड़कर—नवाब की सेवा धर्म पूर्वक करने की प्रतिज्ञा की ।

घर की इस फूट को प्रेमपूर्वक मिटाकर नवाब को सम्तोष हुआ । अब उसने सेना का आह्वान किया । पर बागियों के यहकाने से सेना ने पड़ो बिना बेतन पाये, युद्ध-यात्रा से हटकर कर दिया । नवाब ने यह भी सुनाया । मीरजाफ़र प्रधान सेनापति बना । बारखलीफ़ज़ाई—दुर्गभराय—मीर मदनमोहनलाल—और क्रोञ्च लिक्क्रे एक-एक दिभाग के सेनाध्यक्ष बन ।



“छाहव के घरवालों को उसके स्वभाव से कुछ थाशा न थी। अतः जब यह कोई आश्चर्य की बात न थी कि उन्होंने उसे दस वर्ष की आयु में पम्पनी की मुहर्षिरी से कुछ रुपया पैदा करने या मद्रास में मुन्शर से भर जाने के लिये भारतवर्ष में भेज दिया।”

मिल ने लिखा है—“घोले से काम निकासने में छाहव को ज़रा भी सह्योच न होता था, और न वह इसमें ज़रा से भी कष्ट का अनुभव करता।”

यही दुर्दान्त चंगरेज़ युवक था, जिसने चंगरेज़ी साम्राज्य की नींव भारत में जमाई, और अंत में आरमधात करके मरा। तथा ईंग्लैण्ड में जिनकी मूर्ति वीर जेम्स ब्रिजिंगटन के बराबर न खग सकती।

अमीचन्द को घोला देखर ही ये लोग शान्त न रहे। वहिसे वे उसे कज़कत्ते में लाकर अपनी मुठो में खाने की ज़रत करने लगे। यह काम स्वयंयक के सुपुर्दे हुआ। उसने अमीचन्द से कहा—

“बातचीत तो समाप्त होगई। अब दो-दो बार दिन में लड़ाई दिव्य जायगी। हम तो घोड़े पर चढ़कर उड़-तु होंगे, तुम धूँवे हो—क्या करोगे? क्या घोड़े पर भाग सकागे?” दवा फारगर हुई। मूर्ख घनिया घमरावर—जवार से आशा ले, मुर्शिदाबाद भागा।

अब मीरजाफ़र से सन्धि पर इस्ताफ़र होने वाली थे। पर गुप्तधर चारों ओर छुटे थे वादगन माहेव वददुर परदेदार पालकी में घूँघन्वाली शियों का घेश कर—प्रतिष्ठित सुमल्लमाग घगने की शियों की तरह भीचे मीरजाफ़र के ज़मानमान में पहुँचे, और मीरजाफ़र ने कुगन मिर पर रक्त, साया पुत्र मीरन पर हाथ-धर सन्धि-यत्र पर दस्तख़त कर दिये। हम पर भी चंगरेज़ों को विरवान न हुआ, तो उहोने सातजमेठ और अमीचन्द को ज़ामिन बनाया।

पाठक, एक बात ध्यान में रखिये कि अन्तिम समय मीरजाफ़र के हाथ छोड़ से गल गये थे, और उसके पुत्र मीरन पर अकरमाग़ विजज़ी गिरी थी।

रात बीबी । यहिद्वय प्रयात आया । अंगरेजों ने बाग के उत्तर की ओर एक खुर्ची खगह में प्युह-रचना की । नवाब की सेना भीरवाकर, दुलभ राय, पारखतीफर्मा—इन तीन ममकदरामों की अध्यक्षता में सर्व चन्द्रा कार प्युह रचना करके बाग को घेरने में लिये गयी ।

अंगरेज पक्ष मर को घबराये । बजाइवाने सोचा कि यदि यह पक्ष प्युह तोपों में आग लगावे, तो संवदाश है । पर जब उसने उस सेना के नायकों को देखा, तो घिस्म हुआ । बजाइव की गोरी पहटन चार दलों में विभक्त हुई, जिसके नायक विजयपट्टिक, प्रायटकट और कस्तान गए थे । बीच में गोरे, दाएँ-बाएँ काळे सिपाही थे । नवाब की सेना के एक पारख में फ़ौज-सेनापति सिनफ़ो, एक में मोहनलाल और उनके बीच में भीरमुदन । प्रीजकरी का भार भीरमुदन ने लिया । अंगरेजों ने देखा—नवाब का प्युह दुर्भेद्य है ।

जब भीरमुदन ने तोपों में आग लगाई । शीघ्र ही तोपों का दोमों और से घटाटोप हो गया । आधे घण्टे में ५० गोरे और २० काळे आदमी मर गये । बजाइव की कुछ पिपासा इतने ही में मिट गई । उसने समझ लिया, इस प्रकार प्रत्येक मिण्ट में एक आदमी के मरने और अनेकों के शायमी होने से यह ३०० सिपाही कितनी देर उधरेंगे ? बजाइव को पीछे हटना पड़ा । उसकी फौज ने बाग के पेड़ों का आश्रम लिया । वे छिपकर गोले दागने लगे । पर उनकी दो तोपें बाहर रह गईं । चार तोपें बाग में थीं । नवाब की तोपों का मोर्चा चार हाथ ऊँचा था । अतएव भीरमुदन की तोपों से वदातद गोले दग रहे थे ।

यह देखकर बजाइव घबरा गया । उस समय वह अमीचन्द पर पियावा । उसका मजोदार हाल "मुताखरीम" में इस तरह लिखा है—

"बजाइव ने अमीचन्द से बदगुमाश होकर गुम्सा फ़र्माया और कहा—'मेरा ही वायदा था कि ख़क़ीफ़ ज़बाई में मुद्दामान दिख़ हारिख़ हो जायगा,—और बाही फौज भी नवाब की मुक़दरिफ़ है । ये सब तेरी राखें ज़िलाफ़ पाई जाती हैं ।"

अंगरेज इतिहासकारों ने भीरवीर को बजाइव का गया किया है—  
वह बजाइव के गये ने बजाइव को, नवाब के साथ को क्रम-धर्म हुआ  
था—सब जिन्द भेजा। साथ ही यह भी ब्रिस्ट दिया—“बड़े बड़े बागों,  
मैं अपने वचनों का बैसा-ही पड़ा हूँ।”

पर बजाइव का भागो बढ़ने का साइम ने हुआ। वह पाटली में  
पुलवनी डाककर यह गया। सामने कोटाया का किया था। यह निश्चय ही  
सुका था—कि सेमाप्यस कुछ देर बनापटी सुद करके पराधय स्वीकार कर  
लेगा। बजाइव ने पहले इसी की सचाई जाननी चाही। मेजर वूट २००  
मीर और ३०० काछे सिपाही लेकर क्रिछे पर चले। माराओं के समय में  
गहरी गहरी खजाइयों के कारण भागीरथी और अन्न के संगम का वह  
क्रिछा घोरों की जोका भूमि प्रतिद हो चुका था। परन्तु इस बार फाटक  
पर सुद नहीं हुआ। कुछ देर भवाधी सेना जाटके-ला लेखकर जगाइ-आग  
अपने ही हाथों से आग लगाकर मारा गई। बजाइव ने विजय-वर्ति की  
तरह क्रिछ पर अधिकार किया। अगर बिवासी प्राण खेदर भागे - अंगरेजों  
ने उनका सखर लूट लिया। केवल बावले ही इसका भिन्न गया था—को  
५० हजार सिपाहियों को। वर्ष तक के क्रिये काशी था। फिर भी बजाइव  
विश्वास और अविरतव के बीच में भक्तगोरे से रहा था। हावल और  
कॉमंस में इस समय की बात की क्रिछ करती बार उसने कहा था—

“मैं बचा ही भयभीत था। यदि कहीं दार जाता तो दार का समा  
थार से जाने के लिये भी धक आदमी को जिम्मा थापल जाने का सीझा  
नहीं मिलता।” मिदान, अपने बवाब के विरोधी वर्तमान महाराज को लिख  
भेजा—“आपके सवार चाहे ३ हजार से अधिक न हों, तो भी आप पौरव  
का मिलिये।” १९ जून को भागा पार करके भीरंगाफर के बचाप संकेतों पर  
वह भागे घड़ा, और रात्रि के दो बजे पन्नासी के अकलीबाग में मोर्चे जमाये।

नवाब का पदाव हमके भज्जदीक ही सेजमगरवाले विलुप्त मैदान में  
था। परन्तु उसकी सेवा का अर्थ सिपाही, माराओं घसका सिपाही न था।  
वह शेर भर अपने घीमे में चिन्तित बैठ रहा।

पदाव से खीटने की आज्ञा दे दी। राय, महाराज मोहनलाल वीरतापूर्वक आज्ञा कर रहे थे। उन्होंने सम्मानपूर्वक कहला भेजा—“यस, छप दो ही पार घड़ी में लड़ाई का ज्ञातमा होता है। यह समय खीटने का नहीं है। एक कदम पीछे हटते ही सेवा का दुःप्र भंग हो जायगा। मैं खीटूँगा नहीं—लड़ूँगा।”

मोहनलाल का यह जवाब सुन, झाड़ू का गधा घरा गया। उसने नयाव को पट्टी पड़ाकर फिर आज्ञा भिजवाई। येपारा मोहनलाल, साप-राय मरदार या—क्या करता? क्रोध से काक होकर जतारें बाँध, वह पदाव को खीट आया। गधे की हृष्टा पूरी हुई। उसने झाड़ू को ज़िन्ना—“भीरमदग मर गया। अब छिपने का कोई काम नहीं। हृष्टा हो, तो इसी समय, घरना रात को तीन घंटे आक्रमण करो—सारा काम बन जायगा।”

यस, मोहनलाल को पीछे फिरता देख, और गधे का हथारा या, झाड़ू ने राय चौड़ा की कमान खी, और बाग से बाहर निकल, धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। यह राग दग देख, बहुत-से नवाबी सिपाही भागने लगे—पर मोहनलाल और सिक्के फिर घूमकर खड़े होगये।

झर येईमान दुर्धमराय ने नवाव को ज़बर दी, कि आपकी चौड़ा भाग रही है। आप भागकर प्राय बचाइये। नयाव का शरब्ब फूट चुका था। सभी हुरामी, शत्रु और दागशाज ये। उसने देखा—मेरे पण के आदमी बहुत ही कम हैं। राजवन्धन ने उसे राजधानी की रक्षा करने की सलाह दी। अतः नवाव ने २००० सवारों के साथ हाथी पर सवार हो, रक्त क्षेत्र त्यागा। तीसरे पहर तक धीरे मोहनलाल और क्रैन्च सिक्के खड़े। परन्तु विश्वासघातिर्या से खीमकर अन्त में उन्होंने भी राय-भूमि छोड़ी। नवाव के सुने ज़ेम्सों पर महावीर बिलवी झाड़ू धीरे उसके गधे से अधिकार कर लिया।

जिस सेवा ने इस महायुद्ध में ऐसी धीर पिताप पाई थी—उसके मयडे पर सम्मानार्थ ‘पञ्चासी’ शिरा दिया गया है, और उस बाग के धाम की लकड़ी का एक सम्पूर्ण वनवाकर किसी साहय बहादुर ने महारानी विक्टो-

“अमीचन्द ने कहा—‘सिर्फ मीरमदन और मोहनलाल ही रुक रहे हैं। वह नवाब के साथ सहायक हैं। किसी तरह इन्हीं को हराइये। दूसरा कोई सेनापति इधर न चलायेगा।’”

मीरमदन वीरतापूर्वक गोले चला रहा था। उस समय मीरजाफर की सेना यदि आगे बढ़कर तोपों में आग लगा देती, तो बँगरेज़ों की समाप्ति थी। मगर वे तीनों पाली खड़े तमाशा देखते रहे। क़ादर ने १२ बजे पसीने से लथपथ सामरिक मीटिंग की। उसमें निश्चय किया कि दिन भर बाज़ में छिपे रहकर किसी तरह रक्षा करनी चाहिये।

इतने ही में एक-एक मेंढ बरसने लगा। मीरमदन की बहुत-सी बाल्य भीग गई। फिर भी वह वीरतापूर्वक भागी हुई सेना का पीछा कर रहा था। इतने ही में एक गोले ने उसकी छाँप तोड़ बाँधी। मोहनलाल रुक करने लगा। मीरमदन को खोग हाथों हाथ उठाकर नवाब के पास ले गये। उसने उपाया कहने का अवसर न पाया। सिर्फ इतना कहा—“शत्रु बाता में भाग गये। फिर भी आपका कोई सरदार नहीं छड़ता। सब खड़े तमाशा देखते हैं।”—इतना कहते कहते ही उसने दस तोड़ दिया।

नवाब को इस वीर पर बहुत भरोसा था। इसकी वस्तु से नवाब समाहित हुआ। उसने मीरजाफर को बुलाया। वह एक बाँधकर सावधानी से नवाब के डेरे में गुसा। उसके सामने आते ही नवाब ने अपना मुकुट उसके सामने रखकर कहा—“मीरजाफर! जो होगया, सो होगया। अच्छी पर्दा के इम मुकुट को तुम साथे मुसलमान को तरह बचाओ।” इसने यथोचित रीति से सम्मानपूर्वक मुकुट को अभिवादन करते हुए, छाती पर हाथ रखकर बड़े विरयास के साथ कहा—“अवरय हो शत्रु पर विजय प्राप्त करूँगा। पर अब शाम होगई है, और पौजे तक गई है—सवेरे में क़ायमत वर्षा कर दूँगा।”—नवाब ने कहा—“बँगरेज़ी फौज रात को आक्रमण करके क्या सर्वनाश न कर देगी?” उसने गर्व से कहा—“फिर हम किस जिंघे हैं?”

नवाब का माथ पट गया। उसे मति छन हुआ। उसने फौजों को

कमल में राजमहल में जाकर स्नायव से खीरदाहर को नवाब बनाकर सब से पहले कम्बोजी के प्रतिनिधि-स्वरूप सज़र पेश करके बग़ाय, सिद्दार और उबीसे का नवाब कहकर अभिवादन किया ।

इसके बाद बाँट-बँट, ओ होना था—कर खिदा गया । शाहपुर के पास सिराजुद्दौला को भाग में खीरकासिम से पकड़ लिया । उसकी असहाय बेगम सुलकुसिमा के गहने लूट लिये, और साँघकर राजभानो को हारा गया । मुर्शिदाबाद में इकलख मघ गई । बग़ावत के दर से नये नवाब ने अपने पुत्र मीरन के हाथ से उसी रात को सिराज को मरवा डाला । उस समय का भीषण वर्णन एक इतिहासकार ने इस प्रकार किया है—

“यह काम मुहम्मद के सुपुत्र हुआ । यह नमकदराम भी जाकर और मीरन की तरह सिराज के दुकानों से पका था । मुहम्मदजी हाथ में एक बहुत तेज़ तख़बार ले, सिराज की कोठरी में जा दाख़िल हुआ । उसे इस तरह सामने देख, सिराज ने थकड़ाकर कहा—“बमा तुम मुझे मारने चाहे हो ?”

उत्तर मिला—“हाँ ।”

अन्तिम समय निकट आया समक, सिराज ने ईरदर-मार्पना के लिये, हाथ पैरों की ज़ख़ीर खोजने की मायता की । पर वह सामग़ूर हुई । दर को मारे बसका राखा चिपक गया था । उमने पानी मीगा, पर पायी भी न दिया गया । लाचार हो, ज़मीन पर माया रगड़कर सिराज मार-मार ईरदर का नाम लेकर अपने अपराधों की दमा मीगने लगा । इसके बाद खपन्गी ज़बान और टूटे स्वर से बतने नमकदराम, दुकानों और ज़ाज़मों से कहा — “तक, वे खोग मुझे तिक भर जगड़ भी न देंगे । दुकान खाने को भी न देंगे । इस पर भी वे राही नहीं हैं ?” यह कहकर सिराज कुछ देर के लिये खप होगया ।

फिर, कुछ देर में बोला — “नहीं, इस पर भी वे राही नहीं हैं । मुझे मरना ही पड़ेगा ।”

आगे खोजने का उसे अवसर न मिला । वेफ़ते ही-बेतोते काफ़िराज

रिया को भेंट किया था आज भी उस स्थान पर एक ध्वजस्तम्भ बना, अंगरेजों की धीरता को कहानी कह रहा है।

राजधानी में नवाब के ग़ुलामों से पहले ही नवाब के हारने की खबर मजबूत फैल गई। चारों ओर भाग दौड़ मच गई। अंगरेजों की सड़ के डर से लोग ऊपर उभर भागने लगे। नवाब ने सरदारों को बुलाकर वहाँ करना चाहा। मगर औरतें तथा स्वयं उसके स्वमुख मुहम्मद इदीगाजी ही उभर स्थान न दे, भाग खड़े हुए। देखा देगी सभी भाग गये।

अब सिराज ने स्वयं पैम्प-मग़द के जिंघे गुप्त प्रणाली को। सुपह से शाम तक और शाम से रात भर सिपाहियों को प्रसन्न करने को खूब हुनाम बाँटा गया। शरीर तक सिपाहियों ने खुश प्रणाली पाकर खूब गहरा हाथ मारा, और यह धर्म प्रतिष्ठा बरके कि माद-मद से सिंहासन की रक्षा करेंगे—एक एक ने भागना शुरू किया। धीरे धीरे प्राप्त मदद के सिपाही भी भागने लगे। एकाएक रात्रि के सघाटे में मीरजाज़र की विकराज कोशों का गर्जन सुन पड़ा। अभागा सज्जन और ऐसाश नवाब मन्त में गौरवान्वित सिंहासन को दोड़कर भवेष्टा बना। पीछे पीछे पुराना हारपाज और प्यारी बेगम सुलतुल्लिमा दाया की तरह हो लिये।

आज मीरजाज़र ने शीघ्र ही मूने राजमन्त्रि म अधिकार जमाकर नवाब की खोज में सिपाही दौड़ाये। नवाब की सब हिंदु पशु-पशियाँ कैद फाँजी गई। धीरवा मोहनजाल भी ज़ख्मी हो कैद किया गया, और मोक्ष दुर्लभराय ने उम मार खाया। फिर भी गधे को सिंहासन पर बैठने का साहस न हुआ। यह बजाह्व का हस्तगार करने लगा। पर, झाह्व का कई दिना तक नगर में जाने का साहस न हुआ। २६ जून को २०० गोरे और ५०० फाँजे सिपाहियों के साथ झाह्व ने राजधानी में प्रवेश किया। झाह्व बिखता है—

“शाही सबक पर उस दिन हुतने आदमी जमा थे कि यदि वे अंगरेजों के विरोध का सफल करत—तो केवल छाठी, सोटी, पत्थरों ही से सब काम होता।”

उसी पर भार था। साथ ही, फ्रांसीसियों की छूट से नवाब को सर्वदा बचाना भी आवश्यक था। हेस्टिंग्स ने बड़ी मुठमर्दी से उक्त पक्ष को योग्य अपनी योग्यता प्रमाणित की।

पर मीरजाफर देर तक मयाब न रह सका। लोगों से वह घमरद-पूर्ण व्यवहार और झगड़े करने लगा। मुसलमान हिम्बू, सब उससे घृणा करते थे। उधर ऑंगरेजों ने रुपये के जिये दस्तक भेज भेजकर उसका मार्को-रम कर दिया। मीरजाफर को प्रतिघण अपनी हत्या का भय बना रहता था। निदान, तीन हा वर्ष के भीतर मीरजाफर का जी नवाबी से उब गया, और अन्त में ऑंगरेजों ने उसे अयोग्य कहकर गद्दी से उतार, कलकत्ते में नज़ारबन्द कर दिया। उसका दामाद मीरकासिम बंगाल का नवाब बना। जाफर की पेशान नियत की गई।

एक प्रश्न उठता है कि मीरकासिम क्यों गद्दी पर बैठाया गया? अधिकार तो मीरन का था—वो जाफर का पुत्र था। पर वहाँ अधिकार की बात हो न थी। वहाँ तो गद्दी भीखाम की गई थी। ऑंगरेज बनिशों की पैले की प्यास भयंकर थी। कासिम ने उसे चुम्माया। कासिम को जिन भाव नवाबी मिली थी, उसका दिग्दर्शन इंदर साहब ने अपने इतिहास में लिखा है—

“ऑंगरेजों की अमित घम की माँगों को पूरा पा देने के लिये नवाबी प्रज्ञाने में दबया नहीं था। इसलिये उन्हें अपनी पहलू की शर्तों की रकम में से आधा ही लेकर सन्तोष करना पड़ा। इस रकम की भी एक-तिहाई रकम नवाब के सोने-चाँदी के बर्तन बेचकर समझ की गई, और इस मुगलान के बाद नवाबी प्रज्ञाने में घूटी कौड़ी भी न बची थी।

कासिम के नवाब होने पर हेस्टिंग्स कौंसिल का मेम्बर होकर कलकत्ते आगया, और उसकी लगभग पर पुलिस साहब एजेण्ट बने। इनके विषय में कप्तान ट्रॉवर लिखते हैं—“पुलिस साहब कलकत्ते-प्रिय प्य बहुत ही घुरे आदमी थे, और वे जिन पक्ष पर नियुक्त किये गये थे, उसके योग्य न थे।”

नवाब और एजेण्ट की न बनी। बात-बात पर दोनों में झगड़



की तेज सन्नधार उसकी गदन पर पड़ी। दूब का क्रयारा बह निकला, और देखते ही-देखते, घंगाछ, शिहार, और उड़ीसे का युवक बयाब ठहरा होगया। हत्यारे छाछात्राँ ने उसके शिम्म के टुकड़े टुकड़े करके, उन्हें एक हाथी पर बांधाकर शहर में घुमाने का शुषम दिया।

बजाइव से अगले दिन मीरजापर ने इसका जिक्र करके चमा माँगी—  
तो, ह्याइव ने मुस्काकर कहा—“इसके श्रिये, यदि माफो न भी माँगी जाती, तो कुछ हज न था।”

(१७)

## मीरजाफर और मीरकासिम

मीरजाफर बयाब हुए—और पूर्ण स्ववेकल उनके एजेण्ट बनकर दरबार में विराजे। प्रशस्त धारन हेस्टिग उसका सहायक बनाया गया। थोड़े दिन बाद स्ववेकल कीसिख में सम्य विपत्त हुए—तब, उत्त गौरव का पद धारन हेस्टिग को मिला। यह बड़ी जिम्मेदारी थी। एजेण्ट को दो धारों की कटिन जिम्मेदारियाँ थीं—एक तो यह कि कम्पनी की धाय और उसके स्वार्थ में विघ्न न पड़े। दूसरे नवाब कहीं सिर उठाकर सबक न हो धाय। नवाब यदि धेरधाधों और शराब में अधिकाधिक गहराई में जित हो, तो एजेण्ट को कुछ बिम्ता न थी। ठीकी बिम्ता का विषय सिर्फ यह था कि कहीं नवाब सैन्य को तो पुष्ट नहीं कर रहा है? राज्य-रक्षा की तरफ तो उसका ध्यान नहीं है?

इन सब के सिवा आकर ने नज़र डपया न होने पर सन्धि के अन्तु सार अँगरेजों को कुछ बागीरों दी थीं। उनकी माकगुजारी धयुधी का भी

जब उसने देखा कि अँगरेज बिना मदसूल अम्बोधुन्ना तयाज़ार करके देश को चौपट कर रहे हैं, किसी तरह यहाँ मानते, तो उसने अपनी लाखों की हारि की परवा न करके महसूल का महकमा ही उठा लिया, प्रायः क़ो बिना महसूल व्यापार करने का अधिकार दे दिया। अँगरेजों ने नवाब के इस ग़ाय और उदार कार्य का सीधे विरोध किया। पर ज़ासिम ने उसकी कुछ परवा न की।

जब अँगरेज ज़ासिम को भी गद्दी से उतारने का प्रयत्न करने लगे, पर मीरजापुर की तरह ज़ासिम अँगरेजों का ग़धा न था। उसने मन्त्रि की शर्तों का पाबन होते न देखकर अपनी सैयारी शुरू कर दी। पहिले तो वह अपनी रामधानी मुर्शिदाबाद से उठाकर मुँगेर ले गया, और सेना को सज्जित करने लगा,—साथ-ही अवब के नवाब शुजाउद्दौला से सहायता के लिये पत्र-व्यवहार करने लगा।

इतने ही में अँगरेजों ने चुपचाप घटने पर धावा कर दिया। पहले तो नवाबी सेना पृकापक हमले से घबराकर भाग गई, पीछे उसने आक्रमण कर, नगर को वापिस ले लिया। बहुत-से अँगरेज ज़ैद होगये। अठ्माश एलिफ भी ज़ैद हुआ। नवाब ने जब घटने पर पृकापक आक्रमण होने के समाचार सुने, तो उसने अँगरेजों की सब कोठियों पर अधिकार करके, यहाँ क अँगरेजों को ज़ैद करके मुँगेर भेजने का हुक्म दे दिया।

अँगरेजों ने चिढ़कर कलकत्ते में आप-ही आप मीरजापुर को फिर नवाब बना दिया। इसके पीछे मुर्शिदाबाद सेवा भेज दी गई। मुर्शिदाबाद को यद्यपि मीरजासिम ने अपनी सुरक्षित कर रखा था, फिर भी विरवास पाठा, नौब और स्वार्थी सेनापतियों के कारण नवाबी सेना की हार हुई। नवाब के दो-चार धीरे सेनापति अन्त तक लड़कर घराशायी हुए। अन्त में उपजावन का मुख्य युद्ध हुआ। पलासी में ग़धा मीरजापुर था। यहाँ विरवासवादी गुरगव सेनापति था। नवाब की ३० हजार सेना यहाँ उसके आधी थी। पर अब पर अँगरेजों के सिपाई २ हजार सैनिकों ने ही विजय पाठ करली। धीरे-धीरे नवाब के सभी बग़तों पर अँगरेजों का अधिकार हो

जल्दने खगा : शास्त्रि संग आका मयाद ने कलकत्ते लो कौसिल को जिता—

ऑगरेज़ गुमाशते हमारे अधिकार की अवमानना करके प्रत्येक मगर और देहात में पट्टेपारी, कौशदारी माख और दीवानी अशाकतों की जरा भी परवा नहीं करते अधिक सरकारी ग्राहककारों के काम में बाधा डालते हैं। ये लोग ग्राहपेट व्यापार पर भी महसूक नहीं देते और जिनके पास कम्पनी का पाम है, वे तो अपने को बर्ता बर्ता ही मम करते हैं। सरकारी और ऑगरेज़-कमचारियों की परस्पर की अराधन का बहुधा फल प्रजा को पलना पड़ रहा है, और उस पर सारा निन्दुर बरपाचार हो रहे हैं।

मैकॉले साहब हम समय के ऑगरेज़ों का चित्र खींचते हुए लिखते हैं—

“हम समय के मगरों से कर्मचारियों का केवल यही काम था, कि किसी देवी से लो दो-मो पाइयड कपूज करके लिंगमा शीघ्र हो सके, वहाँ की गर्मी से पीड़ित होने के पूर्व ही विजायत छोट लाय, और वहाँ किसी कुलीन धनी की कम्पाके साथ विवाह कर, कौनवातमें छोटे मोटे एकदो साँव खरीदकर और स्पेट-जेम्स-शेवेयर में आनन्द पूर्वक मुजरा देता करे।”

हेलिंगस साहब जब एक बार पढ़े गये, तो क्या देखते हैं—नगर हो रहा है। एक और पारचाय सम्प्रदा का क्या-हीन भवदा कहना रहा है, दूसरी ओर हीक्यों घप से विदेशियों के अत्याचारों को सहते-सहते प्रजा इस भेद क समान हो गई है, जिसका ऊन भूढ़न के बहावे लोग उसका कमका तक उधेड़ रहे हैं। नगर शून्य था। दुकानें बंद थी। मन्थेड को लूट का भय था। लोग इधर उधर भाग रहे थे।

मोरकासिम अपने स्वमुर की तरह नीच, स्वाधी तथा मोदी न था। वह सब रंग दग देख चुका था। उसने कबावी मोख की थी, फिर भी वह नवाब की बाना चाहता था, और ऑगरेज़ों से भी प्रजा की तरह अत्याचार करना पसन्द करता था। साथ ही, ऑगरेज़ों के अत्याचार से प्रजा की रक्षा करने की सदा चेष्टा करता था।

अंगरेजों ने बहुत सा खायज कलकत्ते में सेवा के लिये भर रखा था। यह सुनकर चारों ओर से दुर्गिया, दीनापुर, बाँकुड़ा, बख्तमान आदि से हजारों नर नारी कलकत्ते को चला दिये। गृहस्थों की कुछ कामियों ने प्राणायिक बस्त्रों को कंधे पर पहनाकर विकट-यात्रा में पैर भरा। जिन कुछ वधुओं को कभी घर की देहली उखाड़ने का अवसर नहीं आया था, ये मिर्जासिम के वेश में कलकत्ते की तरफ ला रही थीं। बहुमुख्य आभूषण और अशक्तिपूर्ण उनके अचक्षु में बँधे थे, और ये उनके बख्ते एक मुठी ब्रज आहली थी।

पर इनमें कितनी कलकत्ते पहुँचीं? सैकड़ों छोटे-पुछे मार्गों में ही मूल-न्यासे मर गये, कितनों के बख्ते माता का सूखा रक्त धूमते धूमते अंत में माता की छाती पर ही ठपके होगये। कितनी बुल-वधुओं ने भूल-प्यास से डमक हो, आत्मघात किया।

बाबू चण्डीचरण सेन ने उस भीषण घटना का इस प्रकार वर्णन किया है—

“घोर दुर्मिच समुपस्थित है। सूखे नर कट्ठाखों से मार्ग भरे पड़े हैं।

सहस्रा नर नारी मर-मरकर मार्ग में गिर रहे हैं। भगवती गङ्गा अपने तीव्र प्रवाह में भूते-मुर्खों को गङ्गासागर की ओर बहाये लिप ला रही है। अपने अधमरे बर्षों को छाती से छगाये, सैकड़ों स्त्रियाँ अधमरी अवस्था में गंगा के किनारे लिपक रही हैं। पापी प्राण नहीं निकले हैं। कभी कभी होम चम्य मुर्खों के साथ उन्हें भी टाँग फकड़कर गंगा में फेंक रहे हैं। जहाँ-तहाँ आदिमियों का समूह हिताहित मूल्य हो, बूतों के पत्तों को ला रहा है। गंगा किनारे के बूतों में पत्ते नहीं रहे हैं।”

“कलकत्ता नगर के भीतर एक रमणी—एक मुठी मात्र के लिये अपनी गोद के प्यारे बच्चे को देखने के लिये हजर उधर घूम रही है।”

उक्त बाबू साहब एक स्थान पर हम अमाने बंगालियों को सम्बोधन करते लिखते हैं—

“दे बङ्गदेश के जननीगण ! हम मुठी आरा के ही-सहारे पर

गया। पटना और मुँगेर का भी पतन हुआ। जर्मन माफ़क अवध के मयार हाथीदरौका भी सारा गया। एक बार अवध के नवाब भी सहायता में पटना और बघनार में फिर बुद्ध हुआ। पान्थ विरसासधत और मूस की चोर छात्रा ने सुगममाभी लज्जत का विध्वंस किया। इस पर प्रयाग तक आक्रान्तिक अरेका गया। अब यह हुआ कि प्रयाग भी जर्मनों के हाथ आ गया।

मीरजापूर का क्या हुआ?—कुछ पछी शहर नहीं। लोग कहते हैं कि दिल्ली की गल्ल पर एक दिन एक छात्र देखी गई थी—छो दूध बटुमन्य हाथ में डकी था। उसके एक कोने पर लिखा था—‘मीरजापूर’।

मीरजापूर फिर नवाब बन गया। अहमदों ने जर्मन की सहायता से सब जगहों और हथौता मीरजापूर से बगल किया। सब को सेंट भी दिया-सोना दो गई। पञ्चमूस के भाग्य बूट गए। उनके साथे का भिन्नूर चोले दिया गया।

मसरो ने प्रथम ही बंगाल को विष भिन्न कर दिया था। अब इस बात विद्रोह के परचाह मानो बहाल का कोई कर्तावर्त ही न रहा। मीर जापुर फिर गरी से बहार कर बखरते भेज दिया गया। इस बार किसी को नवाब बनाने की शक्करत न रही। ईद इपिदया-भापनी माहदुर की बगल की माकिक बन गई।

सन् १८६८ के दिन थे। देश भर अराधक, आचित और दक्षिण था। किसान घर-घर छोड़, जहाँ-जहाँ भाग गये थे। नगर अनाद हो रहे थे। वर्षा भी न हुई थी। खेती बहुत कम की गई थी। बीज सब लोगों के पास न था। ऐसी दशा में अदहूर दुर्भिक्ष बहाल की छाती पर तवार हुआ। पान्थ तिल पर भी कौड़ी कौड़ी माहगुहारी बसल की गई।

इस समय भी कुछ लोग पकी थे। अगस्तसेठ, मानिकचन्द नए हो चुके थे—पर कुछ पकी बच रहे थे। पा, क्या किया, क्या पनी—अब बहाल में किसी के पास न था। अराधियों—मगर कोई छात्र देखनेवाला न था।

विजयनगर की सेना में ७ लाख योद्धा थे, और उसका शौर्य बहुत बढ़ा-बढ़ा था। उसका राज्य खम्भात की खाड़ी से आरम्भ होकर पूर्व दिशा में जगन्नाथ के निकट घंगाव की खाड़ी तक और दक्षिण में कन्या कुमारी तक फैला हुआ था।

इस हिन्दू राजा के पास मुस्लिमों के ३ गुलाम थे, जिनको वह हर प्रकार सुखी, सम्पन्न और सम्मानित रखता था। यहाँ तक कि उसने उनके ३ बड़े बड़े भान्नों का अधिकारी बना दिया था—एक को धीमापुर, पुरन्दर और सूरत से लेकर नर्मदा तक फैला हुआ भान्त दिया गया था। इसकी राजधानी धौलताबाद थी। दूसरे को धीमापुर का भान्त दिया गया था, और तीसरे को गोवाकुण्डा का। ये तीनों गुलाम बहुत शीघ्र धन शक्ति-भरपूर हो गये। और चूँकि ये शिया थे, इसलिये ईरानियों से उन्हें बहुत कुछ सुभीते मिलते गये।

पीछे इन तीनों ने मिलकर विजयनगर के प्रति विद्रोह किया, और ताजीकोट के मैदान में विजयनगर का गौरव सदा के लिये धूल में मिला दिया।

इसके बाद इन तीनों में परस्पर फूट फैल गयी, और १६वीं सदी के अन्त में अहमदनगर के बादशाह ने बराह पर आक्रमण कर अपने राज्य में मिला लिया। पीछे, जब दिल्ली पर अकबर का राज्य खस गया, तो उसने अपने पुत्र मुराद को अहमदनगर पर आक्रमण करने भेजा। उस समय चौदवीवी अहमदनगर की सुलताना थी। उसने सभी धीरता से युद्ध किया। अन्त में परस्पर की फूट से वह मारी गई और मुगलों का अहमदनगर पर अधिकार हो गया। कुछ दिन बाद खानदेश भी मुगलों के हाथ आ गया। परन्तु मलिक अमबर-नामक एक वीर ने फिरकी में एक नई राजधानी बना ली थी, और मुगल सेना को ३ बार परास्त किया था। जब बहांगोर ने उस पर शाहशादा खुरम की भेजा, जिसने मलिक अमबर को मार भगाया। इसके बाद शाहजहाँ के काल में दक्षिण के सूबेदार खानजहाँ ने मलिक अमबर के बेटों से मिलकर विद्रोह का ऋषदा सदा

कंधकरी जा रहे हों ! कंधकरी में जो शायद रखे हैं, वे तुम्हारे माग्य में नहीं बड़े । तुम्हारे चीन्हे-आने में किसी को कुछ खाम नहीं है । वह शेष तो उनके सैनिकों के धिये है । उनके निकट तुम्हारी अपेक्षा उनके सैनिक कहीं भूरे मर गये हों माननीय स्वतन्त्रता के मूल पर कुठाराघात कौन करेगा ?”

इसी समय के कुछ दिन प्रथम छाह्व को एक ही गाँव की बूट में इतना धायज भिजा था, कि जिससे एक वर्ष तक उस इलाक़े सिपाहियों का गुलारा चल सकता था । आश्चर्य है, कि देखते ही देखते बहाल इस दर्रा को पहुँच गया ।

( १८ )

## दक्षिण के मुस्लिम-राज्य

दक्षिण के प्राचीन राज्य चेर, चोल, पाण्ड्य भट होगये थे । परन्तु मुहम्मद सुलतान के कुशासन से खाम उठाकर एक हिन्दू राज्य विजयनगर पठानों के काब में बन गया था, जो २०० वर्ष तक रहा । इसी काब में बहमनी राज्य हसन-नामक एक वीर और साहसी मनुष्य ने स्थापित किया था । यह व्यक्ति समय के प्रभाव से गंगू-नामक एक माझ्या की सेवा में कुछ दिवस रह चुका था—भट उसके प्रति वृत्तश्ला प्रकाश करने को, उसने अपना नाम—‘सुखतार्म भकाठदीन हसन गंगू बहमनी’ रक्खा, और अपने राज्य का नाम ‘बहमनी’ राज्य रक्खा । राजा होने पर गंगू बहालीवन इसका मंत्री रहा । गोखकुएरा के परिचय में इसकी राजधानी गुलबर्गा थी, और उसका राज्य धार से लेकर दक्षिण में दृष्ट्या बड़ी तक फैला हुआ था ।

## हैदरअली और टीपू

हैदरअली के दादा यकीमुद्दमद एक मामूली क़रीर थे, जो गुलबर्गा में दक्षिण के प्रसिद्ध साधु हज़रत बन्दानेवाज़ गेसूदाज़ की दरगाह में रहा करते थे। इनके तर्घ के ब्रिये दरगाह से छोटी सी रज़म बँधी हुई थी। इनका एक पुत्र था, जिसका नाम मोहम्मदअली था। उसे शेरअली भी कहते थे। उसे भी खोग पहुँचा हुआ क़रीर मानते थे।

वह कुछ दिन बीजापुर में रहा, पीछे कनाटक के कांज़ार नामक स्थान में आकर ठहरा। कांज़ार का हाकिम शाहमुरमद दक्षिणी शेरअली का बड़ा भक्त था। शेरअली के ४ बेटे थे। उन्होंने बाप से नौकरी की इजाज़त माँगी। पर उसने समझाया—हम साधुओं की दुनियाँ के धर्मों में फँसा हीक नहीं। निदान, वे पिता की मृत्यु तक उनके पास रहे। पिता की मृत्यु पर बड़ा लो रिता के स्थान पर अधिकारी हुआ, और सब से छोटा घरकार के नवाब के यहाँ फौज़ में जमादार होगया, और खज़ौर के क़रीर पीरज़ादा कुरहानुद्दीन की लड़की से शादी कर ली। इससे उसे दो पुत्र हुए—जिनमें, छोटे का नाम हैदरअली था। इस समय उसका पिता सिरा के नवाब के यहाँ बाज़ापुर कर्ज़ा का त्रिजेदार था। जब हैदरअली ३ वर्ष का था, तब उसका पिता किसी युद्ध में मारा गया। उनका सब सामान ज़ब्त कर लिया गया, और हैदरअली को माई-सहित नज़्ज़ारे में बन्द कराकर नज़्ज़ारे पर बोटें जगवाने शुरू करा दी गईं। इस अवसर पर उसके बच्चा ने धन भेचकर उसका उद्धार किया, और अपने पास रक्खा। वहाँ उसने युद्ध विद्या सीखी, और समय आने पर दोनों माई मैसूर की सेवा में भर्ती हो गये।



किया। अन्त में ६ वर्ष दुख करके फिर शाही अमल में अहमदनगर भा गया। इस मुहिम में बीजापुर ने अहमदनगर की सहायता की थी। इस बिधे उस पर भी आक्रमण किया गया, पर हम अक्सर पर बीजापुर से सन्धि होगई, और बीजापुर राज्य दिवजी के बादशाह को कर देने लगा।

औरंगजेब ने, जब वह दक्षिण का सूबेदार था, तब एक बार मीर जुमला के साथ गोलकुण्डा पर चढ़ाई की थी, पर सन्धि होगई थी। तब से गोलकुण्डा की शक्ति ढीली पड़ी थी—और वह औरंगजेब के जगभग बिलकुल आधीन हो गया था।

बीजापुर के विरुद्ध बराबर मुत्तल सेना, समय-मसम पर जाती रहीं। ऊपर दक्षिण में शिवाजी ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना कर ली थी। वह भी बीजापुर को सेंग कर रहा था। उसने उसके जबरदस्त सरदार अक जलज्जों को मार डाला था।

अन्त में औरंगजेब ने स्वयं ही दक्षिण विजय की यात्रा की, और वह २२ वर्ष तक वहीं खड़ा रहा। फिर अन्त में वहीं मरा भी। इसने गोलकुण्डा और बीजापुर दोनों राज्यों को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

चेष्टा की। यह देख, हैदर ने सन्धि की चेष्टा की—पर, अँगरेजों ने उसके दूत को अपमानित करके निकाल दिया। यह देख, हैदर युद्ध को सम्मिल हो गया, और शीघ्र ही समस्त दिना हुआ देश छोटा किया, तथा अँगरेज सेवा को दिव्य भिन्न कर दिया।

इस समय हैदर के पुत्र टीपू की आयु १८ वर्ष की थी, और वह पिता के साथ युद्ध के मैदान में था। हैदर ने उसे १००० हजार सेना देकर दूसरे शास्त्रे मज्जार भेज दिया। यह इतना शीघ्र मद्रास पहुँचा, कि ठमकी सेना को तिर पर देख, अँगरेज गवर्नर घबरा गया, और वे जोग भाग लड़े हुए। टीपू ने सेयट डॉमस नामक पहाड़ी पर लड़ना किया, और आस पास के अँगरेजी इलाक़ों भी दृष्टि में कर लिये।

उधर प्रिचनपहजी में हैदर और अनरल स्मिथ का मुकाबला हुआ। येन मौक़े पर अपनी तमाम सेना को मित्रास के अक्रसर न इस घुरी तरह पीछे हटाया, कि हैदर की तमाम क्रीडा में सफलता नष्ट गई। यह विरवास-घात देख, हैदर ने अपनी सेना कुछ पीछे हटाई।

उधर अँगरेजों ने उषा दिया कि हैदर हार गया, और टीपू को भी समाचार भेज दिया। टीपू उस समय मद्रास से १ मील दूर था। वह अँगरेजों के भेरे में था गया, और मद्रास को छोड़कर पिता से मिलने को चला दिया।

इधर हैदर, बेनियमवादी के किले की ओर बढ़ा, और उसे क़तल करके आम्बूर की ओर गया। वहाँ उसे बहुत-से इधियार और गोला बारूद बाध लगा। अनरल स्मिथ हार पर हार खाकर पीछे हटता गया। तब उसकी सहायता के लिये कर्नल डक एक सई सेना लेकर बंगाल से चला।

इस बीच में अँगरेजों ने पादरिचों द्वारा हैदर के घोरोपियन अक्रसरों को फोड़ने की पूरी पूरी कोशिश की, और सफलता भी प्राप्त की। पर अन्त में हैदर ने अपना तमाम इलाक़ा अँगरेजों से छीन लिया। उधर अँगरेजों ने बंगलौर को इधिया लिया था—उन्ने टीपू ने छीना। इस युद्ध में अनेक अँगरेज-अक्रसर सेनापति-सहित गिराफ़ार किये गये। अन्त में

मैसूर नियामक सरकारों को चीथ देती थी। इस समय निजाम और मैसूर-राज्य का मित्रकर बँगरेजों से युद्ध हुआ। इस युद्ध में हैदराबादी एक साधारण सवार की भाँति लड़ा।

इस युद्ध में हैदर ने जो कौशल दिखाया, उस पर मैसूर के शीवान की दृष्टि पड़ी और उसने हैदर को डिपटीमख का प्रोत्साहन निषण्ड कर दिया। यहाँ उसने अपनी सेना को क्रान्तीवादी रीति से युद्ध करने की शिक्षा दी और शोषप्रान्त में भी क्रान्तीवादी कार्यकारिण नियुक्त किये।

धीरे धीरे इसका फल बढ़ता गया, और यह प्रधान सनापति हो गया। शीघ्र ही वह मैसूर का प्रधान-मन्त्री होगया। उस समय प्रधान मन्त्री ही राज शासक के कर्तावर्ता थे। महाराज तो राज में एकाध बार प्रजा को दखल देने थे। हैदराबादी ने शीघ्र ही मैसूर की मन्त्रणा सत्ता अधिभार में कर ली, और प्रधान-मन्त्री की पदवी उसकी प्रान्दना पदवी हो गई। विश्वी के सम्राट् ने भी उसे सीमाप्रान्त का सुवेदार नियुक्त कर दिया।

यह हैदराबादी ने राज्य की स्वायत्त्या की ओर ध्यान दिया, और शीघ्र ही सय प्रबन्ध उत्तमता से होने लग्। इसके बाद उसने आस पास के प्रान्त में विजय प्राप्त कर, रिपासख को बहाना प्राप्त किया।

यह वह समय था, जब मराठे बढ़ रहे थे। मराठा का मैसूर पर चार बार आक्रमण हुआ पर इन्त्य में दण्डें हैदराबादी स सन्धि करनी पड़ी।

इस समय बँगरेजी कम्पनी की शक्ति भी किसी शक्ति की तुल्य सुझु न कर सकती थी। इ दोनों बड़े छुट्ट कर, और हैदराबादी के मित्र कर्नाटक के नयाब को सुझाकर छोड़ दिया। हैदर ने यह देख, निजाम से सन्धि की, और दोनों न मित्रकर कर्नाटक और बँगरेजी इकट्ठे पर हमला कर दिया। निजाम की ओर से २० हजार सेना सहायकार्य आई थी। इतनी ही बँगरेजी सेना बनारस स्मिय की आधीनता में मददात से लड़ी। हैदर क घाम १ लाख सेमा थी। इसमें से २० हजार सेना लेकर उसने बँगरेजी सेना की तुल्य लोकी। परन्तु निजाम को भी बँगरेजों ने फोड़ने की

से मदद माँगी। पर उन्होंने इनाकार कर दिया। हैदर अँगरेजों की बात समझ गया। उसने टीपू को मराठों पर सेना लेकर भेजा, और ४ वर्ष तक दोनों में सन्धि होगई। जब हैदर को यह निश्चय होगया कि अँगरेज सन्धि को तोड़ रहे हैं, तो उसने अँगरेजों पर चढ़ाई करने की तैयारी कर दी, और निज़ाम से मदद माँगी। पर, निज़ाम इस बार भी ऐन मौक़े पर दगा कर गया।

— इसी बीच में माना फ़इनसीस ने हैदर से सन्धि करली। अँगरेजों ने फिर सन्धि की बहुत चेष्टा की, पर हैदर ने स्वीकार न किया। फ़र्नाटक का नवाब सुदम्भदख़लो अँगरेजों का मित्र था। हैदर ने पहले उसी को और हथ फ़िया, और सेना के कई भाग कर, तमाम प्रान्त में फैला दिये। अँगरेजी और नवाब की सनाप्टे हार-पर हार खाने लगीं। अन्त में तमाम प्रान्त को हैदर ने अपने इत्तमों में कर लिया। नवाब भागकर मद्रास चला गया। हैदर की सेनाप्टे भी मद्रास का धमकीं। अँगरेजों की दो सनाप्टे उनके मुक़ाबले को उठीं। घनघोर युद्ध हुआ, और हैदर ने अँगरेजी-सैन्य को बिलकुल नष्ट भट कर दिया। सरकार के किले और नगर पर भी अधिकार हो गया। वहाँ उसने एक हाकिम नियत किया, और शासन प्रबन्ध ठीक किया।

उस समय वारेन हेस्टिंग्स गवर्नर जनरल थे। यह समाचार सुन, वह घबरा गए। बंगाल की हालत भयानक होगई थी। भयानक दुर्भिक्ष था! पर, फिर भी ५ लाख रुपये नज़द और एक भारी पेना उसने मद्रास के लिये भेजी। मद्रास पहुँचकर इस सभा के सेनापति ने सात लाख रुपये सुदम्भदख़लो से और वसूल किये और सैन्य-सामग्र कर, हैदरअली के मुक़ाबले को बढ़ा। कई बार मुठभेड़ हुई, और अँगरेजों को भारी हानि उठाकर पीछे हटना पड़ा। अन्त में सेनापति सरहट्ट बंगाल खीट गये। हैदर ने क्षण भग समस्त अँगरेजी इलाक़ा क़तल कर लिया था। पर अचानक उसने मृत्यु सरकार के किले में होगई। हैदरअली की पीठ में मदीठ (कालकल) फोड़ा हो गया था। उसी से उसकी मृत्यु हुई। मृत्यु के समय वह साठ वर्ष का था।

## इस्लाम का विध्वंस

हैदर वीर पुत्र-सहित सेना को सदेवते हुए मद्रास तक जाने के लिये वृत्त को सुखद की बातचीत करने भेजा। हैदर "मैं मद्रास के फाटक पर आ रहा हूँ। गवर्नर और उसकी कुल पहना होगा—वहीं आकर सुनूँगा।" वह साढ़े १३० मील का फासकी तैयारी के अन्तर्गत मद्रास से १० मील दूर छावनी बना दी। अंगरेजों को पता चले सेना के बीच में 'सेरट टॉमस' की पहचानी थी। अंगरेज हैदर हस्त पर अधिकार कर लेगा—तो और नहीं। सोपे बना रहे थे। पर हैदर एक चकर दूसरे फाटक पर आ पहुँचा। अंगरेजी सेना फ्रांसिस से दो तीव्र मील के फासके पर थी। म था। पर हैदर ने पूर्व वचन के अनुसार गवर्नर को क्या कहना चाहते हो?"—गवर्नर ने तुरन्त की बातचीत करने को भेजा। हमारे अविषय के था। वैशेषर उस समय के गवर्नर का मग भाई

अन्त में सन्धि हुई। इसमें कम्पनी का अधिकार नहीं माना गया। सन्धि पर हैदर ने शताब्द के बादशाह के नाम से लिखा गया। अली और डेगलैण्ड के राजा में मित्रता कायम थापन लिये, और हैदर ने एक मोटी वज्र दूसरी सन्धि के आधार पर अन्तर्गत का गया, और बतौर तिराज के ३ लाख करवा इसके लिये एक नया युद्ध या जहाज जिसे हैदरअली को अंगरेजों ने भेंट किया।

इस सन्धि का यह अन्तर्गत हुआ कि चले ही ईस्ट इन्डिया कम्पनी के हिस्सों की दर कुछ दिन बाद मराठों ने मैसूर पर

इसके बावजूद उसने टीपू और मराठों में हींठी हुई सुलह में विलंब हाथकट मराठों से भी एक समझौता कर लिया। सोने और उसने इंग्लैण्ड से कुछ गोरी प्रौढ संधा के कारखाने पौरोह जूते भी भेजवाये।

अब त्रावनकोर के राजा से भी युद्ध किया गया था, और अंगरेज उसकी मदद पर रहे। मुठभेड़ होने पर फिर टीपू ने अंगरेजों सेना को हार पर हार देनी आरम्भ की। अन्त में स्वयं कैप्टेनवाक्स ने सोंग की बगदोर हाथ में की। निजाम और मंगटे उसके सहयोगी की सेवाएँ ले लेकर उससे मिल गये। ठीक युद्ध के समय तमाम योरोपियन आक्रांता और सिपाही शत्रु से मिल गये। टीपू के कुछ सेनापति और सरदार भी घूस से मे कड़े लिये गये।

यद्यपि टीपू की फठिनाइयाँ असाधारण थी पर उसने वीरता और हृदय से कई महीने लोहा लिया। अन्त में बंगलौर अंगरेजों के हाथ में आगिया—टीपू की पीछे हटना पड़ा।

अब कैप्टेनवाक्स ने मैसूर की राजधानी बगदोर पर चढ़ाई की। टीपू ने युद्ध किया, और सुलह की भी दूरी चेष्टा की। अंगरेजों ने कोलकाता में हैदरअली की सुन्दर समाधि पर अधिकार कर लिया, और उसे खगमग मंड भष्ट कर दिया। अन्त में दोनों दुश्मनों में सन्धि हुई और टीपू का भागी राज्य लेकर कमलौ, निजाम और मराठों ने भीट लिया। इसके सिवा टीपू को ३ क्रिस्तों में ३ करोड़ ३० हजार रुपये दण्ड देने का भी यत्न देना पड़ा, और इस दण्ड की अधोलोको तक अपने दो बेटों को—जिनमें एक की आयु १० वर्ष और दूसरे की ८ वर्ष की थी—बतौर मन्थक अंगरेजों के हथोले करना पड़ा।

इस पराजय से टीपू का दिमाग टूट गया, और उसने पलंग विस्तर छोड़ कर टाट पर सोना शुरू कर दिया, और शत्रुओं से उसने प्योता ही किया।

अन्त में—टीपू ने ठीके समय पर इंग्लैण्ड को कपड़े दे दिया, और यही सुस्ती से वह अपने राज्य, राज्य-कोष और प्रत्येक को छोड़ करने लगा। युद्ध के कारणों को सुलह की बर्बादी हुई थी, उसे ठीक करने में उसने अपनी

शत्रु के समय उस समय इलाके को छोड़कर, जो उसने हाल के युद्ध में अपने शत्रुओं से विजय किया था—जो का क्षेत्रफल ८० हजार वर्ग मील था, जिसकी साजाना वषट लमाम खर्चा निकालकर, १ करोड़ रुपयों से अधिक थी। उसकी स्याद सभा ३ लाख २४ हजार थी। खजाने में नहरी और अवाहरात मित्राज्य मय ८० करोड़ से ऊपर था। उसकी पशुशाजा में—७०० हाथी, १००० ऊँट, ११००० घोड़े, ४००००० गाय, और बैल—१००००० भैंसें १०००० जेबे थीं। शाखागार में ६ लाख यन्त्रों, १ लाख खजानों और २ हजार तोपें थीं।

यह पहला ही हिन्दुस्तानी राजा था, जिसने अपने समुद्र-सट की रक्षा के लिये एक महान्नी कहा—जा तोपों से सजित था, रसा हुआ था। यह बल-सेना बहुत शत्रुदस्त थी, और उससे बल सेनापति अलीरजा ने मज दीप के १२ हजार छोटे-छोटे गावों की ईदर के राज्य में मिला लिया था।

यह राजा लिखा ने था। बनी कठिनता से उसने अपने नाम का पहला अक्षर 'हे' लिखना सीख पाया था। पर इस भी वह उल्ला-सीपा लिख पाया था। फिर भी उसने योरोप के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों के दौल सट कर दिये थे। उसकी समरय-शक्ति ऐसी अकौकिक थी कि वह एक-पाय कई कई काम किया करता था। एक-माय वह तीस चालों में मुश्किलों से काम लेता था।

उसकी शत्रु के बाद उसके पुत्र टीपू ने युद्ध उसी भाँति जारी रक्खा। अंगरेजों ने कल्लो पत्ते करके फिर सजि की। यह थी था—पर अनुभव शून्य था। उसने अंगरेजों से मित्रता की सन्धि स्थापित की, और जोता हुआ प्रान्त उन्हें छोड़ दिया। कम्पनी ने उसे मैसूर का अधिकारी स्वीकार कर लिया था।

कुछ दिन तो चला। पीछे जब कौंठ कॉर्नवालिस गधनेर होकर आये, तो उन्होंने देखा कि टीपू ने निहाम और मराठों से बिगाड़ कर लिया है। कॉर्नवालिस ने सट मित्राज के साथ टीपू के विरुद्ध एक समझौता किया।

इसके बाद उसने टीपू और मराठों में होटी हुई सुलह में विभिन्न बातों को मराठों से भी एक समझौता कर लिया। सोने और चाँदी के हथौड़े से कुछ गोरी प्रौढ़ तथा ५ लाख पीछे हटने भी मँगाये।

अब आंग्लों के राजा से भी युद्ध किया दिया गया, और अंगरेजों को मद्रास पर रहे। मुल्केद होने पर फिर टीपू ने अंगरेजों सेना को हार पर हार देनी आरम्भ की। अन्त में स्वयं कॉर्नेवालिस ने सेना को बागडोर हाथ में ली। निजाम और मराठे उनकी सहायता को सेनापति को लेकर उससे मिले गये। ठीक युद्ध के समय तमाम योरोपियन अफसर और सिपाही शत्रु से मिल गये। टीपू के कुछ सहायक और सरदार भी घूस से फँदे लिये गये।

यद्यपि टीपू को फटिनाहवा अताधारण थी पर उसने धीरता और हवता से कई महीने छोटी लिया। अन्त में अंगलौर अंगरेजों के हाथ में आगयो—टीपू को पीछे हटना पड़ा।

अब कॉर्नेवालिस ने मैसूर को राजधानी रखरहन पर छोड़ दी। टीपू ने युद्ध किया, और सुलह की भी पूरी चेष्टा की। अंगरेजों ने आगवाश में हृदयभली को सुन्दर समोधि पर अधिकार कर लिया, और उसे अगमग नष्ट भष्ट कर दिया। अन्त में दोनों राज्यों में सन्धि हुई और टीपू का आधी राज्य लेकर कम्पनी, निजाम और मराठों ने बाँट लिया। इसके सिवा टीपू को ३ जिल्लों में ३ फरसे ३० हजार रुपये दरद देने का भी वचन देना पड़ा, और इन दरद की अदायगी तक अपने दो बेटों को—जिनमें एक की आयु १० वर्ष और दूसरे की ८ वर्ष की थी—बतौर बन्धक अंगरेजों के हवाले करना पड़ा।

इस पराजय से टीपू को विश्व टूट गया, और उसने पल्लव-मिस्तर दोढ़-कर घट पर सोना झरू कर दिया, और सुलु तक उसने ऐसा ही किया।

अन्त—टीपू ने ठीक समय पर हथौड़े का उपयोग दे दिया, और बड़ी मुश्किलों से बहू अपने राज्य, राज्य-शेष और अर्ध-को ठीक करने लगे। सुलु के कारणों को मुरक की बर्बादी हुई थी, उसे ठीक करने में उसने अपनी



सारी शक्ति खगादी। सेना में भी बड़ भर्ती करना और उन्हें शिष्टा देना उसने आरम्भ किया। इस प्रकार शीघ्र ही उसने अपनी रति पूर्ति करली।

उधर अंगरेज सरकार भी बे छमर न थी। उधर भी सैन्य-समूह हो रहा था। निजाम सबसीन्दियरी सेना के बाल में फँस गया था, और पेशवा के पीछे मीरज्या को खगा दिया गया था। पर प्रकट में दोनों ओर स मित्रता और प्रेम के पत्रों का मुगलान हो रहा था। अन्त में सन् १७६६ की ६ जनवरी को इटाव टीपू को वेलेङ्गकी का एक पत्र मिला, उसमें लिखा था—“अपने समुद्र तट के समस्त नगर अंग्रेजों के हवाले कर दो, और २४ घण्टे के अन्दर खदाय दो।”

३ फरवरी को अंगरेजी ज़ौलें टीपू की ओर बढ़ने लगीं। टीपू युद्ध की तैयार न था। उसने सन्धि की बहुत चेष्टा की, पर वेलेङ्गकी ने कुछ भी ध्यान न दिया। बल्ल और थल दोनों ओर से टीपू को घेर लिया गया था। गुप्त साजिशों से बहुत-से सधर फोटे जा चुके थे। अंगरेजों के पास कुल ६० हजार सेना थी।

आरम्भ में टीपू ने अपने विश्वस्त सेनापति पुर्णिया को मुकामले में भेजा। पर वह विरवासपाती था। वह अंगरेजी ज़ौल के इधर-उधर चक्कर लगाता रहा, और अंगरेजी सेना भागे बदली चली आई। वह देख टीपू ने स्वयम् भागे घबने का इरादा किया। पर विरवासपातियों ने उसे छोड़ा दिया, और उसकी सेना को विसी और ही मार्ग पर ले गये। उधर अंगरेजी सेना दूसरे ही मार्ग से रगपहन आ रही थी। पता खगते ही टीपू ने पलटकर गुलशानाबाद के पास अंगरेजी सेना की रोका। कुछ देर घमासान युद्ध हुआ। सम्भव था, अंगरेजी सेना भाग लकी होती—पर उसके सेनापति कमरुद्दीनज़ाँ ने दाता दी, और बलटकर टीपू की ही मना पर टूट पड़ा। हम भाति अंगरेज विजयी हुए।

इसी बीच में टीपू ने सुना कि एक भारी सेना बम्बई का तरफ से चली आ रही है। टीपू वहाँ कुछ सेना छोड़, उधर दौड़ा, और बीचमें ही उस पर टूटकर उसे भगा दिया। परन्तु उसके मुखविर और सेनापति

सभी विरवासघाती थे। टीपू को ये बराबर ज्ञात सूचना देते थे। ज्यों ही टीपू खौटकर रंगबटन आया कि अंगरेजी सेना ने शहर घेरकर आग बरसाना शुरू कर दी।

टीपू ने सेनापै भेजीं। पर सभापतियों ने युद्ध के स्थान पर चारों ओर चकर खागाना शुरू कर दिया। अंगरेज फलतः कर रहे थे, और टीपू को ज्ञात पत्रों मिल रही थीं। क्रोध में आकर टीपू ने तमाम नमकहरामों को सूची बनाकर एक विरवस्त कमचारी को दी, और कहा—“इन्हें रात को ही इकट्ठा करदो!” पर एक फर्ाश की नमकहरामी से भयभाषित होगया। उसी दिन टीपू छोटे पर चढ़कर किले की पम्पीलों का निरीक्षण करने निकला, और एक पम्पील पर अपना रुमा झगवाया। बहुत ही—ज्योतिषियों ने उसके कहा था—“आग का दिन दोपहर के ७ बजे तक आपके लिये शुभ नहीं।” उसने ज्योतिषियों की सलाह से स्थान किया, इवन लप भी किया, और दो हाथी—जिन पर काखी कुर्तें पड़ी थीं—और जिनके चारों पाना में सोना, चाँदी, हीरा, मोती बँधे थे—माहाय को दान दिये, शरीषा पृथ मोदताओं को भी अट्टटघन दिया। इसके बाद वह भोजन करने बैठा ही था, कि सूचना मिली—किले के प्रधान सरचफ अम्बुलगापर को ज्ञात कर आला गया है। टीपू तत्काल उठ खड़ा हुआ, और छोटे पर सवार हो, स्वयं उसकी जगह जाल में खेने किले में घुस गया। कुछ ग्याम-ग्याम सदाँर ग्याम में थे।

उधर विरवासघातियों ने सैयद शात्रपार को रास करने ही सफेद रुमाल हिलाकर अंगरेजी सेना को संकेत कर दिया। यह देख, टीपू के सावधान होने से प्रथम ही बीवार के दूटे हिस्से से शत्रु के सैनिक किले में घुस गये।

एक नमकहराम सेनापति मीरसादिक यह पत्र पर पा, सुलतान के पीछे गया और जिस दरवाजे ने टीपू किले में गया था, उसे मजबूती से बन्द करवाकर दूसरे दरवाजे से मदद खेने के बहाने निकल गया। यहाँ वह पहरे-दारों को यह समझा ही रहा था—कि, मेरे जाते ही दरवाजा बन्द कर खेना—और हरगिज न खोलना, कि एक वीर ने, जो उसकी नमकहरामी

की जानती था, कही—“कर्मद्वय मन्त्रज्ज ! सुलतान को दुश्मनों के इवाले करके यों जान बचाया चाहता है । खै, यह तेरे पापों की सजा है ।” कह कर खन्-से उसके हृदय पर दिये ।

पर टापूर् धाय कैम चुना था । जब वह लौटकर दरवाजे पर गया, तो उसी के बेईमान सिपाही ने दरवाजा खोलने से इनकार कर दिया । अंगरेजी सेना दूरे दिस्से से किले में घुम चुकी थी ।—इसाश हो, यह शत्रुओं पर दूट पड़ा । पर कुछ ही बेर में एक गोली उसकी छाती में लगी । फिर भी वह अपनी बन्दूक से गोबरियाँ छोड़ता ही रहा । पर, फिर और एक गोली उसकी छाती में जाकर लगी । घोड़ा भी घायल होकर गिर पड़ा । उसको पगड़ी भी भी जमीन पर गिर गई । धब उसने पैदल पड़े होकर सड़वारें हाथ में लीं । कुछ सेनिका ने उसे पालकी में लिटा दिया । कुछ लोगों ने सलाह दी, कि अब आप अपने को अंगरेजों के सुपुर्द कर दें । पर उसने अस्वीकार कर दिया । अंगरेज सिपाही नजदीक आगये थे । एक ने उसकी खंदाज कमर पेगी उतारनी चाही, टीपू के हाथ में अब तक सड़वारें थीं—उमने उसका भरपूर हाथ मारा, और सिपाही दो दूक हो, जा पड़ा । इतने में एक गोली उसकी कनपटी को पार करती निकल गई ।

रात को जब उसकी छाश सुपों में से निकाली गई, तो सड़वार धब भी उसकी सुड़ी में कमी हुई थी । इस समय उसकी आयु २० वर्ष की थी ।

इस समय उसका चेटा क़तई हैदर कागी चाद्री पर धुंद कर रहा था । पिता की शय्य की झरर सुनते-ही वह उठर दीक्षा । पर, धमेकहरासि संजोहधारा ने उसे सदाई बन्द करने की सलाह दी । साथ ही बजरि हैरिस स्वयम् कुछ भफसरों के साथ उससे भेंट करने चाये, और कहा कि बंदि आप सदाई बन्द करदें, तो आपको आपके पिता के संप्रत पर बैठा दिया जायगा । इस पर विरवास कर, क़तई हैदर ने सुन्द बन्द कर दिया । पर यह सिफ़ यज्ञानी था । अंगरेजी सेना ने क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया, और रंगपट्टे में अंगरेजी सेना ने भारी स्यूट-कॉस्ट और रक्ति-पतिं जारी कर दिया ।

अब अँगरेजी सना महल में घुसी । टीपू को शेर पाखने का बड़ा शौक था । बाहरी सहन में अनगिनत शेर खुले फिरते थे । अँगरेजी फ्रीज ने भीतर घुसते ही हूँ-हूँ गोली से उड़ा दिया । महल में टीपू का खजाना, धन, रत्न और जवाहरात से ठसाठस था । यह सब माछ, हाथी, ऊँट और भाँति-भाँति का अमयाब सब अँगरेज-सेना ने कब्जा कर लिया । सुन्नतान का डोस सोने का तट्टा लोह खाद्या गया, और हीरे-जवाहरात और मोतियों की माला और जेवरों के पिटारे नीलाम कर दिये गये । सिर्फ महल के जवाहरात की लूट का अनुमान १० करोड़ रुपया था । उसका मुख्यधान्य पुस्तकालय और अन्य मुख्यधाम पदार्थ रंगपट्टन से उठाकर खपड़न भेज दिये गये । इसके बाद टीपू के भाई करीम साहब, टीपू के १९ बेटों और उसकी बेगमों को कैद करके रायविल्लूर के किल्ले में भेज दिया ।

राज्य के टुकड़े टुकड़े कर दिये गये । एक टुकड़ा निजामके हाथ आया । बड़ा भाग अँगरेजी राज्य में मिला लिया गया । शेष भाग—मैसूर के हिन्दू राजकुल के एक ५ वर्ष के बालक को द दिया गया, और विरवासर्वाती पुर्चियाँ को उसका दीवान बना दिया गया ।

टीपू की समाधि पर यह शेर खुदा है —

धूँ थीं मर्द मैदाँ निहाँ दुख दुनियाँ,

थके मुक्त पारीज़ शमशीर मुख शय ।

अर्थात्—जिस समय वह शूर दुनियाँ से तायप हुआ, किसी ने कहा—इतिहास के लिए सबवार गुम होगई ।



( २० )

## कर्नाटक के नवाब

जिस समय दिल्ली पर शाहआलम का अधिकार था, तब कर्नाटक में नवाब दोस्तमखी का शासन था। उस समय फ्रांसीसी लोग अँगरेजों के विरुद्ध अपने अधिकार के लिये पूरी चेष्टा कर रहे थे। नवाब अनवरुद्दीन के जमाने में अराठों ने कर्नाटक पर आक्रमण किया था। पर फ्रांसीसियों और बादशाह दिल्ली की सहायता से नवाब की विजय हुई थी। धीरे धीरे अँग्रेजों ने नवाब की दोस्ती प्राप्त करने की चेष्टा की। अन्त में सनापति दुर्ग ने नवाब से वादा किया कि, मैं मद्रास से अँग्रेजों को निकालकर मद्रास आपके आधीन कर दूँगा। परन्तु फ्रांसीसियों ने मद्रास विजय करके भी ४० हजार पाउण्ड मद्रास लेकर अँग्रेजों को देव दिया। तब नवाब क्रुद्ध होकर फ्रांसीसियों से लड़ पड़ा। अन्त में फ्रांस की विजय हुई। भारतीय इतिहास में पोरोपियनों की यह प्रथम विजय थी। यह सन् १७४६ की घटना है।

अब नवाब और अँग्रेज मिल गये। परन्तु फ्रांसीसियों ने कर्नाटक नवाब के दामाद चन्दा साहब का पक्ष लिया, जो कर्नाटक की गद्दी के लिये दौड़ भूष कर रहे थे। अन्त में उनकी इच्छा पूर्ण हुई, और अनवरुद्दीन नवाब को मारकर चन्दा साहब कर्नाटक के नवाब बनाये गये।

त्रिचनापट्टा में मुहम्मदमखी का अधिकार था। अँग्रेज उसका पक्ष में थे। अन्त में दक्षिण का वह प्रतिद्वन्द्वी हुआ—जहाँ दक्षिण के तीन राजकुलों, और अँग्रेज तथा फ्रांसीसियों की क्रिस्मत का फैसला होगया। फ्रांसीसी हारे और भारत में उनके व्यापार का नाश होगया।

अब अँगरेजों की कृपा से मुहम्मदमखी कर्नाटक का नवाब बना।

इसके बदले में उसने १६ लाख की आय का इल्काका अंगरेजों को दिया। प्रारम्भ में मुहम्मदमली की अंगरेजों में दई प्रतिष्ठा थी। पर, वह शीघ्र ही बंगाल के नवाबों की भाँति दुरदुराया जाने लगा। उससे नित-नई माँगे पूरी कराई जाती थीं, और नवाब को प्रत्येक नये गवर्नर को खगमग वेद खाल रुपये मजूर करने पड़ते थे। अन्त में उस पर इतने खर्चें बढ़ गये, कि वह तन्न हो-गया, और अंगरेजों से खान बखाने का उपाय सोचने लगा। इस समय अंगरेज व्यापारियों के क्रोधों से वह बेतरह दुबा हुआ था।

छाटे कॉनवालिस ने नवाब से एक सन्धि की, जिसके कारण नवाब की समस्त सेना का प्रबन्ध अंगरेजों के हाथ में आगया। इसके खर्चों के लिये नवाब से कुछ ज़िन्ने रहन रखा लिये गए। इनकी आमदनी ३० लाख रुपया सालाना थी।

सन् १७६२ में मुहम्मदमली की मृत्यु हुई, और उसका बेटा नवाब कमरुद्दौलतमरा गद्दी पर बैठा। इस पर गवर्नर ने जोर दिया कि रहन रन्न ज़िन्ने और कुछ ज़िन्ने वह कम्पनी को दे दे। पर उसने साफ इनकार कर दिया। परन्तु इसी धीरे में अंगरेजों ने प्रतापी दीप को हरा डाला था, और रंग पट्टन का अट्टर खज़ाना उनके हाथ आया था। उसमें गवर्नर को कुछ देखे प्रमाण भी मिले थे, कि जिसमें फार्नाटक-नवाब का दीप के साथ पदचिह्न पाया जाता था। परन्तु नवाब के लीते-जी यह बात यों ही चूकती रही। क्या ही, नवाब मृत्यु शय्या पर पड़ा, कम्पनी की सेना न महल को घेर लिया, और यह कारण बताया कि नवाब की मृत्यु पर बदधमनी का भय है। नवाब बहुत गिदगिदाया, पर अंगरेजों में उसे हर समय घेरे रखा, और बराबर अपनी मित्रता का विरवास दिखाते रहे। उस समय नवाब का बेटा शाहजादा अब्दुल्लाह उसी महल में था। क्योंकि नवाब का प्राण निकला कि शाहजादे को जबरदस्ती महल से बाहर लेजाकर अंगरेजों ने कहा—  
“चूँकि तुम्हारा दादा और बाप ने अंगरेजों के खिलाफ युद्ध पत्र-व्यवहार किया है, इसलिए गवर्नर बनरस का यह फैसला है, कि तुम नवाब बनने याप की <sup>अपनी</sup> के माफ़ूसी रिश्ता की भाँति जिन्दगी

और इस सन्धि-पत्र पर दस्तखत कर दो ।' वहाँ यह बातें हो रही थीं—  
महाँ अंगरेजी सिपाही नंगी तलवारें जिधे फिर रहे थे । परन्तु भक्तीहुसेन ने  
मसर न किया । तब नवाब के दूर के रिश्तेदार आज़मगुदीका से अंगरेजों से  
हाथ-भीत थी । उसने सन्धि की शर्तें स्वीकार कर लीं । तब इसे मसबब  
पर बैठा दिया गया । इस सन्धि के अनुसार समाज वनाटक-ग्राम्त कम्पनी  
के हाथ आगया, और आज़मगुदीका केवल राजपामी घरदार और बिजोह  
के मद्रकों का स्वामी रह गया । नवाब को बिजोह के मद्रक में रखा गया,  
और उसी में आज़मगुदीका भक्तीहुसेन और उसकी विधवा माँ को छुँद कर  
दिया गया । कुछ दिन बाद वह वहीं मर गया । सम्देह किया जाता है कि  
उसे ज़हर दिया गया ।

( २१ )

## सूरत की नवाबी

मुगल-साम्राज्य में सूरत एक समर्थ बन्दरगाह और सूबा था । बहुत  
दिन तक वहाँ बन्दरगाह का सूबेदार रहता था । तब साम्राज्य की शक्ति  
धीधी पड़ी, तब वहाँ का हाकिम स्वतन्त्र नवाब बन बैठा । पीछे जब फ़ोरोप  
की शक्तियों ने भारत में पैर फैलाये, और अंगरेजों की शक्ति बढ़ने लगी,  
तब सूरत के नवाब से भी अंगरेजों ने सन्धि कर ली । धीरे-धीरे नवाब  
अंगरेजों के हाथ की कठपुतली होगया । चार नवाबों के जमाने में यही  
होता रहा । पेशेज़ली ने अपनी जीवि के आधार पर नवाब को भी सेना  
भर करान और कम्पनी की सेना रखने की सलाह दी । नवाब ने बहुत  
माँ नूँ की, मगर अन्त में एक लाख रुपया वार्षिक और ३० हजार रुपये  
साजाना का और रिभायते करनी ही पड़ी । इसी समय नवाब मर गया ।  
इसके बाद इसका बच्चा नसीबुद्दीन गद्दी पर बैठा । इसने यीशु ही सब  
दीवानी और प्रीतवारी अधिकार अंगरेजों के दे दिये, और स्वयं वे-मुल्क  
नवाब बन बैठा, जो कुछ दिन बाद समाप्त होगये ।

( २२ )

## निजाम

दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के यज़ीर आसफ़ाह ने पञ्जाब से इस्तीफ़ा देकर दक्षिण में था, हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाकर एक नया राज्य स्थापित किया, और १० वर्ष तक मराठों से लड़कर अपने राज्य को बड़ा कर लिया। धीरे धीरे दक्षिण में तीन शक्तिशाली प्रबल होगई। एक निजाम, दूसरी बेग़म और तीसरी हैदराबादी।

अंगरेज़ शक्ति ने इन तीनों का न मिथने देने में दो कुशल समझी। पांडूक, हैदराबादी के विचार में यह सुके हैं कि किन भाँति निजाम ने अंगरेज़ी शक्ति के आधीन होकर बारम्बार हैदराबादी से विश्वासघात किया। क्यों ही टीपू की समाप्ति हुई, अंगरेज़ी शक्ति निजाम के पीछे खड़ी। पहले गुजरात का इलाक़ा सबसे छोटा किया गया।

इसके बाद एक गहरी चाल यह खोजी गई कि यज़ीर से छेकर छोटे-छोटे थमीरों तक को रिरवते लेकर इस बात पर राज़ी कर लिया गया, कि नवाब की सब सेना, जो फ़्रान्सीसियों के आधीन थी, ठुकरे ठुकरे करके यज़ीरत कर दी जाय, और यज़ीर की सबसोदियरी सेना सुबके से हैदराबाद आकर उसका स्थान ग्रहण कर ले। इसकी नवाब को कारणों फ़ात खबर नहीं था।

यज़ीर यद्यपि महमत हो गया था, घूस भी था सुना था, परन्तु ऐसा अपमानक काम करते निम्नवत्ता था। किन्तु अंगरेज़ों ने सेना के भीतर ही राज़ फैला दिये थे। फ़रसत निजाम की सेनाएँ विभोद कर डेटी, क्योंकि उन्हें का चेता नहीं मिला था।



इसी मौके पर कम्पनी की सेना ने हैदराबाद को छा घेरा, और यज़ीर से कहा कि—औरन् अफ़्ग़ानी सेना को बाग़ावत करके कम्पनी की सेना को स्थान दो। पर यज़ीर ने इनकार कर दिया। अतः मैं उसे कम्पनी की इच्छा पूर्ण करनी पड़ी—निज़ाम ने भी स्वीकृति दे दी, और एक सचि-द्वारा निज़ाम हैदराबाद की स्वाधीनता का सश के लिये ज्ञातमा होगया।

( २३ )

## मुस्लिम संस्कृति का भारत पर प्रभान ।

सच ने प्रथम—अब हम यहाँ हम बात पर ख़ाम तौर से प्रकाश डालना चाहते हैं, कि वास्तव में जब मुस्लिम राज्य स्थापित होगया—तब, उस शासन में हिन्दुओं के साथ मुमक़मानों के किस व्यवहार रहे। यह हम बता भाये हैं कि बादशाहों में ऐसे कई आदमी हुए—जिन्होंने धर्मा-धता के लिये—निदयतापूर्वक—तलवार का सहारा लिया था। पर, यदि हम अत्यन्त गहराई से देखे, तो हम समझ पावेंगे कि अतः मैं उन्हें हिन्दू-खन बख़ से मुक़ना ही पड़ता रहा। यह बात थोड़े ही विचार करने से समझ में आसकती है, कि महमूद और तैमूर-जैसा लुटेरा—चाहे जितना भी उत्पात या मार काट करे, नगों का विध्वंस करे, और चेतोत-सम्पदा लूटकर ले जाय, परन्तु एक बादशाह के लिये—जिसे सेना, कर, तथा अन्य सुख्यवस्थार्थों के लिये हिन्दू प्रजा से निरन्तर काम लेना पड़ता है—अत्याचार और लूट भार कितनी घातक है ! सब से मार्के की बात तो यह है, कि मुसलमानी राज्य काज के मध्य भाग में जितने युद्ध हुए हैं, उनमें बहुत ही कम ऐसे मिलेंगे, जिनको विष्ट हिन्दू मुस्लिम-युद्ध का रूप दिया जा सके। तराचली के युद्ध में शृङ्गीराज की आधीनता में अक़्बान सैनिकों

का एक दल खड़ा था। पानीपत की तीसरी लड़ाई में मुसलमान तोपची मराठों के साथ थे। अन्यत्र मुसलमान-शासक जहाँ हिन्दू राजाओं से लड़ते थे—वहाँ, वह युद्ध हिन्दू मुसलमानों में होता था। पर, मुसलमान शासक मुसलमान राजाओं से भी उसी भाँति लड़ते थे। उधर हिन्दू राजपूत राजा स्वयं भी आपस में झूठ लड़ते थे। वह समय ही मानो योद्धाओं का था और योद्धाओं की दो श्रेणियाँ थीं—एक हिन्दू, जो अधिक थे—पर संगठित न थे, दूसरी मुसलमान, जो कम थे—पर संगठित थे। जहाँगीर और शाहजहाँ मानो मुस्लिम साम्राज्य में एक शान्त, स्थिर और कला-कौशल को उद्यत करनेवाले बादशाह थे।

अलबत्ता एक बात तो थी ही, वह यह कि पठानों के राज्य-काल में बादशाह अपनी प्रजा में बिठने सहनशील थे, उतने पराये राज्य के हिन्दुओं के जिये नहीं। मलिक काफूर का दखिण विजय ऐसा ही है,—यद्यपि उस सना में हिन्दू-योद्धा भी थे। सही बात तो यह है कि मग़िश विजय केवल धन-लिप्सा के लिये था।—भुतशिकनी का बहाना तो एक मीठा छल था ! सभ्य युग के मुसलमान बादशाहों का अपने राज्य के बाहर के हिन्दुओं पर आक्रमण करना और नगरों का लूटना एक चामदनी का खरिया था। भारत में कति प्राचीन काल के व्यापार शिष्ट और अभ्यवसाय से बहुत धन एकत्र होगया था, अगणित लबाहरात एकत्र होगये थे और आक्रमणों के दुर्घर्ष प्रभाव से खिचकर धर्म-मग़िदों में सन्चित होगये थे, जो उम काल में एक-आध धर्म-स्याह थे। यही कारण है कि आक्रमणकारियों की दृष्टि मग़िदों के धन कोष पर ही रहती थी।

यह बात तो हमें माननी पड़ेगी कि मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक प्रारम्भ अलाउद्दीन की क्रूर और प्रचण्ड नीति से हुआ। गुलाम बंश के सुलतान तो थोड़े मुसलमान थे। उसके बाद ही मुस्लिम-जाति भारत में एक संगठित जाति के समान बबती लगी गई। यह एक नैतिक पुष्टि थी—जो अलाउद्दीन से अकबर तक स्थिर होती लगी आई, और इसी ने उनके साम्राज्य को स्थिर बनाया।

परन्तु यह बात तो भाव ही है कि मुसलमानों ने प्रथम यूनायिों, शकों और हूणों ने भारत पर बड़े बड़े घाते किये । पर उससे न भारत की राजनीति पर प्रभाव पड़ा, समाज-श्रमिता में ही गड़बड़ ही हुई । सामरिक प्रभाव भी इनका सीमा-प्रान्त तक ही सीमित रहा । यदि मुसलमान भारत में आये होते, तो भारतवासी सुखी, समृद्ध और शान्त भारत में रहते होते । उनकी कृषि, व्यापार शिल्प ठाक अवस्था में था । रहन सहन साधारण और कम प्रदर्शक था । गण्यति घट्ट थी । सामाजिक जीवन में धार्मिक विश्वास और प्राकृतिक अशान्ति प्रमुख अवस्था था, परन्तु ईसाइयों और मुसलमानों की अपेक्षा फिर भी उनमें सहनशीलता थी । मुसलमान भी कदापि इतने विजयी न हुए होते, यदि उनमें सह्य का जोश और लूट की प्रवृत्ति व्याप्त न होता । पाठक देखते हैं कि योरोप और मध्य एशिया की भाँति भारत में भी उनका विरोध खीले जायों से किया गया था, और समय का प्रभाव था कि मध्य एशिया तो उनके चरणों में लोट गया, और योरोप अछूता बच गया तथा भारत मध्य में ही अछूत होगया । क्रान्ति ने बहादुरशाह ज़क्रर तक मुसलमानों का लगभग ११०० वर्ष तक काज रहा, और आज उनकी भाषा, सम्प्रदाय, सत्तति, शिवा-नीति और जीवन भारत में एक निरे से दूसरे निरे तक व्याप्त है । ७ करोड़ मुसलमान अब भी देश की नासी हैं, और देश पर उनके बड़े अधिकार हैं, जो किसी भी देशवासी का अपनी मातृ भूमि पर होने चाहिये । इनमें दरिद्र, अमीर, शिक्षित मूल्य, रहस्य, शान्ति नयाय सभी तरह के आदमी हैं ।

यह हम कह चुके हैं कि भारत में आज से पूरा मुसलमानों की विजयिनी सना ने हिन्दुयुद्ध के परिचय में समस्त एशिया और अफ्रीका तथा दक्षिणी योरोप को रौंद डाला था । पञ्चाय म धुसने से पूर्व वे स्पेन और फ्रांस को दक्षिण कर चुके थे । पुस्तुन्तुनियों का प्रताप लूटकर ये साहसी होगये थे । फिर भी वे इससे पूर्व भारत में घुसने का साहस न कर सके । इसका कारण भी तीव्र-राजाओं का सैनिक प्रबन्ध था । उन्हें विदेशियों की टकर लग चुकी थी, और सातारों और हूणों से वे छोटा छो चुके थे । वे खूब कट्टर योद्धा

और मुस्लिम लिपाही थे । दुख था, तो यही कि वे परस्पर मगठित और मिश्र न थे, और न वे अपने सेनापति रण जोति कुशल थे । अपनी शक्तियों को परस्पर दलित करने में लगाये ही रहते थे ।

इस समय विन्ध्याचल के उत्तर में तीन जयदात राजा बड़ी-बटो नदियों की घाटियों में शासन कर रहे थे। सिन्धु-सिंधित मैदानों और यमुना के पश्चिमोत्तर प्रांतों में राजपूता का अधिपत्य था। मध्य देश कद् शक्ति-सम्पन्न राजाओं के साधोन विभक्त था, जिनका अधीनवर कन्नौजराजि था। गंगा के नीचे की घाटियों में पालवशी बौद्ध राजे थे। उत्तर और दक्षिण भारत के बीच विन्ध्याचल के पश्चिम में मालवा का हिन्दू-नाय्य और दक्षिण में चेरा, चौल और पाण्ड्य राज्य फैले हुए थे।

यद्यपि ये राज्य बिखरे हुए थे, पर विदेशियों के आक्रमण की शक्ति के जिये पड़े थे। यदि किसी बड़े मजदूरेवरकी आधीनतामें यह संयुक्त सेनाएँ एकत्र होती थीं, तो ये अनेक समझौते करती थीं। फिर जोता हुआ राज्य बिखरे का अर्थ होता था। यही कारण था कि कालिम् से मुहम्मद गोरी के गत हुए हमलों तक भारत पर मुस्लिम आक्रमणों का यह प्रभाव नहीं पड़ा, जो पश्चिम माइनर के ऊपर पड़ा था। मुहम्मद गोरी का प्रमुख भी सफल होना सम्भव न था, यदि परस्पर की कड़ह और निरंतर युद्धों से शक्ति का सबका रुच न होता होता। परन्तु यवन-साम्राज्य की नींव तो अकबर के ही फाड़ में मोड़ हुई, जबकि उसकी धार्मिक पहलू नष्ट हुई। उसने हिन्दू स्मृति और शक्ति दोनों का ही पूरा पूरा सहयोग किया हिन्दू सरदारों और हिन्दू नीति पर राज्य विस्तार किया। अकबर के समय तक तो प्रबलसे प्रबल आक्रमण प्रजाके सहने पर भी हिन्दू-शक्तियों बराबर उसे पैलेंद्र देती हो रहा, और अकबरकी मृत्युके २०० वर्ष बाद ही प्रतापी और अहमद शाह सामाज्य हुआ होगया, तथा उसके उत्तराधिकारों ने भारतों के हाथ में कैद होना पड़ा।

दक्षिण में ताजीकोट के मैदान में एक बार हिन्दू शक्ति गिरी। पर एव  
सी वष - के रूप में यह फिर उठी, और उतने बड़े  
से पानीपत - भाई छाल मराठे जा खड़े किए।

अकबर जैसे प्रतापी शत्रु के सामने भी, प्रताप-जैसों ने २५ वर्ष तलवार चलाई, और औरंगजेब ने अपने शासन के २० वर्ष चिन्ता और तलवार की धार पर काटे।

यह हम बात का प्रमाण है, कि भारत में कभी भी हिन्दू शक्ति नष्ट नहीं हुई। पूर्वी-भर के इतिहास में ११०० वर्ष तक अराजकता में रहकर, अरक्षित जीवर, इतने आक्रमण, क्रांति और लूट-मार सहकर, तथा ७०० वर्ष विदेशी घमं शत्रुओं के शासन में रहकर और किम जाति ने अपने शोचन को अच्युत बनाये रखा है?—हिन्दुओं के मुकाबिले की और कौन-सी जाति है?

हाँ, हम यह कह सकते हैं कि भारत में एक चरण के लिये भी सुनख मानों का शासन हिमालय से लेकर राजकुमारों तक और अटक से लेकर कटक तक प्रवाह नहीं रहा। सिर्फ बड़ गतान्दों तक मुगलों का शासन इतना रहा कि कुछ हिन्दू-राजा बसे कर देते और अपना प्रतिनिधि भेजते रहे। बस, सुनखमानों साम्राज्य का सर्वाधिक पैमाना यहाँ पर समाप्त हो जाता है, और इस बड़े गतान्दों की समाप्ति के पूर्व ही हिन्दुओं ने फिर अपनी विजय प्रारम्भ कर दी थी। दक्षिण पूर्व से गणपूत, परिचमोत्तर से सिख, और दक्षिण से मराठे दिल्ली के मुगल-शासन को ध्वंस करने को बड़े-बड़े आ रहे थे। इस काल में दक्षिण के ब्राह्मणों की राजनीति-सत्ता और शत्रुओं की सैनिक योग्यता का मिश्रण एक अपूर्व धनना थी। इस समय इनके धर्मरक्षी शक्ति ने ही बीच में पड़कर सुनखमानों के साम्राज्य को हिन्दू हाथों में आने से रोका।

अलबत्ता दो बार ऐसे अवसर थे जो हिन्दुओं ने खो दिये, और यदि वे न खोदिये होते, तो आज दिल्ली में हिन्दू साम्राज्य होता। एक अवसर यह था, राधा सांगा ने अपने प्रबल प्रताप से दारभार दिल्ली के बाद शाहों को क्रतुह किया था। उनकी शक्ति खर्च थी—और बादर झूझ उबर भटक रहा था। राधा सांगा के बंशधर उस समय बनायायम की भारत के चक्रवर्ती सम्राट् हो सकते थे। दूसरा अवसर यह था, जय पृथ्वीराज के

के पतन के बाद मुहम्मद गोरी लौट गया था। तब यदि चाहते, तो अब चन्द के वंशधर दिल्ली को धर दबा सकते थे। तीसरा अवसर यह था—अब प्रताप के पास, काबुल विजय कर, मारनसिंह मिलने गये थे। अकबर से उनका भीतरी द्वेष बढ रहा था। मुगल-सैन्य उनके हाथ में थी। मन में न जाने क्या भाव आये थे। यदि प्रताप समझ न करके मारनसिंह को छाती से छगा लेते, तो अकबर ही मुस्लिम साम्राज्य का अन्तिम बादशाह होता और दुबक, पेयारा और शरायी बङ्गाली को यह गद्दी नसीब न हो कर सीमोदियों को मिलती। चौथा यह अवसर था, जब मराठों ने दिल्ली को रौंद लिया था, बादशाह को हँद कर लिया था, और विशाल भारत वर्ष तक चिरकाल तक छावारिस आज पड़ा हुआ था।

इन सुअवसरों से हिन्दुओं ने लाभ नहीं उठाया, इसका कारण यह था, कि साम्राज्यवाद और दिग्गज दोनों ही के महारथ को वे नहीं जानते थे। उनमें एकदेशीयता न थी। वे अपने प्रांतों को स्वदेश, अपनी जाति को जाति और अपने घर को घर समझते थे। समस्त भारत और उसके निवासियों के प्रति भी कुछ उत्तरदायित्व रखते हैं, यह उन्होंने सोचा भी नहीं। अतः इस छावारिस आज को समाप्त करने का कष्ट करना पड़ा—एक विदेशी गोरी जाति को !!

## भारतवर्ष की देशीय लम्बा

अंग्रेजी गृहों व भूगोलों में वर्षों को प्रायः यह बात पढ़ाई जाती है कि भारतवर्ष एक देश नहीं, किन्तु कई देशों का समूह है। अधिक विद्वान् विद्वान् भारतवर्ष को एक महादेश मान बैठे हैं।

भारतवर्ष में एक-देशीय भौगोलिकता में सम्यक् करने का कारण वनका इतना बड़ा विस्तार ही है। भारत का विस्तार उत्तर से दक्षिण तक २००० मील से अधिक और पश्चिम से पूरव कोई १६०० मील के लगभग है। पृथ्वी के इनने बड़े टुकड़े को मझमा एक देश मानने को बुद्धि तैयार नहीं होती। भारत का क्षेत्रफल मारे कोगेव के क्षेत्रफल के दो तिहाई के बराबर है। हमारा भारत ग्रेट ब्रिटेन से १४ गुना और फ्रांस या जर्मनी से ६ गुना बड़ा है। इसी विस्तार के कारण लोग भारतवर्ष को अनेक देशों का समूह मानते हैं। समुद्र भी इसकी मर नहीं — कहीं गंग नदी पर्वत, कहीं समुद्र-तल और कहीं ऊँची नापी भूमि। यही दशा जल-वायु की भी है। कहीं शीत की अधिकता है, कहीं गर्मी की। जल वृष्टि का भी यही हाल है। यदि चेरापूँजी में ४६० इंच वृष्टि हो, तो ऊपरी सिंग में पानी का कहीं नाम निशान भी नहीं। चरातल में विषमता और जलवायु में समानता न होने से पशु पक्षी भी भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। रंग दिरंगे पक्षी, जैस यहाँ देखने में आते हैं—जैसे, और दूरों में बहुत कम दिखाई देते हैं। इन सब बातों का प्रभाव भारतवर्ष की वास्तविक लपट पर भी पड़ा है, जिसका फल यह हुआ है कि मनुष्य के लिये जो पदार्थ आवश्यक हैं, वे सभी यहाँ होते हैं। सब से बढ़कर भिन्नता भारतवर्ष के मनुष्यों में है। संसार की जन संख्या का पाँचवाँ भाग भारत में पाया जाता है। इस जन-

समुदाय में न जाने कितनी भाषाएँ और नब्बो कितनी रस्म रिवाजें प्रचलित हैं। शरीर की आकृति के विचार से भी भारतवर्ष में मातृ प्रकार के मनुष्य रहते हैं। बोली की भिन्नता का तो कहना ही क्या है? यदि मत्तों की सरफ इष्टि छाड़ी जाय, तो यही जान पड़ता है कि सत्तार-भर के मत्तों और धमा का बाज़ार भारतवर्ष है।

इस दशा में यदि किसी को भारतवर्ष की एक-देशीयता में सन्देह हो, तो भारतवर्ष ही क्या है?

इतना होने पर भी मिस्टर यूसुफ़ख़ाँ, ई० ए० गेट, तथा बीसेयट ए० स्मिथ आदि इतिहासज्ञों का मत है कि भारतवर्ष एक ही देश है। प्राचीन विद्वानों ने भी भारतवर्ष को एक देश माना था। प्रथम तो 'भारत वर्ण' नाम ही से इस देश की एकता का अनुभव होता है। भारत में विंधु नद्य बहने के कारण ईरानियों ने इसका नाम—'सिंधुस्थान' या 'हिन्दुस्थान' रख लिया था। ग्रीस निवासियों ने इण्डस (Indus) से इण्डिया बनाया। इन सब नामों में 'भारतवर्ष' नाम में एक खास महत्व है। जब कोई भिन्न भिन्न वस्तुओं के समूह का एकत्र वर्गीकरण करता है, तब वह उन्हें भेद होने पर किसी एक प्रधान मूल से व्यवस्था बाँधता है। सरकारी विद्वानों ने भी सम्राट् 'भारत' के नाम पर 'भारतवर्ष' नाम रखता जैसे रोमूलत (Rome) राजा के नाम पर रोम का नाम निर्देश हुआ। यह वह समय था, जब किरात, हूण, यवन—आदि देशों पर भारत का अधिकार था।

अथ ऋग्वेद के एक मन्त्र को पढ़ियेगा—

हर्म मे गजे-यमुने सरस्वती -

शुशुति-स्तोम सचता परुषा ।

अमि वःमा मरुदृधे विव स्तयाजो कोये

भृशुमा सुपोमया ।"

क्या इस मन्त्र में भारतवर्ष-व्यापिनी नदियों का पाठ करने से समग्र भारतवर्ष का चित्र भाँखों में व्याप्त नहीं हो जाता? क्या मातृभूमि की



एक सिन्धु विस्तृत भूमि मन में नहीं भावित होने लगती ? ऋग्वेद के समय का भारत इतना ही भारत था, कि उत्तर में हिमालय, पश्चिम में सुखेमान पर्वत, दक्षिण में समुद्र, पूर्व में गङ्गा । यह आजकल के भूगोल से उत्तर भारत है । यही धार्यवत् था । मनु ने भी धार्यवत् की यही मीठी निश्ठा लिखी है :

‘आसमुद्रालु चै पूर्वाया समुद्रालु परिचमात्’।

तयोरेयात्तरं गिर्यो शर्या वर्त विदुषा ॥”

अमर कोप भी ऐसी परिभाषा है :—

“आधरत्तं पुर्यभूमिर्मध्यं विष्य हिमात्रयोः ।”

ऐसा मालूम होता है कि जैन जैसे धार्य-सम्भवा दक्षिण की ओर बढ़ती गई, जैन धर्म भौगोलिक परिभाषा भी बढ़ती गई । रामायण में हमें दक्षिण का वर्णन दृढधारक्य तक मिलता है । परन्तु राम ने जंका तक जाने और उन विजय करने का दुर्घट पराक्रम किया । रामायण से दो बातें स्पष्ट होती हैं कि राम को दक्षिण में एक भी धार्य जाति का आदमी नहीं मिला । राम का अद्भुत व्यक्तित्व कहना चाहिये कि उन्होंने कोनर और ऋष्य जाति के अनाया को अपना ऐसा मित्र और भक्त बना लिया, और ऐसा विरक्त कार्य साधन किया । महाभारत में लिखा है कि सहदेव ने पाण्डव, द्रविड, उडू, फरक, आंध्र आदि देशों को विजय दिया था । भीष्म पर्व में दो सौ नदियों की सूची दी हुई है । उनमें दक्षिण की प्राय सभी नदियों का जिक्र है । धन पर्व में जिन नदों का वर्णन है, उनमें दक्षिण के प्राय सभी नदों का जिक्र आगया है, जिनमें धनस्य, यरुण, साध्रपर्णी, कावेरी और कन्या-साया का वर्णन है । यह कन्या तीर्थ अवश्य कन्या-कुमारी होगा ।

भीष्म-पर्व में एक और महत्वपूर्ण बात लिखी है । वहाँ देश का आकार सम त्रिकोण-सदृश लिखा है । यह सम त्रिकोण चार छोटे छोटे सम त्रिकोणों में विभक्त किया है । इस सम त्रिकोण की शिखा कन्या कुमारी से और आधार हिमालय पर्वत माना है । कनिष्क साहब लिखते हैं कि

यदि परिचमोत्तर दिशा में भारत का विस्तार राजनी तक माना जाय, और इस त्रिकोण का एक बिन्दु कम्या-कुमोरी और दूसरा आसाम समझा जाय, तो भीष्म-पर्व का भारत का त्रिकोण बन जाय ।

पुराणों में वर्णित नवग्रहद्वय और बृहत् संहिता में वाराह मिहिर के छोटे हुए देश के और नौ विभागा से भी प्रभावित होता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में देश का सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्यों को था । कालिदास ने मेघदूत में रामगिरि से अरुणापुरी तक अत्यन्त सुन्दर भौगोलिक वयार किया है ।

धीरे धीरे आर्यवस्त में दक्षिणापथ भी पौराणिक काल में शामिल हो-  
गया—देखिये—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।

नर्मदे सिन्धु कावेरी कलेहिमा सविध कुर ।'

यह श्लोक पुण्य-हिन्दू स्नान करती बार पढ़ा करत हैं । इस श्लोक में मानों समस्त दश तिपटा हुआ है । एक और महाप्रपञ्च श्लोक मिलता है, जिसमें देश को सात तुल्यपथों का देश माना गया है ।

'महन्द्रो मज्जय सद्य शुक्ति मानस पर्वत ।

विन्ध्यश्च पारिपत्रश्च सप्तमे पुल पथता ॥

एक श्लोक में सब भारतवर्ष के सीपों का जिक्र है —

'अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काण्ची अत्रन्तिका ।

पुरी, इरावती चैव, मपतीता मोचदायिका ॥'

यह भारत के सात प्रधान नगरों की सूची है । इन स्थानों को यात्रा करना हिन्दुओं का धर्म कहा गया है, और इनकी यात्रा करना मानो समस्त भारत का भ्रमण करना है ।

श्री शंकराचार्य के चारों ढड भारत के चारों कोनों पर प्रतिष्ठित हैं । यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि इससे कैसी सार्वदेशिक एकता उत्पन्न होती है । पुराणों के और श्लोक सुनिये—

सौराष्ट्रे सोमनाथरश्च श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।

अंकोर अमरेन्दरे ॥

वेदार दिनदृष्टे द्वाकिन्या भीम शकरम् ।

पारायस्याञ्च विश्वेश इयम्बक शौतमी सटे ॥

यैयनार्थ पिताभूमौ नागेश द्वारिका यने ।

मेतु यद्य च रामेश क्षुरमे शम्भ शिवाजये ॥

पुतानि क्याति खिन्नानि साय प्रात परोत्तर ।

मस वाम कृत पापं स्मरये न विनश्यति ॥

इन श्लोकों से सहसा मन में यह बात पैदा होती है, कि धार्मिक जगह जगह के मुद्दानों पर अँगरेजों ने मोर्चे बाँधकर जैसे क्रिछे बनाये हैं, वसा तरह प्राचीन विद्वाना ने इस तरह मन्दिर और तीर्थों की प्रतिष्ठा करके विस्तृत देश का महान् एकीकरण किया था। प्राचीन साहित्य में देश प्रेम और देश भक्ति के कैने उज्ज्वल भाव हैं—सुनिधे ।

स देव निर्मित देशं ब्रह्मवत् प्रचक्षते ।

गायन्ति देवा किञ्च गीत कानि ।

धामास्तु ते भारत भूमि भागे ।

स्वर्गापि स्वर्गपद भाग भूते ।

भवन्ति भूय पुण्या सुरयान् ।

जानीय नैतत् कृ वय पिबाने ।

स्वर्गं प्रदे वम्मयि देह दायम् ।

प्राप्स्याम् धन्यः पशु ते मनुष्या ।

ये भारते नेन्द्रिय विप्र हीना ।

जननी जन्मभूमिरथ स्वर्गापि गरीयसी ।

इन तीर्थ-यात्राओं से भौगोलिक ज्ञान बढ़ता था। तीर्थ दर्शन से भिन्न-भिन्न स्थानों को कदा कुछकता का ज्ञान प्राप्त होता था। सत्संग से ज्ञान-वृद्धि होती थी। केदारनाथ जाते हुए हिमालय के स्वर्गीय पुष्पों का आनन्द आता था। जगन्नाथजी पहुँचने पर समुद्र की तरंगों का स्वाद

मिलता था। प्रयाग में गंगा-यमुना का मगम इटिगोचर होता था। राजा भारत का एक भी सौम्य एवं स्थान ऐसा महा अच्छा, वहाँ मोक्ष तीर्थ या देव-मन्दिर न हो। भारत का नैसर्गिक सौम्य भोग विज्ञान के लिये नहीं, मन और धारणा को उत्पन्न करने के लिये है। यदि निघागरा का लक्ष प्रयाग नहीं भारत के अगतगत होता तो वहाँ फेरनेवत्र हवा जोरों की मगह धार्मिक यात्री दिखाई देते, पाकों की मगह धार्मिक और होटलों की मगह देव-मन्दिर दिखाई देते।

महाभारत में दा हुड तीर्थ सूची देश-भर के अनेक प्रसिद्ध नगरों की सूची है। पौराणिक काल में जो अभिप्राय तीर्थों से सिद्ध होता था—बौद्ध-काल में वही अभिप्राय चैत्य, स्तूप और विहारों से सिद्ध हुआ, पौराणिक प्राचीन मन्दिरों की तरह यह स्थान भी तत्कालीन शिष्य निर्माण-कला के लक्ष्य है। चीन, लका और यूनान तक के यात्री इन्हें देखने भारत वर्ष में आते थे।

इन सब बातों से पाठक समझ गये होंगे, कि प्राचीन समय में हिन्दू धर्म ने किम कीशल और दूरगतिता से विस्तृत भारत की एकदेशीयता को कायम रक्खा था, और वे एकदेशीयता के कितने कायल थे। यद्यपि देश का आकार धीरे धीरे बढ़ा है, क्योंकि अग्रेष्ठ और मनु के उद्देश्यों से केवल उत्तर भारत का भिन्न है। विष्णुचक्र से आने उम समय आर्य लोग नहीं पहुँचे थे। आधुनिक विज्ञान की खोज के आधार पर पाणिनि का जन्म यदि मसीह से ७०० वर्ष पूर्व माना जाय, तो भी हम कह सकते हैं कि उन्होंने भी दक्षिण में केवल अवन्ति, कौराज, कल्या और कलिंग ही देखे थे—या सुने थे। तत्कालीन पाली-साहित्य भी इसकी पुष्टि करता है। उसमें जो दक्षिणापथ का वर्णन है—उसमें वही पता लगता है, कि उस समय आर्य लोग दक्षिण में गोदावरी नदी ही तक पहुँचे थे। बौद्ध ग्रन्थों में देश के राजनीतिक विभाग और प्रसिद्ध स्थानों की जो लम्बी सूची है, उनसे भी वही सिद्ध होता है कि बौद्ध धर्म के कुछ बाद तक भी भारत और ... में शरीर न थे।

आवायन ने चोल, पाण्ड्य और माहिष्मती-आमर पश्चिमी राज्यों का वर्णन किया है। ऐतिहासिक विद्वानों का मत है, कि आवायन म-द-व-सीय राजाओं के समय में हुए हैं—इनका काज देना से ४०० वर्ष पूर्व अनुमान किया जाता है। यूनानियों के प्रसिद्ध विद्वानों एलेग्रीन्दर ने भारत के भौगोलिक विद्वानों से देश का नक्शा तैयार करवाया था, और देश का वर्णन लिखाया था। यह खेस—एलेग्रीन्दर की मृत्यु पर मित्युक्त के समय में पैट्रोक्लिस के हाथ पड़ा, और स्ट्राबों ने उसी के आधार पर देशों की माप की थी।

आर्य आणव्य ने अपने प्रथमतः व्यवहार में उत्तरापथ और दक्षिणा पथ का विवरण दिया है। उससे उस समय के भारत की आर्थिक दशा, कृषि और व्यापार का पता लगता है। अरोक के शिखा खेला में भी चोल, पाण्ड्य, केरल, आंग्र आदि राज्यों का उल्लेख है। राजकुमार महेन्द्र का जन्म जाना और बुद्ध यात्रियों का चीन और मिथ्र जाना भी इसका प्रमाण है। पातञ्जलि के महाभाष्य में वैदर्भी, काष्ठीपुर, केरल या माळावार का जिक्र है।

यह हुई भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से एकता की बात। अब राज-नैतिक दृष्टि से इस बात को देखिये। यह बात कहने की जरूरत नहीं है कि राजनैतिक एकता का किनना महत्व भौगोलिक एकदेशीयता पर पड़ता है। क्योंकि उदाहरण के लिये जंगरेजी साम्राज्य का भारत में विस्तार का परित्याग सम्मुख है। प्राचीन काज में भी ऐसे ही बड़े-बड़े साम्राज्य ब्राम्भ किये गये थे। ईसवी सन् से पूर्व अरोक का राज्य अक्रान्तिस्तान से मैपूर तक फैला हुआ था। चौथी शताब्दी में समुद्रगुप्त और उनसे प्रथम अश्वमेध प्रथम का राज्य विस्तार भी समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधे हुए था। इसके बाद सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन, ग्यारहवीं में पृथ्वीराज और १६ वीं में अकबर और औरंगजेब ऐसे ही सम्राट् हुए हैं। वैदिक साहित्य में भी सम्राट्, अचिराज, राजाचिराज आदि नाम देखने की मिलते हैं। शुक्र नीति में सामन्त, माण्डलिक, राजा, महाराजा, सम्राट्,

विराट और सार्वभौम आदि शब्द अपने-अपने पद के सूचक मिलते हैं। अथर्व वेद में राज्य, स्वराज्य, साम्राज्य, वैराज्य और आधिपत्य शब्द मिलते हैं, जिनसे पता लगता है कि अत्यन्त प्राचीन काल से भारत में विस्तृत साम्राज्य पद्धति रही है।

वैदिक यज्ञों के प्रकरण में बताया गया है कि राजसूय और वाजपेय यज्ञ राजनैतिक उद्देश्य से होते हैं। राजसूय से वाजपेय का महत्व अधिक था। यज्ञ की समाप्ति पर राजसूय से राजा का पद मिलता था, परन्तु वाजपेय से सम्राट् का पद मिलता था। सिंहासनारूढ़ होने पर 'सम्राट्पमस्तै'—'सम्राट्पमस्तै' की घोषणा होती थी, और फिर सम्राट् से निवेदन किया जाता था—

"इयते राडिति राज्य मेवास्मिन्ने तद दधान्यधैन मामा दयति यस्तासी यमन इति यत्तार मेधन मे तद यमन मामा प्रजानां करोति भुवोऽति धरण इति भुव से चैनमेतद् अहययस्मिन्ने करोति कृष्य स्वाशमाय त्वारप्ये पोपाय त्वेति साधवे त्वेत्वेवतदाह ।"

अर्थात्—यह आपका राज्य है। आप इसके स्वामी हैं। आप इद और स्थिर पृथ्वि हैं। कृषि, धन धान्य प्रजा का पालन और रक्षा करने के लिये यह आपको समर्पण किया जाता है।

ऐसे सम्राटों की सूची बनाई जा सकती है, जिनका जिक्र, वेद पुराण, और महाभारत में मिलता है। आचार्य आर्य ने अपने धर्म शास्त्र में भी चक्रवर्तियों की एक सूची दी है, जिन्होंने राजनैतिक दृष्टियों से अमस्त भारत को एक किया था, और चन्द्रगुप्त के विषय में छोड़ने लिखा—  
—'हिम वत् समुद्रांतर—चक्रवर्त्ति सेनम्'

( २५ )

## हिन्दू धर्म और समाज पर इस्लाम का प्रभाव

अब हम इस बात पर विचार करते हैं कि जिस समय भारत में इस्लाम का प्रवेश हो रहा था, उस समय हिन्दू समाज की क्या दशा थी ।

७ वीं शताब्दी वं राज्य में सम्राट् हर्षवर्धन की सत्ता समाप्त हुई, और शीघ्र ही मारु भारत की शक्ति छोटे छोटे टुकड़ों में बिखर गई । परिणाम से आग बद्दल राजपूता ने उत्तर पूर्व और मध्य भारत में छोटी छोटी छोटे रिवाजतें पैदा करवाँ । कुछ मिथित आखियों ने भी अपने को राजपूत कहना प्रारम्भ कर दिया । इस प्रकार मुसलमानों के आक्रमण से प्रथम पञ्जाब से दक्षिण और बंगाल से अरब सागर तक लगभग समस्त प्रदेशों पर राजपूतों का अधिकार था । ये ठमाम छोटी छोटी रिवाजतें आपस में जगदती भगवती रहती थीं । परस्पर कोई मेरु न था । न इनके ऊपर कोई एक बड़ी सत्ता थी । मगध, पाटलिपुत्र आदि के साम्राज्य चिह्न खण्डित हो गये थे । वैशाखी, कुशीनगर, कपिलवस्तु आदि प्रसिद्ध बौद्ध-नगर उजड़ गये थे । राजनीति और धार्मिक जीवन के साथ उस काज के हिन्दुओं का धार्मिक-जीवन भी विघ्न भिन्न हो गया था । यही कारण था कि बुद्ध की मृत्यु के लगभग दार्शनिकों के अन्तर बौद्ध धर्म ने उस जोर शीघ्र हिन्दू धर्म को निकल बाहर कर दिया, और यद्यपि बौद्धों और हिन्दुओं में बड़े मारी युद्ध और विरोध हुए पर दोनों धर्मों की दोनों धर्मों पर श्राव पड़ी थी । हिन्दू धर्म-कारण और बौद्ध धर्म में आदि बौद्धों का-या तब हिन्दुधर्म में घुसकर बैठ गया था । उत्तरी भारत में महायान सम्प्रदाय स्थापित हो चुका था, और बुद्ध के निवा अनेक बोधि स्थलों की, और विशेषकर अमिताय की पूजा होने लगी थी । बौद्ध





मध्य एशिया में स्थित रहे थे। इनके निराकार के प्रतिशुद्ध यात्री मुझे मान मौलाना मोहम्मद इब्ने इमहाज अ-रहाम अमरहस्तानी इत्यादि क ग्रन्थों से भी उपरिपुष्ट चार्ग का समर्थन होता है। मसुरा के जैन-राजा ने जब शीव प्रचारक विरगान के उपदेश से जैन-धर्म लौटकर शीव-धर्म ग्रहण किया—तब मसुरा की प्रजा के जैन-राज त्यागने न इनकार करने पर राजा ने सब को पत्थरी पर पड़ा दिया। बौद्धों और जैनों के साथ इस प्रकार के अत्याचार बहुत स्थानों पर किये गये। यह परिस्थिति जो अब हिन्दू-धर्म में अधिक विचारशील युद्ध पैदा हुए। शंकर, रामानुज, निम्बार्क, ब्रह्मभार्य आदि सन्तों ने दक्षिण-भारत में जन्म लिया, और हिन्दू धर्म के लोपोन्मूलन का सम्प्रदेश जनता को भुलाना प्रारम्भ कर दिया। यह बात प्रायः और पर ध्याय देने योग्य है, कि आरम्भ स ईसा का ८ वीं शताब्दी तक समस्त धार्मिक और सामाजिक सुधार उत्तर भारत में ही आरम्भ हुए। पर आठवीं शताब्दी के बाद यह स्थान दक्षिण का मिला, और यह बात १२ वीं शताब्दी तक प्रायः रही। रामानुज, शंकर, निम्बार्क आदि सभी दक्षिण वासी थे।

इन सभी विद्वानों ने प्राचीन भारतीय शास्त्रों की के आधार पर जनता की ज्ञान विरासत शान्त की, और उन्हें स्वभाव पर जाने की चेष्टा की। शत्रु को ही छोड़ दिया।—उन्होंने जनेक सम्प्रदायों को अपने मित्रतावाद के भीतर ले लिया, और सब की संगठित शक्ति को पौदों के विरुद्ध खड़ा कर दिया। इसकी भित्ति दार्शनिक थी—और इसी कारण इन्होंने पौदों पर विजय प्राप्त की। तब बौद्धों का दार्शनिक प्रगम रचने पड़े। उन्होंने सब पक्षों के लोगों को सम्मान की भाँति अधिकारी घोषित किया। उन्होंने साफ कहा—“सच्चा त वरुणों में त गुरु है—मझे ही यह चायदास हो।” वैष्णवों और शीव आचार्यों ने शत्रु का भारी विरोध किया, परन्तु शंकर की प्रखर प्रतिभा, लोच प्रवचन-शक्ति, और प्रकाश दार्शनिक ज्ञान ने सब के मुखे खुला दिये।

रामानुज के भक्ति-मार्ग की दक्षिण से उत्तर भारत में जाने का श्रेय

रामानन्द स्वामी को है। रामानन्द ने विष्णु का स्थान राम को दिया, और प्रत्येक जाति के लोगों को अपने सम्प्रदाय में सम्मिलित किया। तुलसीदास और कबीर उनके शिष्य थे। तुलसीदास ने राम का नाम घर-घर धमिट कर दिया।

भगवद्गुरु लिखता है— कि सौर और वैष्णव सम्प्रदायों के सिवा शनि, सूर्य, चन्द्र, प्रज्ञा, इन्द्र, अग्नि, स्कन्द, गणेश, यम, कुबेर-आदि की मूर्तियाँ भी भारत में पूजी जाती हैं। बौद्ध और जैनो ने भी सौर मय का प्रचार ठीककुल बन्द कर दिया है। परन्तु कापालिकों और शाक्तों ने इन चीजों को धर्म का प्रधान अङ्ग बना दिया है।

ऐसा समय था, जब भारत में इस्लाम का प्रवेश हुआ। यह हम बता चुके हैं कि अरब से योरप का सम्बन्ध इस्लाम के जन्म से पूर्व का है, और इस्लाम धर्म के जन्म के बाद भी वह सम्बन्ध ऐसा ही बना रहा— हम यह भी कह चुके हैं। उस समय बिना ही बल प्रयोग इस्लाम के साधुओं ने लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया था। पाठक अब यह भली भाँति समझ गये होंगे कि इतनी आसानी से मुसलमान साधुओं ने जो हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया, इसके दो प्रधान कारण थे—एक यह कि उस समय भारत की सामाजिक और धार्मिक स्थिति अत्यन्त क्षिप्त भिन्न और कमजोर थी; अथवा और दलित लोगों के लिये कोई स्थान ही न था। दूसरे—इस्लाम के साधुओं के रहन सहन और विचारों पर बौद्धों और हिन्दू दार्शनिकों का प्रभाव पड़ा था, और ये तत्काक्षीन हिन्दू-दलितों के लिये अति अनुकूल और प्रिय थे। यही कारण था कि समस्त भारत में इस्लाम का प्रचार यथेष्ट फैल गया था, और लाखों मनुष्य मुसलमान हो गये थे, जिनमें अधिक संख्या उन छोटी जातिवालों की थी—जो, वर्ण-न्यवस्था और जाति-पाँत के कारण अत्यन्त तिरस्कृत थे।

हम बता चुके हैं कि ब्राह्मणों के अधिकार और शक्तियाँ बेतोल थीं। भारत की सम्पत्ति मन्दिरों में लुकी पड़ी थी, और वे जिस भाँति धन्यों से श्रृणा करते थे, उसी भाँति धन-मुसलिमों से भी। इन धनवान् ब्राह्मणों

और उच्च जाति के हिन्दुओं पर तब इहर पड़ा — जब इस्लाम नगी तक चार लेकर यक्षपूर्वक भारत में घुसा । मन्दिर तोड़े गये, मूर्तियाँ भस्म की गईं, प्रज्ञाने लुट लिये गये, और छाखों झुझीव भाषण दास बनाकर राजाओं में छे जाकर बेच दिये गये । इस प्रकार १३ वीं शताब्दी के अन्त से १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक भारत में लक्षवार का राज्य रहा ।

परन्तु जबोही इस्लाम के यात्रागण स्थापित होगये, भादुराहों ने दिल्ली और आगरे में राजधानियाँ बनाईं । तब समाज में एक भीतरी क्रान्ति प्रारम्भ हुई । भारत के शिक्षण, वाणिज्य, कला-कौशल, चित्रकला विज्ञान, वस्तु शास्त्र आदि पर इस्लाम के इन अनुपायियों की गहरी द्वाप पड़ी । -

गिण्ट पर ८ वीं शताब्दी में मुहम्मद विन जाविम ने आक्रमण किया । इसके ३०० वर्ष बाद महमूद गज़ावी के आक्रमण हुए । इन हमलों का कोई स्थायी प्रभाव भारत पर न था । १०० वर्ष बाद मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किया, और उसके आक्रमणों का प्रभाव पंजाब में स्थाई होने लगा । उस समय तक भारत की राजनैतिक अव्यवस्था इस दर्जे तक पहुँची हुई थी । अन्त में १३ वीं शताब्दी में उत्तर भारत पर मुसलमानों का राज्य स्थिर होगया । इसके सौ वर्ष के अन्दर मैसूर तक अधिकांश भारत पर मुसलमानों का अधिकार फैल गया ।

इससे, हममें कोई सन्देह नहीं कि भारत की जातीयता को भारी घटा जगा । पर मुसलमान भारत में बस गये, और पहले जागों के परिधम से बहें हम काम में अधिक पहिचाइ न उठाना पड़ी । ये एक ही पीढ़ी में भारतीय बन गये, और उनकी संस्कृति का प्रवेश भारतीय संस्कृति पर भी होने लगा ।

सच्चे सग्राट् की भाँति मुगलों ने भारत में राज्य किया । मुगलों की राज्य थी बहुत यदी-चड़ी रही । यदि यह कहा जाय, कि उस समय पृथ्वी भर में कोई सग्राट् मुगलों से अधिक प्रतापी न था, तो अत्युक्ति नहीं ।

ईसा की आठवीं शताब्दी तक भारत की स्थापक-कला पर बौद्धों

की संस्कृति थी। ८ वीं से १३ वीं शताब्दी तक इस कला में हिंदुओं के आदर्शों की प्रधानता रही। फिर भी बौद्ध मत का प्रभाव इस पर स्पष्ट चीख पड़ता रहा। यह बात निर्विवाद है कि प्रत्येक देश की स्थापत्य कला पर उस देश की भौगोलिक स्थिति का प्रभाव पड़ता रहता है। भारत अनेक जगहों, प्रचण्ड जलवायु, बड़ी बड़ा गर्दियाँ, पहाड़ों और घनी जंगल का देश है। इसी कारण सदा से भारतीय स्थापत्य कला की स्पृहता और विस्तार पर अधिक जोर डाला जाता रहा है। भारतीय जगहों में विविध मनस्वति देखने को मिलती है। इसीलिए प्राचीन शिल्प कला में कला गुणम के विविध कटाव आपको देखने को मिलेंगे।

प्राचीन हिन्दू मन्दिरों में समानता लिए हुए कतरे, कलश, आकाश तक उठे चढ़ गए हैं, और एक इन्च स्थान भी मूर्तियों और चित्रों से जाली नहीं।

अतः, भारत की प्राकृतिक परिस्थिति के विरुद्ध ही विपरीत देश है। बड़ी जंगल, रेगिस्तान और उष्ण मैदानों की भरमार है। तेज गर्मा, इने गिने शीत सामान, और रेत के भयानक पर्वत, इसी का प्रभाव गुम्बज मानों की प्राग्भित्त स्थापत्य कला पर पड़ा है। साक सादी दीवारें, लंबी सीढ़ियाँ, बड़े बड़े गुम्बज, बड़े बड़े चौक उसी का प्रभाव है। उनका एकैतर-पाद और मूर्ति विरोध भी उनके इस निर्माण में सहायक हुआ है।

परन्तु विश्व पाठ्य देखेंगे, कि भारत में गुप्तकाल के बसते ही दोर्गा आदर्श मिल गये, और इस कला में एक तीसरी महीनता, जो बहुत सुन्दर थी—पैदा होगई। आगरे का ताज इसी मिश्रित सौन्दर्य का फल है, जिस पर भारत को अभिमान है, और सत्तार भर के यात्री जिसे देखकर आश्चर्य-चकित होते हैं। खोज करने से पता चलता है कि १३ वीं शताब्दी के प्रथम की भारतीय शिल्प संस्कृति धृष्ट-धृष्ट थी। परन्तु इसके बाद दोनों में ऐसा मेल होगया कि वह एक महीन ही वस्तु बन गई, और मिथ, शाम, ईरान, तुर्किस्तान आदि की शिल्प संस्कृति उनके मुजाबले में कुछ भी न रह गई। सोलहवीं सदी के बने हुए मथुरा और पृथ्वीन के कुछ मन्दिर,



मुगल साम्राज्य से प्रथम सम्राट् अशोक और समुद्रगुप्त के राज्य विस्तार भी असाधारण रहे। पर मुगल-साम्राज्य में इससे यह विशेषता रही, कि देश में एकछत्रता उत्पन्न होगई। प्रो० जदुनाथ सरकार लिखते हैं—

“ एकद्वार के सिंहासन पर बैठने के समय से मुहम्मदशाह की मृत्यु तक ( १२५६—१७४८ ) मुगल-शासन के २०० वर्षों में समस्त उत्तरीय भारत और अधिकांश दक्षिण का भी एकसरकारी भाषा, एक शासन-पद्धति, एक-समान सिक्के, और हिन्दू पुरोहितों और प्रामीणों को छोड़कर खन-साधारण को एक भाषा प्रदान की। बिना प्रान्तों पर मुगल दरबार का दूर का प्रभाव था—अर्थात् को मुगल दरबार से नियुक्त सूबेदार के आधीन था—चाहे वह हिन्दू-राज्य हो या मुस्लिम,—कम अधिक मुगलों की शासन प्रणाली, सरकारी परिभाषाओं, दरबारी शिष्टाचार, और उनके सिक्कों का अनुकरण करते थे। ”

एक विद्वान् ने लिखा है—

“मुगल-साम्राज्य के अन्तर्गत २० सूबे थे, जिन पर एक ही प्रणाली से शासन किया जाता था, और विविध सरकारी कोहनों के नाम तथा वषा धियाँ सब एक-समान थीं। सामान्य सरकारी मिसकों, प्रारम्भों, खनदों, आज्ञियों, राहदारी के परवानों, पत्रों और रसीदों में एक प्रकारसी भाषा का उपयोग किया जाता था। साम्राज्य भर में एक-समान वजन, एक-से मूल्य, एक-से नाम, और एक-सी धातु के सिक्के प्रचलित थे। ”

मुगल बादशाहों की प्रारम्भिक भाषा ईराणी थी। पर उन्होंने शीघ्र ही उर्दू ज्ञान को जन्म दिया, और उसे ज्ञापाने हिन्दवी कहा। यह भाषा प्रथम उत्पन्न हुई, और मुसलमानों की मातृभाषा बन गई। सिर्फ सरकारी कागज़ों में फ़ारसी का प्रयोग होता था। १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उर्दू-साहित्य की दृष्टि से भी एक जबरदस्त भाषा बन गई। इस भाषा के अनेक प्रतिद कवि हुए, जिनमें एक अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह भी थे।

उर्दू भाषा की उत्पत्ति भी मुगलों के काल में हुई। यदि आप इज-

वाहं से मिठाहूँ लें, तो गुलाबनामून, बालूशाही हलुआ, ब्रह्मपन्द, धान-प्रसाद, धरणी, आदि अधिकांश भोग उट्टूँ दीया चढ़ेंगे। वास्तव में इनका आविष्कार भा मुगल-काल में हुआ था। मुगल राज्य में सब छोड़ नया सरदार चुना जाता था, सब शाहशाह का यज़ीर बसे ये हिदायतें देता था—

‘दयाल रखना कि कमजोरों पर बलवान आयाचार न करने पायें। जालिमों को दबाए रखना।’

उट्टूँ का अर्थ जरकर है। बादशाही सेनाओं में कहीं धर्बा, मुर्क, ईरानी और हिन्दोस्तानी सिपानियों की एक अधीन लिचड़ी पक रही थी—तब उनके मुख से जो-जो अरबी भाषाएँ निकलती थीं वे सब भी आपस में मिल मिखाकर एक लिचड़ी भाषा होगई। इस भाषा का नाम उट्टूँ पड़ा। क्योंकि यह उट्टूँ ( जरकर ) की भाषा थी। राजा टोडरमल ने इसे फारसी लिपि में लिखि-बद्ध किया क्योंकि यह लिपि मुसलमान-बादशाह को प्रिय थी और शाही भाषा की लिपि थी, साथ ही लट्ठी और कम स्थान में लिखी जाती थी, और सब राज कर्मचारी, जो मुसलमान थे—उससे परिचित थे।

परन्तु यह फारसी लिपि हिन्दोस्तानी भाषा को ठीक ठीक व्यक्त करने में असमर्थ थी। क्योंकि उसकी उसमें ४ ध्वनियों का अभाव था, जैसे—भ, ष, घ, ञ, झ, ख, द, ध, ण, त, द—आदि। इन ध्वनियों के लिए शब्द अरबी में न थे। पर जब ईरान में अरबी लिपि आई और ईरानियों ने उसे अपनी लिपि बनाया, तब उन्होंने ब्रिन्तु ब्रकाकर चार नये संकेतों का काम चला दिया। उन्होंने अरबी के  $\text{ا}$   $\text{آ}$   $\text{إ}$   $\text{ئ}$  अक्षरों में दो-दो बिन्दियाँ और  $\text{و}$  की टेढ़ी रेखा कर, एक और टेढ़ी रेखा बढ़ाकर  $\text{ا}$   $\text{آ}$   $\text{إ}$   $\text{ئ}$ —चार अक्षरों की सृष्टि करली है।  $\text{ا}$   $\text{آ}$  तक ऐसे कई अक्षर हैं गिनके भेद का शायद मुक़तों की म्यूनाधिक संख्या से होता है। अरबी वक्फमादा की रचना करती बार अरबों ने इस नियम पर भी ध्यान रक्खा, कि किसी एक ध्वनि का उच्चारण-स्थान क्षोण निकालने पर, उस ध्वनि के निकटवर्ती, स्थानों से उच्चारित न होनेवाली ध्वनियों के लिये नये-नये स्वतन्त्र चिह्नों की सृष्टि न

करके उसी ध्वनि के उच्चारण बिन्दु में धोड़ा फेर फार कर दिया जाय। यह ठीक भी था, क्योंकि उच्चारण-रथानों की निकटता के अनुसार उच्चारण चिह्नों के स्वरूप में भा विरोध भिन्नता न रहना उचित है।

सब यह लिपि इरान में भारतवर्ष में आठ, सब वहाँवालों ने देखा कि ईरानिया के संशोधन करने पर भी इस लिपि में १५ ध्वनियों की कमी है। उन्होंने १४ ध्वनियाँ और जोड़ दीं। परन्तु जैसे ईरानियों ने एक एक मुक्ते की गणह दो दो, चार चार जुकने लगाकर, काम चलाया—वैसा न करके ८ से काम लिया। शेष ११ ध्वनियों को उन्होंने द्विसात्रिक बना लिया। अर्थात् इन ग्यारह चिह्नों में आ प्रथम से मँजूत ये, एक और जोड़ दिया। पर पीछे-से ये ध्वनियाँ एक-सात्रिक ही मानी गईं,—जैसा कि उर्दू-कविता से स्पष्ट होता है।

फिर भी जैसा चाहिये था, वैसा काम न चला। जिन्हें न, क द आदि के बोलने का अभ्यास था, वे ही इसका ठीक-ठीक उच्चारण कर सके थे। परन्तु चरम और ईरानी लोगों ने, जिन्हें इन अक्षरों का अभ्यास न था, उसका धपने ढंग का एक निष्कर्ष ही उच्चारण शुरू कर दिया। इस पारिभाषिक ध्वनि का उन्होंने एक नियम भी बना लिया। उसी के अनुसार बनाये गये अरबी शब्दों के नाम अरबों ने चरम, और ईरानीयों ने मुकर्रस रख दिया। इस तरह अरबों ने ईरानियों और हिन्दुस्तानियों की और ईरानियों ने हिन्दुस्तानियों की विरोध ध्वनियों को धपन धपने ढंग पर उच्चारण करना शुरू कर दिया।

इस संघर्ष का प्रभाव संस्कृत और हिन्दी-लिपि पर भी पड़ा। कुछ अरबी ध्वनियों का हिन्दी लिपि में अभाव था। पर हिन्दी ने ईरानियों की तरह बिम्बा लगाकर ग, ग, ज, क, छ, य बना लिये, और मजे में काम चलाया। फिर भी प्राचीन लिपि ही उर्दू की लिपि रही। किन्तु उसमें जो हिन्दुस्तानी ध्वनियों का अभाव था—अब तक है। झू झू लू, लू, च, प्र ज ये अक्षर लिखने में कभी कठिनाई पड़ती है। अलबेस्की ने एक लम्हा लिखा है—“हमने हिन्दुओं के किसी शब्द का शुद्ध उच्चारण निर्धारित



कारे के लिये उसे अनेक बार बड़ी मारपीटों से जिला—‘राम्पु जब उनके सम्मुख जा उन्हें पता, तो वे इसे बड़ी मुश्किल से पहचान सके।’

पाठक देखें, कि १८ व्यक्तियों का सम्पादन जिनमें है उन विधि में कैल संस्कृत-कैली भाषा के शब्द जिनके का मन्ने थे । जबकि मात्रकाल भी, जब धरती सिद्ध को भारत में जाये ८०० वर्ष हो गये हैं—‘चरित्र को ‘करतारि’ और ‘चम को ‘चमेम’ तथा मुभुत का—‘सुदभुत लिखा जाता है । साक्षात्कृत केस भी बहुधा भ्रान्तिपूर्ण मिले जाते हैं । एक चिट्ठी में लिखा गया— ‘मदनी चममेर गये, वहाँ बड़ी को भेज दो।’ पढ़ा गया—‘सदनी भाव मा गये, वहाँ बहू को भेज देना।’ लिखा गया—‘दुरी मारी यो।’ पढ़ा गया ‘दुर्गा मारी थी।’ लिखा गया—‘साहब जाते हैं, दो किरती तैयार रखना।’ पढ़ा गया—‘साहब भात है, तो करवी (बेरवा) तैयार रखना।’—इत्यादि अनिष्ट बाने हैं, और दस्तावेजों आदि की बेईमानी तो सब जानते ही हैं ।

मुग़लों की के इमामों में तुलना और मूर ने, मूल्य और गंग ने विहारी और मतिराम ने चमर हिन्दू का रचनाएँ की थीं । ईश्वर खेलकों ने इसी काज में बंग-साहित्य में चमर ग्रन्थ लिखे । बंगाल के प्रसिद्ध लेखक दिनेशचन्द्र सेन लिखते हैं—

‘बंगला भाषा का साहित्य के बहुतक पहुँचान में कई प्रभावों ने काम किया है । इनमें निरसम्भेद सब से अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव मुसलमानों का बंगाल विजय है । यदि हिन्दू राजा रक्षाधीन बने रहते, तो बंगला भाषा शायदपारों तक शायद ही पहुँचती ।’ बंगाल के मन्त्रों ने रामायण व महाभारत का संस्कृत से बंगला में अनुवाद कराया था । बंगाल के मन्त्र मलीरशाह ने १४ वीं शताब्दी के मारम्भ में बंगला में महाभारत का अनुवाद कराया था । मैथिल कवि विद्यापति ने राधासुदीन और ममीरशाह की इस काम के लिये बहुत प्रशंसा की है । इसी बादशाह ने मलभर बम्बू को बहुत सा रुपया देकर और गुजराजहाँ का जिलाव देकर भागवत का बंगला में अनुवाद करवाया था । राजा कल के उत्तराधिकारी मुसलमान

होगये थे—उन्होंने कृतिवास को पूरा सहायता देकर रामायण का अनुवाद बेंगला में कराया था। हुसेनशाह के सेनापति परगखर्जा ने कवीन्द्र परमेस्वर से महाभारत का एक और अनुवाद कराया था। एक सुसज्जमान नवाब ने मलिक मुहम्मद जायसी की पद्यावली का बेंगला में अनुवाद कराया था। दिनेशचन्द्र खिखरे हैं—“मुसलमान बादशाहों और नवाबों ने बहुत से सस्कृत और फ़ार्सी के ग्रन्थों का अपनी ओर से बेंगला में अनुवाद कराया।  
 × × × इसका अनुवाद हिन्दू-नाज़ाबों ने किया, और अपने दरबार में बेंगाली कवियों की नियुक्ति की।”

दक्षिण में भी यहमनी बादशाहों ने ऐसा ही किया। आदिलशाही ख़तर्तों में मराठी भाषा का खूब उपयोग होता था, तथा मराठों को भरपूर बड़े-बड़े पद दिये जाते थे। हुसैनशाह स्वयं मराठी का उत्कृष्ट कवि और पण्डित था। फ़क़त मराठी भाषा में फ़ार्सी और हिन्दी शब्दों की काफ़ी भरमार होगई। इसी प्रकार पञ्जाबी और सिन्धी भाषाओं में भी जीवन पड़ा। यदि देखा जाय, तो अनेक सुसज्जमान हिन्दी के उच्च कोटि के कवि और अनेक हिन्दू उर्दू के उच्च कोटि के कवि इसी मिश्रण से हुए, और हिन्दी, उर्दू, मराठी, पञ्जाबी, गुजराती, बेंगला आदि देशी भाषाओं में फ़ार्सी, तुर्की शब्दों और मुहावरों का भरमार हो इसका कारण है।

अकबर ने क़ैतों की सहायता से अनेक महत्वपूर्ण सस्कृत-ग्रन्थों का फ़ार्सी में अनुवाद कराया था, और द्वारा ने अनेक उपनिषद् और हिन्दू धर्म ग्रन्थों को फ़ार्सी में अनुवादित कराया।

वैद्यक, ज्योतिष और गणित में भी मुग़ल-नाज़ब में खूब ही वृद्धि की। १८वीं शताब्दी में ज़य्यातुल्ल महाराज ने हिन्दू पंचांगों का सुधार करने के लिये अय्यपुर, मधुरा, दिल्ली, और फाखरी में ज्योतिष-यन्त्रालय बनवाये, और भरखी के जालमजस्ती का सस्कृत में अनुवाद कराया। कर्मियागिरी के बहुत-से नुस्खे, तेज़ाब, रसायन, ज़ाज़ बनाया, ज़ख्म करणा, चीनी मिट्टी का उपयोग सुसज्जमानों से भारत में प्रचलित हुए।

अभिप्राय यह कि शताब्दियों तक भारत में अराजकता रहने के बाद

मुसलमानों के काज में देश में शिवर बालिग्य, कला कौशल बढ़े, और यह बात यही तक न गयी, प्रयुक्त हिन्दुओं के कट्टर धर्म में भी भागी परिवर्तन हुए।

सम्राट अकबर ने बड़े विवेक और सहनशीलता से भारतीय धर्मों और सामाजिक नियमों का अध्ययन किया, और उन्हें हृदयगम किया। उसने सन्धीयता छोड़ एक नवीन धर्म को जन्म दिया। अंगरेज प्रभुकार वेक्स लिखना है—

‘वह स्पष्ट एक ऐसा मनुष्य था, जो अपने साम्राज्य के अन्तर्गत परम्परा-विशेषी धार्मिकों और अर्थियों को एक प्रथम और मयुक्त राष्ट्र बना देने के लिये पैदा हुआ था।’

उसने दानेइजाही, अथवा मावन्निक धर्म की गोबरखी। उसने सहृदयों वप की पुरानी प्रथा को, निम्न के अनुसार प्रत्येक विवेकता युद्ध क्रीडियों को सुखान बना छेता था, चन्द कर दिया, अनिश्चित वैधर्म्य, बाल विवाह, सता प्रथा को रोपने की भागी चेष्टा की। पर उसने इस काम को जिसे सज्जन न उठाई। वह वे अ-दाज्ञ धर्म दान करता और सीधे-धुआई करता था। उसने हिन्दू मुस्लिम विवाहों की मयाश खाली। अकबर के बाद जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी इन मार्ग पर पद चढ़ाया, और शाहजहाँ का काज मुसलमानों का उद्वेगकाल था।

इन सम्राटों के जीवन काल में बहुत-से ऐसे साधु मत्त हुए—जिन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता को धार्मिक रूप दिया। इनमें एक कबीर थे। सुना जाता है, ये किसी विधवा माहाली के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, और एक मुमल मान जुलाहे ने उन्हें पाला था। ये रामानन्द स्वामी के शिष्य थे। इन्होंने बनारस में अपना सतसंग शुरू किया, और हजारों शिष्य पैदा किये, जो, बीच-कैच, हिन्दू मुसलमान दोनों थे। ये सन्म भर जुलाहेई का काम करते रह। कबीर ज्ञान पाँत के विरोधी, वेष्टों शस्त्रों और पुरान सभी को गौण माननेवाले—सूफी साधु के समान भक्ति के सत थे। उन्होंने अपनी रमैनी (साथी) के शरिये हिन्दू मुसलमान दोनों को समान धर्मोपदेश दिया, और निर्भय ही दोनों मतों की रुढ़ियों का खण्डन किया,—तथा प्राणि-

सात्र में प्रेम, भक्ति, और एक ईश्वर की भक्ति का उपदेश दिया। कबीर का मत इस पद्य में सुनिपे—

हिन्दु कहैं तो मैं नहीं, मुसलमान भी नहीं ।

पाँच तथ्य का पूतला शीघ्र खेले माँहि ॥

कबीर व विचारों की छाप अकबर पर काफ़ी गड़ी थी, और अकबर के दीने इत्यादी मत खलाने की भित्ति कबीर के ही सिद्धांत हैं। कबीर के भी विचार उनके शिष्यों द्वारा उत्तर से दक्षिण तक फैल गये।

यहाँ स्मरण रखने योग्य बात यह है कि १५ वीं शताब्दी में समस्त पंजाब के नगर और ग्राम मुसलमान सूक्तियों और फकीरों से भरे हुए थे। पानीपत, सरहिन्द, पाकपटन, मुजतान और कण्डू में प्रसिद्ध सूफ़ी शेरों की खूब भरमार थी। १५ वीं शताब्दी के मध्य में नानक का जन्म हुआ, और इन्होंने फ़ारसी तथा संस्कृत दोनों भाषाओं में शिक्षा दी गई। ३० वर्ष की आयु में वे साधु हुए, और अपने मुसलमान शिष्य मदीन को लेकर भारत, छाद्दा, ईरान, अरब आदि देशों में भ्रमण करने गये। उन्होंने पानीपत के शेर शरफ़ मुजतान के भीर, बाबा फ़रीद के शिष्य शेर इत्यादीयों के साथ बहुत काल तक विचार विनिमय किया। अन्त में उन्होंने एक नये धर्म को जन्म दिया, जो व्यासकृत सिलधर्म बढ़ाता है। यह धर्म एकता और प्रेम का धर्म था, जो हिन्दू मुसलमान दोनों के लिये सुखा था। नानक का कथन है—

बदे एक सुदाय दे, हिन्दु मुसलमान ।

दावा राम रसूल कर, सबदे बेईमान ॥

× × ×

ना हम हिन्दु ना मुसलमान ।

दोनों बीच बने शीसाप ॥

एकै एकी, एक सुमान ॥

गुरुजी कहिया सुन अमुररहमान ॥

दावा भूखो तौ इक पिदाय ॥

मानक ने गंगा-स्नान, पूजा, जप, सप, पाठ सभी व्यर्थ बताए हैं, वेद पुराणों को निरर्थक कहा है, अवतार और प्रतिमा खण्डन किया है, शांति-भेद का विरोध किया।

अपने एक पद में ये कहते हैं—

“दया की मस्जिद बना, सच्चाई की मुद्रा बना, इन्साफ़ को कुम्भोत् बना, विनय को खतना खमक, सुखनता का रोगा रख, सब वृ सच्चा मुसलमान होगा।”

मुगल साम्राज्य की अन्तिम परिस्थिति में मानक के सम्प्रदाय बहुत उलट पलट गये।

इनके अतिरिक्त धन्ना ताट, पीया, सेना भाई और रैदास वमार आदि सन्तों ने भी बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। इन सब के सिद्धान्त भी इसी भाँति हैं ये।

दादू कबीर के शिष्य थे। इन्होंने भी अपने धर्म का प्रचार किया। वह कहता है—

“दादू का शरीर उनकी मस्जिद है। वमार के पद उसके मन के आदर हैं। वही पर उनका मुखला हुआ है। अलफ़ ईश्वर को सामने बाँधी करके वहाँ पर बह सिनदा करता है, और सलाम करता है।”

मल्लूकदास भी १६ वीं शताब्दी के अन्त में हुए, और १०८ वर्ष की आयु में मरे। नेपाल और काबुल तक में उन्होंने मठ स्थापित किये। इनका मत भी उपयुक्त सन्तों के समान था—जो, हिन्दू मुस्लिम दोनों की कहरता का विरोधी था। इनका कहना है—

माजा कहीं औ कहीं तसवीह,

अपचेत इन्हिं कर, टेक न टेकें।

काकिर कौन मखेष्ट कहावत,

सम्भ्या निमात्र समय कर देखै।

हे धमराज कहीं धमरीज है,

काजी है आप हितान के खेसै॥

पाप और पुण्य जमाकर बुझता,  
 देव हिंसाव कहीं धरि कैंकै ।  
 दास मलूक कहा भरभौ तुम,  
 रामरहीम कहावत पकै ॥

सत्तनामी सम्प्रदायों के गुरु बीरभानु दादू के समकालीन थे, और उनका मत भी वैसा ही है ।

इस सभी सम्प्रदायों और साधुओं का जन्म हिन्दू-मुस्लिम एकता के सघर्ष से हुआ, इसमें सन्देह भी सन्देह नहीं । ऊपर जिन सन्तों का जिक्र हम कर चुके हैं—उनके सिवा बाबाजाल, प्राणनाथ, धरनीदास, जग-धीवनदास, जुझासाहेब, केशव, चरनदास, सद्गो, दयाबाई शरीरदास, शिवनारायण रामचरण आदि के उपदेश भी इसी भाँति के हैं ।

ह्यामी नारायण क मजहब को मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने स्वीकार किया था । बादशाह का वस्तुतः परवाना अभी तक इस सम्प्रदाय के मुख्य मठ (बलिया ज़िले) में मौजूद है । अठारहवीं सदी के अन्त में सहजानन्द, हुज्जनदास, भीखा, पल्लवदास आदि सन्तों के नाम और उनके सिद्धान्त बैसे ही हैं ।

बङ्गाल, महाराष्ट्र में भी इस धार्मिक क्रान्ति का प्रभाव पाया जाता है । बारहवीं शताब्दी में ही बंगाल में मुसलमानों की दरगाहों पर मिरा चढ़ाना, कुरान पढ़ना, और मुसलमानों के त्यौहार मनाना—इसी प्रकार मुसलमानों के हिन्दू त्यौहारों का मनाना भी शुरू होगया था । और एक नए देवता—सत्यवीर—की पूजा भी शुरू होगई थी, जिसकी स्थापना गौड़ सम्राट् हुसनशाह ने की थी । १२ वीं शताब्दी के अन्त में चैतन्य-प्रभु का जन्म हुआ । उस समय की बंगाल की सामाजिक दशा का वर्णन दिनेशचन्द्र सेन ने इस भाँति किया है —

‘माह्वार्यों का प्रभुत्व अति कटकर होगया था । कुलीनता के दह होने के साथ ही अधिकाधिक बढ़ा होता गया । माह्वार्य लोग कहने के लिये अपने-अपने का प्रतिपादन करते थे । किन्तु वाति बन्धन

के कारण मनुष्य में अन्तर बढ़ता जा रहा था। नीची जातियों के लोग ऊँची जाति के लोगों के स्वेच्छाचार के नीचे झाड़ें भर रहे थे। इन ऊँची जाति के लोगों ने नीची जातिवालों के लिये विद्या के द्वार भन्द कर रखे थे। उन्हें दबब लावन में प्रवेश करने की मनाही थी, और नये पौराणिक-धर्म पर आक्षेपों का देका हो गया था—‘मामो वह काई बाज़ारू चीज़ थी।’

चेतन्य ने इस पर गम्भीर विचार किया। उन्होंने मुसलमान-साधुओं से एकैरवरवाद के तत्त्व समझे और गुरु भक्ति और सेवा के उपदेश दिये। सय फन कायदों को दसने त्याग्य बताया और हिन्दू-मुसलमान, नीच-ऊँच सभी को दीक्षा दी।

चेतन्य के शिष्यों में कासबाबा-नामक एक मुसलमान-साधु ने फात मन्न सन्प्रदाय प्रकाशित। इनके २२ शिष्य ‘बाहल फ़कीर’ के नाम से प्रसिद्ध थे, जिनका मुखिया रामादुल्लाह था। इस मत के लोग एक ईश्वर को मानते थे, गुरु को ईश्वर का अवतार समझते थे, दिन में २ बार गुरु-मन्त्र का जप करते थे। मद्य मांस से परहेज करते थे, जात धर्म, ऊँच-नीच, हिन्दू-मुसलमान हमारे का बर्गमें भेद न था। सन्प्रदाय के मद्य लोग साथ मिलकर भोजन करते थे।

औरों के अन्तिम दिनों में, सब बीरों के ऊपर शीको के आधाधार होते थे—तब बीरों को मुसलमानों से बहुत सहायता मिली थी। तत्कालीन मंगला-बौद्ध ग्रन्थों में आक्षेपों के प्रति तिरस्कार और मुसलमानों के प्रति सम्मान के भाव भरे पड़े हैं।

महाराष्ट्र की तत्कालीन समाज पद्धति पर प्रसिद्ध महाराष्ट्र विद्वान् महादेव गोविन्द रानाडे इस भाँति प्रशंसा करते हैं।—

“इस्लाम का कगार एकैरवरवाद, कबीर, नानक आदि साधुओं के चित्तों में घात कर गया। हिन्दू त्रिमूर्ति दत्तात्रेय के उपासक उनकी मूर्ति को मुसलमान फ़कीर के-स रूप में पहनाते थे। यही प्रभाव महाराष्ट्र की जनता के चित्तों पर और भी अधिक तीव्र से काम कर रहा था। वहाँ पर आक्षेप और अपमान दोनों के प्रचारक लोगों को उपदेश दे रहे थे कि—राम और

रहीस को एक समझो, धर्मकाण्ड और जाति-भेद के बन्धनों को तोड़ दो, ईश्वर में विरघास और मनुष्य माध के साथ प्रेम न मिलकर सब अपना एक धर्म बनाओ ।”

इस प्रकार के उपदेश देनेवाला महात्मा में पहला साधु नामदेव हुआ । नामदेव का गुरु खेचर था । उसका कहना था—“पत्थर का देवता कभी नहीं बोलता, तो वह हमारे पेश्वे दु खों को बस दूर कर सकता है ? पत्थर की मूर्ति को लोग ईश्वर समझ बैठते हैं । किन्तु सच्चा ईश्वर बिलकुल दूरवा हो है । यदि पत्थर का देवता हमारी इच्छा पूर्ति कर सकता है—तो गिरने पर वह टूटता क्या ? जो लोग पत्थर के देवता को पूजा करते हैं, वे अपनी सुखता से सब कुछ को बैठते हैं ।”

नामदेव के शिष्यों में सुखलमान, अहीर, कुरमी छी-पुकर, ब्राह्मण, मराठा, दरजा, कुम्हार, भंगी, चमार, देह और बेरघाएँ तक थीं ।

बहिराम भट्ट, दो बड़े हिन्दू स, सुखलमान और सुखलमान से हिन्दू हुआ, उसने कहा—“न मैं हिन्दू हूँ, और न मुसलमान ।”

शेखर मुहम्मद के अनुयायी मक्का और मरवापुर के मन्दिर दोनों की यात्रा करते, शीर्ष और एकादशी व्रत रखते थे । सन्त तुकाराम भी देव हो साधु थे । उन सन्तों के नवीन विचारों से जो चौद और सुखलमानों के सम्मिश्रण से पैदा हुए थे—मराठी साहित्य उत्पन्न हुआ । जाति बन्धन ढीला हुआ, ब्रिचों का पद उँचा हुआ । उदारता और दयालुता फैली । इस्लाम के साथ हिन्दू-मत का मेल हुआ । कमकाण्ड, तोय आदि का महत्त्व घटा, और सब भाँति से राष्ट्रीय एकता का वृद्धि हुई ।

परन्तु दारा के पतन और और औरगजेब के उदय के साथ ही मुगल साम्राज्य का सौभाग्य नष्ट हुआ । दारा अपने पिता का सच्चा प्रतिनिधि था । उसके विचार बहुत उत्तम थे । औरगजेब ने धार्मिक संकीर्णता को अपनी राजनीति बनाया, जिससे बि कर बहुत से राजपूत, मराठे, सिख-राने उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए । समग्र देश की विरोधी शक्तियों में उठ खड़ा हुआ, और हिन्दू-मुस्लिम-पेश्वे की सम्भावना दृष्टा होगई । औरगजेब—



कठोर, सयमी और परिश्रमी व्यक्ति था। इसलिये उसके जीते-जी विद्रोह को शांत न भड़कने पाई। उसका यह दमन करता रहा। इस बादशाह ने राज्य भी बहुत दिन तक किया, और एकता के विध्वंस होजाने तथा संकीर्णता के प्रबल होजाने के प्राप्ती अवसर मिले। उसके मरते ही साम्राज्य के टुकड़े टुकड़े होगये। देश के सभी उद्योग धंधे, समृद्धि, व्यापार, विश्व मिश्र होने लगे।

औरंगजेब के उत्तराधिकारिया ने फिर अपने पूर्वजों की रीति का पालन करने की चेष्टा की। शाहआलम ने पूना के पेशवा को अपने राज्य का बर्फीक बनाया, तथा माघोको सिंधिया को देहली और आगरे का सूबेदार बनाया। शाहआलम के पुत्र अकबरशाह ने राजा राममोहन राय को राजा का मित्राव देकर तथा अपना प्लक्षी बनाकर इंग्लैण्ड भेजा। अन्तिम सम्राट् बहादुरशाह तो हिन्दू मुसलमानों को एक दृष्टि से देखते ही थे। बंगाल में पलासी-युद्ध के बाद तक बड़े बड़े प्रांतों की सीबानी न गाल के हिन्दू जमींदारों के हाथ में थी, और उनमें तथा मुसलमानों में किसी भी प्रकार का भेद भाव भवाच के दरबार में नहीं माना जाता था।

सिरानउद्दौला का समय से अधिक विश्वस्त अनुधर राजा मोहनलाल था, जिसने पलासी युद्ध में नयाब के लिये प्राप्त दिये। महाराजा मन्द कुमार भी उनके एक दीवान थे। पलाश में महाराज रणजीतसिंह के कई मन्त्री मुसलमान थे। होलकर और सींधिया के दीवान और उपाधिकारी बहुधा मुसलमान होते थे। हैदराबादी और टीपू सुलतान के प्रधान-मन्त्री हिन्दू थे। नाना कबचनीस हैदराबादी को बहुत मानते थे।

परन्तु शोक की बात तो यह था कि विश्वी की केन्द्रीय शक्ति विश्व मिश्र हो चली थी, और देश की राजनीति राष्ट्रीयता से रहित थी। इसी का यह फल हुआ कि अहरेज सत्ता ने आसानी से, केवल बाद के जोर पर, औरंगजेब की मृत्यु के पचास वर्ष बाद ही—पलासी के मैदान में ऐसी विध्व प्राप्त की, जिसे पड़-पुनकर सत्ता के राजनीतिज्ञ चिरकाल तक धारण करेंगे।

सुद-विषा और ज़िन्डे-बन्दी के कामों में भी मुग़लों ने बहुत उन्नति की। बंदूकों और तोपों का रिवाज अधिकतर मुग़लों ही के समय में फैला। क़ौश की, माछमुग़ारी की, पदोबरत की, हिसाब धाते की, सो व्यवस्था मुग़लों ने की—यह कायमस्त प्रशंसनीय थी।

तियार-दार ठीक-ठीक रोज़गार का था इतिहास लिखना हिन्दुओं ने मुमकिन नहीं ही से सीखा था। बीसों क़दाम होने के बाद से भारतीय व्यापार बहुत गिर चला था। यह मुग़लों के काल में फिर से उन्नत हुआ। मुग़ल राज्य के जगभग अन्त तक अफ़ग़ानिस्तान, दिल्ली के बादशाह का भाषीन था, और अफ़ग़ानिस्तान के इरिये बुखारा, समरकन्द, दक्षिण, तुर्गस्तान, इराक़ और ईरान के इज़ारों व्यापारी तथा यात्री भारत में आते थे। ग़द्दीग़ार के काल में प्रति वर्ष निर्रु बोजन वर्षों से १४ हज़ार क़ैद माछ से लदे आते थे। इसी प्रकार परिषद में टट्टा, भद्राच, सुरत, चाण, राजापुर, गोधा, कारवार और पूष में मछलीपट्टन तथा बाय बन्दराहों में हज़ारों बहाज़ प्रति वर्ष भरष, ईरान, तुर्क, मिश्र, अफ़्रीका, लंका, सुमात्रा, थावा, श्याम और चीन से आते जाते रहते थे।

बर्नियर कहता है—

“यह बात भी कम ध्यान के योग्य नहीं है, किसंसार में घूम घामका रोगा-खादी अथ भारतवर्ष में पहुँचता है, सो यहीं खप जाता है। अमेरिका से जो रुपया योरप के देशों में फैलता है, उसमें से कुछ तो उन वस्तुओं के बदले में, जो टर्की (रूम) से आती हैं, अनेक द्वारों से टर्की में चला जाता है, और कुछ समरनोक बन्दरगाह के माग से ईरान में पहुँच जाता है। वहा में रेशम योरप में आता है। टर्की की यह दशा है कि वहाँ के लोग उस सामान के बिना, जो धमन से आता है, रह ही नहीं सकते, और टर्की, यमरा तथा ईरान का भारतवर्ष की वस्तुओं की आवश्यकता बनी रहती है। इन प्रकार मुखा बन्दर में, जो खाण समुद्र के किनारे पर स्थित है, और बसरे में, जो प्रकार की खाड़ी के मिर पर है, तथा अम्बाप बन्दर में, जो सुमात्रा टापू के पास है—इन देशों से रुपया आता है, और वहाँ से उन जहाज़ों पर जाद

कर, जो अच्छी धातुओं में भारतवर्ष का माछ खेकर इन प्रसिद्ध बन्दरगाहों में आते हैं—भारतवर्ष में पहुँच जाता है। यह भी विदित हो, कि हिन्दु स्तानियों, दूधों, घोंगरेजों और पुर्तगीजों के सब बहाज, जो हर-साख हिन्दु स्तान का माछ पेगू, सेवासरम, सिलोन, अचीन, मगपर, मलयद्वीप, मायाम्बिक-आदि स्थानों में खे जाते हैं, वे भी उसके बड़े में चाँदी सोना ही लाते हैं, और यह भी उस रुपये की तरह—जो मुखाबन्दर, बसरा, और शम्बास-बन्दर से आता है, यहाँ रह जाता है। जो सोना चाँदी दूध खोग जापान की खानों से निकलते हैं, उनमें भी थोड़ा बहुत किसी-न किसी समय यहाँ आता रहता है, और जो रुपया सीधे माग से माग्न और पुत गाज से आता है, वह भी कुराचिप ही यहाँ से लौटकर बाहर जाता है।

‘यद्यपि मैं जानता हूँ कि खोग यह कहेंगे कि भारतवर्ष को चाँदा, लौंग, धापपज दाखचीनी इत्यादि चीजों की आवश्यकता रहती है, बिनको दूध, हॉगलैण्ड, जापान, मकाका और मिन्नोन से लाते हैं, और सोना भी (शीशा नहीं) बाहर ही से आता है जिनमें से थोड़ा सा हॉगलैण्ड से अँगरेजों भेजते हैं। इसके अतिरिक्त यद्यपि फ्रांस से बानात और अ-पा-व चीजों आती हैं, और दूसरे देशों के घोड़ों की भी आवश्यकता भारत में रहा करती है, जो, प्रति-वर्ष २५ सहस्र से अधिक उज्जवक देश (तुर्किस्तान) से और बहुत से कन्वार होकर ईरान से और मुखा-बन्दर बसरा, और शम्बास बन्दर होकर रगर्थओविया (इरान) आरब और फारस से आते हैं। वही प्रकार यद्यपि बहुत से तर और सुले मेवे समरकन्द, परनख, बुधारा और ईरान से आते हैं, जैसे—सरदे, सेव नाशपाथी, अगूर, जो अधिकता से देहली में प्रच होता है और जाड़ों भर बिकता रहता है, तथा बादाम, पिस्ते, पीपज चालूसुबानी, किशमिस इत्यादि, जो बारहों महीने बिकते रहते हैं। उसी तरह कौबियाँ मलय द्वीप से आती हैं, जो वैसे धेजे आदि के बड़े में कम मूल्य पर चखती हैं। अम्बर ईरान, मलय द्वीप और मोशामिक से आता है। गैंडे के लौंग, हाथी दाँत और गुबाम एथि ओनिया से आते हैं। मुरक और चीनी के बचन खान से आते हैं। मोती,

समुद्रों और टूटीकोरन से, जो लया टापू के निकट है, आता है;—तोभी इन चीजों के बदले में भारतवर्ष से चाँदी सोना बाहर नहीं जाता । क्योंकि जो व्यापारी ये चीजें लाते हैं—वे हममें अधिक लाभ समझते हैं । उनके बदले में वे यहाँ की वस्तुएँ ही अपने देशों का यहाँ से ले जाते हैं, सो यद्यपि हिन्दुस्तान में बाहरी देशों से प्राकृतिक या बनावगी चीजें आती हैं, तथापि वे समार भर के, सोने या चाँदी के एक बड़े भाग के यहाँ रह जाने में ( जिनका अनेक द्वारों से यहाँ आगमन होता ) रकबाट नहीं डालतीं, और जो चाँदी-सोना एक बार यहाँ आता है, वह कठिनता से पुनः यहाँ से बाहर जाता है । ”

यह बर्नियर औरगज़ेद के समय को गिरती हुई दशा का इस प्रकार वर्णन करता है—

“जब कोई दरबारी या पदाधिकारी, चाहे वह कितना ही योग्य और बड़ा हो—मरता है, तो उसकी संपत्ति यादशाही प्रज्ञाने में खली जाती है । उससे बढ़कर यह बात है, कि हिन्दुस्तान की सब ज़मीन, बाग़ों और मकानों को छोड़कर, जिनके बेघने हत्यादि की अनुमति प्रायः सर्व माधारण को दे दी जाती है, यादशाह की संपत्ति है । मैं अनुमान करता हूँ कि इन बातों से मैंने यह प्रमाणित कर दिया कि यद्यपि सोने चाँदी की खाने यहाँ नहीं हैं, तोभी चाँदी सोना यहाँ अधिकता से है, और यह कि, मुग़ल बादशाह, जो हम देश के बड़े भाग का स्वामी है—उसकी शामदनी बहुत ही अधिक है, और वह बड़ा ही धनाढ्य है । ”

शाहजहाँ, जो बहुत कम खर्च करनेवाला था, जो किसी बड़ी सजाद में फँसे तथा उसमें बिना आलीम वर्ष से अधिक समय तक राज्य करता रहा, कभी ६ करोड़ से अधिक खर्चा इकट्ठा न कर सका । परन्तु हम धन में मैंने उन प्रमाणित सोने चाँदी की तरह तरह की चीजों को, जिनपर बहुत अच्छे काम बने हुए हैं, तथा बड़े बड़े मूज्य के मोतियों और भाँति-भाँति के असंख्य रत्नों की सम्मिश्रित नहीं किया है । मुझे मन्देह है कि इससे अधिक रत्न कदाचित् ही संसार के किसी बादशाह के पास

हों। कवख एक सटत ह - यदि मैं भूखता न होऊँ—तो, तीन कोरह के रूप का है। ये सब बयादरात और बहुमुख्य समुपे राजपूतों के प्राचीन राज-वंशों पठान बादशाहों और अमीरों से खूबी तथा एक कम्प्री मुदत में इकट्ठी की हुई हैं। प्रायेक बादशाह के समय में राज्य के अमीरों की गामूजी वार्षिक नगरों के रुपये, जो उनकी अवश्य ही देने पड़ते हैं, उसकी भी सख्या बढ़ती गई है। यह सब राजाना तपस का मात्र समझा जाता है, और इनका उपयोग में खाना अनुचित है। यहाँ तक कि स्वयं बादशाह भी—चाहे पैसी की आवश्यकता क्यों न हो—इसमें से थोड़ा सा खर्चा भी बड़ी कठिनाई से प्राप्त कर पाता है।

यद्यपि चाँदी सोना और देशों से घूम-घामकर अन्य में भारतवर्ष में ही आजाता है, तो भी और देशों की अपेक्षा यहाँ अधिक दिखाई नहीं देता, और भारतवासी, दूसरे देशों के निवासियों के समान सम्पुष्ट प्रतीत नहीं होते। इसका कारण यह है, कि प्रथम तो बहुत सा माल बार-बार लगाये जाने, जैस औरतों के हाथों की सूखियों कपड़ों, कामों की बाजियों, नाक की मधा, हाथ की धँगूठियों आदि क बनाने में, दीज जाता है। इससे भी अधिकतर ऊरदोशी, वारचोपी के काम के कपड़ों—इकायचों, पगदियों के तुतों, मुनदरी-रपहरे कपड़ों, ओडनियों, पकटों, म पीकों और कमण्डायों के बनाने में खर्च हाजाता है, जिस पर मुननेवालों को बिरवास नहीं होता। सेनाओं में अमीरों से लेकर सिपाहिया तक, कुछ न-कुछ मुजम्मेशार और, मुनदरी रपहरी चीजें तनक-मनक के लिये पहनाते हैं। एक बदना सिपाही चाहे बुदुम्य उसका भूखों मरता रहे—जो एक आधारण बात है—अपनी खियों के लिये गद्दन अवश्य गढ़वाएगा।

जागीरदारों, प्रांतीय अधिकारियों और लहसीखदारों का घोर अत्याचार—जिसे, यदि बादशाह भी रोकना चाहे, तो रोक नहीं सकता—विशेषतः उन प्रांतों में जो राजधानी के विच्छेद नहीं हैं, इतना बड़ा दुष्प्रभाव है कि खेतिहारों और कारीगरों के पास—उनके जीवन-निर्वाह के लिये कुछ भी नहीं छोड़ता, और वे दीनता तथा दरिद्रता में भरा करते हैं। इसके अतिरिक्त

इन्हीं व्यापारों के फल-स्वरूप उन बेचारों के कोई 'सन्तान' नहीं होती। यदि, हुई भी तो असमय ही दुधा से पीड़ित हो, सगर से चल बसती है। सच्चे में यह कि इन उपद्रवों और व्यापारों के कारण कृषक अपनी जन्म-भूमि छोड़कर, कुछ सुख भित्ति की आशा से किसी पड़ोसी राज्य में चले जाते हैं—या सेना में जाकर किसी सवार के पास नौकर हो जाते हैं। कारण कि, भूमि-सम्पत्ती कार्य यही कठिनाता से होता है, और कोई भी व्यक्ति इसके योग्य नहीं पाया जाता, जो अपनी हृष्टता से उन नहरों और उन भालियों की सम्मत करे—जो पिघलने के लिये बनी हुई हैं। भूमि का एक बड़ा भाग सूखा और खाली पड़ा रहता है। यात भूमि तक ही नहीं है। बहुत-से घरों की भी ऐसी ही दशा है। बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो गये मकान बनवाते या मकानों की सम्मत करवाते हैं। एक और तो कृषक अपने मन में यह सोचते हैं कि क्या हम इस वास्ते परिश्रम करे कि कोई व्यापारी आवे, और हमारा सब-कुछ छीन ले जावे, और हमारे निवाँह को भी एक दावा न छोड़े। दूसरी ओर जागीरदार सूबेदार और तहसीलदार यह सोचते हैं कि हम क्यों सूखी और उजाड़ भूमि की चिन्ता करें ? अपना रुपया और समय क्यों इसके उपयोगी बनाने में व्यय करें,—न मालूम, किध तक यह हमारे हाथ से निकल आय, और हमारे उद्योग तथा धर्म का फल न हमें मिले, न हमारे घरानोंको,—अतएव भूमि से जो कुछ मिल सके, ले लें, और जो न मिले, न सही। ऐतिहास भूखों मरें या डबड़ जाएँ—हमें क्या ? जब हमको भूमि छोड़ देने की आज्ञा होगी, इसे ऊबड़ छोड़कर चले देंगे।

हिन्दुस्तान का कला-कौशल या यहाँ की अत्यन्त सुन्दर कारीगरी—कभी के नष्ट हो लिये होते, यदि बादशाह से अमीरों के यहाँ बहुत-से कारीगर नौकर न होते, जो स्वयं उनके खर्चों में और बादशाही कार्यालयों में बैठकर करते तथा अपने शिष्या और लड़कों को सिखलाया करते हैं। इनाम की आशा और कोर्बों का भय, उन्हें कदापूर्ण उद्यति के मार्ग में लगावे रहता है। यह भी कारण है कि कुछ अभी व्यापारी ऐसे एक भी हैं, जिन

बड़े बड़े उमराओं से सम्बन्ध तथा व्यवहार है, अथवा जो कारीगरों को मामूली से कुछ अधिक मजदूरी देकर काम लेते हैं। मैंने कुछ अधिक मजदूरी इतलिये कहा है—कि, यह तो सम्भवता ही चाहिये, अरबों चीजें बनाने से कारीगर का कुछ आदर किया जाता है या उसे दस्त-व्रता दी जाती है। कारण, जो भी कुछ यह करता है—आपसफता और कोहों के घर से करता है। उसके मन में सम्बोध और सुख की आशा नहीं होती। इसलिये यदि ऊँचा सूखा दुकान स्थान का और मोटा छोटा दुकान पड़ने को मिल जाय, तो इसी को यह बहुत सम्भवता है। दुआ भी मिले, तो उसे क्या—यह तो उस व्यापारी का मात्र है, जो सदैव इसी की चिन्ता में खीन रहा करता है, कि—यदि कोई बख्शान आयाचार या जयदस्ती कामा चाहे तो उससे मैं कैसे बचूँगा ?

व्यापार की गिरावट—जिन देश में इस प्रकार का शासन हो, वहाँ उद्योग और सक्रियता के साथ व्यापार भी नहीं हो सकता, जैसे यूरोप में होता है क्योंकि ऐतज्जग बहुत कम हैं, जो अपनी इच्छा से परिश्रम करना और दूसरों के काम के लिये कष्ट उठाना अथवा अपनी ज्ञान-बोझों में डालना पसन्द कर। किन्ती दूसरे व्यक्ति से—मेरा प्रयाजन ऐसे शासक से है, जो लोगों को कमाई छोन लेने में नहीं हिचकता चाहे कितना ही काम क्यों न हो, कमानेवाले को सुरिही का सा वस्त्र पहनना, और निधन पक्षीविया से बरकर खाने-पीने में कंजूसी करना आवश्यक है। परन्तु हाँ अब किमी सैनिक सरकार से किमी व्यापारी का सम्बन्ध हो जाता है, तब, अवश्य ही वह बड़े बड़े व्यापारिक कार्य करने लगता है। तो भाँ उसे अपने संरक्षक का गुलामी में रहना आवश्यक है, जो उसकी रक्षा के बख्से, जिस प्रकार की प्रतिज्ञा चाहे, उससे करा लेता है।

सुदेशर आदि वास्तव में मोच श्रम और गुलाम होते हैं तथा कुछ भी सम्पत्ति उनके पास नहीं होती। किन्तु शासन-कार्य मिलते ही वे बड़े बुद्धिमान और सद्गुण अमीर बन जाते हैं। इस प्रकार समग्र देश में दुष्टता और तबाही फैली हुई है। जैसाकि मैं पहले कह चुका हूँ, वे सब

सूवेशर अपने अपने स्थानों में छोटे मोटे बादशाह बने हुए हैं । इनके अधिकार असीम हैं । कोई देवा व्यक्ति नहीं है, जिसके पास पवित्र प्रज्ञा आकर पुकार सुना सके । कोई भी कैसा हो अथवा अत्याचार बारम्बार क्यों न मचाये, परन्तु किसी प्रकार की सुनवाई की आशा नहीं है ।

यदि किसी प्रकार कोई शिकायत करनेवाला बादशाह के पास पहुँच भी जाता है, तो सूवेशर के पत्रपातो अथवा बात को छिपाकर कुछ और-का और हो मामला बादशाह को सुना देते हैं । तात्पर्य यह कि सूवेशरों को उनके प्रान्त का सम्पूर्ण रूप से माझिऊ और स्वायत्तिकारी समझना चाहिये । वे आप ही जज ( विचारक ), आप ही पार्जियामेण्ट और आप ही प्रेसिडेन्सल कोर्ट ( मुख्य विचारालय ) हैं । आप ही अपराध का नियंत्रण करने वाले और आप ही राज्य का के सज्ज करनेवाले होते हैं । एक इरानी ने इन आयाचारी, लोभी मरदारों, और तहसीलदारों के विषय में क्या ही अच्छा कहा है कि—“यह बालू में से तेज निहाजने हैं ।” पर सच तो यह है कि इनकी जियाँ, बच्चा, सेवकों और लुटेरे साथियों के छर्च के लिये भी धामयनी काशी नहीं होती ।

शिक्षा के विषय में वह जितना है —

“सारे देश में शिक्षा का विजृम्भ अभाव है । लोग अरब और मूल हैं, और यह वहाँ सम्भव ही नहीं है, कि ऐसे शिक्षाजय और कॉलेज खुल सकें—जिनके स्वर्च के लिए एम्पेट धन राजकोष में मौजूद हो । यहाँ देवे लोग कहा—जो धार्मिक-सहायता देकर कॉलेज सज्जवायें मान लिया जाय, कि ऐसे लोग मिल भी जायें—तो पढ़ानेवाले कहाँ ? लोगों में इतनी शक्ति कहाँ, कि अपने अपने बच्चों को कॉलेज में भेजकर उनके छर्च का प्रबन्ध कर सकें ? यदि हम योग्य धनवान लोग हों भी, तो यह साहस कीन्त कर सकता है, कि हम प्रकार खुले धाम अपनी समुदाय प्रकट कर सकें ?”





# विश्व-विहार

[ हिन्दी-साहित्य का एक अद्वितीय ग्रन्थ रत्न ]

यह युग विज्ञान का है। पसार के प्रत्येक राष्ट्र में नित नये आविष्कार हो रहे हैं। जो पहले कब हम पता नहीं था, वे हमें आज मालूम हो गई हैं, जो रहस्य आज अपकार के पर्दे में छिपे हुए हैं, उनकी खोज में सैकड़ों मस्तिष्क लगे हुए हैं, और एक न एक दिन हम उन्हें जान लेने की पूरी धारा रखते हैं।

अस्तिन विषय विचित्रताया का भण्डार है। हममें अक्षय प्रकार के ऐसे भौगोलिक, खगोलिक, मानस्यतिक शारीरिक और पान्त्रिक रहस्य अभी तक हमारी धाँस से छिपे हुए जिन्हें ज्ञान की कल्पना-आश से रोमाञ्च हो जाता है। उदाहरणार्थ, यह मनुष्य के विषय में हम लोग अत्यन्त उत्सुक रहने पर भी इतना कम जानते हैं कि तारे भी रात देखकर अपनी विवशता और पुम्ता पर समझी मन अधोर हो उठते हैं। तारे क्या हैं? कहाँ हैं? किन किन पदार्थों के मिश्रण से इनकी व्युत्पत्ति हुई है? उनमें प्राणी रहते हैं—या नहीं? अगर रहते हैं तो उनका रूप,

रैग, आठ राज और मानसिक विकास किस प्रकार का है ? इन प्रश्नों का बाहू निरिच्छत उत्तर हमारे पास नहीं ।

यह तो प्यारी बातें हैं, जिनके विषय में हम अधिक जानने में प्रसमय है । परन्तु ज्ञान के अल्प भण्डार का जो अति पुत्र अराज आज हम जगत् के मेधावी विद्वान् पासके हैं, हम उससे भी अरिचित हैं । जिन लोग ने माया की यात्रा समाप्त कर, सबस्व छोड़ कर ज्ञान के समकने हुए दुर्द्वारों का पता लगाया है, और जो अज्ञान अत्यन्त मरने दर म सर्व-साधारण के लिये मुलभ होगये हैं—उनका ज्ञान भी हमें न होना पौर दुर्भाग की बात है । जगत् के अनेक सारथ साहित्य में आज उन ज्ञानव्य विषयों पर हजारों ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनका एक कण भी हम गुलाम देश की अभावी राष्ट्र भाषा में उपजस्य नहीं । अकली जमन भाषा में केवल 'सूय' के सम्बन्ध में सत्तर हजार ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं । हमने कन्नड़ की 'हूपीरियल आइमेरी' में केवल Tobacco और Anti tobacco (तम्बाकू के पक्ष और विपक्ष में) विषय पर लैखों रितात्रे देखी थीं । जब कभी सोविय और अमेरिका से पुस्तकों के गये सूचीपत्र हमारे पास आते हैं तो एक ही विषय पर ग्रन्थों की संख्या देखकर हमारी हेरत का ठिफाना नहीं रहता । चाली जैसे अति पुत्र की के सम्बन्ध म विदेशी भाषाओं में आप चाओस-वालीय रूपये की एक-एक पुस्तक पा-मर्चेंगे । जमनी क एक प्रोफ़सर स हव को बर्लिन के एक प्रकाशक ने केवल इसलिये भारतवर्ष भेजा था कि वे भारत के एक प्राचीन और कोप प्राय

धर्म का अध्ययन करें और उस पर समान भाषा में एक ग्रन्थ लिखें। इस यात्रा का सम्मान व्यय और प्रोफेसर साहब का वेतन भार प्रकाशक के जिम्मे था और जब यह पुस्तक छपी तो उसका दाम शायद एक सौ आठ शिलिंग था। कुछ दिन पहले ही थक गानिस्तान में राज्य कान्ति होने पर हमने उक्त देश के सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी पुस्तकें देखी थी जिनका दाम पच्चीस पच्चीस और तीस-तीस रुपये था।

जिस समय हम देखते हैं कि पैंतीस करोड़ भारतवासियों की मातृ भाषा कड़ाने का गौरव रखनेवाली हिन्दी भाषा में समाज के आधुनिक आविष्कारों की प्रगति पर एक भी अच्छा ग्रन्थ नहीं है, तो हमारा हृदय खड़ा और खोभ से भर उठता है। यों कहने और देखने को। हिन्दी भाषा में आज निम्न अनेक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, किन्तु हमें अत्यन्त ग्लानि के साथ यह स्वीकार करना पड़ता है कि इन पुस्तकों में से अधिकांश निरर्थक होता है, और उनका उपयोग एक भोले दर्जे के मनोरंजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। बहुत से हिन्दी भाषा भाषी प्रौढ़ पाठक भी, जो गम्भीर विषयों के अध्ययन का और विशेष रूचि रखते हैं, हमारे मादिर्य में अपने मतलब का चीजा का अभ्यास देखकर शान्त हो जाते हैं। हमारी भाषा का प्रचार रखने का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है।

इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी के पाठकों की रचि अभी तक

नहीं हुई है, किन्तु हमारे मादिर्य से ऊँचे

मल की वस्तुओं में भी पूरी दिव्यस्थि छे मर्के । जो लोग इसके  
 साहित्य का प्रकाशन करते हैं—निस्सन्देह जिनमें-स एक हम भी  
 ह—। प्राची पुष्प में यदा तक करते हैं, कि उन्हें पाठकों की  
 रसिक व अनुसार ही पुस्तकें निवासनी पड़ती हैं । किन्तु हमारा  
 विराय है कि किमी भी भाषा के पाठकों की रुचि विगाड़ने का  
 सुधारने का एक बड़ा उत्तरदायित्व प्रकाशकों पर भी है । किमी  
 समय हिन्दी के पाठक हिम्मा ताता मैना' और 'सादे तीन पार'  
 पना करते थे । सब ऊँच दर्जे के मौलिक और अनुसूचित उपन्यास  
 बाजार में आये, तो लोगों की रुचि बढ़न गई । हयर ऊँच दर्जे  
 की राजनैतिक और रचनात्मक पुस्तका का प्रकाशन आरम्भ हुआ  
 है—यद्यपि इसकी प्रगति बहुत-सी कीच है—तो पाठकों की  
 एक त्वासी संख्या इस प्रकार के साहित्य की शौकीन बन गई है ।  
 इसीलिये हमारा विश्वास है, कि यदि और विषयों पर ऊँचे दर्जे  
 की पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी तो जल्दी या देर में पाठक  
 अवश्य उनकी तरफ आकर्षित होंगे ।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन द्वारा हम इसी प्रकार का एकानया  
 साहस कर रहे हैं । इस पुस्तक का प्रणयन अंग्रेजी के अनेक सद्  
 विषयक ग्रन्थों के आधार पर किया गया है । विदेशी भाषा में  
 इस प्रकार की हजारों भाषाओं पुस्तकें—अधिक से अधिक कीमती  
 हैं । भारत की अन्य प्राचीन भाषाओं में भी इस प्रकार की  
 अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । अकेली गुजराती भाषा में  
 इस प्रकार की पुस्तकों की एक एक प्रति का मूल्य सैकड़ों रुपये

तक हो जायगा। रँगला में तो इससे कई-गुनी सख्या न ऐसी  
 पुस्तकें मौजूद हैं। हिन्दी में अब तक मुद्रिकता-वे दो तीन छोटी  
 छोटी पुस्तिकायें प्रकाशित हुई हैं। निम्नलिखित लक्ष्य भी सचिकोशता  
 बालकों का मनोरंजन या शाश्वत न ही है। इसी धारणा में  
 हमारा यह साहित्य हिन्दी-साहित्य का जितना प्रति-पूर्ति करेगा  
 यह आसानी से समझा जा सकता है। साथ ही पाठकगण इस  
 पुस्तक की संक्षिप्त विषय सूची देखकर भी उसके महत्त्व या अनु-  
 मान लगा सकते हैं। इस पुस्तक में छोट पेपर पर छपे रूप ७५५ में  
सौ तक हाफ-टोन ब्लॉक और मोट छोर मजबूत फाराज  
 पर नये टाइप से छपे हुए चार सौ से पाँच-सौ तक पृष्ठ  
 होंगे। नमूने के लिये हमने कुछ विप्र विज्ञापन के साथ दिए हैं,  
 जिन्हें देखकर पाठकगण अनुमान कर सकते हैं, कि सारी पुस्तक  
 में कितना व्यय और परिश्रम होगा। सम्पादन, मजबूत और  
 चित्रा इत्यादि को लागत का प्रयास रखकर हमने इस ग्रन्थ की  
पाँच हजार प्रतियाँ छपाव का निश्चय किया है। हम चाहते हैं  
 कि पुस्तक को अधिक से अधिक हाथों में भेजना सम्भव हो सके।  
 हमलिये इस पुस्तक का नाम ये-प्रल तीन रूपया रखा गया है।  
 अब तक के अनुमान के अनुसार, पाँच हजार प्रतियाँ छपावने पर  
 ही हम इस दुर्लभ ग्रन्थ को इतने कम शून्य में पाठकों की भेंट  
 कर सकने में। हमलिये हमने यह साहित्यिकतापूर्ण प्रयत्न कर डाला  
 है। इस पुस्तक की सफलता के लिये हमने अपने घर के सभी

परन्तु हमारा इस माहस की पश्चिम की सफलता पाठकों, के सहयोग पर निर्भर है। हिन्दी में किसी पुस्तक की एक-मात्र पाँच हजार प्रतियाँ छपाकर बेचना मायामय बात नहीं है। यदि हमारा इरादा माहकों न इस महत्वपूर्ण पुस्तक की छपाकर हमारी उत्साह वृद्धि की, तो हमें विरासत में हम मातृ भाषा के शायरों में ऐसे ऐसे सीकवा हजारों ग्रंथ भेंट करेंगे।

विनोद,  
ऋषभचरण जैन ।

नोट—स्थायी माहकों को इस पुस्तक पर कोई कमीशन नहीं दिया जायगा।

# विश्व-विहार

## की

### संक्षिप्त विषय-सूची

- १—प्राक्कथन ।
- २—लज्जली जानवर डरावने क्यों होते हैं ।
- ३—पहलवान पक्षी ।
- ४—कीड़े स्वानेवाले पौदे ।
- ५—प्यास बुझानवाला वृक्ष ।
- ६—क्या जानवरों में विचार शक्ति होती है ।
- ७—मनुष्यों को अच्छा और बुरा समानेवालों साक्ष्य और रस-कोष ।
- ८—बोझते प्रियम किम तरह समते हैं ।
- ९—गुलाब का फूल सूँघने का परिणाम क्या होता है ।
- १०—बेतार के तार का अप्रूप समस्कार ।
- ११—सगोल विद्या का महत्त्व ।
- १२—सम्प्रदाय ।
- १३—मण्डलिनी ।



१२—हम पृथ्वी से छुटक क्यों नहीं जाते ।

१३—पृष्ठों की चतुरता ।

१४—आधा रात की धूप ।

१५—मृत्यु भगवान् ।

१६—नदी के पेंदे में छेद ।

१७—राक्षस व दूर ।

१८—मछलियों का शयन गृह ।

१९—समुद्री शानव ।

२०—एक नई दुनियाँ ।

२१—जङ्गलों का महत्त्व ।

२२—सूर्य ग्रहण ।

२३—रेत के थल ।

२४—मङ्गल ग्रह का सङ्केत ।

२५—आकाश मञ्जरी ।

२६—आमोफोन रेक्टो कैसे बनते हैं ।

२७—पृथ्वी का थका भाई ।

२८—वज्रपात ।

२९—गमाङ्गी चिड़िया ।

३०—रेत का गान ।

३१—दूरबीन की कहानी ।

३२—मारियल ।

३३—सौ मीन प्रकार फेंकनेवाला छींटा ।





## आकाश-मछली



यह मछली पाँच-सौ फीट तक उड़कर जा सकती है। इसका शरीर समुद्र के दिसक धनु सदैव उसके प्राणों के आसक्त रहते हैं।

# समुद्री दानव



ऑक्टोपस नाम का एक विशालकाय सामुद्रिक जन्तु भगम्य व निर्विकार रूप से अमर्य कर रहा है ।

## कुवड़ा पेड़



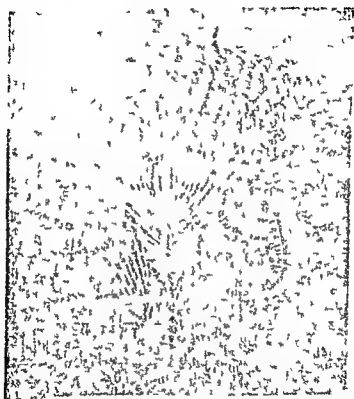
इस पेड़ का आयु ७२ वर्ष और लग्वाद केवल दो फुट है। इसमें अपनी जाति के बड़े पेड़ की भाँति ही निर्योप फल फूल सकते हैं।

## नमाजी चिड़िया



इस विचित्र चिड़िया का मनोरञ्जक विवरण श्री 'विरव विहार' में पढ़िये ।

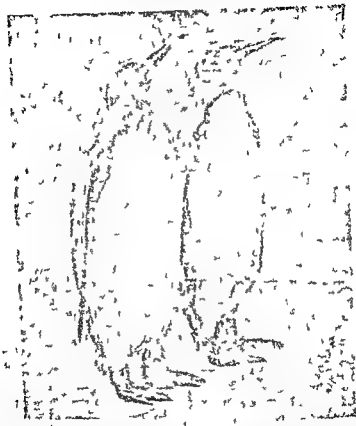
## प्याम बुझानेवाला वृक्ष



जहाँ पारो तरफ रेत के सम्यग् सम्यग् मैदान है, और पानी मोहरों के मोल बिकता है, वहाँ प्रकृति ने इस वृक्ष की उत्पत्ति की है जो राइ चकते लोगों की प्राण-रक्षा करता है।



## नमाज़ी चिड़िया



इस विचित्र चिड़िया का मनोरञ्जक विवरण श्री 'विश्व विहार' में पढ़िये ।



## सौ मील प्रकाश फैकनेवाला लैम्प



गत गोमाथीय महायुद्ध में इस अद्भुत लैम्प का आविष्कार हुआ था ।  
आजकल प्रायः समुद्री और हवाई जहाज में इस लैम्प का उपयोग होता  
है । इसका प्रकाश जितन अगह पड़ता है, दिन का सा आदिना हो जाता है



## सो मील प्रकाश फेरनेवाला लैम्प



गत योरोपीय महायुद्ध में इस अद्भुत लैम्प का आविष्कार हुआ था। भ्रातृघल प्रत्येक समुद्री और हवाई जहाज में इस लैम्प का उपयोग हो है। इसका प्रकाश जित्त जगह पड़ता है, दिन का सा चाँदना हो जाता है।





